हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण का इतिहास 1950- 2000 (उ0प्र0)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ से
इतिहास विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोधार्थी

प्रेटी पुष्कर

नामांकन संख्या 1277/16

शोध निर्देशक

प्रो0 एस0 विक्टर बाबू

प्रोफेसर
इतिहास विभाग

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

इतिहास विभाग
स्कूल फॉर अम्बेडकर स्टडीज
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, 226025 उत्तर प्रदेश

2020

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis titled "हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण का इतिहास 1950– 2000 (उ0 प्र0)" submitted by Mrs. Pretty Pushkar is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other University-

The thesis submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Lucknow satisfies all the requirements as stipulated in the Doctor of philosophy (Ph-D) regulations &1999 as amended in 2008/2010/2013 and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Doctor of philosophy of the university.

Date: 31.12.2020

Supervisor

Head of Department

Scanned with CamScanner

घोषणापत्र

मैं प्रेटी पुष्कर, पीएचडी इतिहास विभाग स्कूल फॉर अंबेडकर स्टडीज ऑफ सोशल साइंस, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ की छात्रा यह घोषणा करती हूं कि प्रस्तुत शोध प्रबंध हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण का इतिहास 1950–2000 (उ0 प्र0)। शोध निर्देशक प्रोफेसर एस0 विक्टर बाबू के अंतर्गत मेरे द्वारा किए गए प्रयासों का प्रतिफल है तथा मेरे द्वारा स्वयं इस शोध प्रबंध को पूर्ण किया गया है।

मैं सहृदय स्वीकार करती हूं कि जहां भी संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोध प्रबंध तथा लेखों इत्यादि से उपलब्ध सामग्री का शोध प्रबंध के मूल विवेचन के क्रम में उपयोग किया गया है वहां उन स्रोतों का उल्लेख किया गया है। यह शोध अन्य संस्था या किसी जगह प्रकाशित नहीं हुआ है। यह मेरे द्वारा पूर्ण किया गया शोध प्रबंध मौलिक एवं सर्वथा नवीन है।

स्थानः लखनऊ

दिनांक 31/12/20

Preety Pushkar 31/12/20

प्रेटी पुष्कर

(शोध छात्रा)

इतिहास विभाग

बी. बी. ए. विश्वविद्यालय, लखनऊ

Scanned with CamScanner

Document Information

Analyzed document	Thesis all chapters.pdf (D90462054)
Submitted	12/22/2020 11:26:00 AM
Submitted by	O. P. Saini
Submitter email	gbl.bbau@gmail.com
Similarity	0%
Analysis address	gbl.bbau.bbau@analysis.urkund.com

Sources included in the report

W	URL: http://shriprbhu.blogspot.com/2013/07/blog-post_2.html Fetched: 12/22/2020 11:27:00 AM	1
W	URL: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/111188/8/file-3.pdf Fetched: 12/22/2020 11:27:00 AM	1

आभार

इस शोध का पूरा खाका सामाजिक एवं अकादमिक कार्य व्यवहार का परिणाम है, जो मुझे मार्ग दर्शन निर्देश सहायता के रूप मे ंमिला है।

इस शोध प्रबंध को मूल आकार देने के लिए मेरे मार्गदर्शक प्रोफेसर एस विक्टर बाबू की मै ंहृदय से आभारी हू ंतथा मैं कृतज्ञता से आभार प्रकट करती हूं। जिन्होंने मेरी कार्य क्षमता को पहचान कर मेरा चयन किया और मुझे इस कार्य को करने के लिए प्रेरित एवं हरसंभव सहयोग दिया।

अपने इस शोध प्रबंध के लिए अपनेगुरुजनों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने आवश्यक दिशा निर्देश देकर समय–समय पर मुझे प्रोत्साहित किया है। इस शोध कार्य को पूर्ण करने मे मुझे मेरे मार्ग दर्शक प्रोफेसर एस. विक्टर बाबू, प्रोफेसर शूरादारापुरी, डॉ वी एम रवि कुमार, ने सुनियोजित ढंग से मदद की है, जिसके लिए मै उनके प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूं।

मैं इतिहास विभाग के पूरे स्टाफ का आभार व्यक्त करती हूं, नेशनल आर्काइव, नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी दिल्ली, अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ, स्टेट आर्काइव लखनऊ को भी धन्यवाद कहना चाहती हूं कि उन्होंने मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दिया।

मैं गौतम बुद्धा लाइब्रेरी लखनऊ उनके सभी शिक्षकों और स्टाफ की आभारी हू ंजिन्होंने कई पुस्तको ंको हमारे लिए उपलब्ध कराया जो कि हमारे इस शोध कार्य मे ंबहुत उपयोगी सिद्ध हुई। मैंने अपने शोध कार्य के लिए कई महत्वपूर्ण पुस्तको ंको अपने पुस्तकालय से ही प्राप्त किया।

मैं अपनी प्रस्तुत शोध कार्य को अपनी माता स्वर्गीय श्रीमती कांता जी को श्रद्धांजलि स्वरुप अर्पित करती हूं। क्योंकि उन्होंने जीवन के हर एक मोड़ पर मुझे प्रोत्साहित किया और हमेशा जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इस शोध के समय जिन लोगों ने मेरी सहायता तथा मार्ग दर्शन किया उनके जिक्र के बिना यह प्रकरण अधूरा ही रहेगा, इस कार्य में सर्वप्रथम मैं अपने पिता श्री रमेश चंद्र कुरील, मेरे श्वसुर स्वर्गीय शीतल प्रसाद, सास स्वर्गीया श्रीमती रामप्यारी का सहयोग अविश्वसनीय रहा है।

मेरे पति डॉ शैलेंद्र कुमार का आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। उनके प्रेम और सहयोग के बिना मैं इस शोध कार्य को पूरा करना मेरे लिए असंभव सा था। उन्होंने समय–समय पर शोध कार्य में मेरा मार्ग दर्शन किया।

उनके ही प्रयास और साथ के कारण मैं इस कार्य को पूरा कर सकी। उन्होंने मुझे हमेशा सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने की राह दिखलाई, मैं उनके इस सहयोग के लिए हमेशा आभारी रहूंगी।

मेरी पुत्री प्रशा सिंह जिसकी हंसती मुस्कुराती किलकारीयों से मुझे अपने शोध कार्य को करने का हमेशा साहस मिला, मै उसकी भी बहुत आभारी हूँ।

मेरे सीनियर्स जिन्होंने शोध समस्याओं का समाधान ढूंढने में मेरी मदद की उनमें से डॉ एन्द्रिय शास्त्री, डॉ शिवांगी, डॉ अस्मिता यादव एवं आयुषी विसेन के लिए हमेशा आभारी रहूंगी साथ हीं मेरी सहपाठी डॉ ईशा जिसने मुझे बहुत सहयोग किया।

अंत में, मैं अपने पूरे परिवार का आभार व्यक्त करती हूं।

प्रेटी पुष्कर

(शोध छात्रा)

इतिहास विभाग

बी. बी. ए. विश्वविद्यालय, लखनऊ

अनुक्रमणिका

क्रम सं	अध्याय का नाम	पृष्ठ सं
I	Certificate	i
II	घोषणापत्र	ii
III	Plagiarism Report	iii
IV	आभार	iv
1.	अध्याय प्रथमः प्रस्तावना	1- 24
2.	अध्याय द्वितीयः नारी चित्रण की पृष्ठभूमि	25-49
3.	अध्याय तृतीयः नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण	50-98
4.	अध्याय चतुर्थः पुरुष उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण	99-151
5.	अध्याय पंचमः नारी जीवन के बदलते स्वरूप	152-196
6.	अध्याय षष्ठः उपसंहार	197-211
7.	संदर्भ ग्रंथ सूची	212-223

अध्याय प्रथम

प्रस्तावना

अध्याय प्रथम

प्रस्तावना

इतिहास में साहित्य की भूमिका को हम नकार नहीं सकते क्योंकि इतिहास जानने के महत्वपूर्ण स्रोतों में एक स्रोत साहित्य भी है। बिना साहित्य के इतिहास को हम पूरी तरह से नहीं जान पाएंगे। साहित्य लेखन बहुत प्राचीन समय से ही प्रारंभ हो गया था। जिससे हमें उस समय के सामाजिक जीवन, राजनीति और समाज में चल रही कृतियों के बारे में पता चलता है। साहित्य मानव मन की अभिव्यक्ति है। साहित्य का सृष्टा समाज का ही एक व्यक्ति होता है जिसे हम समाज का प्रतिबिंब भी कहते हैं। प्रत्येक साहित्यकार अपने जीवन के अनुभवों, सत्य घटनाओं और टूटते बनते जीवन के मूल्यों से ही प्रभावित होकर अपने साहित्य को रूपायित करने का प्रयास करता है। साहित्य से हमें उस समय हो रहे सामाजिक परिवर्तनों और विचारों के बारे में पता चलता है।

जिस प्रकार प्राचीन समय में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, उसी प्रकार साहित्य ने आज भी अपने स्थान को बनाए रखा है। साहित्य की कई विधाएं हैं, जिसमें उपन्यास भी एक महत्वपूर्ण विधा है जोकि प्राचीन नहीं है बल्कि इसे हम आधुनिक विधा के नाम से ही जानते हैं। कुछ उपन्यास 18 वीं शताब्दी में लिखे गए परंतु उपन्यास को पूर्णयता उन्नीसवीं सदी में मिली। उपन्यास, साहित्य की अनेक आधुनिक विधाओं में एक ऐसी विधा है। जिसने जीवन से लगाव के कारण अति शीघ्र लोकप्रियता प्राप्त की है। इसमें मनुष्य और समाज से जुड़ी हुई कई घटनाओं को ऐसे रूप में प्रदर्शित किया गया है। जिससे वे जीवंत हो उठी है। उपन्यास जीवन से और जीवन यथार्थ से जुड़ने वाली एक विधा है। जो इतने सरल रूप से जीवन की विभिन्न जटिलताओं को चित्रित करती है।

1.1 उपन्यास का अर्थ

उपन्यास शब्द मूलतः संस्कृत भाषा से निकला है। जिसका साहित्य में अलग–अलग संदर्भों में अलग–अलग अर्थ प्राप्त है। हिंदी में रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादक संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर में उपन्यास का अर्थ उस काल्पनिक गद्य कथा से है जिसमें, वास्तविक जीवन से मिलते जुलते चरित्रों और क्रियाकलापों का विस्तृत और असम्बद्ध चित्रण रोमांचकारी, जासूसी, क्रियाकलापों से भरा हो। इसी प्रकार का चित्र उपक्रम, बंधान हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपन्यास शब्द का आविर्भाव संस्कृत भाषा से ही हुआ है।[1]

[1] प्रताप नारायण टंडन. हिंदी उपन्यास कला. हिंदी समिति सूचना विभाग लखनऊ. 1965.पृष्ठ संख्या. 7

उपन्यास शब्द उपन्यास के जोड़ से बना है। 'उप' जिसका अर्थ समीप तथा 'न्यास' जिसका अर्थ पास रखी हुई वस्तु है। इस प्रकार उपन्यास शब्द का अर्थ है समीप रखी हुई वस्तु अर्थात ऐसी कृति जो हमारे जीवन के निकट प्रतीत होती है। नई विधाओं के प्रचलन के कारण अंग्रेजी में इसका नाम नॉवेल या नया पड़ गया। अधिकतर भाषाओं में इसी शब्द का प्रचलन है।

उपन्यास जीवन से और जीवन यथार्थ से जुड़ी हुई एक महत्वपूर्ण विधा है। हिंदी साहित्य में उपन्यास के समान अन्य कोई भी विधा नहीं है। जिसमें इतने सहज रूप से एक साधारण से जीवन की जटिलताओं से भरा चित्रण प्रस्तुत किया जा सके। डॉ जवाहर सिंह द्वारा "जब तक किसी कृति में जीवन के साथ यथार्थ का संबंध ना हो तब तक वह कथा साहित्य की कोई विधा भले ही बन जाए, पर वह उपन्यास कभी नहीं बन सकती। उपन्यास के विषय विस्तार की कोई सीमा नहीं है। मानव जीवन की तरह यह भी निःसीम व्यापक परिवर्तनीय वैविध्यपूर्ण और नूतन है"।[2] उपन्यास का देश के वर्तमान और अतीत दोनों के प्रति एक विशेष दायित्व होता है। अतीत से मिली विरासत उसके लिए महत्वपूर्ण है। उसे पता चल जाता है कि देश की संस्कृति विरासत के व्यास कौन से अंश हैं जो आज भी सार्थक हैं।

प्राचीन भारत में उपन्यास जैसी किसी भी विधा का साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। संस्कृत में कुछ गद्य लिखे गए जिसमें पंचतंत्र, हितोपदेश, बेताल पच्चीसी, कथा मंजरी, वासवदत्ता, कादंबरी, और दस कुमार चरित मे कुछ औपन्यासिकता का विकास देखने को मिलता है। परंतु इन्हें उपन्यास कहना बिल्कुल गलत है। क्योंकि उपन्यास विधा गद्य विधा की एक शाखा है। और उपन्यास का विकास 18 वीं शताब्दी के अंत में यूरोप के विभिन्न भागों में हुआ था। और हिंदी साहित्य में उपन्यास का आवागमन 19वीं शताब्दी में माना जाता है। भारतीय साहित्य में उपन्यासों के विकास को अंग्रेजी साहित्य के संपर्क के द्वारा माना जा सकता है। परंतु भारत में उपन्यासों का विकास बंगाल में अधिक हुआ। बंगाल में ही उपन्यास का सर्वप्रथम आवागमन हुआ था। और हिंदी में भी प्रारंभिक उपन्यास अनुवाद के रूप में ही लिखे जाते थे। जिनका बंगाली से हिंदी में अनुवाद किया गया था।[3]

[2] विजयलक्ष्मी. उपन्यासों के सरोकार. राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली. 2012. पृष्ठ संख्या 11

[3]https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/4640/6/06_chapter%202.pdf

उपन्यास के सन्दर्भ में कुछ विचारकों के विचार

मुंशी प्रेमचंद्र "उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूं मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का तत्व है।"[4]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल "समाज जो रूप पकड़ रहा है उसके भिन्न–भिन्न वर्गों में जो प्रवृत्तियां उत्पन्न हो रही हैं उपन्यास उनकी विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते हैं।"[5]

हजारी प्रसाद द्विवेदी "उपन्यास में उन टंटों की कोई जरूरत नहीं रह जाती जो रंगमंच सजाने में आ खड़े होते हैं किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है कि आज के जमाने में उपन्यास एक ही साथ शिष्टाचार का संप्रदाय बहस का विषय इतिहास का चित्र और पॉकेट का थिएटर है।"[6]

1.2 उपन्यास के मुख्य तत्व

उपन्यास के मुख्य तत्व निम्नांकित है

1. कथानक
2. चरित्र
3. देशकाल वातावरण
4. भाषा शैली
5. उद्देश्य

कथानक

कथानक उपन्यास विधा का महत्वपूर्ण अंग है। कथानक में उपन्यासकार घटनाओं के संयोजन से निर्माण करते हैं और कई घटनाओं में से कुछ घटनाओं को चुनकर उनको आपस में जोड़कर प्रस्तुत करते है। यह संबंध जितना सहज व स्वाभाविक और औचित्यपूर्ण होता है, उपन्यास उतना ही प्रभावशाली बनता है।

ई एम फॉरस्टर के द्वारा "हम सभी इस बात से सहमत होंगे कि उपन्यास के मूलभूत पहलू इसकी कहानी कहते हैं ... उपन्यास एक कहानी को मौलिक पहलू बताता है, जिसके बिना यह अस्तित्व में नहीं रह सकता । यह सभी

[4] मुंशी प्रेमचंद्र कुछ विचार श्रीपतराय सरस्वती प्रेस बनारस 1939 पृष्ठ संख्या 41

[5] रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली 2017 पृष्ठ संख्या 422

[6] हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, नैवेद्य निकेतन वाराणसी, 1965 ,पृष्ठ संख्या 76

उपन्यासों के लिए सामान्य कारक है। यह एक रीढ़ की तरह चलता है या मैं एक फीता कृमि कह सकता हूं, जिसकी शुरुआत और अंत मनमाना है।"[7]

चरित्र

चरित्र के बिना कोई भी उपन्यास संभव नहीं होता है। उपन्यास में चरित्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पात्र उपन्यासकार के दिमाग की उपज होते हैं। परंतु वास्तव में देखा जाए तो यह काल्पनिक नहीं होते हैं, बल्कि इन्हें मूलतः मानव समाज से ही उद्देश्य के अनुसार ग्रहण किया जाता है। कई उपन्यास पुरुष प्रधान तो कई नारी प्रधान होते हैं। नारी प्रधान चरित्र उपन्यासकार के विचारों से प्रभावित होता है। उस समय के तत्कालिक समाज में जिस प्रकार से नारी की स्थिति को परख कर अपने उपन्यास में बड़ी सहजता से गढ़ता है। इसलिए चरित्र उपन्यास का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। "सभी मानव के जीवन में सुख और दुख होते हैं। अरस्तू कहते हैं कि जो कार्रवाई का रूप लेता है। उसे हम बेहतर जानते हैं। हम मानते हैं कि आंतरिक जीवन में सुख और दुःख मौजूद होते हैं, जिन्हें हममें से प्रत्येक व्यक्ति निजी तौर पर आगे बढ़ाता है और जिस तक उपन्यासकार की पहुँच होती है।"[8]

देश काल वातावरण

किसी भी उपन्यास को लिखने के लिए उसमें देश काल एवं वातावरण अपना प्रभाव डालते है। उपन्यास में देश से तात्पर्य उस क्षेत्र से है, जिसमें उपन्यास के कथानक को वर्णित किया गया है। काल का संबंध इसमें इतिहास से है, जिसका तात्पर्य उपन्यास इतिहास के किसी छोटे या बड़े काल खंडों से ग्रहण किया गया हो या आधुनिक समय पर लिखा गया हो। वातावरण से अभिप्राय उन परिस्थितियों और परिवेश से है, जिसे उपन्यासकार ने ग्रहण किया है। उपन्यास में लिखी गई घटनाएं तब तक कथानक को प्रभावशाली नहीं बना सकती, जब तक उनका निर्माण देश काल और वातावरण को ध्यान में रखकर ना किया जाए। देश काल और वातावरण को ध्यान में रखकर ही उस उपन्यास के चरित्रों उनके बीच होने वाली वार्तालाप, वेशभूषा, विकास, और जीवन जीने के तरीकों का निर्माण करती है।

---

[7]E- M-Forster, Aspect of the Novel, Rosetta Books New York, 2002, page no-21

[8]वही पृष्ठ संख्या 59

All human happiness and misery. says Aristotle takes the form of action. We know better. We believe that happiness and miserly exist in the secret life, which each of us leads privately and to which the novelist has access.

भाषा

भाषा को उपन्यास में अभिव्यक्ति का माध्यम माना जाता है। इसमें भाषा केवल भाव और विचारों की ही अभिव्यक्ति नहीं करती। बल्कि वह घटनाओं, पात्रों, और देश काल और वातावरण की भी अभिव्यक्ति करती है। इसीलिए उपन्यास की भाषा को बहुत आवश्यक अंग माना गया है। भाषा को चित्रात्मक, वर्णात्मक, और नाटक धर्मिता के गुणों से संपन्न होना चाहिए। ताकि वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति को समझा सके।

उद्देश्य

उद्देश्य एक ऐसा अंग है जिसे सभी अंगों में सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि कोई भी उपन्यास बिना किसी उद्देश्य के बेकार है। हर उपन्यास की रचना किसी ना किसी उद्देश्य के द्वारा ही की जाती है। कई उपन्यास तत्कालीन समाज में होने वाली घटनाओं, सामाजिक परिवर्तनों, सांस्कृतिक परिवर्तनों पर आधारित होती हैं। नारी की स्थिति को उद्देश्य बनाकर लिखे गए उपन्यासों में उस कालखंड के समाज का रूप नारी के प्रति किस प्रकार का था, झलकता है। इसी उद्देश्य से यह उपन्यास भी लिखा गया है। ताकि लोगों के सामने उस स्थिति को लाया जा सके। इसी प्रकार कई उद्देश्य उपन्यास द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं जो कि समाज का आईना होते हैं।[9]

गुलाब राय जी द्वारा उपन्यास में कल्पना का पूरा संयम और व्यायाम होता है। उपन्यास में सुख दुख, प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष, आशा, अभिलाषा, महत्वाकांक्षा, चरित्र के उत्थान और पतन आदि, जीवन के सभी दृश्यों का समावेश रहता है।[10] उपन्यास को पश्चिम की देन स्वीकार किया गया है। इसका प्रारंभ 19वीं शताब्दी से माना जा सकता है। प्रारंभिक काल में उपन्यासों को मनोरंजन की भावना से ही लिखा जाता था।

हिंदी में उपन्यास साहित्य को बांग्ला साहित्य की प्रेरणा से ग्रहण किया गया है। हिंदी उपन्यासों पर विचार करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने लिखा है कि "नाटकों और निबंधों की ओर विशेष झुकाव रहने पर भी बंग भाषा में बहुत से अच्छे उपन्यास निकल चुके थे। अतः साहित्य के इस विभाग की शून्यता शीघ्र हटाने के लिए उनके अनुवाद आवश्यक प्रतीत हुए।"[11] हिंदी लेखकों का ध्यान नए ढंग के उपन्यासों की ओर आकृष्ट हो रहा था।

---

[9] विजय लक्ष्मी उपन्यासों के सरोकार राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2012 पृष्ठ संख्या 15

[10] गुलाब राय. काव्य के रूप. प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली. 1950. पृष्ठ संख्या 151

[11] रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015. पृष्ठ संख्या 173

इतिहास

इतिहास मात्र अतीत की घटनाएं ही नहीं बयां करता बल्कि वह घटनाओं का दर्शन भी है। इस दर्शन में शासन और समाज का चरित्र, मनुष्य का जीवन और कार्यशैली समाहित है। वास्तव में इतिहास शासन व्यवस्था नीतियों का ही सिर्फ दस्तावेज नहीं है बल्कि इस दस्तावेज में नारी की स्थिति, उसके अधिकार और कर्तव्यों तथा अस्तित्व और उसकी अस्मिता भी नजर आती है। हम यह भी कह सकते हैं कि इतिहास अतीत से ही वर्तमान को रोशन करता है नारी की पुरातन स्थिति का विरोध करते हुए ऐसे पात्रों को लिखा जाता है। जिसमें नारी को अपनी अस्मिता के लिए उजागर किया गया हो। उनके चरित्रों में विरोध नजर आता है जोकि पुरानी विचारधाराओं और पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ खुद को खड़ी करने में तत्पर हैं।[12]

इतिहास का शाब्दिक दृष्टि से अर्थ है, ऐसा ही हुआ या ऐसा ही था। इससे स्पष्ट होता है कि इतिहास का संबंध अतीत से है। और उनके अंतर्गत केवल वास्तविक घटनाओं का ही समावेश किया जा सकता है। इसमें उन सभी लिखित व मौखिक वृत्तों को शामिल किया जा सकता है। जिनका संबंध अतीत में वास्तविक परिस्थितियों व घटनाओं से होता है। इसका संबंध केवल उन प्रसिद्ध घटनाओं से ही नहीं है। बल्कि जो कुछ भी घटित हुआ है अतीत, में उन सभी घटनाओं से है। संक्षेप में कह सकते हैं कि अतीत के किसी भी तथ्य, तत्व, एवं प्रगति के वर्णन विवरण, विवेचन, व विश्लेषण को जोकि कार्यक्रम की दृष्टि से किया जाता है उसे इतिहास कहते हैं।[13]

ई. एच. कार द्वारा वास्तव में इतिहास, इतिहासकार एवं तथ्यों के बीच अंतर क्रिया की अविच्छिन्न प्रक्रिया तथा वर्तमान और अतीत के बीच अनवरत परिसंवाद है।[14]

साहित्य और इतिहास में संबंध

साहित्य मानव समाज का दर्पण होने के कारण इतिहास से घनिष्ठ संबंद्ध है परंतु यह भी कहना उचित होगा कि उसे पूरी तरह से इतिहास का आधार नहीं माना जा सकता। जॉनसन ने स्पष्ट लिखा है कि "इतिहास का आरंभ साहित्य के एक अंग के रूप में हुआ था प्रारम्भ से मध्यकाल तक इतिहास साहित्य के रूप में धर्म और राजनीति के प्रचार का माध्यम बना रहा।"[15]

---

[12] वी एन से जनमेजय सिंह नारीवाद रावत पब्लिकेशन जयपुर 2012 पृष्ठ संख्या 1

[13] नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली. 2006. पृष्ठ संख्या 21

[14] के एल खुराना. डॉ आर के बंसल, इतिहास लेखन धारणाएं तथा पद्धतियां, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, 2017, पृष्ठ संख्या 4

[15] वही पृष्ठ संख्या 36

डेविड ह्यूम की भी मान्यता है कि इतिहास उपन्यास से अधिक रोचक है एक इतिहासकार और साहित्यकार दोनों ही अपने अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। [16]

राउज ने लिखा है कि समस्त वैज्ञानिक विधियों की सफलता के पश्चात भी इतिहास सदा साहित्य की शाखा रहेगा। साहित्य और इतिहास में परस्पर घनिष्ठ संबंध है इसे इस दृष्टि से भी पुष्ट किया जा सकता है कि साहित्यिक ग्रंथ भी इतिहास की भांति ही अपने युग की घटनाओं के सत्यापन के प्रमाणित स्रोत हैं।[17]

क्रोचे ने लिखा है कि इतिहासकार को अतीत कालीन तथ्यों का कलात्मक एवं साहित्यिक प्रस्तुतीकरण चाहिए।[18] अतः स्पष्ट है कि दोनों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है।

प्रारंभिक समय में जिस प्रकार राजनीतिक इतिहास में राजाओं, महाराजाओं के जीवन चरित्र एवं उनके द्वारा की गई राजनीतिक घटनाओं को संकलित करना ही पर्याप्त समझा जाता था। उसी प्रकार साहित्य के इतिहास में भी रचना और रचनाओं का परिचय ही पर्याप्त होता है।[19]

अंग्रेजी के प्रभाव को स्वीकार करने वाला प्रथम उपन्यास हिंदी में "परीक्षा गुरु" को माना गया है जो कि 1882 में लिखा गया था।इसका श्रेय लाला श्रीनिवास दास को जाता है।[20] उस समय सामाजिक उपन्यासों की तुलना में ऐतिहासिक उपन्यास कम लिखे गए थे।

1.3 उपन्यास के प्रकार

उपन्यास के कई तत्व जैसे घटना, चिंतन, पद्धति, वैचारिकता, कथा क्षेत्र, कथानक की प्रवृत्ति, चरित्र ग्रहण, परिवेश, आदि को ध्यान में रखकर उपन्यास के अनेक प्रकारों को निर्धारित किया गया है। इनका निर्धारण उपन्यास की रचना शैली के आधार पर ही किया जाता है।

---

[16] के एल खुराना. डॉ आर के बंसल, इतिहास लेखन धारणाएं तथा पद्धतियां, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, 2017, पृष्ठ संख्या 36

17 वही पृष्ठ संख्या 36

[18] वही पृष्ठ संख्या 36

[19] नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली. 2006पृष्ठ संख्या 25

[20] रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली 2017 पृष्ठ संख्या 387

सामाजिक उपन्यास

इन उपन्यासों की पृष्ठभूमि मुख्यतः सामाजिक प्रवृत्तियों पर ही आधारित होती है। ये उपन्यास उस समय के समाज का आइना बनते हैं। जिस प्रकार से समाज में स्थितियां परिस्थितियां बदलती हैं, उसी प्रकार सामाजिक उपन्यासों की कथा वस्तु भी बदलती है। परन्तु मुख्य रूप में उस समय सामाजिक उपन्यासों के विषय धर्म की जय, आदर्श, आचरण का महत्व, नवीनता का समर्थन और विरोध, अंधविश्वासों का परित्याग, सतीत्व की महिमा, ईश्वरीय न्याय में विश्वास, राष्ट्रप्रेम आदि का चित्रण बहुत अधिक होता है।[21] सामाजिक उपन्यास कारों में अमृतलाल नागर का नाम लिया जा सकता है जिसमें उनके उपन्यास अमृत और विष, नाच्यो बहुत गोपाल, बिखरे तिनके, अग्नि गर्भा में सशक्त नारी चित्रण किया गया है।

ऐतिहासिक उपन्यास

आरंभिक काल में ऐतिहासिक उपन्यास का मुख्य रूप से अर्थ ऐतिहासिक ना हो करके बल्कि उनका सम्बन्ध प्रणय कथा विलास लीलाओं, रहस्यमय प्रसंगों तथा कौतूहल वर्धक घटना चक्र की कल्पना से उभरी थी। और ये कल्पना पर अधिक आधारित थे। इनमे ऐतिहासिक छानबीन कम थी। अतीत उनकी मुक्त कल्पना की उड़ान के लिए सुविधा प्रस्तुत करता था। और वह इतिहास की चिंता को छोड़कर केवल पाठकों के मनोरंजन करने की कथा धारा में ही बह जाते हैं। इसलिए इस युग में उत्तम कोटी के ऐतिहासिक उपन्यास कम लिखे गए।[22] जैसे किशोरी लाल गोस्वामी जी ऐतिहासिक उपन्यासकार माने जा सकते हैं जिन्होंने कई उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखे जिसमें एक उपन्यास सुल्ताना रजिया बेगम वा रंग महल में हलाहल है जिसमें सुल्ताना रजिया और याकूब की प्रेम कहानी है और उसका दुर्भाग्यपूर्ण अंत भी वर्णित किया है। वृंदावनलाल वर्मा एक अन्य ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं जिन्होंने कई नारी उपन्यासों को रचा है जैसे विराटा की पद्मिनी, झांसी की रानी, अहिल्याबाई, रामगढ़ की रानी, इत्यादि।

घटनात्मक उपन्यास

दो भागों में विभाजित किया गया है।

घटनात्मक उपन्यास–तिलिस्मी ऐयारी

यह उपन्यास मुख्य रूप से जादू टोने, इंद्रजाल, अलौकिक रचना के ऊपर लिखे जाते हैं। प्राचीन समय में राजा और धनाधीश लोग तिलिस्मी किले बनवाते थे। यह मुख्यतः बड़े खजाने के ऊपर ही बनवाये जाते थे। तिलिस्म बांधने के लिए बड़े–बड़े तांत्रिकों, कारीगरों और गुणियों की सहायता भी ली जाती थी। उपन्यासों में कथा नायक द्वारा तिलिस्म

[21] रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015. पृष्ठ181

[22] वही पृष्ठ संख्या 184

इमारतों को तोड़कर खजाना प्राप्त करने की कथा वर्णित है, उन्हें तिलस्मी उपन्यास कहा जाता है। इस कार्य में नायक को अपने ऐयारों की बड़ी सहायता मिलती थी। इसका अरबी भाषा में अर्थ तीव्रगामी व्यक्ति होता है। देवकीनंदन खत्री द्वारा ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो। शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य कार्य हो। उपन्यासों में ऐयारों का उल्लेख अवश्य ही होता है क्योंकि इन्हीं पर नायक की पूरी कार्य शक्ति केंद्रित होती है। प्राचीन भारतीय राजनीति में भी पुरुषों का महत्व स्वीकृत किया गया है। हिंदी में तिलिस्म के साथ ऐयार का कुछ इस प्रकार से अनिवार्य संबंध जोड़ा गया है कि दोनों को एक साथ मिलाकर के ही तिलिस्मी ऐयारी उपन्यास की परंपरा चल पड़ी है।[23] देवकीनंदन खत्री द्वारा उनके उपन्यास चंद्रकांता जोकि तिलिस्मी और एय्यारी उपन्यासों का प्रवर्तक था। इस उपन्यास की नायिका विजयगढ़ की राजकुमारी चंद्रकांता है, चंद्रकांता अपनी सहेली चपला के साथ तिलिस्म में फंस जाती है और राजकुमार वीरेंद्र उसको अपने ऐय्यारों की सहायता से मुक्त करवाता है।

घटनात्मक उपन्यास–जासूसी

यह उपन्यास मुख्य रूप से जासूस की बुद्धि, धैर्य, साहस और कौशल से घटना का रहस्य उद्‌घाटित करने वाले पर निर्भर होते हैं। इसी तकनीकी को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखे जाते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य हलके ढंग का मनोरंजन ही है। जासूसी उपन्यासों में घटित होने वाली घटनाएँ यथार्थ जीवन के बहुत निकट होती हैं। इसमें कल्पना के साथ साथ बुद्धि का भी प्रयोग किया जाता है।

अनूदित उपन्यास

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही हिंदी के उपन्यासों में अनुवाद की परंपरा आरंभ हो गई थी। इसमें सबसे अधिक बांग्ला साहित्य को अनुवादित किया गया। बांग्ला उपन्यास साहित्य के अनुवाद से हिंदी उपन्यास साहित्य का स्तर कुछ ऊंचा उठा। उत्तरी भारत में नवीन सामाजिक, धार्मिक जागरण का आरंभ बंग प्रदेश से ही हुआ था। उपन्यासों के अनुवाद के माध्यम से उस नवीन जागृति का विस्तार हिंदी प्रदेश में भी हुआ।[24]

प्रारंभिक समय में दो प्रकार के उपन्यासों पर साहित्य चेतना परिचालित थी। एक प्रकार का मनोरंजन था और दूसरे प्रकार का समाजिक जागरण था। अय्यारी, जासूसी एवं चित्र विचित्र चित्रों से युक्त दोनों ही प्रकार के उपन्यास मुख्यतः मनोरंजन की दृष्टि से ही लिखे जाते थे। शुद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास को सत्य का अनुसंधान और

[23] रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015 पृष्ठ संख्या184

[24] वही पृष्ठ संख्या188

प्रकाशन लक्षण माना जाता था। परंतु इस युग में बहुत ही कम ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए। सामाजिक जागरण को प्रेरणा बनाकर उपदेश प्रधान और सुधारवादी उपन्यासों को लिखा गया। इनमें से भी कुछ नवयुग के परिवर्तन से भयभीत थे तो कुछ नवीन बौद्धिक जागरण का स्वागत करते हुए नए सुधारों का समर्थन कर रहे थे। अतः हम उपन्यासों की रचना के मूल में कार्य करने वाले व्यक्तियों को ध्यान में रखें तो उनका वर्गीकरण मूलतः दो वर्गों तक ही सीमित हो सकता है। मनोरंजन प्रधान तथा सामाजिक चेतना से युक्त परंतु यह वर्गीकरण उस युग की मनःस्थिति को समझने में सहायक होते हुए भी कृतियों के समझने के लिए सुविधाजनक नहीं थे।[25]

नारी की स्थिति को हम दो प्रकार से दर्शा सकते हैं प्रथम नारी की स्थिति को रचनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज के सम्मुख रखकर नए प्रकार से चित्रित किया जाए जिससे उसे एक व्यक्ति के रूप में उसकी स्वयं की पहचान के साथ न्याय हो सके। दूसरा एक बार फिर से उन उपन्यासों को जो महिला केंद्रित हैं की व्याख्या और पुनर्मूल्यांकन किया जाए सके।

समस्या कथन

हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी को अधिकतर रूढ़ीवादी रूप में चित्रित किया गया है। पितृसत्तात्मक समाज ने उपन्यास साहित्य में नारी के इस प्रतिनिधित्व को प्रभावित किया है परंतु उपन्यास पर समाज का प्रभाव बहुत अधिक दृष्टिगत होता है। इसलिए उपन्यासों में नारी के परंपरागत चित्रण का प्रभाव कम करके आधुनिक रूप में चित्रण करना प्रारम्भ किया गया है। कई उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी के नवीन चित्रणों को दर्शाया है। जिसमें नारी उपन्यासकारों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। नारी द्वारा लिखे गए उपन्यासों में नारी को अधिक सकारात्मक और दृढ़ रूप से चित्रित किया हैं।

शोध का उद्देश्य

- 1950 के पश्चात उपन्यासों में नारी चित्रण में परिवर्तन की प्रकृति को समझना।
- यह जानने के लिए कि पुरुष उपन्यासकार अपने उपन्यासों में नारी की स्थिति को कैसे प्रस्तुत करते हैं।
- यह देखने के लिए कि उन उपन्यासों में नारी उपन्यासकार किस तरह अपनी पीड़ा और विरोध को आवाज देती हैं।

[25] रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015. पृष्ठ संख्या174–175

- चयनित उपन्यासों में प्रस्तुत नारी की छवि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- नारी के लेखन में भाषा के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलू को समझना।
- हिंदी उपन्यासों में नारी के चित्रण के बदलाव पर ध्यान देना।

अध्ययन का महत्व

साहित्य समाज का दर्पण है। जिसकी विभिन्न शैलियों में उपन्यास एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण विधा है। उपन्यास के माध्यम से समाज में अच्छी और बुरी अवस्था पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया जाता है। और विभिन्न उपन्यासकारों द्वारा सामाजिक और नैतिक जैसे विभिन्न मुद्दों को प्रस्तुत किया जाता रहा है। प्राचीन समय से ही नारी का शोषण भी प्रमुख समस्या में से एक रही है। भारतीय समाज में पुरुषों की तुलना में नारी को समाज और परिवार में हमेशा दूसरा ही स्थान प्राप्त हुआ है। भारतीय हिंदी उपन्यासों में उपन्यासकारों द्वारा महिलाओं की स्थिति और चित्रण का अध्ययन करना है।

शोध अध्ययन का क्षेत्र

1950 से 2000 तक उत्तर प्रदेश राज्य में निर्मित हिंदी साहित्य का साहित्यिक आलोचना के साथ विश्लेषण करना । उत्तर प्रदेश भारत के 28 राज्यों में से एक राज्य है इसमें लगभग 20 करोड़ से अधिक जनसंख्या निवास करती है जिसके कारण यह भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है। ब्रिटिश शासन के दौरान 1 अप्रैल 1937 को संयुक्त प्रांत आगरा व अवध के रूप में स्थापित हुआ था ब्रिटिश शासन काल के दौरान इसका नाम यूनाइटेड प्रोविंस था जो कि 1950 में बदलकर उत्तर प्रदेश रख दिया गया था। इसको संक्षिप्त में आम बोलचाल में यूपी कहा जाता है राज्य की प्रशासनिक व विधायिक राजधानी लखनऊ है और न्यायिक राजधानी प्रयागराज है। पूरे प्रदेश को प्रशासनिक तौर पर 18 मंडलों और 75 जिलों में विभाजित किया गया है। राज्य की दो प्रमुख नदियां गंगा और यमुना प्रयागराज में मिलती है। हिंदी राज्य में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है और यही राज्य की अधिकारिक भाषा भी है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ है। यह राज्य 2,40,928 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है यहां का मुख्य न्यायालय प्रयागराज में स्थित है।[26]

[26]https://hi-wikipedia-org/wiki/ उत्तर प्रदेश

शोध विधि

यह शोध शाब्दिक, दार्शनिक आलोचना और ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित है। जिसमें विश्लेषणात्मक वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत उपन्यास, लेख और पत्रिकाओं का संग्रह एवं अन्य पुस्तकें है।

परिकल्पना

1– साहित्य में स्त्रियों को रूढ़िबद्ध धारणा में चित्रित किया गया है।

2– साहित्य में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में पितृसत्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3– हिंदी साहित्य लैंगिक समानता के नारीवादी विचारों को दर्शाता है।

साहित्यिक सर्वेक्षण

मुंशी प्रेमचंद्र 1928 की कहानी निर्मला एक छोटी सी लड़की की कहानी है जिसका विवाह 15 वर्ष की आयु में अपने से 20 वर्ष आयु में बड़े व्यक्ति के साथ हो जाता है। निर्मला का पहला विवाह दहेज के कारण रद्द हो गया था। निर्मला का पति उसे लुभाने के लिए विभिन्न रणनीतियों की कोशिश करता है। लेकिन निर्मला के पास केवल उसे देने के लिए सम्मान और उसके लिए कर्तव्य की भावना है ना कि वह प्रेम जिसे निर्मला का पति विकसित करना चाहता था। पहली पत्नी से तोताराम (निर्मला का पति) के तीन पुत्र हैं। जिसमें सबसे बड़ा पुत्र निर्मला से एक वर्ष बड़ा है। निर्मला जो इतनी निविदात्मक और अनुभवहीन है। वह समझ नहीं पा रही है कि वह बड़े पुत्र को क्यों पसंद करती है और अपने पति तोताराम से नफरत करने लगती हैं। वह पुत्र के साथ सहज और अपने पति के साथ असहज महसूस करती है। तोताराम के प्रति निर्मला के ठंडे मिजाज से अविश्वास का एक बीज बोया जाता है और धीरे–धीरे उसके सभी पुत्रों की मृत्यु हो जाती है। और परिस्थितियों की मारी निर्मला भी एक दिन मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं। यह कहानी मुंशी प्रेमचंद हृदय को स्पर्श करने वाली कहानियों में से एक है।

डॉ विजय पाल सिंह 2011 की पुस्तक हिंदी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास में उन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न चरणों का समीक्षात्मक वर्णन किया है। अभी तक कई लेखकों ने हिंदी साहित्य के बारे में लिखा है। उन्हीं साहित्योतिहास को ध्यान में रखते हुए उसी में अपने नए विचारों और तथ्यों को समाहित करते हुए उन्होंने पुस्तक में आरंभिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य का विस्तारपूर्वक विवेचन प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक को ग्यारह खंडों में विभाजित किया है। खंडों का विभाजन साहित्योतिहास के साहित्यकारों, आलोचकों, समीक्षकों, तथा उनकी टिप्पणियों को ध्यान में रखते हुए पुनर्मूल्यांकन के आधार पर किया गया है।

मन्नू भंडारी का उपन्यास महाभोज 1979 एक राजनीति और नौकरशाही के बीच उलझा हुआ और आम जनता को बहलाने फुसलाने के जाल से बना हुआ है। दा साहब इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। जिनकी उंगलियों के इशारों पर खुलती सिमटती कहानी है। राजनीति के खोटे सिक्कों के हाथों में समाज की बागडोर है और खरे सिक्कों को एक तरफ फेंक दिया गया है। महाभोज एक ओर तंत्र के शिकंजे की, तो दूसरी ओर जन की नियति के द्वंद की दारुण कथा है। जो सबसे महत्वपूर्ण बात इस उपन्यास की है कि जो लोग यह धारणा बनाये हुए हैं कि नारी या तो अपने घर परिवार के बारे में लिखती है या उन्हीं के इर्द–गिर्द घूमती है। इस उपन्यास के द्वारा मन्नू भंडारी ने इस धारणा को गलत साबित किया है।

नासिरा शर्मा का उपन्यास औरत के लिए औरत नारी विमर्श 2014 प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका अपने मन की बातों को कलम के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहती हैं। उनकी संवेदना कहती है कि जमीन पर जितने भी प्राणी है उनमें नारी एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसमें इमानदार, निष्ठावान, कर्मठ, धनवान, और बलिदान कहलाने की क्षमता कहीं अधिक है। यह लेख मुख्यतः स्त्री विमर्श पर लिखा गया लेख है। और इसमें कुंठित मानसिकता को दर्शाया गया है ।

इस उपन्यास में स्त्री के उस चेहरे को सामने लाने का प्रयास किया गया है जिसमें स्त्री लहूलुहान और कमजोर नजर आती है परंतु इन लेखों में नारी अपने प्रति होने वाले अत्याचारों और शोषण का रुख बदलकर अपने कर्तव्यों और समाज में अपनी जगह बनाने के लिए समाज के दकियानूसी नियमों और कानूनों से लड़ती दिखाई पड़ती है। इस रचना को सिर्फ मनोरंजन के लिए ही नहीं लिखा बल्कि यह जीवन के प्रति जागरूक लेखिका द्वारा समाज में महिलाओं को अधिकार और बेहतर जिंदगी दिलाने के लिए और लोगों की सोच बदलने के लिए लिखा है। जिससे कि समाज नारी के प्रति क्रूर व्यवहार को बदलकर अपने नजरिए को बदलने रखने के लिए मजबूर हो जाए।

डॉ रामचंद्र तिवारी 2015 हिंदी का गद्य साहित्य दसवां संस्करण रामचंद्र तिवारी का जन्म 1924 में बनारस में हुआ था। वह गोरखपुर विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त आचार्य एवं हिंदी विभाग के अध्यक्ष भी थे। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 1955 में प्रकाशित किया गया था। 2015 तक इस पुस्तक के दस संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। उन्होंने हिंदी के गद्य साहित्य को बहुत ही स्पष्ट और तथ्यों के आधार पर लिखा है। इस पुस्तक को रामचंद्र जी ने तीन खण्डों में विभाजित किया है, जिसमें पहले खंड में उन्होंने हिंदी का स्वरूप और विकास के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया है।

खंड दो में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं के विकास के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया है। इसमें सर्वप्रथम निबंध साहित्य के विकास को समझाते हुए सभी युगों में उसका विकास किस प्रकार हुआ है को बताया है। आगे हिंदी आलोचना का विकास है। जिसमें आधुनिक युग के पूर्व हिंदी आलोचना की बात कही है। किस प्रकार परिवर्तन हुए और नए विचार उभर कर सामने आए और पुराने विचारों में भी जो कमियां थी उन्हें अपनी दृष्टि से प्रकट किया है।

तृतीय खंड में उन्होंने हिंदी उपन्यासों का विकास स्पष्ट किया है। यह मेरे शोध पत्रिका की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है और इसे मैंने बहुत ही विस्तारपूर्वक पढा है। उपन्यासों को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लिखते हुए आधुनिक उपन्यास कारों तक उनके विचारों और उनके द्वारा लिखे गये उपन्यासों का वर्णन किया है। चतुर्थ हिंदी कहानियों का विकास। पंचम हिंदी नाटकों का विकास। तथा गद्य साहित्य की अन्य विधाओं को बहुत ही तथ्यात्मक रूप से लिखा है। षष्ठ खंड मूल्यांकन है। जिसमें उन्होंने कई उपन्यासकारों के बारे में उनके लेखन की विधा उनके विचारों के बारे में लिखा है।

जैनेंद्र जी का परख उपन्यास परख मुख्य पात्रों के इर्द–गिर्द ही घूमता है। बिहारी एक वकील है। परंतु वह दुर्घटनावश वकालत नहीं करना चाहता है और वह गांव में आकर रहने लगता है। गांव में उसकी अपनी जमीदारी है। और वह एक आदर्शवादी युवक है। उस के परिवार में उसकी मां है, और एक अविवाहित बहन है अभी विवाह नहीं हुआ है। वह विवाह करना चाहता है पर वह ऐसी लड़की चाहता है जो कि भोली सीधी– साधी और परित्यक्ता हो। जो उसके परिवार को सुखी बना कर उसके साथ निस्वार्थ भाव से रहे। उसी गांव की एक लड़की कट्टो जोकि बाल अवस्था में ही विधवा हो चुकी है को सत्य धन ट्यूशन पढ़ाता है। कट्टो का विवाह 4 वर्ष की उम्र में ही हो गया था और 5 वर्ष की उम्र में वह विधवा हो गई थी। परंतु इस समय सत्य धन वकालत कर चुका है। सत्य धन कट्टो की तरफ आकर्षित होता है और वह उससे विवाह करना चाहता है। परंतु उसे कट्टो के प्रति आकर्षण गलत भाव लगता है, जिसके कारण वह कट्टों को ट्यूशन पढ़ाना बंद कर देता है। उसी के पश्चात सत्य धन के मित्र बिहारी का पत्र आता है और वह उससे कश्मीर चलने के लिए अनुरोध करता है सत्य धन कश्मीर जाने के लिए तैयार हो जाता है।

बिहारी सत्यधन का मित्र है और सत्यधन से बिहारी की बहन का विवाह उसके पिता तय कर देते हैं। इधर कट्टो का विवाह भी बिहारी से सत्यधन करने का विचार करता है। प्रारंभ में कट्टो मना कर देती है, परंतु बाद में वह विवाह के लिए तैयार हो जाती हैं। कट्टो और बिहारी के बीच प्रारंभ में विवाह में दिक्कतें आती हैं। कट्टो कहती है षबिहारी बाबू क्या यह नहीं हो सकता क्या हम भी ऐसे दो नहीं हो सकते, जो कि दूर भी फिर भी पास हो अलग फिर भी एक हूं। एक ही उद्देश्य और एक ही जीवन का लक्ष्य पिरोए हुए हो। बिहारी बाबू बड़ी कठिन बात है यज्ञ ही समझो उस यज्ञ के लिए मेरे पास सबसे सुंदर शब्द है वैधव्य। अर्थ है आत्मा। आहुति देते हो हम दोनों एकाकी यज्ञ की प्रतिज्ञा में एक

दूसरे का हाथ लेकर आजन्म बनते हैं। हम एक होंगे कभी ना जुदा होने वाले एक जान दो तन हैं। कट्टो ने कहा, बिहारी ने इसी बात को दोहरा दिया जिससे कि कट्टो खुशी से बोली कि "आज मेरा विवाह पूर्ण हुआ एकत्र सार्थक हुआ"।[27]

सत्यधन और गरिमा का विवाह भी हो जाता है। परंतु एक दुर्घटना के दौरान गरिमा के पिता मरणासन्न अवस्था में चले जाते हैं और कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो जाती है। वह अपनी सारी संपत्ति बिहारी और कट्टों के नाम कर देते हैं। जिसे बिहारी और कट्टो प्रेम भाव से दान करके अपने अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं कट्टो गांव में बच्चे को पढ़ाने लगती है और बिहारी कृषक जीवन जीने लगते हैं। एक बाल विधवा की कहानी से प्रेरित है और इसमें उसके पुनर्विवाह के पश्चात होने वाले अच्छे बुरे एहसास को उपन्यासकार ने लिखा है।

जैनेन्द्र जी का उपन्यास सुनीता 1935 सुनीता उपन्यास पूरी तरह से सुनीता के इर्द–गिर्द घूमता है। जो कि इस उपन्यास की मुख्य नायिका है। इस उपन्यास में तीन मुख्य किरदार हैं। सुनीता ,श्रीकांत और हरिप्रसन्न। श्रीकांत सुनीता का पति है, जो कि पेशे से वकील है और हरिप्रसन्न श्रीकांत का दोस्त है। कहानी की शुरुआत में ही श्रीकांत हरि प्रसन्न के लिए चिंतित दिखाई देता है। वह सोचता है कि हरि प्रसन्न आज कहां होगा जो कि कॉलेज में उसके साथ था। श्रीकांत के मन में हरी प्रसन्न बस चुका था। "वह खूब चतुर, खूब कर्मण्य,खूब सप्राण, और एकदम अज्ञेय था।"[28] श्रीकांत उससे मिलना चाह रहा है। परंतु उसका कोई भी पता श्रीकांत के पास नहीं है। वह अपनी पत्नी से भी हरि प्रसन्न के बारे में बातें करता है। सुनीता और श्रीकांत के बीच ऐसा संबंध है जैसे कि दोनों बस एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर ही देते हैं। दोनों ही अपने एकाकी जीवन से बहुत ही उदास हैं और वैवाहिक जीवन नीरस सा नजर आता है। श्रीकांत अपने वकालत में व्यस्त रहता है और सुनीता अपने कार्यों में व्यस्त रहती है। सुनीता यह सोचती है कि मैं नारी हूं मेरा कार्य घर में ही रहकर सारे कार्यों को पूरा करना है। बहुत समय के बाद दशहरे की छुट्टियां पड़ती हैं। सुनीता श्रीकांत से आग्रह करती है कि उन्हें कहीं घूमने चलना चाहिए श्रीकांत तैयार हो जाता है और वे दोनों कुंभ के मेले के लिए प्रयाग जाते हैं।

प्रयाग में अचानक से श्रीकांत की नजर हरि प्रसन्न पर पड़ती है। वह बड़ी सी दाढ़ी बड़े बड़े बाल और बड़े से एक खद्दर के कुर्ते में खड़ा किनारे पर दिखता है। श्रीकांत उसे आवाज देना चाहता है, परंतु नदी के बीचों बीच नाव में होने के कारण वह उसे आवाज नहीं दे पाता। कहीं भीड़ में हरी प्रसन्न खो जाता है।श्रीकांत और सुनीता वापस दिल्ली

[27]निर्मला जैन. परख जैनेंद्र रचनावली. भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली. 2008. पृष्ठ संख्या 105 106

[28]वही पृष्ठ संख्या 137

चले जाते हैं। एक दिन श्रीकांत किसी सम्मेलन के लिए जाता है जहां पर बाहर ही उसकी मुलाकात हरि प्रसन्न से होती है। श्रीकांत उसको देखकर चिंतित हो जाता है। कि क्या वह साधु बन गया है। उस की वेशभूषा बिल्कुल अलग थी वह सोच में पड़ जाता है। तभी हरिप्रसन्न उससे कहता है कि श्रीकांत क्या मुझे पहचाना नहीं मैं हरी प्रसन्न हूं। श्रीकांत उससे अपने घर आने के लिए आग्रह करता है। बड़ी मुश्किलों से हरि प्रसन्न उसके घर जाने के लिए तैयार हो जाता है। वह इधर उधर की बात करके उससे पूछना चाहता है, कि तुमने यह जीवन क्यों अपनाया।

श्रीकांत हरी प्रसन्न को अपने घर ले आता है। जहां पर उसकी मुलाकात सुनीता से होती है। श्रीकांत सुनीता के द्वारा हरी प्रसन्न को वैवाहिक जीवन में लाना चाहता है। हरि प्रसन्न श्रीकांत से जाने की जिद करता है परंतु हर बार श्रीकांत उसे रोक लेता है। एक दिन सुनीता अपनी छोटी बहन सत्या को ट्यूशन पढ़ाने के लिए हरी प्रसन्न के बारे में श्रीकांत से बात करती है। श्रीकांत तैयार हो जाता है और इसी बहाने वह हरी प्रसन्न को अपने यहां रोकना चाहता है ताकि वह उसकी सोच में परिवर्तन कर सकें। धीरे–धीरे हरि प्रसन्न और सुनीता आपस में खुलने लगते हैं दोनों के बीच बातचीत शुरू हो जाती है धीरे–धीरे दोनों के बीच में देवर भाभी का रिश्ता कम और स्त्री पुरुष का ज्यादा दिखने लगता है।श्रीकांत अपने वकालत के कार्य से लाहौर जाता है। जहां से वह सुनीता को पत्र लिखता है कि तुमसे कहता हूं कि उसकी किसी बात पर मत बिगड़ना। सुनीता तुम मुझे जानती हो कि मैं तुमको कभी गलत नहीं समझ सकता। तब तुमसे मैं चाहता हूं कि कुछ दिनों के लिए मेरे ख्याल को अपने से तुम बिल्कुल दूर कर दो ना। तुम इन दिनों के लिए अपने को उसकी इच्छा के नीचे छोड़ देना। यह समझना कि मैं नहीं हूं। तुम हो और तुम्हारे लिए काम में कर्म कोई नहीं है। इस भांति निषिद्ध कर्म भी कोई नहीं होगा। तुम उसकी बैरागी वृद्धि को किसी तरह से कम कर सको। उसमें कहीं बंध कर बैठने की चाह उपजा सको तो शुभ हो।[29] हरि प्रसन्न श्रीकांत की अनुपस्थिति में सुनीता से बात करता है उसकी ओर आकर्षित होता है। और उसे एक रात अपने दल के लोगों से मिलाने के लिए उसे अपने साथ सुनसान जंगल में ले जाने के लिए कहता है। सुनीता तैयार हो जाती है रात के एक बजे जाते हैं। वहां जाकर उन्हें कुछ खतरे की आहट होती है। जिसके कारण सुनीता डर के उसके पास बैठ जाती है। हरि प्रसन्न सुनीता से अपने प्रेम का इजहार करता है और उसे पूरी पाना चाहता है।

सुनीता अपने स्त्रीत्व का आत्मसमर्पण करके हरि प्रसन्न को किसी तरह से उस कुंठा मुक्तजीवन से मुक्त करना चाहती है। जबकि वह पतिव्रता पत्नी है। और अपनी जिम्मेदारियों को अच्छे से समझती हैं। परंतु श्रीकांत के कहने पर वह हरि प्रसन्न को जीवन की सच्चाई से रूबरू कराना चाहती हैं। परंतु हरिप्रसन्न इस कार्य में अक्षम दिखाई देता है

[29]निर्मला जैन. परख जैनेंद्र रचनावली. भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली. 2008. पृष्ठ संख्या 258 259

और वह भाग खड़ा होता है जैनेंद्र जी नेइस त्रिकोण प्रेम कहानी में कई आयामों को प्रस्तुत किया है और एक असाधारण उपन्यास रचा है।

इलाचंद्र जोशी जी का उपन्यास सन्यासी 1940 मुख्य नारी चरित्र पर आधारित है। इसमें दो नारी चरित्र चित्रण किए हैं। एक शांति और दूसरी जयंती। इस कहानी में नंदकिशोर की भी मुख्य भूमिका है। इस कहानी को हम मुख्यतः दो भागों में विभाजित पाते हैं– प्रथम भाग में नंदकिशोर और शांति के प्रेम और आकर्षण को देखते हैं। काशी से जाने के बाद वे दोनों साथ में प्रयाग में रहते हैं और बलदेव से मिलते हैं। नंदकिशोर का शांति के प्रति संदेह होना तथा नंदकिशोर के भाई के द्वारा शांति का तिरस्कार करना। इस प्रथम भाग में दर्शाया गया है। दूसरे भाग में नंदकिशोर को जयंती के प्रति आकर्षित और उसके साथ विवाह तथा वैवाहिक जीवन के प्रति उसके आकर्षण को दर्शाया है। कैलाश जयंती का अपमान करता है, जिसे वह बर्दाश्त नहीं कर पाती और वह आत्महत्या कर लेती है। अंत में वह शांति के प्रति आकर्षित हो जाता है परंतु वह शांति के उदासीन चेहरे को देखकर सन्यास ग्रहण कर लेता है।

इस उपन्यास में शांति का चरित्र एक साधारण नारी का न होकर बल्कि बुद्धिशाली स्त्रीत्व का है। जैसे कि प्रारंभ में शांति के चरित्र को एक बहुत ही साधारण नारी के रूप में दर्शाया गया था। परंतु बाद में उसे परिवर्तित और बुद्धिशाली दिखाया है। जयंती को प्रेम में अहम आ जाता है। वह नंदकिशोर से विवाह कर लेने के बाद भी उससे दूर ही रहती हैं इसलिए जयंती के चरित्र में संदेह को दर्शाया है। जोशी जी ने इस उपन्यास के द्वारा शांति के रूप में प्रताड़ित उन नारियों के जीवन के विकास का मार्ग सुझाया है।

आचार्य राम चंद्र शुक्ल 2017 का पुस्तक हिंदी साहित्य का इतिहास इस पुस्तक में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य का इतिहास लिखा है। वह सर्वाधिक प्रमाणिक और प्रयोग सिद्ध है। इस पुस्तक में आदिकाल, वीरगाथा काल का अपभ्रंश, काव्य एवं देश भाषा, काव्य के विवरण के बाद भक्ति काल, ज्ञान मार्गी, प्रेम मार्गी, राम भक्ति शाखा, कृष्ण भक्ति शाखा, तथा अन्य रचनाओं को अपने अध्ययन का केंद्र बनाया है। इसी को आगे बढ़ाते हुए आधुनिक काल केगद्य साहित्य उनके विधिवत उत्थान को भी प्रकाश दिया है।

आचार्य जी ने इस पुस्तक को चार खंडों में विभाजित किया है। पहला खंड वीरगाथा काल 1050 से 1375 है जिसमें उन्होंने इस विषय से संबंधित सारी बातों को बताया है। द्वितीय खंड भक्तिकाल संवत 1375 से 1700 है जिसमें भक्ति काल से संबंधित सभी शाखाओं का वर्णन किया गया है। सबसे पहले इसका सामान्य परिचय देते हुए ज्ञान मार्गी भाषा प्रेम मार्गी शाखा, राम भक्ति शाखा ,कृष्ण भक्ति शाखा, भक्ति काल की फुटकल रचनाओं का वर्णन किया है। तृतीय

खंड में रीतिकाल 1700 से 1900 है। और चतुर्थ खंड में गद्य काल संवत 19व्से 1980 है। इसमें आचार्य जी ने गद्य का विकास पर प्रकाश डाला है। आधुनिक गद्य के तीन उत्थान चरणों का वर्णन किया है। उसके प्रसार का वर्णन किया है। इस प्रकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास जानने का सर्वश्रेष्ठ साधन है। इस पुस्तक के चार खंडों को बड़ी तथ्यात्मक रूप से विभाजित किया गया है।

भगवती शरण मिश्र हिंदी के चर्चित उपन्यासकार इस पुस्तक में मिश्र जी ने कई चुने हुए महत्वपूर्ण हिंदी साहित्य के उपन्यासकारों के बारे में लिखा है। उनके जीवन परिचय, उनकी लेखन विधा और उनके द्वारा लिखे गए महत्वपूर्ण उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण दिया है। हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा आधुनिक गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। और यह पुस्तक पूरी तरह से उपन्यास कारों पर आधारित है। जिन्होंने हिंदी उपन्यास साहित्य को एक मुकाम दिलवाया है जैसे देवकीनंदन खत्री, मुंशी प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, विशंभर नाथ शर्मा कौशिक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृतायन, इलाचंद्र जोशी, भगवती चरण वर्मा, यशपाल, जैनेंद्र कुमार, हजारी प्रसाद द्विवेदी, उपेंद्रनाथ अश्क, आदि महत्वपूर्ण उपन्यास कारों और उनके उपन्यासों का वर्णन किया है।

नीरजा माधव का हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास 1857–1947 2014 इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्व बहुत अधिक है। इस में 1857 से 1947 तक के समय में साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के महत्व को बताया गया है। यह समय भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और इसी काल के दौरान नारियों के योगदान को इस पुस्तक में नीरजा जी ने यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। साहित्य कला और संस्कृति जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नारियों के योगदान को इस पुस्तक के द्वारा सामने लाने का प्रयास किया गया है। जिसके द्वारा आधुनिक नारी विमर्श को अपने इतिहास में नारी के योगदान को समझने का अवसर प्राप्त हो सके।

लेखिका निरजा जी ने पुस्तक के द्वारा यह बताया है कि भारतीय इतिहासकारों और आलोचकों की दृष्टि ने उन भारतीय नारियों के योगदान को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया। इसीलिए शायद किसी भी पुस्तक में नारियों का उस प्रकार से लेखन नहीं हो पाया, जिस प्रकार से पुरुष साहित्यकारों और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले पुरुषों का था। इसी के कारण नीरजा जी को इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा मिली। उन्होंने उन नारियों के ओझल इतिहास को लिखने का निश्चय किया और कई ऐसी लेखिकाओं और कई ऐसी नारियों के बारे में लिखा जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करी थी पर जिन्हें लेखकों ने अनदेखा कर दिया।

नीरजा माधव जी ने इस पूरे को 90 वर्ष के कालखंड को अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए हिंदी साहित्य में नारियों की भूमिका को चार भागों में प्रस्तुत किया है।

- 1857 के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जिन नारियों ने प्रत्यक्ष भूमिका अदा करी।
- वे नारियां जो कि जनमानस में अपने रचनात्मक कार्यों के द्वारा उत्साह और प्रेरणा भर रही थी।
- वे नारियां जोकि प्रत्यक्ष रूप से आंदोलन से ना जुड़ी होकर बल्कि अपने सृजन के द्वारा पीछे से ही स्वतंत्रता आंदोलन का आह्वान कर रही थी।
- वे नारियां हैं जो अपने साहित्य और लोक कला के द्वारा चारदीवारी में रह कर के भी जन जागरण और अपनी आवाज बुलंद कर रही थी।[30]

कमला जैन जीजी विशारद नारी जीवन श्री जवाहर साहित्य समिति बीकानेर 1953 इस पुस्तक में नारी जीवन का समाज में महत्व को दर्शाया गया है। कमला जैन जी द्वारा यह बताया गया है कि किसी भी देश की प्रगति और विकास के लिए उस देश की स्त्रियों का उत्तरदायित्व और उनकी स्थिति बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।इस पुस्तक में नारी के स्थान को बताया गया है, उसके महत्व को, मातृत्व के गौरव को, उन आदर्शों को, जिनसे उस देश के समाज का कल्याण हो सके। इस पुस्तक में अध्यात्मकता की प्रधानता है। इस पुस्तक में नारी जीवन और समाज के निर्माण और उत्थान में स्त्री की स्वतंत्रता और महिलाओं के गौरवपूर्ण योगदान को दर्शाया गया है। इस पुस्तक में कमला जी ने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि नारी का कर्तव्य उसका कार्यक्षेत्र सिर्फ चार दिवारी के भीतर ही नहीं है बल्कि शिक्षा के द्वारा अपनी सहनशीलता का वास्तविक परिचय देना देना है।

इंद्रानी सेन का कार्य, मेम साहिब राइटिंग – कॉलोनियल नैरेटिव ऑन इंडियन विमेन (2008), 2015 में पुनर्मुद्रण, संक्षेप में सफेद महिलाओं के लेखन की विविधता का वर्णन किया गया है। वह बताती हैं कि औपनिवेशिक भारत की श्वेत महिलाओं ने बड़े पैमाने पर लिखा और कैसे उन्होंने अपनी पत्रिकाओं, डायरी, पत्र, उपन्यासों को बनाए रखा और 19 वीं शताब्दी के बीच की अवधि में उन्होंने अपनी यादों को कैसे संजोया। पुस्तकों में महिलाओं की डायरी, पत्र, यादें, यात्रा–कथन, मिशनरी ट्रैक्ट, चिकित्सा लेखन, हाउसकीपिंग जर्नल, समाजशास्त्रीय अध्ययन, उपन्यास और लघु कथाएँ शामिल हैं। किताब कुछ मुद्दों जैसे परदा व्यवस्था, कन्या भ्रूण हत्या, महिला शिक्षा और कई अन्य मुद्दों पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य लाती है।

[30]नीरजा माधव. हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास. सामायिक बुक्स नई दिल्ली. 2014. पृष्ठ संख्या 17

गेराल्डिन फोर्ब्स की किताब वुमेन इन मॉडर्न इंडिया (1998) 2012, औपनिवेशिक और उत्तर–औपनिवेशिक भारत दोनों की 19 वीं और 20 वीं शताब्दी की भारतीय महिलाओं का एक व्यवस्थित और व्यापक अध्ययन है। उन्होंने सुधार आंदोलनों के साथ शुरुआत की, जो पुरुषों द्वारा महिलाओं को शिक्षित करने के लिए स्थापित किया गया था और यह दर्शाता है कि कैसे शिक्षा ने उनके जीवन को बदल दिया और उन्हें सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के लिए सक्षम किया। उन्होंने 1947 के बाद से भारत में उनके विभिन्न मुद्दों, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में उनकी भागीदारी, औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका और महिलाओं के आंदोलन के विकास से संबंधित विभिन्न संगठन के गठन का भी दस्तावेजीकरण किया था। लेखक यह भी समझाता है कि कुछ भारतीय सुधारकों के प्रयासों से, अंग्रेजों ने सती, बाल विवाह, विधवा, बहुविवाह और शिक्षा पर प्रतिबंध जैसे सुधारों के लिए पहल की जो महिलाओं से जुड़ा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया।

केट मिलैट की पुस्तक सेक्सुअल पॉलिटिक्स 1971 में यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है की पित्र सत्ता ने लिंग प्रभुत्व द्वारा साहित्य कला चिंतन संस्कृति और जीवन में लिंगभेद राजनीति को बढ़ावा दिया है। उन्होंने पितृसत्तात्मक जैसे कुछ मौलिक शब्दों को अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है जिसमें पुरुष प्रधान संरचनाएं और सामाजिक व्यवस्था महिलाओं के संचालन को विस्तृत करती हैं।

सिमोन द बॉवर द सेकंड सेक्स1949 सिमोन डी बेवॉयर का जन्म पेरिस में 1908 में हुआ था। 1929 में वह सोरबोन में दर्शनशास्त्र में अग्रगति प्राप्त करने वाले अब तक के सबसे कम उम्र के व्यक्ति बन गए। वे कई वर्षों से सामाजिक विज्ञान, कला, और नारीवादी साहित्य पर पुस्तकों और लेखों का अनुवाद कर रहे हैं और संयुक्त रूप से व्याकरण से लेकर राजनीति में अमेरिकी पाक कला तक के विषयों पर अंग्रेजी और फ्रेंच में कई किताबें लिखी हैं।

1946 में, जब सिमोन डी बेवॉयर ने महिलाओं के अपने ऐतिहासिक अध्ययन, "द सेकंड सेक्स" लिखना शुरू किया इसे पहली बार फ्रांस में 1949 में और संयुक्त राज्य अमेरिका में 1953 में प्रकाशित किया गया था। उनकी यह पुस्तक दो भागों में विभाजित है पहले भाग में तथ्य और मिथक तथा द्वितीय भाग जीवन के अनुभव हैं। वेटिकन ने इसे निषिद्ध पुस्तकों के सूचकांक में रखा था। अल्बर्ट कैमस ने शिकायत की कि बेवॉयर ने फ्रांसीसी लोगों को हास्यास्पद बना दिया। इन तटों पर, उपन्यासकार फिलिप वायली ने इसे ष्हमारे युग की कुछ महान पुस्तकों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित किया, मनोचिकित्सक कार्ल मेनिंगर ने इसे दिखावा और थकाऊ कहा, और अटलांटिक मंथ में एक समीक्षक ने इसे गलत होने के लिए दोषी ठहराया। अस्तित्ववाद के प्रतिकारक लिंगो के साथ।

कॉन्स्टेंस बोर्डे और शीला मालोवनी–शेवेलियर के "द सेकेंड सेक्स"का नया अनुवाद लगभग 60 वर्षों में पहला अंग्रेजी–भाषा संस्करण है, और सबसे पहले सामग्री पार्शली को पुनर्स्थापित करने के लिए। इस भावुक, अजीब तरह से काम करते हुए, बेवॉयर उन कारणों की जांच करता है, जिनके कारण महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले समाज में एक जगह स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया है, इस तथ्य के बावजूद कि महिलाएं आधी मानव जाति का गठन करती हैं। जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान, नृविज्ञान, नृविज्ञान, पौराणिक कथाओं, लोककथाओं, दर्शन और अर्थशास्त्र के आंकड़ों के साथ उसके तर्कों का समर्थन करते हुए, वह 20 वीं शताब्दी के मध्य तक शिकारी–संग्रहकर्ताओं की उम्र से लेकर इतिहास भर में महिलाओं की स्थिति का दस्तावेजीकरण करती है।

"एक नारी पैदा नहीं होती है, बल्कि एक नारी बन जाती है,"[31] आधुनिक नारीवाद के इस सेमिनरी कार्य में सिमोन डी बेवॉयर लिखते हैं। यह विचार कि नारीत्व एक सांस्कृतिक गुण का एक उत्पाद है, जैसा कि एक जन्मजात गुणवत्ता के विपरीत है, आज कई लोगों को स्पष्ट लग सकता है, लेकिन जब 1949 में द सेकेंड सेक्स प्रकाशित हुआ था तो यह एक अत्यधिक विवादास्पद था, और दावा किया गया था। यद्यपि पिछले 60 वर्षों में दुनिया के कई हिस्सों में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है।

मानव जाति ने मातृसत्तात्मक से पितृसत्तात्मक समाज में संक्रमण किया, जो अन्य की तरह महिला की भूमिका पर जोर देता है।आज के अधिकांश समाज पितृसत्तात्मक हैं – अर्थात, अधिकांश लोग सत्ता के पदों पर काबिज हैं। औरयह अक्सर माना जाता है कि यह हमेशा ऐसा था। लेकिन ऐसा नहीं है।

वास्तव में, महिलाओं ने एक बार पुरुषों की तुलना में अधिक शक्ति का इस्तेमाल किया। कई प्रागैतिहासिक समाज मातृसत्तात्मक थे। खेती पर आधारित, इन समाजों ने अपनी संपत्ति साझा की और बच्चों को एक अमूल्य संपत्ति के रूप में माना 'समाज को बनाए रखने का साधन। चूंकि महिलाएं बच्चों को वहन करने में सक्षम थीं, उन्हें लगभग एक पवित्र दर्जा दिया गया था। वास्तव में, बच्चे आमतौर पर माता के वंश का नाम लेते हैं – आज के पिता के परिवार का नाम लेने के रिवाज के विपरीत। महिलाओं की प्रजनन क्षमता पर बहुत महत्व दिया गया था, देवी देवताओं की तरह कई प्रारंभिक समाजों द्वारा पूजा की गई थी। सिमोन ने अपने लेखन से सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देने का प्रयास किया है। सिमोन की पुस्तक द सेकंड सेक्स का हिंदी में अनुवाद प्रभा खेतान के द्वारा 1982 में स्त्री उपेक्षिता नाम से किया गया है। द सेकंड सेक्स पुस्तक को नारीवादी बाइबल कहा गया है।'[32]

[31]सिमोन दे बउवार, द सेकंड सेक्स, विंटेज बुक्स न्यूयॉर्क, 2010, पृष्ठ संख्या18

[32]सिमोन दे बउवार, द सेकंड सेक्स, विंटेज बुक्स न्यूयॉर्क, 2010, पृष्ठ संख्या 11

जॉन स्टूअर्ट मिल की पुस्तक द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन 1878 में नारी के अधिकारों के लिए किए गए संघर्ष के इतिहास की गाथा है इसमें नारी के पराधीनता और स्वाधीनता से जुड़े कई महत्वपूर्ण रहस्य को अपने बेबाकी तरीके से मिल बयां किया है वे कहते हैं कि पुरुष के वह कौन सा डर है जो स्त्री की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के लिए बाध्य हो जाता है और वे कौन से खतरे है जिसके कारण पुरुष को विकृत बना देता है जॉन स्टूअर्ट मिल ने अपनी पुस्तक में कई ऐसे ही प्रश्नों को तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है और यह भी बताया है कि नारी कई अर्थों में पुरुषों से कमजोर दिखाई देती हैं परंतु इसकी वजह वह स्वयं नहीं बल्कि उनके आस–पास का समाज है और उसका दबाव है जॉन स्टूअर्ट मिल ने नारी की कमजोरी और हीनता का कारण सामाजिक परिवेश और उसकी शिक्षा को माना है।

चारू गुप्ता द जेंडर ऑफ कास्ट 2016 जहां पर उन्होंने अपने पिछले कार्यों को छोड़कर नवीनतम संस्कृति और अभिलेखीय सामग्री के माध्यम से औपनिवेशिक उत्तर भारत में जाति और लिंग के अंतर पर अपना ध्यान को केंद्रित किया है। वह दलित व्यक्ति को एक विषय के रूप में नहीं बल्कि समकालीन प्रिंट संस्कृति में एक जीवंत भागीदार के रूप में स्थापित करती है, शिक्षा के लिए जातिवादी प्रतिबंधों और दलितों के बीच कम साक्षरता दर के बावजूद, दलित न केवल लिखे जा रहे थे, बल्कि लिख भी रहे थे। चारू गुप्ता ने अपने प्रथम तीन अध्याय में नारी के अलग–अलग रूपों को प्रदर्शित किया है जिसमें मुख्यता दलित महिलाओं कीछवि है। गुप्ता ने उन बहादुर दलित महिलाओं की छवि के उभरने का पता लगाया, जिन्होंने अट्ठारह सौ सत्तावन के विद्रोह में ब्रिटिश अंग्रेजो के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी अपने तीसरे अध्याय में लिखा है।

लोकप्रिय साहित्य की एक शैली 1857 की विद्रोह की 150 वीं वर्षगांठ के आसपास उभरी, और वह इसे समकालीन राजनीति की जरूरतों के साथ मिलकर दलितों की आत्म–छवि को फिर से परिभाषित करने के प्रयास के रूप में व्याख्या करती है। पांचवां अध्याय, इस प्रकार, बहुत उपयुक्त रूप से, शुद्धि आंदोलन के लिए – विचारशीलता लाता है – सुधारवादी आंदोलन हिंदू धार्मिक समुदाय में धर्मान्तरित करने के लिए – और इसके प्रिंट प्रवचन को ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म की बढ़ती आलोचनाओं की प्रतिक्रिया के रूप में लाता है। प्रिंट सामग्री से, यह अध्याय अचानक मौखिक परंपराओं और पौराणिक कथाओं की ओर मुड़ जाता है। चारू गुप्ता जी दिखाती हैं कि कैसे परंपरावाद के कुलीन विचारों को श्सार्वभौमिक, दलितों, निचली जातियों और महिलाओं के रूप में लोकप्रिय बनाने के लिए उपनिवेशवादियों, सुधारकों और राष्ट्रवादियों के प्रयासों ने उनके लोकप्रिय मुहावरों को अलग–अलग दृष्टिकोणों से पुनरू स्पष्ट किया।

पीटर गैफक हिंदी लिटरेचर इन द ट्वेंटीथ सेंचुरी वॉल्यूम 8 1978 पीटर जी ने इस पुस्तक में दस अध्याय लिखे है। जिसमें प्रस्तावना के साथ प्रारंभ होते यह हिंदी साहित्य पर लिखी गई बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें छठा और

सातवां अध्याय नोवेल्स बिटवीन 1930 एंड 1947 एंड आफ्टर इंडिपेंडेंस हैं। जिसमें उन्होंने कई उपन्यास कारों का जिक्र किया है। उपन्यास को समझाते हुए उन्होंने उसमें उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार के उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण किया है और पूरे पाठ को उन्होंने दशकों में विभाजित किया है और भाई अन्य उपन्यासकार हैं। जिनका वर्णन किया गया है। इसके पश्चात अध्याय सात में उन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात होने वाले उपन्यासों में परिवर्तन को लिखा है। इसको भी उन्होंने 1970 तक तीन दशकों में विभाजित किया है और इस पाठ को चार भागों में विभाजित किया है।

अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय

शोध प्रबंध में उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण के इतिहास को देखते हुए प्रथम अध्याय में उपन्यास के अर्थ को समझते हुए उपन्यास की विषय वस्तु पर चर्चा की है। उपन्यास के संदर्भ में अनेक विचारको के विचारों को प्रस्तुत किया है। उपन्यासों के प्रकार में नारी चित्रण के महत्व को समझा है इतिहास और साहित्य के संबंध की चर्चा है और उपन्यासों के मुख्य तत्व को बताया गया है।

द्वितीय अध्याय

शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में नारी चित्रण की पृष्ठभूमि को समझना है। भारत को 19वीं शताब्दी में मदर कल्ट से जोड़ा जाने लगा। भारत माता के रूप में भारत को उद्घोषित किया जाने लगा नारी को भारत की बेटी के रूप में जोड़ा गया, तो कभी भारत माता के रूप में संबोधित किया गया। परंतु पितृसत्ता की छाया अभी भी राष्ट्रीय जागरण पर बनी हुई थी। पुरुष अपने को राष्ट्र व समाज और नारी का उद्धार कर्ता समझता था। समाज में नारी की स्थिति को पितृसत्तात्मक दृष्टि से अधिक देखा जाता था।

प्रारंभिक समय से आधुनिक समय तक नारी की स्थिति पर चर्चा की है और नारी के प्रति होने वाले सुधार आंदोलनों को भी रखा है। स्वतंत्रता पूर्व उपन्यास साहित्य में नारी के चित्रण को समझने के लिए 3 चरणों में पाठ को विभाजित किया है। प्रथम चरण 1882 से 1918 तक द्वितीय चरण 1918 से 1936 और तृतीय चरण 1936 से 1950 तक वर्णित है।

तृतीय अध्याय

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में 1950 के पश्चात उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण को रखा है। 1950 से पूर्व नारी चित्रण हम दितीय पाठ में कर चुके हैं इसलिए तृतीय पाठ को 1950 से 2000 तक पांच दशकों में विभाजित किया है जिसमें हर दशक में एक नारी उपन्यासकार के एक अति विशिष्ट उपन्यास में नारी चित्रण की चर्चा की है जो कि पूरी तरह से नारी प्रधान उपन्यास है उसमें नारी चित्रण और उसकी कहानी को अपने शब्दों द्वारा स्पष्ट किया है। हिंदी उपन्यास साहित्य आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कर रहा है। जिसमें महिला लेखन एक महत्वपूर्ण और अपनी

पहचान बनकर सामने आया है। हिंदी उपन्यास में महिला लेखन ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। स्वतंत्रता के बाद भारत की परिस्थितियों ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जगाया है।

चतुर्थ अध्याय

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में 1950 के पश्चात उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण को रखा है। स्वतंत्रता के पश्चात कई उपन्यास व्यक्ति विषयक उपन्यासों की नई शुरुआत के साथ लिखे गए। बाहरी जीवन के साथ–साथ उपन्यास कारों ने अंतर्मुखी व्यक्तित्व को भी उभारना प्रारंभ किया। नर और नारी के प्रति अपने विचारों को खुले रूप से उन्होंने अपने उपन्यासों में जगह दी। पिछले अध्याय में नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों को स्पष्ट किया था इस अध्याय में पुरुष उपन्यासकारों द्वारा रचित नारी उपन्यासों को स्पष्ट करेंगे। 1950 से 2000 तक पांच दशकों में विभाजित किया है जिसमें हर दशक में एक पुरुष उपन्यासकार के एक अति विशिष्ट उपन्यास में नारी चित्रण की चर्चा की है जिसमें एक उपन्यास जो कि नारी प्रधान उपन्यास है उसको और अधिक सूक्षमता पूर्वक वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय

शोध प्रबंध के पंचम अध्याय में उपन्यास के सर्व प्रमुख तत्व पात्र पर चर्चा की है जिसमें नारी पात्र महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आ रहे हैं आधुनिक समय आते आते हिंदी उपन्यासों में मनोविज्ञान का प्रभाव चरित्र और चित्रात्मक में भी देखने को मिलता है। स्त्री चित्रण हिंदी उपन्यासों में लगभग परंपरागत प्रभाव का ही मिलता है स्त्री पात्रों की रचना उन श्रेणियों में की गई है जिसमें संवेदनशील त्याग करने वाली उदार और सदैव अपने प्यार पर अटल रहने वाली जैसे शरतचंद्र के उपन्यासों की नायिका। उपन्यासकारों के उपन्यासों में महत्वपूर्ण नारी पात्रों जिसमें पुत्री, मां, पत्नी, प्रेमिका आदि रूपों को स्पष्ट किया है। नारी के विभिन्न बदलते स्वरूपों की चर्चा की है एवं समकालीन उपन्यासकारों द्वारा उपन्यासों में नारी चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है।

उपसंहार

उपसंहार में प्रस्तुत अध्ययन उपसंहार में शोध प्रबंध में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों को संक्षेप में समाहित किया गया है। उपन्यास में हम मानव चरित्र का अध्ययन करते हैं। प्रारंभिक उपन्यासो ंमें चरित्र चित्रण को कोई विशेष महत्व नहीं था। परतुं धीरे धीरे उपन्यास मानव जीवन के अध्ययन की ओर उन्मुख हुआ और आधुनिक उपन्यास में सबसे मुख्य विषय मानव चरित्र का अध्ययन ही बन गया है। मानव के चरित्र का चित्रण करने के लिए उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं और मानव के अंतर्मन को समझ कर अपने उपन्यासो ंकी रचना करते हैं। मानव जीवन को अपने उपन्यासो ंमें महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने के पश्चात कुछ उपन्यासकारो ंका ध्यान नारी जाति की समस्याओ ंपर पड़ा और उसकी सामाजिक स्थिति पर, जिसके कारण उन्होनं`अपन`उपन्यासो ंमे ंनारी का चित्रण प्रारभं किया। नारी से संबंधित उपन्यास प्रारंभिक समय से ही चले आ रहे थे परतुं धीरे–धीरे नारी के चित्रण में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है।

अध्याय द्वितीय

नारी चित्रण की पृष्ठभूमि

अध्याय द्वितीय

नारी चित्रण की पृष्ठभूमि

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में,

"स्त्रियों की पूजा करके ही सब जातियां बड़ी होती है। जिस देश में जिस जाति में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वह देश, वह जाति, कभी बड़ी नहीं हो सकी। और ना हो सकेगी। तुम्हारी जाति का जो इतना अधःपतन हुआ है। उसका प्रधान कारण है, इन्हीं सब शक्ति मूर्तियों की अवमानना।"[1]

आदिकाल से ही नारी को प्रकृति का सुंदर उपहार माना गया है। नारी में सृष्टि के निर्माण और संचालन करने की शक्ति है और उसे मानव जाति के विकास, उसकी सभ्यता और संस्कृति की उन्नति का मूल आधार माना जाता है। इस संसार के दो मूल तत्व नर और नारी हैं। जिनसे मिलकर ही इस संसार का उत्थान और संचालन हुआ है। नारी प्रेरणा का प्रतीक मानी गई है ,और पुरुष शक्ति का प्रतीक माना गया है।

प्राचीन समय में स्त्रियों की स्थिति

प्राचीन समय में नारी की स्थिति बहुत अच्छी थी। जैसा कि इतिहास में हमने पढ़ा है। कि सिंधु घाटी की सभ्यता में मातृशक्ति अथवा मातृदेवी की पूजा की जाती थी। मातृदेवी स्त्री का ही रूप थीं। और स्त्रियों की स्थिति सैंधव सभ्यता के दौरान पूजनीय होती थी और स्त्रियों को बराबरी का दर्जा प्राप्त था।

वैदिक काल

वैदिक काल में भी स्त्रियों की सम्मानजनक स्थिति थी। और वह पुरुषों के बराबर ही कार्यों में हिस्सा लेती थी। उन्हें पुरुषों के समान ही समझा जाता था। जोकि अर्धांगिनी शब्द से पूरी तरह से व्यक्त होता है। इसी प्रकार दंपत्ति शब्द से भी स्त्रियों की स्थिति का पता चलता है। प्राचीन काल में स्त्रियों की स्थिति बहुत उच्च स्तर की थी। भारत में स्त्री रूप को ही आदर्श माना जाता था।जैसे "विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का लक्ष्मी, में पराक्रम का महामाया में, सौंदर्य का रति में, पवित्रता का गंगा में, यहां तक कि भारत वासियों में परम शक्तिशाली देवी जगत जननी के रूप में भी देखा

[1]कमला जैन जीजी विशारद. नारी जीवन. श्री जवाहर साहित्य समिति बीकानेर. 1953. पृष्ठ संख्या 1

गया है।"[2] इससे यह पूरी तरह से स्पष्ट होता है कि वैदिक समय में स्त्रियों को पवित्रता की देवी ही माना जाता था। कुरीतियों का अभाव था। उस समय स्त्रियों में पर्दे की प्रथा भी नहीं थी।

"सुमङ्गलिरिर्थ वधुरीमाँ समेत पश्यत"[3]

अर्थात सौभाग्य शालिनी वधु को सब लोग आकर देखो। इस मंत्र से यह पूरी तरह से स्पष्ट होता है कि उस समय पर्दा प्रथा नहीं थी।

वैदिक काल में स्त्रियां उच्च शिक्षा भी ग्रहण करती थी, वेदों और मंत्रों का उच्चारण करती थी। वैदिक काल में बाल विवाह भी नहीं होता था। कन्याओं को पूर्ण शिक्षा दी जाती थी। बालकों के समान ही कन्याओं के भी नियम और कानून थे। वैदिक काल में स्त्रियों का चतुर्मुखी विकास हुआ है। कई महत्वपूर्ण स्त्रियों के नाम वैदिक साहित्य में उच्च स्थान पर हैं। जिसमें एक नाम सुलभा का था उसका संकल्प था कि जो भी उसको शास्त्रार्थ में परास्त करेगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। लोपामुद्रा, श्रद्धा इत्यादि ऋषिकाएँ थी, जिन्होंने वेदों में अपने साक्षात्कार दिए हैं। एक नाम गार्गी और मैत्रेयि का भी आता है। बृहदारण्यक में याज्ञवल्क्य और मैत्रेयि का संवाद है और कई महत्वपूर्ण स्त्रियां जो कि शिक्षित और सम्माननीय स्थिति में वैदिक काल में रही हैं जो हर क्षेत्र में पुरुषों के समान ही समझी जाती थी।[4] महाभारत के कथनानुसार "घर घर नहीं जब तक उस घर में पत्नी नहीं"।[5]

ऋग्वैदिक समाज में नारी की स्थिति सभी प्रकार से समुन्नत थी,क्यूंकि इस समय आध्यात्मिक जीवन का लक्ष्य आनंद स्वरूप था। परंतु "उत्तर वैदिक काल में ऋषि महर्षि आनंद की अपेक्षा तप को अत्यधिक महत्व देने लगे और इस समय स्त्री सहयोगिनी न होकर बाधा समझी जाने लगी"।[6]

भारतीय साहित्य ने समाज में महिलाओं की स्थिति के बारे में विवादास्पद बयान दिया मनु धर्म शास्त्र का कहना है कि महिलाओं को स्वतंत्रता नहीं दी जानी चाहिए, उन्हें जीवन के हर चरण में पुरुषों के नियंत्रण में रखा जाएगा।[7]

---

[2]चंद्रावती लखनपाल. स्त्रियों की स्थिति. गंगा ग्रंथागार लखनऊ.1990. पृष्ठ संख्या दो

[3]वही पृष्ठ संख्या 3

[4]वही पृष्ठ संख्या7

[5]एस एम चांद, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, स्टूडेंट बुक कंपनी जयपुर, 1986, पृष्ठ संख्या 70

[6]देवेश ठाकुर, प्रसाद के नारी चरित्र, राजकमल प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली 6, 1945, पृष्ठ संख्या 32

[7]मीना आनंद दलित विमेन फियर एंड डिस्क्रिमिनेशन ईशा बुक्स दिल्ली 2005 पृष्ठ संख्या 109

परवर्ती काल में नारी की स्थिति

परवर्ती काल में नारी की स्थिति में कुछ सुधार देखा गया है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार भगवान बुद्ध ने स्त्री जाति के उद्धार के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया था। परंतु फिर भी समाज में नारी की स्थिति उतनी अच्छी नहीं हो पाई थी, जिस प्रकार से ऋगवेद समाज में थी। भगवान बुद्ध ने बौद्ध धर्म में कई नारियों को दीक्षित किया और उनकी स्थिति को उजागर किया और जैन साहित्य में भी नारी की स्थिति को सुधारने के लिए और उसके पद को बढ़ाने के लिए बौद्ध धर्म के ही समान अपने धर्म में भी में कार्य किया गया।

मध्य युग

मध्ययुग आते आते नारी कमजोर निर्बल पराधीन और निरुपाय हो गई थी। नए आदर्शों ने अपने पैर जमा लिए थे और पुरुषों का अधिकार क्षेत्र बहुत बढ़ गया था। स्त्रियों की स्थिति जो कि वैदिक समय में थी वह अधिक समय तक कायम न रह सकी। वैदिक काल में स्त्रियों को जिस उच्च और पवित्र स्थान पर बैठा रखा था, अब धीरे–धीरे उनकी स्थिति शिथिल पड़ने लगी थी। उस समय स्त्रियों को देवी का दर्जा दिया जाता था, परंतु धीरे–धीरे स्थिति ने विपरीत दिशा में कदम रखा और पुरुष ने अपने आप को शक्तिशाली रूप में प्रस्तुत करना प्रारंभ कर दिया। कई तरह के सामाजिक बंधन नारी पर लगा दिए गए। उनके अधिकारों को छीन लिया गया। उनकी स्वतंत्रता और स्वतंत्र रूप से विचार व्यक्त करने की शक्ति भी धीरे–धीरे कानूनों के बंधन से बंध गई। पुरुष मानसिकता ने एक नया आयाम बनाया। जिसमें स्त्रियों को स्वतंत्रता ना देने के पक्ष में और उन्हें हमेशा अपने वश में ही रखने के नियम कानून थे। मध्य युग में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट प्रारंभ हो गई थी उन्हें पुरुषों के समान अधिकार नहीं दिए जाते थे। किंतु इतना सब कुछ होते हुए भी मीराबाई, नूरजहां, रानी दुर्गावती, चांदबीबी आदि जैसी प्रतिभाशाली नारियों के उदाहरण हमें प्राप्त होते हैं। तत्कालीन समाज में नारियों के चरित्र के विषय में हमें 17 वीं शताब्दी में आए हुए पाश्चात्य यात्रियों से भी जानकारी प्राप्त होती है। सम्राट अकबर और जहांगीर ने भी हिंदू स्त्रियों के सदाचार की बहुत बहुत प्रशंसा की थी।[8]

आधुनिक समाज

प्रारम्भ से ही नारी अपनी पहचान बनाने के लिए समाज में लड़ती रही है। युगों युगों से चली आ रही इस रीति के विरोध में नारी ह्रदय में एक आक्रोश उत्पन्न हो रहा है और पुरुष प्रधान समाज में उनके द्वारा बनाए गए आचार

The Indian literature given controversial statement regarding the status of women in society. Manu Dharma Shastra says women should not be given freedom, she would be kept under the control of men at every stage of life.

[8]एस एम चांद, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, स्टूडेंट बुक कंपनी जयपुर, 1986, पृष्ठ संख्या 71

संघिता का उन्होंने विरोध करना प्रारंभ कर दिया है। आधुनिक विचारधारा से संपन्न भारतीय नारी का समाज में अब स्वतंत्र अस्तित्व दिखाई देने लग गया है। क्योंकि अब जीवन की सफलता स्त्री और पुरुष के पारस्परिक सामंजस्य और एक साथ कार्य करने से ही दिखाई देती है। स्त्री आज सजग है, स्वतंत्र है और उसके चेहरे पर एक तेज नजर आता है। नारी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, साहित्य, अपनी कार्यकुशलता और बुद्धिमता से इन क्षेत्रों पर अधिकार करने के लिए तत्पर प्रयासरत है, और जागरूक समाज ने भी स्त्री को पुरुषों के समकक्ष सहकार्य और आगे बढ़ने के लिए आदरणीय स्थान प्रदान किया है। आधुनिक समाज में स्त्रियों ने अपनी पहचान बनाने के लिए एक क्रांतिकारी मोड़ लिया है। इसमें नारी जागरण, नारी आंदोलन, वैज्ञानिक आविष्कार, संविधान में प्राप्त अधिकार, और पाश्चात्य विचार धाराएं मुख्य भूमिका में नजर आती है। नए मूल्यों को अपनाते हुए पुराने मूल्यों के विरोध में नारी ने अपनी आवाज को तेज किया है। परंतु कहीं ना कहीं पुरानी भावनाओं को वह पूरी तरह से ठुकरा नहीं पाई है। और ना ही पाश्चात्य सभ्यता और आधुनिक विचारों को पूरी तरह से अपना पाई है। आधुनिक विचारधारा और प्राचीन विचारधाराओं के बीच में उसका अंतर्द्वंद हमेशा चलता रहता है और अब भी उसकी स्थिति शोचनीय बनी हुई है। स्त्री घर, बाहर कार्य करते हुए भी अपने पारिवारिक दायित्वों और जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी से निभा रही है।

भारतीय समाज और अंतरराष्ट्रीय समाज में होने वाले परिवर्तन को नारी ने अपने ह्रदय में भी जगह दी है और उन स्थितियों में जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है, तो भारतीय नारी क्यों नहीं चल सकती है। संविधान में नारी को कई अधिकारों से सुसज्जित किया गया है। आधुनिक समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उन्हें कई प्राचीन मूल्यों से लड़ना होगा, कई प्रकार के शोषण से मुक्ति प्राप्त करनी होगी, और नए स्तर पर आगे बढ़ने के लिए कई मूल्यों को बदलना भी होगा। स्त्रियों के लिए शिक्षा अनिवार्य होगी। शिक्षित नारी समाज को शिक्षा की ओर ले जाने के लिए अग्रसर होगी। प्राचीन समय में पुरुष द्वारा बनाए गए रीति–रिवाजों की कठोरता से वह कमजोर नहीं ,बल्कि और कठोर बन गई है और साथ ही प्रतिद्वंदी भी बन गई है।

भारत को 19वीं शताब्दी में मदर कल्ट से जोड़ा जाने लगा। भारत माता के रूप में भारत को उद्घोषित किया जाने लगा नारी को भारत की बेटी के रूप में जोड़ा गया, तो कभी भारत माता के रूप में संबोधित किया गया। परंतु पितृसत्ता की छाया अभी भी राष्ट्रीय जागरण पर बनी हुई थी। पुरुष अपने को राष्ट्र व समाज और नारी का उद्धार कर्ता समझता था। समाज में नारी की स्थिति को पितृसत्तात्मक दृष्टि से अधिक देखा जाता था। नारी की स्थिति एक आजाद नागरिक के रूप में बहुत कमजोर थी। हिंदी उपन्यास साहित्य में भी पितृसत्ता का दबदबा अधिक था। जबकि सुधारवाद

का ज्यादा असर नहीं दिखा। हम महादेवी वर्मा जी की कहानी श्रंखला की कड़ियां को एक गहरी दृष्टि से देखते हैं क्योंकि उन्होंने लैंगिक वर्चस्व को राष्ट्रवाद में चुनौती दी थी।[9]

नारी के प्रति सुधार आंदोलन

समाज में नारी के प्रति हो रहे व्यवहार के कारण नारी अपना वास्तविक अस्तित्व ही भूल गई थी। पुरुषों के अत्याचारों से नारी त्रस्त हो गई थी। विधवाओं के लिए समाज में कोई स्थान नहीं रह गया था। बालिकाओं को भी कुदृ ष्टि से देखा जाता था और सामाजिक कुरीतियों ने समाज में अपना घर बना लिया था। जिस में दहेज प्रथा, कन्या शिशु हत्या, सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, इत्यादि फैल गई थी। इन्ही सब कुरीतियों को दूर करने के लिए समाज के कुछ सुधारकों ने आवाज उठाना प्रारंभ किया। जिसके कारण नारी की स्थिति में सुधार होने लग गया था।

नव जागरण युग के साथ साथ समाज में फैली अव्यवस्था के लिए नए आंदोलन भी प्रारंभ हो गए थे। भारतीय समाज पाश्चात्य शिक्षा के संपर्क में आ रहा था। जिस के कारण राजाराम मोहन राय, महर्षि दयानंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, ईश्वर चंद्र विद्या सागर, और कई समाज सुधारकों द्वारा नारी की स्थिति को सुधारने के लिए आंदोलन किए जाने लगे। बीसवीं शताब्दी तक आते–आते राष्ट्रीय आंदोलन के कई बड़े नेताओं ने जैसे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय ने पथ प्रदर्शन किया।

ब्रह्म समाज

भारतीय समाज में कई प्रकार की कुरीतियां पनप रही थी। जिनमें सती प्रथा एक महत्वपूर्ण कुरीति थी। जिसमें पति की मृत्यु के पश्चात नारी को भी उसके साथ ही सती हो जाने के लिए विवश किया जाता था। इस कुरीति में नारी के मन को बिल्कुल भी महत्व नहीं दिया जाता था। उसकी इच्छा के विरुद्ध भी उस पर सती होने के लिए दबाव डाला जाता था। राजा राममोहन राय द्वारा सर्वप्रथम इस विषय पर ध्यान दिया गया। और उन्होंने अपनी पत्रिका संवाद कौमुदी में नारियों की स्थिति में बदलाव लाने के लिए कई प्रभावशाली लेख लिखें। लॉर्ड विलियम बेंटिक जो कि तत्कालिक गवर्नर जनरल थे। उन पर सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने के लिए दबाव डाला और 1928 में सती प्रथा पर पूरी तरह से प्रतिबंध कानून लागू हो गया। राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज के द्वारा नारी शिक्षा, विधवा पुन र्विवाह, अंतर जातीय विवाह, बाल विवाह, आदि का भी पूरी तरह से विरोध प्रकट किया।

[9]शंभूनाथ. हिंदी उपन्यास राष्ट्र और हाशिया. वाणी प्रकाशन. 2016. पृष्ठ संख्या 227 228

प्रार्थना समाज

गोविंद महादेव रानाडे द्वारा प्रार्थना समाज ने नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिए बहुत सारे कार्य किए। इन्होंने विधवा विवाह, नारी शिक्षा, और बाल विवाह पर प्रतिबंध और नारियों के कल्याण के लिए कई विधवा आश्रमों को भी स्थापित किया। प्रार्थना समाज द्वारा नारी शिक्षा के लिए भी कई महिला संघ खोले गए। रानाडे ने मुख्यता नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया है।

आर्य समाज

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने कई समाज सुधार कार्य किए जिसमें अशिक्षा, मूर्तिपूजा, जातिभेद, छुआछूत, पर्दाप्रथा, पशु बलि आदि थे। आर्य समाज सुधार के साथ–साथ एक धर्म सुधार संस्था भी थी। स्वामी दयानंद सरस्वती के कार्यों द्वारा नारी जीवन के कल्याण के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। स्वामी दयानंद सरस्वती ने नारी को पर्दा प्रथा जैसी कुरीति से बाहर निकाला। और उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। नारी को वे सीता और सावित्री के समान ही समझते थे।

थियोसॉफिकल सोसायटी

थियोसोफिकल सोसायटी का भारत में मुख्य केंद्र मद्रास में था। भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी की बागडोर एक समृद्ध नारी एनी बेसेंट के प्रतिनिधित्व ने संभाली। वे एक विदेशी महिला थीं, परंतु उन्होंने भारतीय महिलाओं की प्रगति के लिए बहुत सारे कार्य किए। उन्होंने नारियों को पारंपरिक रूढ़ीवादी परंपराओं से बाहर निकल कर नए और वास्तविक आदर्शों में जीने का पाठ पढ़ाया। और आधुनिक विचार धारा को जागृत किया।

रामकृष्ण मिशन

स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन ने सामाजिक सेवा को अधिक महत्व दिया। उन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन पुरजोर से किया। उनका विश्वास था, एक शिक्षित नारी अपनी हर समस्या का हल स्वयं निकाल सकती है। और अपनी स्थिति को समाज में स्वयं ही सुधार सकती है। इसलिए उसे शिक्षित होकर ज्ञान अर्जित करना चाहिए। और क्या अच्छा और क्या बुरा है, उसका फर्क समझना चाहिए। विवेकानंद जी ने प्राचीन परंपराओं और प्राचीन विचारधाराओं का विरोध किया । और आधुनिक समाज में नारी को अपने बल खड़े होने पर जोर दिया।

इसी प्रकार कुछ और सामाजिक सुधार समितियां थी, जिन्होंने नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिए कार्य किए। जैसे भारत सेवक समाज जो कि गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा स्थापित हुआ था, सेवा सदन जी के देवधर के नेतृत्व

में कार्य करती थी। इसमें नारी के विकास में बाधक सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया और आर्थिक जीवन में भी नया पाठ जोड़ा।

अन्य समाज सुधारकों में भी ईश्वरचंद्र विद्यासागर, जिन्होंने नारी शिक्षा, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, के लिए कार्य किया। इन्होंने अपने घर से ही समाज को उदाहरण देना प्रारंभ किया। इन्होंने अपनी हर बेटी को शिक्षित किया और उनका विवाह 16 वर्ष की उम्र के पश्चात ही किया। और एक सब से बड़ी और महत्वपूर्ण कड़ी इन्होंने अपने पुत्र का विवाह एक विधवा नारी से किया। ताकि समाज में वह विधवा पुनर्विवाह के लिए लोगों को जागरूक कर सके और प्रेरणा प्रदान कर सकें। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने लोगों की कटुता के बावजूद विधवा पुनर्विवाह की वकालत की। उनके प्रयासों से 1855 और 1860 के बीच 25 विधवा पुनर्विवाह हुए। ईश्वर चंद जी ने 1850 में बाल विवाह का भी विरोध किया। उन्होंने नारी शिक्षा को भी प्रोत्साहन दिया उन्होंने 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना की। जिनमें से कई को उन्होंने अपने खर्च से चलाया। बेथुन स्कूल की स्थापना 1849 में कोलकाता में हुई वह नारी शिक्षा के लिए 19वीं शताब्दी में चलाए गए अपने शक्तिशाली आंदोलनों का पहला परिणाम था।[10] महर्षि डी के करवे का भी नाम नारी शिक्षा में एक महत्वपूर्ण नाम है। जिन्होंने प्रथम विश्वविद्यालय की नींव रखी थी और यह कन्या विद्यालय था।[11]

महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम स्त्रियों के अधिकारों को स्पष्ट किया। उन्होंने अपने राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्रियों से संबंधित सुधारों को प्रमुख अंग बनाया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को स्त्री शिक्षा के प्रसार और प्रचार के लिए प्रस्ताव भेजे बाल विवाह विरोध कानून बनवा कर समाप्ति के लिए जोर दिया। महात्मा गांधी ने नारी को जागृत किया और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिए भरपूर प्रोत्साहित किया इसके फलस्वरूप पहली बार नारी अपने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ी जिससे नारी के जीवन में नवीन चेतना का विकास हुआ और आगे चलकर यही चेतना उसकी प्रगति का आधार बनी।[12]

नारियों द्वारा चलाया गया सुधार आंदोलन

19 वीं शताब्दी में कई नारी सुधार आंदोलन हुए। यह आंदोलन ज्यादातर पुरुषों द्वारा ही चलाये गए थे। बीसवीं शताब्दी में इन आंदोलनों द्वारा सुधारवादी विचारधारा के परिणाम स्वरूप और नारी शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कारण कई नारियों में जागरूकता आई। जिसके कारण सुधारवादी परिवर्तन भी हुए। नारियों ने शिक्षा के द्वारा अपने

[10]बिपिन चंद्र आधुनिक भारत का इतिहास ओरियंट ब्लैकस्वान नई दिल्ली 2016 पृष्ठ संख्या 125

[11]श्रीमती उमेश माथुर. आधुनिक युग के हिंदी– लेखिकाएं. ऋषभ चरण जैन एंड सन दिल्ली. 1969. पृष्ठसंख्या 34

[12]एस एम चांद, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, स्टूडेंट बुक कंपनी जयपुर, 1986, पृष्ठ संख्या 72

अधिकारों को पहचानते हुए यह निर्णय लिया कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए स्वयं लड़ना होगा। बीसवीं शताब्दी में नारियों द्वारा अपने अधिकारों के लिए कई आंदोलन प्रस्तावित हुए।

इस काल में नारी संबंधी सुधार पश्चिम में हो चुके थे। समाज में स्त्री और पुरुष की समानता को प्रतिपादित किया जा रहा था। पश्चिम के नारी संबंधी सुधारों का असर भारत में पड़ना स्वाभाविक था। और भारत में कई महिलाओं जैसे श्रीमती मार्गरेट ई० कजिन्स, श्रीमती एनी बेसेंट, मार्गरेट नोबल, आदि ने नारी सुधार आंदोलन के मार्ग को प्रशस्त किया।[13]

मार्गरेट नोबेल

मार्गरेट नोबेल ने नारी को शिक्षा के लिए प्रेरित किया और उसका उद्देश्य सिर्फ शिक्षा ग्रहण करना ही न होकर के बल्कि, विदेशी साम्राज्य के कुटिल दृष्टिकोण को समझना था और उनका विरोध करना था। ऐसा ही एक नाम पंडिता रमाबाई का है, जिन्होंने विधवा नारियों की स्थिति में सुधार के लिए आंदोलन प्रस्तावित किया। उन्होंने वृंदावन के मंदिरों से नारी की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया। और उनके लिए शारदा सदन तथा मुक्ति सदन जैसी संस्था की स्थापना करी। जिसके द्वारा अन्य नारी सुधार भी किये गए।

एनी बेसेंट

एनी बेसेंट जो कि एक विदेशी महिला थी। उन्होंने भारत में होम रूल लीग की स्थापना करी। और स्त्री पुरुष के समान अधिकारों के लिए आवाज उठाई। इन्होंने मार्गरेट कजिन्स के सहयोग से विमेंस इंडियन एसोसिएशन की स्थापना करी। जो कि एक नारी सुधार संगठन था जिसके द्वारा नारियों की स्थिति बदलने के लिए कई सुधार किए गए।

सरोजनी नायडू

नारी सुधार आंदोलन में सरोजिनी नायडू का एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कई कुप्रथायें जैसे बाल विवाह और पर्दा प्रथा के प्रति अपना विरोध प्रकट किया है। और उन्होंने स्त्री पुरुष के समान अधिकारों को लेकर के अपनी आवाज को बुलंद किया है। उन्होंने कहा था कि मैं उस जाति की वंशजा हूं, जिसकी माताओं के समक्ष सीता की पवित्रता, सावित्री के साहस, और दमयंती के विश्वास, का आदर्श है।[14] सरोजिनी नायडू जिन्होंने 1927 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन स्थापित किया और उसमें भारतीय महिलाओं के अधिकारों के लिए

[13]उमेश माथुर, आधुनिक युग के हिंदी– लेखिकाएं, ऋषभ चरण जैन एंड सन दिल्ली, 1969, पृष्ठ संख्या 38

[14] वही.पृष्ठ संख्या 39

कार्य किया। इसके साथ–साथ उन्होंने भारतीय नारियों की शिक्षा के लिए भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाये है और नारी सुधार में हमेशा वे प्रयत्नशील रही हैं।

साहित्य में नारी

समाज में फैली कुरीतियां ज्यादातर नारी वर्ग से ही संबंधित थी, इसलिए इन समाज सुधारकों के प्रयास से नारी जागरण की लहर ही आ गई। वास्तविक समाज में इन कुरीतियों के खिलाफ समाज सुधारकों ने पहल करी और इसका प्रभाव साहित्य में भी देखने को मिला। लेखकों ने अपने उपन्यासों में नारी को एक विशेष स्थान देना प्रारंभ कर दिया। उसके साथ हो रहे अनुचित व्यवहार को भी उन्होंने खुलकर समाज के प्रति रखा। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में सामाजिक, नैतिक शिक्षा संबंधी तथा ऐतिहासिक उपन्यास लिखे जाने लगे। क्योंकि उस समय राष्ट्रीय भावना चरम पर थी। जिसके कारण उपन्यासों में भी उसकी छवि देखने को मिली। ज्यादातर उस समय के उपन्यास राष्ट्रप्रेम तथा सामाजिक सुधारों से ही प्रेरित होते थे।

साहित्य को समाज के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और समाज के दो महत्वपूर्ण स्तंभ स्त्री और पुरुष में से ही उसका जन्म होता हैं। नारी, पुरुषों की तुलना में भावनाओं से कोमल जरूर है, परन्तु वह मन से बहुत मजबूत है। अतः समाज का सूक्ष्म चित्रण करने वाले उपन्यासों में नारी का एक विशिष्ट स्थान होना स्वाभाविक है। उपन्यास में नारी चित्रण या नारी की स्थिति को लेकर के ही ज्यादातर इसलिए लेखन हुआ क्योंकि समाज में किसी महत्वपूर्ण अंग के साथ हो रही उपेक्षाओं को दृष्टिगत करना था। जबकि नारी महत्वपूर्ण होने के पश्चात भी समाज में एक उपेक्षित स्थान रखती है। नारी जोकि ईश्वर का बनाया हुआ सबसे खूबसूरत उपहार है। उसके साथ दुर्व्यवहार हुआ है, इसलिए उपन्यासकारों ने अपने लेखन के द्वारा समाज में हो रहे नारी के साथ दुर्व्यवहार को स्पष्ट किया है।

उपन्यास गद्य साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। इसमें भी नारी चित्रण होना स्वाभाविक सी बात है। प्रारंभ से अभी तक उपन्यास साहित्य में नारी के जीवन के विविध पक्षों का चित्रण किया जाता रहा है। उपन्यास के प्रारंभिक समय में नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। नारी को पुरुषों के मनोरंजन के साधन के रूप में ही तथा दासी के रूप में ही देखा जाता था। उपन्यास समाज का प्रतिबिंब है। उसमें कई प्रकार से जीवन के चित्रण के पहलू मिलते हैं। जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा, अनमेल विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह आदि विभिन्न कुरीतियों से ग्रसित आत्मसम्मान रहित शिक्षित नारी के ही अधिकतर चित्रण इन उपन्यासों में किए गए हैं। इस काल के उपन्यास कारों ने नारी के जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास नहीं किया। कई उपन्यासकार इसके अपवाद हैं। परंतु अधिकतर उपन्यास कारों ने नारी के

ऐतिहासिक रूप को ही प्रदर्शित किया है। अतः इस काल में नारी पुरुषों की कठपुतली के रूप में ही प्रदर्शित की गई है।[15]

2.1 हिंदी उपन्यास का प्रारंभिक काल 1882–1918 तक

हिंदी उपन्यास का प्रारंभिक काल 1882 से 1918 तक माना जाता है। इस काल में कुछ अपवादों को छोड़कर अन्य कोई विशेष लक्षण नहीं पाए जाते हैं। इसका एक कारण उस समय अंग्रेजों का भारत आगमन हो सकता है। उनके आगमन के साथ ही पाश्चात्य शिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति और पाश्चात्य सभ्यता का भी प्रचार धीरे–धीरे भारतीय समाज में हो रहा था। पाश्चात्य सभ्यता के प्रति भारतीय जनता आकर्षित हो रही थी। अतः अपनी पुरानी परंपराओं के प्रति उनके मन में अरुचि आ रही थी। एक प्रकार से उनके मन में अशांति बनी हुई थी। वे पाश्चात एवं भारतीय संस्कृति में से किसी को निश्चित रूप से स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। और इस स्थिति में एक उत्तम साहित्य का विकास होना भी असंभव ही था। इस काल के दौरान कई लेखकों ने दिशा दर्शन करने का कार्य प्रारंभ किया। परंतु अधिकतर लेखकों के उपन्यासों का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही रहा।

इस काल के उपन्यासों में दो समान लहरें प्रवाहित होती दिखाई देती है। प्रथम उपन्यासों में सामाजिक, नैतिक शिक्षा देने वाले और दूसरे उपन्यासों में मनोरंजन प्रधान कल्पना और प्रेम की प्रधानता मिलती है। इन दोनों प्रकार के उपन्यासों में नारी चित्रण किया गया है, जिसमें प्रथम में उसे आदर्श गुणों से भरपूर बताया गया है। और दूसरे में उसे उपभोग की वस्तु के रूप में चित्रित किया गया है। कथासरित्सागर, बेताल पच्चीसी, पंचतंत्र, आदि संस्कृत के कई उपदेश देने वाले ग्रंथों का पर्याप्त प्रभाव इस समय के उपन्यासों में परिलक्षित होता दिखाई देता है। जिसमें जीवन संबंधी कई आचार विचार व्यवहार के उपदेश मनुष्य को दिए गए हैं, जिसकी इस विशेषता नारी को आदर्श का पाठ पढ़ाया गया है।

एक साहित्यकार अपने साहित्य में अपनी अनुभूति से अपने भावों को प्रकट करता है और व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करता है। परंतु इस काल के उपन्यासकारों में जीवन के प्रति निजी दृष्टिकोण की कमी मिलती है। अतः उनका साहित्य उनके जीवन का आईना नहीं बन पाया। उपन्यास एक प्रबल साहित्यिक विधा के रूप में प्रारंभ हुआ था। इस काल के उपन्यासों में अधिकतर नारी को एक आदर्श रूप में ही प्रस्तुत होने के लिए उपदेश दिया जाता था। उसमें वह सारे गुण होने चाहिए जो एक आदर्श नारी के अंदर होते हैं। जैसे शिक्षित होना, बड़ों का आदर करना, परिश्रम करना, घर का पूरा ध्यान रखना, आर्थिक समझ होना, छोटो से स्नेह करना, बड़ों का आदर करना, आदि। अधिकतर

[15]डॉ रेवा कुलकर्णी. हिंदी के सामाजिक उपन्यास में नारी. चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर. 1994. प्रश्न संख्या 41

उपन्यासों की कथावस्तु नारी के प्रति ऐसी ही होती थी। भारतेंदु युग में ही हिंदी में आधुनिक ढंग के उपन्यासों का लिखना प्रारंभ हो चुका था। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने पूर्ण प्रकाश और चंद्रप्रभा नाम के दो सामाजिक उपन्यास लिखें इसमें नायिका चंद्रप्रभा का विवाह धुंडीराज नामक एक वृद्ध व्यक्ति से हो जाता है वृद्ध विवाह के दोष और कन्याओं की शिक्षा का समर्थन इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है। इस उपन्यास में भारतेंदु जी ने नारी जाति के नवीन अभ्युदय का संदेश दिया है और दीर्घकाल से चले आ रहे पुराने रीति रिवाजों का विरोध किया है।[16] पंडित श्रद्धा राम फुल्लौरी रचित 'भाग्यवती' 1877 में नारी के आदर्श रूप के साथ–साथ समाज में व्याप्त कुप्रथाओं का वर्णन भी किया गया है परंतु उनका निदान कैसे हो यह नहीं पता है। अंग्रेजी के नावेल के रूप में हिंदी का प्रथम उपन्यास 'परीक्षा गुरु' 1882 में लिखा गया था। उसके बाद भी अन्य उपन्यास लिखे गए। परंतु उन उपन्यासों में स्वतंत्र कल्पना पर कम ही उपन्यास लिखे गए अधिकतर उपन्यासों में अनुवाद की प्रवृत्ति ही पाई गई थी। बांग्ला साहित्य में लिखे गए उपन्यासों से प्रेरणा प्राप्त करके आधुनिक हिंदी के जनक भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र ने भी उपन्यास साहित्य की तरह पदार्पण किया। और उन्होंने पूर्ण प्रकाश और चंद्रप्रभा नाम का एक उपन्यास लिखा। यद्यपि यह उपन्यास मराठी भाषा में लिखा गया उपन्यास का अनुवादित रूप था। उपन्यास ने भारतीय सामाजिक समस्याएं और उनके हल को ढूंढने के लिए लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। भारतेंदु जी ने अपने समकालीन लेखकों को उपन्यास विधा की ओर प्रोत्साहित किया जिसके कारण अधिकतर लेख बांग्ला भाषा में लिखे गए।

उपन्यासकार उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद करने में लग गए। हिंदी में अंग्रेजी ढंग से लिखा गया प्रथम मौलिक उपन्यास, लाला श्रीनिवास दास द्वारा लिखित 1882 'परीक्षा गुरु' को माना जाता है। इस में पतिव्रता पत्नी के आदर्शों का ही चित्रण किया गया है। इस उपन्यास पात्र मदन मोहन की पत्नी सुशीला उसके गलत काम की वजह से बहुत दुखी रहती थी। पर उससे कभी नाराज नहीं होती थी,उसका कभी उसने विरोध नहीं किया। बल्कि उसको सुधारने के लिए दिन रात मेहनत करती थी। पति को उसकी कुसंगति से मुक्त कराना चाहती थी। अंततः उसकी मेहनत रंग लाती है और वह अपने पति की स्थिति सुधारने में कामयाब हो जाती हैं। इस प्रकार के उपन्यासों का लिखा जाना उस काल में आम था। इस उपन्यास में नवजागरण का संदेश है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में मध्यवर्गीय जीवन और उसकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण है। इसके प्रभाव से अनेक सामाजिक और नैतिक उपन्यास लिखना प्रारंभ हुए।

उपन्यास के प्रारंभिक काल में ऐसे कम ही उपन्यास थे, जिनके पात्र साहित्य में अमर हो गए। इस काल में नारी पात्रों का सशक्त व्यक्तित्व चित्रण नहीं प्राप्त किया गया है। नारी का व्यक्तित्व खुलकर नहीं बल्कि दबा कुचला व्यक्त होता है। नारी के व्यक्तित्व और चरित्र को स्वाभाविक निखार देने में उपन्यासकार असमर्थ है। प्रारंभ में संस्कृत का हिंदी

[16]हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ संख्या 219

उपन्यास में बहुत प्रभाव पड़ा था और अधिकतर उपन्यास उपदेश प्रवृत्ति के ही लिखे जाते थे। जिसमें नारी को एक आदर्श रूप द्वारा ही चित्रित किया गया था। इसमें कई मनोरंजन के लिए भी उपन्यास लिखे गए जिसमें नारी के बाह्य सौंदर्य का ही सिर्फ चित्रण किया गया। प्रारंभिक उपन्यास साहित्य ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। क्योंकि यहीं से हिंदी उपन्यास की यात्रा प्रारंभ हुई थी, हिंदी उपन्यास की नींव यहीं से प्राप्त होती है इसी पर आगे चलकर प्रेमचंद्र और समकालीन उपन्यास कारों ने एक विशाल प्रासाद बनाया और आने वाले युग की भूमिका को तैयार किया। इस काल में कुछ अन्य उपन्यास भी लिखे गए पंडित बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी 1886 में सौ अजान और एक सुजान 1892 में, रत्नचंद प्लीडर का नूतन चरित्र, मेहता लज्जाराम शर्मा का स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी 1899,किशोरी लाल गोस्वामी के त्रिवेणी 1889, ह्रदय हरणी 1890, सुख शर्वरी 1891।

उस काल में इस प्रकार के उपन्यास लिखने का महत्वपूर्ण कारण यह हो सकता है कि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आकर भारतीय अपनी प्राचीन संस्कृति को भूल रहे थे। जिसके कारण लोगों के मन में अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति आदर की भावना को वापस लाने के लिए नैतिक उपन्यास लिखना प्रारम्भ हुआ। और पौराणिक आदर्शों को लेकर उपन्यास लिखना महत्वपूर्ण माना जाने लगा दूसरी बात यह थी कि समाज बँट रहा था समाज को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए परिवार को बांधे रखना बहुत ही आवश्यक हो गया था। क्योंकि परिवार समाज की सबसे पहली इकाई होती है और परिवार की व्यवस्था नारी पर ही निर्भर करती है। अतः इस समाज को बनाए रखने के लिए उपन्यासों के द्वारा नारी को परिवार के प्रति उसके कर्तव्य का उपदेश दिया जाना में मुख्य उद्देश्य था।

महिला उपन्यासकार

हिंदी उपन्यासों में नारी लेखन का अभाव आरंभिक काल में देखने को मिलता है। इस काल में बंगला साहित्य बहुत ही समृद्ध था। तथा हिंदी भाषा में उन बंगला उपन्यासों का अनुवाद करने के लिए नारी उपन्यासकारों ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया।

प्रारंभिक नारी उपन्यासकारों में मल्लिका जी का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। मल्लिका जी भारतेंदु जी की प्रेरणा थी। मल्लिका जी स्वयं एक कुशल रचनाकार थी। उन्होंने तीन उपन्यास कुमुदिनी, पूर्ण प्रकाश और पारस्य लिखे थे। जिसके कुछ अंश कथादेश 2007 में और कादंबिनी में भी प्रकाशित हुए थे। भारतेंदु जी के निधन के पश्चात मल्लिका जी काशी छोड़कर वृंदावन चली गई थी। उसके बाद उनके बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। मल्लिका जी का उपन्यास कुमुदिनी स्त्री विमर्श में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।[17]

17नीरजा माधव. हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास. सामायिक बुक्स नई दिल्ली. 2014. पृष्ठ संख्या25

प्रियंवदा देवी का उपन्यास लक्ष्मी 1907 में प्रकाशित हुआ, कुंती देवी का उपन्यास पार्वती 1909 में प्रकाशित हुआ, यशोदा देवी का उपन्यास सच्चा पति प्रेम 1911 में प्रकाशित हुआ, हेमंत कुमारी चौधरी का उपन्यास आदर्श माता 1912 में प्रकाशित हुआ, ब्रम्हकुमारी भगवान देवी दुबे का उपन्यास सौंदर्य कुमारी 1914 में प्रकाशित हुआ और श्रीमती कुमुद बाला देवी का उपन्यास सदाचार 1917 में प्रकाशित हुआ। इन उपन्यासों का मुख्य विषय परंपरागत नारी के व्यक्तित्व को बताना, पतिव्रत पूरा करते हुए गृह कार्य में कुशलता, आदर्श पत्नी और आदर्श माता के रूप में प्रस्तुत करना, परंपरागत आदर्शों को मानते हुए शिष्टाचार और सदाचार का पालन करना यह सारे मुख्य विषय होते थे।

2.2 हिंदी उपन्यास का द्वितीयकाल 1918–1936 तक

अब तक समाज ने स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्रदान नहीं किया था। नारियों को घर से बाहर निकल कर पढ़ने की इजाजत नहीं थी। उन्हें अपने दृष्टिकोण का विस्तार करने का भी अधिकार नहीं था। भारतीय नारी की शिक्षा को सामाजिक प्रगति के रास्ते में रोड़ा समझा जाता था। अंग्रेजों ने स्त्री विषयक दृष्टिकोण से समाज को प्रभावित किया। समाज सुधारकों ने नारी जाति और नारी शिक्षा पर पुरजोर बल दिया। नारी के उद्धार के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया जाने लगा। खुद स्त्री भी इस संकुचित दायरे से बाहर निकलने के लिए तड़प रही थी और शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही थी। ऐसा नहीं है कि इतिहास में नारी को शिक्षा का अधिकार नहीं था। बल्कि प्राचीन काल में तो नारी को शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाता था। इस प्रकार मैत्रेई, गार्गी, लोपामुद्रा, आदि नारियों का उल्लेख हमें मिलता है। परंतु विदेशी आक्रमणों के कारण खुद को असुरक्षित समझने के कारण ही महिलाओं का घर से बाहर निकलना बंद कर दिया गया। तथा शिक्षा का अभाव होने लगा, परन्तु नारी के मानसिक और बौद्धिक विकास और उसके के गुणों में निखार लाने के लिए सामाजिक सुधारकों ने शिक्षा को आवश्यक माना है। भारतीय संस्कार एवं शिक्षा का अनूठा मेल भारतीय उपन्यास कारों ने भी प्रस्तुत किया है।

उपन्यास विदा में प्रताप नारायण श्रीवास्तव जी की नायिका चकला कहती है "शिक्षित नारियों में तो अभिमान और गर्व कम हो जाना चाहिए। उनमें वह दुर्गुण कदापि नहीं रहना चाहिए, जिसके लिए मूर्ख स्त्रियां बदनाम हैं। सहनशीलता, भक्ति सेवा, सत्कार प्रेम, स्नेह शील और सौजन्य स्त्री के भूषण हैं। जो स्त्री इन गुणों से वंचित है। वह चाहे जितनी शिक्षित हो स्त्री समाज का कलंक है। शिक्षा बुद्धि को उज्जवल करती है। शिक्षा से अभिमान ना होना चाहिए, बल्कि उसका नाश होना चाहिए। श्वेत रंगों में सातों रंग होते हैं इसी प्रकार शिक्षित स्त्री में सब गुण होते हैं।"[18]

---

[18]प्रताप नारायण श्रीवास्तव, विदा, 1938, पृष्ठ संख्या 318– 319

इन उपन्यासों से प्रभावित होकर समकालीन उपन्यासकारों ने भी सामाजिक समस्याओं पर उपन्यासों को लिखना प्रारंभ किया। इस युग के उपन्यासों की मुख्य विषयवस्तु सामाजिक समस्याएं थी। जिसका बहुत बड़ा भाग नारी जीवन के विषयों और उनकी विषमताओं से संबंधित था। उस समय की सामाजिक समस्याएं जिनसे प्रारंभिक उपन्यास भी पूर्व परिचित था। जैसे विधवा विवाह, वेश्याव्यवसाय, दहेज प्रथा, बाल विवाह, आदि इन समस्याओं को एक विस्तृत रूप उस समय के उपन्यासकारों ने प्रदान किया।

मुंशी प्रेमचंद्र

हिंदी साहित्य के दूसरे पड़ाव में एक महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद्र जी का आगमन हुआ और उन्होंने बहुत से उपन्यासों को रचा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में उपन्यासों का जो रूप हमें देखने को मिलता है उसमें अधिकतर सौंदर्य और रुमानियत को ही प्रस्तुत किया जाता था। परंतु मुंशी प्रेमचंद्र जी ने लेखनकी इस धरा को रोकते हुए अपने लेखन में नारी का जो रूप प्रस्तुत किया वह अत्यधिक महत्वपूर्ण था उन्होंने अपने लेखन में नारी को मुख्य भूमिका प्रदान की समाज में उसके स्थान को बताया और एक नई प्रतिमा प्रस्तुत की।[19]

जिसमें उनके उपन्यास जैसे सेवा सदन से लेकर गोदान तक आते आते उनके विचारों ने भारतीय समाज में एक क्रांति सी ला दी। मुंशी प्रेमचंद जी ने साहित्य में जीवन के यथार्थ की अनुभूति के साथ साथ उसके संबंधों को भी रचा। जिससे आधुनिक भारतीय नारी के व्यक्तित्व का तेजी से विकास हुआ। रामदरश मिश्र द्वारा कहा गया था कि "प्रेमचंद्र ने पहली बार इस सत्य को पहचाना कि उपन्यास सोद्देश्य होने चाहिए। अर्थात उपन्यास या कोई भी साहित्यिक विद्या मनोरंजन के लिए नहीं होती। वरन वह मानव जीवन को शक्ति और सुंदरता प्रदान करने वाली सोद्देश्य रचना है।"[20]

दहेज प्रथा

मुंशी प्रेमचंद जी ने एक उपन्यास गोदान में दहेज प्रथा को लेकर के बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है। जिसमें होरी धनिया की लड़की सोना दहेज प्रथा का विरोध करती है। वह अपने पिता की आर्थिक स्थिति को अच्छी तरह से समझती है और वह नहीं चाहती कि उसका विवाह उस जगह हो जहां पर लोग दहेज मांगे। और उसके पिता कर्ज में फंस जाएं। वह निश्चय करती है कि वह उस घर में विवाह नहीं करेगी। मुंशी प्रेमचंद जी के एक अन्य उपन्यास सेवा सदन में दहेज प्रथा का दुष्परिणाम यह होता है कि वैश्य समस्या उभर कर सामने आती है। तथा एक अन्य उपन्यास

[19]Charu Gupta, Portrayal of women in Hindi literature in the early 20th century Nationalist ideology (with special reference to voice of defiance in Premchand writing summary), proceedings of the Indian history Congress 1991 vol 252 (1991), pp 825- 826, Indian history Congress

[20]रामदरश मिश्र हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा. राजकमल प्रकाशन. 2016. पृष्ठ संख्या 29

निर्मला में दहेज प्रथा को पूरा न करने के कारण एक अनमेल विवाह होता है। जिसमें अंततः कम आयु की निर्मला की अकाल मृत्यु हो जाती है।

मुंशी प्रेमचंद्र जी के उपन्यासों में स्त्री चित्रण केवल रोमांस मूलक नहीं था। बल्कि स्त्रियों की सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण था। "समाज सुधार की भावना ने मानवीयता को जन्म दिया और मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास किया।"[21] इन उपन्यासों ने नारी को देखने का दृष्टिकोण ही बदल दिया। हमारे सामने वह नारी प्रस्तुत की गई जो आत्मविश्वास पूर्ण आत्म गौरव युक्त नारी थी।

व्यवहारिक जीवन में मुंशी प्रेमचंद जी ने महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों को पूर्ण स्वीकार किया। इस युग में गांधीजी की विनयशीलता और तिलक की तेजस्विता का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार के अनमेल विवाह के द्वारा उपन्यासकार अपना विरोध भी प्रदर्शित करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के अनमेल विवाह के कारण पीड़ित नारी के मन की मनोदशा को समझ करके उसका चित्रण करते हैं तथा उसके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास अपराजिता नारी चित्रण राज अपने अधिकारों के लिए अपने परिवार के लोगों से संघर्ष करती है। तथा वह स्त्री होने के कारण किसी भी अन्याय को सहना पसंद नहीं करती। इस युग में उपन्यास कारों ने ऐसी ग्रहणी का रूप प्रस्तुत किया है जो पूरा जीवन परिवार की सेवा करने में व्यतीत कर देती हैं।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव ने अपने उपन्यास विधा में स्त्री स्वाधीनता के बारे में बताते हुए कहा है ''नहीं, सच्ची स्त्री स्वाधीनता वही है, जहां स्त्री पर अत्याचार ना हो, स्त्री पुरुष एक होकर रहे, दोनों में मतभेद ना हो पाए। एक स्त्री को यह गर्व न हो कि मैं बड़ी हूं और ना स्वामी को अभिमान हो कि ईश्वर ने सब बुद्धि मेरे ही हिस्से में रखे हैं। स्त्री घर की मालकिन है और पुरुष बाहर का। लेकिन दोनों में मतैक्य हो दोनों इस पवित्र प्रेम सूत्र में बंधे हो जहां ना राज हो ना अभिमान ना द्वेष और ना कला असीम शांति है अनंत प्रेम है।''[22]

अनमेल विवाह

जयशंकर प्रसाद

इस युग के उपन्यासों में हमें नारी का चित्रण एक आदर्श रूप में ही देखने को मिलता है। जिसमें उपन्यासकार जयशंकर प्रसाद के तितली उपन्यास में तितली नामक नारी उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है। जिससे तितली का

[21]डॉ रेवा कुलकर्णी. हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी. चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर. पृष्ठ संख्या 70

[22]वही पृष्ठ संख्या 68

संपूर्ण जीवन निराशाजनक हो जाता है। परंतु वह धीरज नहीं हारती और वह पूरी तरह से अपने पुत्र की देखभाल में जुट जाती है तथा वह लड़कियों की पाठशाला खोल कर अपना जीवन चलाती है।

इस प्रकार के अनमेल विवाह के द्वारा उपन्यासकार अपना विरोध भी प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार के अनमेल विवाह के कारण पीड़ित नारी की मनोदशा को समझ कर उनको चित्रित करने का प्रयास उपन्यासकार अपने उपन्यासों में करते हैं तथा उनके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते।

जैनेंद्र कुमार

ऐसे ही एक उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार के उपन्यास त्यागपत्र ने अनमेल विवाह के माध्यम से पतिव्रत धर्म की चर्चा की गई है। इस उपन्यास की नारी पात्र मृणाल का विवाह उसके प्रेमी शीला के भाई से ना हो करके उससे बड़ी आयु के व्यक्ति से कर दिया जाता है। मृणाल नए घर में समझौता कर लेती है परंतु विवाह के एक दिन बाद ही उसके पति को उसके प्रेम के विषय में पता चलता है। और वह उसे घर से बाहर निकाल देता है पति धर्म को समझ कर वह उस घर से चुपचाप चली जाती है।

विधवा समस्या

हिंदी उपन्यास के इस युग में विधवाओं पर भी कई उपन्यास लिखे गए। दहेज प्रथा और अनमेल विवाह जैसी रूढ़ियों के कारण विधवाओं की भी संख्या बढ़ रही थी। विधवाओं पर होने वाले अत्याचार पर प्रकाश डालने का प्रयत्न मुंशी प्रेमचंद जी ने बखूबी किया है। उपन्यास गबन में मणि भूषण कहता है "सम्मिलित परिवार में विधवा का अपने पति की संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता।"[23]

इस युग में नारी अपने आपको विधवा होना एक दुर्भाग्य समझती थी। अपने पिछले जन्म का फल समझती थी। इसलिए चुपचाप अपने आप को दोषी मानकर पूरा जीवन ऐसे ही व्यतीत कर देती थी। हीनता की भावना की शिकार नारी को नौकरानी सदृश्य व्यवहार मिलने लग गया था। उपन्यासकार जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यास तितली में एक बाल विधवा का चित्रण किया है। जो अपने यौवन अवस्था में किसी पर पुरुष की ओर आकर्षित हो जाती है। उसका मन उसको ढूंढने लगता है। वह उसके साथ अपने भविष्य के सपने संजोने लगती हैं। और उसका इंतजार करने लगती है, पर उसको जब बताया जाता है कि जो सपने वह देख रही हो वह खत्म हो चुके हैं और अब कभी नहीं आएंगे क्यूंकि वह बाल विधवा है।

[23]मुंशी प्रेमचंद. गबन. राजपाल एंड संस. 2009. पृष्ठ संख्या 263

भगवती प्रसाद वाजपेई का उपन्यास पतिता की साधना जो कि 1936 में प्रकाशित हुआ था। एक बाल विधवा नंदा के जीवन की कहानी है इस कहानी में बाजपेई जी विधवा विवाह का समर्थन करते हैं।

ऐसी नारी की मनोदशा किस प्रकार की रही होगी। इस प्रकार उपन्यासों का एक मुख्य विषय विधवाओं पर लेखन था। परंतु समाज ने अभी–भी विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं दी थी। जबकि 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम लागु हो चूका था।

आर्थिक स्वतंत्रता से वंचित

इस युग के उपन्यासकारों ने नारी को आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन भी किया। परंतु कहीं पर भी ऐसा चित्रण इस युग में नहीं मिलता जहां पर नारी बाहर जा करके नौकरी करें और अपने पति की आर्थिक सहायता कर सकें। इस युग में उपन्यास कारों ने स्त्री का चित्रण घर की चारदीवारी के भीतर ही किया है। जिसमें उसका कर्तव्य घर की चारदीवारी के भीतर रहना और अपने परिवार जनों की सेवा करना ही था। कुछ उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में स्त्री को अर्थोपार्जन का अधिकार दिया है। परंतु के संकट समय में वह बाहर जाकर कार्य कर सकती है। मुंशी प्रेमचंद्र जी ने नारी की आर्थिक स्वतंत्रता को पाश्चात्य संस्कृति माना है। जबकि भारतीय स्त्री और पुरुषों का कार्यक्षेत्र अलग–अलग है। इसी युग में नारी के समस्याओं और नारी की किया गया है। तथा उस समाज में नारी के प्रति प्रथाओं को मुख्य विषय के रूप में उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में रखा है।

प्रेमचंद कालीन उपन्यास कारों ने नारी के स्वभाव में त्याग सेवा और प्रेम को मुख्य माना है मेहता के स्वर में प्रेमचंद कहते हैं "पुरुष का सारा अध्यात्म और योग एक तरफ" और नारी का त्याग एक तरफ प्रेमचंद्र पुरुष और नारी में जन्मजात विभिन्नता मानने के साथ ही उनके कार्य क्षेत्रों में भी विभिन्नता आवश्यक मानते हैं वे पाश्चात्य आदर्श को घृणा की दृष्टि से देखते हैं नारी की आर्थिक स्वतंत्रता का भी अधिक मूल्य नहीं समझते मेहता के शब्दों में "आपकी विद्या और आपका अधिकार हिंसा और विध्वंस से नहीं सृष्टि और पालन से है क्या आप समझती है कि वोटों से मानव जाति का उद्धार होगा या दफ्तरों में और अदालतों में सुभान और कलम चलाने से इन नकली अप्राकृतिक विनाशकारी अधिक कार्य के लिए आप वह अधिकार छोड़ देना चाहती हैं जो आपको प्रकृति ने दिए हैं।"[24]

[24]बिंदु अग्रवाल हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण 18 70 से 19 50 राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली 1968 पृष्ठ संख्या 35

बेचन शर्मा उग्र जी जो कि द्वितीय युग के माने हुए उपन्यासकार थे। उन्होंने नारी के विषय में रूढ़िवादी विचारधारा को अपनाया। और वे कहते हैं ''बाहर जब भी स्त्री घूमेगी पुरुष से उसे खतरा रहेगा बात–बात में गर्भधारण करने और अपने रक्त मांस से स्वतंत्रता का मोल चुकाने का।'' [25]

महिला उपन्यासकार

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साहित्य सृजन के द्वारा कुछ स्त्री रचनाकारों का पदार्पण हुआ जिसमें इस युग में कई लेखिकाएं लेखन क्षेत्र में अपना नाम कर चुकी थी और बहुत अधिक संख्या में उन्होंने उपन्यासों को लिखा। साहित्य के क्षेत्र में बंग लेखिकाओं के उदय के पश्चात हिंदी लेखिकाओं ने भी लेखन के क्षेत्र में मुख्य भूमिका अदा करी है। परंतु इन लेखिकाओं के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं है। इन लेखिकाओं में प्रमुख रुप से यशोदा देवी जिनका उपन्यास सच्चा पति प्रेम जिसकी दुर्लभ प्रति नागरी प्रचारिणी सभा काशी में उपलब्ध है, 1918 में स्वर्ण कुमारी देवी का उपन्यास फूलों का हार कोलकाता से छपा, 1919 में लेखिका मनदा देवी द्वारा रचित पतिता की आत्मकथा और रुक्मिणी देवी द्वारा रचित मेम साहब 1926 में शैल कुमारी देवी का उपन्यास उमा सुंदरी, स्फुरणा देवी का उपन्यास अबलाओं का इंसाफ 1927 में छपा, और 1930 में प्रियंवदा देवी का उपन्यास विधवा की आत्मकथा प्रकाशित हुआ, ये सब उपन्यास नारी द्वारा रचित नारियों के प्रति होने वाले अत्याचारों और नारी के द्वारा लड़ी गई अपने अस्तित्व की लड़ाई को लेकर रचे गए हैं।[26]

साहित्य के इतिहास में कुछ और भी महत्वपूर्ण नाम हैं जैसे होमवती देवी, उषा देवी मित्रा, चंद्रकिरण सौनरेक्सा, सुभद्रा कुमारी चौहान, और महादेवी वर्मा। इन्होंने साहित्य की कई विधाओं पर अपने लेखन से प्रहार किया है। जिसमें होमवती देवी का उपन्यास कुसुम प्रथम स्तवक शिवराम प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। ऐसे ही एक महान लेखिका उषा देवी मित्रा हैं जिन्होंने कई उपन्यास, कहानियां समाज को दी। जिनमें वचन का मोल, आवाज और जीवन की मुस्कान उपन्यास महत्वपूर्ण है उपन्यासों में उषा जी ने भारतीय समाज को उसका आईना दिखाने का प्रयास किया है।[27]

इस युग की महिला लेखन का मुख्य विषय तत्कालिक समाज में फैली कुरीतियां थीं। जिससे कि सबसे अधिक उस समय की नारियां प्रभावित थी। जैसे विधवाओं की स्थिति उस समय बहुत दयनीय थी। तथा अन्य विषय पति व्रत का महत्व बताना, परंपरागत आदर्शों का पालन करना, और शिक्षा ग्रहण करने वाली स्त्रियों का चारित्रिक पतन होना। उस समय के समाज में नारी शोषण अत्यधिक फैला हुआ था। नारी की पराधीनता चरमोत्कर्ष पर थी। परंतु कुछ नारी

[25]डॉ रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015. पृष्ठ संख्या 209

[26]नीरजा माधव. हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास. सामायिक बुक्स नई दिल्ली. 2014. पृष्ठ संख्या 26

[27]वही पृष्ठ संख्या26

उपन्यास कारों ने अपने लेखन द्वारा समाज में फैली अव्यवस्था मुख्यतः स्त्रियों के प्रति व्यवहार को अपने उपन्यास में जगह दी। जैसे उषा देवी मित्रा जो कि हिंदी की प्रथम महिला उपन्यासकार थी उनके उपन्यास नारी जीवन से जुड़े थे। उन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा स्त्री जीवन के स्तर को उठाने के लिए कार्य भी किए। उनके उपन्यास वचन का मोल 1936 में प्रकाशित हुआ। जिसमें उन्होंने सच्चा प्रेम करने वाली नायिका कजरी के अविवाहित रहकर अपने वचन का मान रखने की बात कही।

2.3 हिंदी उपन्यास का तृतीय काल 1936–1950 तक

1936 से 1950 के प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रवाद में बहुत बड़े बड़े परिवर्तन हो रहे थे। द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में प्रारंभ हो चुका था। जिसकी लपटों ने पूरे विश्व को घेर लिया था। इसके प्रभाव से भारतीय राजनीति में भी नया मोड़ आने लगा था। 1940– 41 में कांग्रेस का व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ हुआ, बंगाल में भीषण अकाल पड़ा, 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन जो कि जनता का विद्रोह था हुआ, अंग्रेजों का भीषण दमन चक्र, 1946 में मुंबई में समुद्री सेना की बगावत, अगस्त 1946 में नेहरू के नेतृत्व में अंतर कालीन सरकार का संगठन, मुस्लिम लीग की प्रत्यक्ष कार्यवाही,अगस्त 1947 में पूरे देश को भारत और पाकिस्तान दो राज्य में बांट दिया गया। और 1947 में ही भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। 26 नवंबर 1949 को भारत में एक नवीन संविधान का निर्माण हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक संपूर्ण गण राज्य के रूप में उभर कर सामने आया।

1936 के बाद के युग को हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद जी के बाद का युग माना जाता है। उनकी मृत्यु के पश्चात साहित्य जगत के एक युग का समापन हो गया था। इसके बाद एक नवीन युग का प्रारंभ हुआ। और उपन्यासों ने भी एक नए विषय वस्तु व शिल्प को धारण कर लिया था। उपन्यासों में नवीनता और विविधता आ गई थी। जिससे इसका क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया था।''स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भारत को एक सूत्र में बांधने के लिए एक नया उत्साह लोगों के मन में दिखाई दे रहा था। उसको प्रवाहित करने के लिए उनके पास मूल प्रेरणा थी। जिसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ संघर्ष की प्रवृत्ति कहा जाता है। इसके साथ ही शोषण का विरोध, नारी जागरण, सुधार, हिंदू मुस्लिम एकता, निम्न वर्ग, से सहानुभूति आदि प्रेरणा थी जो उपन्यास कारों के अंतर्मन को प्रभावित करती थी। उन्होंने अपनी रचनाओं को एक लक्ष्य बनाया था आदर्शवादी प्रवृत्तियां प्रधान रूप से कार्य कर रही थी। वह यथार्थ की ओर बढ़ रहे थे तथा समाज में होने वाले परिवर्तन को अपनी रचनाओं में स्थान दे रहे थे।''[28]

मुंशी प्रेमचंद जी के द्वारा कहा गया है कि ''भविष्य में उपन्यास में कल्पना कम, सत्य अधिक होगा हमारे चरित्र कल्पित ना होंगे, बल्कि व्यक्तियों के जीवन पर आधारित होंगे। किसी हद तक तो अब भी ऐसा होता है? पर बहुधा हम

[28]डॉ रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. पृष्ठ संख्या 194

परिस्थितियों का ऐसा क्रम बांधते हैं कि अंत स्वाभाविक होने पर भी वह होता है जो हम चाहते हैं। हम स्वाभाविकता का स्वांग जितनी खूबसूरती से भर सकते हैं उतने ही सफल होते हैं; लेकिन भविष्य में पाठक इस स्वांग से संतुष्ट ना होंगे।''[29]

मुंशी प्रेमचंद जी के द्वारा ''यों कहना चाहिए कि भावी उपन्यास जीवन चरित्र होगा चाहे किसी बड़े आदमी का या छोटे आदमी का। उसके छुटाई बड़ाई का फैसला उन कठिनाइयों से किया जाएगा कि जिन पर उसने विजय पाई है। हां वह चरित्र इस ढंग से लिखा जाएगा कि उपन्यास मालूम हो। अभी हम झूठ को सच बना कर दिखाना चाहते हैं, भविष्य में सच को झूठ बना कर दिखाना होगा। किसी किसान का चरित्र हो, या किसी देशभक्त का, या किसी बड़े आदमी का, पर उसका आधार यथार्थ पर होगा। तब यह काम उससे कठिन ना होगा जितना अब हैः क्योंकि ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्हें बहुत से मनुष्यों को भीतर से जानने का गौरव प्राप्त होता है।''[30]

इस युग में उपन्यासकार अपनी कला शैली से बाह्य रंग की अपेक्षा अंतरंग विषयों की ओर अधिक ध्यान देने लगे। इस काल में मनोविज्ञान का बहुत अधिक अध्ययन हो चुका था। अतः उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा मानव मन की उलझन को सुलझाने का प्रयास किया अतः उनका ध्यान बाहर जगत की अपेक्षा अंतर जगत की ओर अधिक गया।

इस समय मनोवैज्ञानिक फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित होकर समाज से व्यक्ति को अधिक श्रेष्ठ समझा जाने लगा। इस युग से पहले के युग में समाज को व्यक्ति से अधिक महत्व दिया जाता था। इस युग के उपन्यास कारों पर दूसरा प्रभाव कार्ल मार्क्स के समाजवाद का पड़ा। जिसकी विचारधारा के अनुसार नारी शोषित वर्ग और पुरुष शोषक वर्ग के रूप में प्रदर्शित हुआ। नारी और पुरुषों में हमेशा से ही संघर्ष चलता रहा है। परंतु समाज और देश की उन्नति के लिए नारी की आर्थिक स्वतंत्रता का होना अति आवश्यक है, तथा उसका विकास करना भी अति आवश्यक समझा जाने लगा नारियां भी पुरुषों के समान एक मानव हैं। समाज की प्रगति नारी के सहयोग के साथ ही संभव है। अतः मार्क्स के स्त्री विषयक धारणा ने समकालीन उपन्यास कारों का दृष्टिकोण नारी के प्रति पूरी तरह से बदल दिया था। उस समय के राजनीतिक परिस्थितियों में भी उपन्यास कारों के मन में अलग धारणाओं को जन्म दिया।

महात्मा गांधी द्वारा 1942में भारत छोड़ो आंदोलन जो कि जन आंदोलन था प्रारंभ हो चुका था। बड़े–बड़े नेताओं को इस आंदोलन के प्रारंभ में ही गिरफ्तार कर लिया गया था। परंतु इस आंदोलन की गूंज पूरे देश में

---

[29]मुंशी प्रेमचंद्र. कुछ विचार. सरस्वती प्रेस बनारस. 1939. पृष्ठ संख्या 63

[30]वही पृष्ठ संख्या 63

फैल चुकी थी। और इसने एक विकराल रूप धारण कर लिया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस आंदोलन में नारियों ने भी पूरी तरह से भाग लिया। और अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना को और अधिक फैलाया स्कूल कॉलेजों की छात्राओं ने भी इस आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अनपढ़ नारी भी इस आंदोलन से अछूती नहीं रही। 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की। जिसमें महिलाओं के लिए कैप्टन लक्ष्मी के नेतृत्व में अलग से सेना बनाई गई। इस प्रकार पूरे देश में राष्ट्रीय चेतना की लहर के परिणाम स्वरूप भारतीय नारियों ने भी देश के स्वतंत्रता संग्राम में पूरी सफलता के साथ भाग लिया। इसी कारण राजनैतिक वातावरण का प्रभाव उपन्यासों पर भी ऐसा पड़ा जिसके परिणामस्वरूप उपन्यासों में भी नारी के व्यक्तित्व का चित्रण अलग तरह से किया जाने लगा। परंपरागत प्रतिमानोंको छोड़कर नारियों का चित्रण नए प्रतिमानों पर किया जाना स्वभाविक था।

महात्मा गांधी ने कहा था कि ''स्वराज्य की विजय में भारत की नारियों का उतना ही हिस्सा होना चाहिए। जितना पुरुषों का यह संभव है, कि इस शांति की लड़ाई में नारी पुरुष से बाजी मार ले जाए और उसे कोसों पीछे छोड़ दें। हम जानते हैं कि धर्म के प्रति अपनी भक्ति से वह पुरुष से सदा आगे रही है शांत और शालीनता पूर्वक तपस्या नारी जाति का स्वाभाव सिद्ध लक्षण है।''[31]

स्त्री–पुरुष की समानता पर बल देते हुए महात्मा गांधी जी ने कहा था कि "जिस रूढ़ि और कानून बनाने में स्त्री का कोई हक नहीं था। और जिसके लिए सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार है उस कानून और रूढ़ि के जुल्मों में स्त्री को लगातार कुचला गया है। अहिंसा की नींव पर चले गए जीवन की योजना में जितना और जैसा अधिकार पुरुष को अपने भविष्य की रचना का है उतना और वैसा ही अधिकारी नारी को भी अपना भविष्य तय करने का है।''[32]

महात्मा गांधी के विचारों से नारियों के अंदर आत्म जागृति हुई। महात्मा गांधी शुरू से ही स्त्री और पुरुषों को समान रूप से ही मानते थे। और नारी शिक्षा को नारी मुक्ति का प्रबल शस्त्र बताते थे। सत्य और अहिंसा के हथियार से भारत को गुलामी से आजाद कराने के लिए उन्होंने नारियों की शिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया है। दूसरी ओर भारतीय नारियों को सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ लड़ने के लिए उनको मानसिक रूप से तैयार किया। ताकि स्त्री शक्ति का जागरण हो सके और वह अपनी लड़ाई को खुद ही लड़ सके।

उन्होंने नारी के अंतर्मन को जागृत करने पर बल दिया। उनके विचारों से स्त्रियों का आत्मबल बढ़ता गया और उन्होंने अपने पूरे आत्मविश्वास के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और एक नई दिशा निर्धारित की। उस समय भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन अपनी पकड़ मजबूत कर रहा था। और गांधी जी के विचारों से पूरा देश प्रेरित हो रहा था।

---

[31]डॉ के एम मालती. स्त्री विमर्शय भारतीय परिप्रेक्ष्य. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2014. पृष्ठ संख्या

[32]वही पृष्ठ संख्या 127

जिसका प्रभाव साहित्य में पड़ना भी स्वाभाविक ही था। उपन्यास कारों ने अपने समाज की नारियों के जीवन का वास्तविक पहलु अपनी रचनाओं में उजागर किया है। स्त्री विमर्श का अपना नजरिया अपनी रचनाओं के द्वारा आम जनता तक पहुंचाया है। नारी पर समाज द्वारा किए गए अत्याचारों को उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में जगह दी। भारतीय समाज में विशेषकर पितृसत्तात्मक समाज में नारियों की स्थिति को जाहिर किया अपने उपन्यासों के द्वारा तथा रूढ़ीवादी सोच के अर्थहीन दायरे से बाहर निकल कर उन्होंने उपन्यासों को एक नई दिशा दी। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर के उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों के पात्रों को रचा। वे जीवन और समाज के विषय में नवीन दृष्टिकोण को अपनाते थे तथा उन्होंने नारी संबंधित चिंतन और कार्यों में एक क्रांतिकारी भारतीय समाज को सांचे में ढालकर नई उर्जा को प्रवाहित किया जो कि उपन्यास के पात्रों में कई जगहों पर नजर आता है।[33]

मुंशी प्रेमचंद जी के बाद उपन्यासकारों को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे सामाजिक मानवतावादी, प्रकृति वादी व्यक्तिवादी, मनोविश्लेषण वादी, ऐतिहासिक, सामाजिक, यथार्थवादी, आदर्शवादी आदि। इस युग के कई बड़े–बड़े उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में यथार्थ जीवन को महत्व दिया है। उनमें से मानव की स्थिति को समझ कर के अपने उपन्यासों में उतारने में कुछ मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार प्रमुख हैं। जैसे जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, और डॉ देवराज अग्रणी मानव की मूल प्रवृत्तियों को समझने के लिए जैनेंद्र को अंतर्मुखी होना पड़ा। जैनेंद्र ने अपने उपन्यासों में नारी चित्रण का बहुत ही यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है। 1939 के बाद उनके कई उपन्यास आए जैसे कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, जयवर्धन, आदि जैनेंद्र ने अपने उपन्यासों में नारी और पात्रों को अपने तरीके से विवेचन करने का प्रयास किया है।

इलाचंद्र जोशी

इलाचंद्र जोशी ने भी इस युग के दौरान कई उपन्यासों को लिखा। जैसे सन्यासी 1940 में पर्दे की रानी 1942 प्रेत और छाया 1944 निर्वासित 1946 मुक्ति पथ 1948 सुबह के भूले 1951। इस प्रकार से उन्होंने इस युग में और आने वाले युग में भी तमाम उपन्यासों को रचा है। जिसमें सन्यासी ,पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, जहाज के पंछी को विशेष ख्याति प्राप्त हुई है। जोशी जी मनोविश्लेषणवादी विचारधारा से प्रभावित थे। वह फ्रायड और मार्क्स दोनों से ही समन्वय स्थापित रखते थे। परंतु वह समाज की स्वस्थ प्रगति की अनिवार्यता को अधिक मानते थे।

इलाचंद्र जोशी जी का उपन्यास पर्दे की रानी नायिका निरंजना अपने खूनी पिता और वैश्या माता की पुत्री है यह जानकारी उसके अंदर समाज के प्रति चिंता का प्रभाव प्रकट करती है। तथा वह समाज से घृणा करने लगती है उनके एक अन्य उपन्यास निर्वासित में वैभवी का चित्रण है। जिसका नाम महीप होता है और वह नायिका से प्रेम करने

[33]डॉ के एम मालती. स्त्री विमर्शय भारतीय परिप्रेक्ष्य. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली .2014. पृष्ठ संख्या 131

लगता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षित ना होने के कारण नीलिमा को वह प्रभावित नहीं कर पाता और एक क्रांतिकारी बन जाता है।

एक अन्य उपन्यास मुक्तिपथ में जोशी जी ने मनोविश्लेषणवादी धारणा को साधन बनाया है। जिसमें उन्होंने सामाजिक प्रश्नों को महत्व दिया है और व्यक्तिगत जीवन के एकांत विश्लेषण को थोड़ा हट के प्रस्तुत किया है। इसमें नायक राजीव एक विधवा स्त्री सुनंदा से प्रेम करने लगता है और समाज उसे स्वीकार नहीं करता वह समाज के कटाक्ष को स्वीकार नही करते हुए एक शरणार्थी बस्ती में चले जाते हैं यहां अनेक सामाजिक कार्य में व्यस्त हो जाते हैं जिसके कारण वह सुनंदा की भावनाओं को महत्व नहीं दे पाता। इसी कारण निराश होकर वह वहां से चली जाती हैं इस प्रकार जोशी जी ने कई उपन्यास नारी स्थिति पर लिखे है।

सामाजिक यथार्थवाद धारणा के भी कई उपन्यासकार इस युग में अपने उपन्यासों के लिए प्रख्यात हैं। जैसे यशपाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त, अमृत राय, आदि इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कुछ उपन्यास कारों के नाम है भीष्म साहनी, अमरकांत विशंभरनाथ उपाध्याय, जगदीश चंद्र राही मासूम, रजा मारकंडे, आदि इन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक यथार्थवाद को प्रस्तुत किया है और कई ऐसे उपन्यासों को लिखा जिसमें नारी को मुख्य भूमिका रखा है।[34]

यशपाल

यशपाल जी ने अपने जीवन में बंधी बंधाई प्रवृत्ति की लकीरों को ना खींच करके बल्कि उन्होंने परिवर्तन को प्रस्तुत किया है। उन्होंने बदलते हुए समाज के संदर्भ में बदलते हुए स्त्री पुरुषों के संबंधों में भी परिवर्तन की मांग को उठाया है। उनके कई उपन्यासों में नारी मुक्ति मुख्य विषय रहा है तथा उन्होंने इसको ठोस रूप से प्रस्तुत किया है इनके कुछ चुने हुए उपन्यास हैं देशद्रोही 1943 दिव्या 1945 और दादा कामरेड 1946 मनुष्य के रूप 1949 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी उन्होंने कई उपन्यासों को लिखा है जिसमें नारी को परिवर्तन का भविष्य कहा है।

वृंदावन लाल वर्मा

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर उपन्यासों को लिखने में श्री वृंदावन लाल वर्मा जी ने बहुत ही अधिक सफलता प्राप्त की है। उन्होंने कई उपन्यासों को रचा है जिसमें झांसी की रानी 1946 कचनार 1948 मृगनैनी 1950 में लिखे गए हैं। इतिहास मनुष्य के भविष्य को संवार सकता है ऐसा वृंदावन लाल वर्मा जी का विश्वास था यह विश्वास उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में झलकता है इतिहास के तथ्यों की रक्षा करने के लिए ऐतिहासिक घटनाओं को राष्ट्रीय दृष्टि से अपने

[34]डॉ रामचंद्र तिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015. पृष्ठ संख्या 2019

उपन्यासों में लिखना और देखना प्रारम्भ किया। ऐतिहासिक आदर्शवाद कथानक और कथा नायकों के सृष्टि के रचयिता वीरता और प्रेम के स्वरूप का इतिहास में कई समूहों को भर देने का कौशल उनमे था।

नागार्जुन

नागार्जुन का उपन्यास रतिनाथ की चाची जो कि 1948 में प्रकाशित हुआ था। एक निजी जीवन के ऊपर लिखा गया उपन्यास है। इसमें कुलीन किंतु निर्धन विधवा का चित्रण करते हुए उस समय की सामाजिक जीवन में चल रहे अंतर्विरोधों का वर्णन किया गया है।[35]

पांडे बेचन शर्मा 'उग्र'

पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' जी सामाजिक उपन्यास विचारधारा से प्रेरित है। उनके उपन्यासों में समाज की कई समस्याओं का चित्रण देखने को मिलता है। उनके उपन्यासों में प्रमुख चंद हसीनों के खुतूत, दिल्ली का दलाल, बुधवा की बेटी, शराबी, सरकार तुम्हारी आंखों में कांटा, कढ़ी में कोयला, और फागुन के दिन चार आदि हैं इनके उपन्यासों में चंद हसीनों केखुतूत खुद उपन्यास में जोकि सांप्रदायिकता का घिनौना चित्रण है। उनका उपन्यास दिल्ली के दलाल में देह व्यापार में व्याप्त युवतियों की दयनीय कथा है। उनके उपन्यासों का मुख्य विषय नारी की सामाजिक समस्याओं पर आधारित हैं ज्यादातर उपन्यास वेश्यावृत्ति सांप्रदायिकता और अस्पृश्यता का नारी चित्रण मुख्यतः दिखाई देता है जिसमें नारी के प्रति होने वाले दुःव्यहवार का यथार्थ चित्रण उग्र जी ने किया है।

महिला उपन्यासकार

राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव साहित्य में भी दिखना स्वाभाविक था। और तत्कालीन समाज में फैली अव्यवस्था का भी चित्रण उपन्यासों में मिलता है। इस युग की प्रथम लेखिका उषा देवी मित्रा जो कि इसके पहले के युग से ही कई उपन्यास लिख चुकी थी परंतु 1936 के बाद उन्होंने कई उपन्यासों को रचा उनके महत्वपूर्ण उपन्यास पिया 1937, जीवन की मुस्कान 1939, और पथचारी 1940 में लिखा गया। इसी प्रकार उन्होंने रोहिणी 1949 और नष्ट नीड़ 1955 में लिखा। इन सभी उपन्यासों में उषा जी ने नारी समस्या को मुख्य विषय बनाया और नारी के प्रति अपने विचारों को प्रस्तुत किया सोहिनी उपन्यास जोकि उषा देवी मित्रा द्वारा रचित है उसमें एक ऐसी नारी का व्यक्तित्व दर्शाया गया है जो दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से भरी थी।[36]

[35]वही पृष्ठ संख्या221
[36]chapter%203%20(1)MAHILA%20LEKHAN.pdf

इस युग की एक अन्य लेखिका शिवरानी बिश्नोई भी थी यह बहुत अच्छी उपन्यास लेखिका भी थी। उन्होंने भीगी पलकें नामक उपन्यास लिखा जिसमें नारी की शिक्षा पर अधिक जोर दिया और शिक्षा को नारी के लिए महत्वपूर्ण बताया।

रजनी पाणिकर एक अन्य उपन्यासकार थीं। जिन्होंने इस युग में कई उपन्यासों को लिखा उनका उपन्यास ठोकर 1949 में प्रकाशित हुआ। यह एक सामाजिक उपन्यास था। इस उपन्यास में उन्होंने एक मध्यवर्गीय समाज का चित्रण है जिसमें पश्चात्य विचारों वाली नारी और भारतीय आदर्शों का तुलनात्मक चित्रण है जो यथार्थ के बहुत करीब है। उन्होंने कई उपन्यास स्वतंत्रता पश्चात भी लिखें जिसमें पानी की दीवार 1954, मोम के मोती 1954, जाड़े की धूप 1958, काली लड़की 1958, आदि लिखे गए हैं।

"युगों से त्रस्त भारतीय नारी जब पुरुष की दासता से मुक्त हुई तो स्वाभाविक था कि उस समाज के प्रति उसके अर्ध चेतन मन में घृणा हो जिसने उसे युगों से दासी बनाकर उसका शोषण किया है अतः आधुनिक युग में शिक्षित भारतीय नारी वैवाहिक संस्था के प्रति विद्रोह के लिए तत्पर हुए विवाह को उसने पुरुष प्रधान समाज की दासता समझा।"[37]

[37]डॉ रेवा कुलकर्णी. हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी. चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर. पृष्ठ संख्या87

अध्याय तृतीय

नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण

अध्याय तृतीय

नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की स्थिति उसके पहले की स्थिति से काफी भिन्न थी। स्वतंत्रता के पश्चात मानव की मानसिक और सामाजिक स्थितियों में बहुत बड़ा अंतर आ गया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कई सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। कई सामाजिक गुट बन गए जो नए मूल्यों को स्वीकार नहीं करना चाहते थे और पुराने मूल्यों के साथ ही चलना चाहते थे। सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप बदलने के साथ–साथ स्त्री और पुरुष भी अपने जीवन को नई आकांक्षाओं के साथ देख रहे थे। जो कि उस समय समाज की आवश्यकता भी थी। नारी को अपने परिवार की स्थिति को सुचारू रूप से चलाने के लिए घर से बाहर निकल कर नौकरी भी करनी पड़ती थी। जिससे बाहर के समाज के अन्य वर्गों से मिलना तथा उनके संपर्क में आना शुरू हुआ। परिणामस्वरूप समाज में प्रेम विवाह और अंतरजातीय विवाह भी होने लगे।

स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्र के नए निर्माण के कार्यों में नारी का सहयोग बहुत ही अनिवार्य था। उसे भी संवैधानिक तौर पर समान अधिकार, उच्च शिक्षा, संपत्ति का अधिकार की मान्यता दी गई। 1950 में भारत का संविधान लागू होने के साथ ही 1956 में हिंदू कोड बिल प्रस्तुत किया गया। जिसमें नारी को पुरुष के समान हर एक क्षेत्र में समान अवसर प्रदान किए गए।

प्राचीन समय से ही नारी ने विश्व साहित्य में लेखन की प्रतिभा में अपना परचम लहराया है। वैदिक काल के समय से नारी, पुरुष का साथ साहित्य के क्षेत्र में देती आई है। भारतीय नारी भारत में नवजागरण तथा नारी मुक्ति आंदोलनों के परिणामों से बहुत प्रभावित होती रही है। कई महान समाज सुधारको के प्रयासों से भी भारतीय नारी को शोषण के विरुद्ध अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की तत्पर प्रेरणा प्राप्त होती रही है। नारी शोषण भारतीय परिवेश में अनादि काल से चला आ रहा है और इसी अत्याचार से मुक्ति की आकांक्षा को जन्म देने के लिए ही भारतीय साहित्य में नारी लेखिकाओं का आगमन हुआ है।

हिंदी उपन्यास साहित्य आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कर रहा है। जिसमें महिला लेखन एक महत्वपूर्ण पहचान बनकर सामने आया है। हिंदी उपन्यास में महिला लेखन ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। स्वतंत्रता के बाद भारत की परिस्थितियों ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जगाया है।

पुरुष वर्चस्व समाज में नारी के अधिकारों के चिंतन को नारी विमर्श कहते हैं। पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे मापदंडों, लिंगभेद तथा स्त्री उत्पीड़न के कारणों को समझने के लिए एक गहरी दृष्टि की आवश्यकता है।

प्राचीन भारत के इतिहास पर अगर दृष्टि डालें तो हमें यह ज्ञात होता है कि, महिलाओं को समाज में आदर पूर्ण स्थान दिया जाता था और हमारे पूर्वजों का कहना था कि

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता"[1]

अर्थात

जहां स्त्रियों की पूजा होती है। वहां देवता निवास करते हैं। इससे स्पष्ट है कि भारत के परिवारों में नारियों की बहुत ही महत्वपूर्ण स्थिति थी।

आज नवजागरण का युग है। विश्व भर में नारी स्वतंत्रता का समय चल रहा है। इसका प्रभाव भारतीय नारियों पर भी पूरी तरह से पड़ना स्वाभाविक था। इन वर्षों में नारी जागरण में बहुत ही प्रगति देखने को मिलती है इसका अन्य कारण नारी शिक्षा का विकास भी है। आज की नारी आधुनिक परिवेश में जीना सीख गई है। वह अनेक समस्याओं से संघर्ष करती है और और उनका सामना भी करती है।

स्त्री लेखन को अपनी अलग पहचान बनाने के लिए निश्चित रूप से महिला उपन्यास कारों ने तीखे, ज्वलंत, अंतर्विरोधों, विरोधाभासों, द्वारा प्रश्नों को सामने रखा है। जिसमें कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी मृदुला गर्ग, महाश्वेता देवी, लीला अवस्थी, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, आदि ने अपनी रचनाओं द्वारा अपनी पहचान बनाई है। इन महिला उपन्यास कारों के लेखन में नारी के अधिकारों के प्रति आक्रमकता और तीखेपन से पितृसत्तात्मक समाज की कड़ी आलोचना हुई है।[2]

आज के आधुनिक समाज में नारी अपनी पहचान व अस्मिता के प्रति जागरूक हो गई है। बीसवीं सदी के बदलाव को सबसे अधिक नारी ने हीं झेला है। नारी लेखिकाओं ने अपने साहित्य में इन्हीं विषयों का विश्लेषण किया है क्योंकि नारी लेखिका खुद नारी है अतः स्वयं भुक्त भोगी रही हैं। इसलिए उन्होंने अपनी पीड़ा और अपनी समस्याओं को बहुत ही संजीदगी से उपन्यास के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इसलिए नारी द्वारा रचित नारी संबंधी साहित्य का विवेचन और विश्लेषण बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है।

आज लगभग साहित्य की सभी विधाओं में स्त्री लेखनकार्य कर रही है। जिससे उपन्यास भी अछूता नहीं रहा है। सदियों तक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, गुलामी झेलने के बाद स्त्री उसका मजबूत और सशक्त

[1] रमा शर्मा एमके मिश्रा. महिला विश्वकोश भारतीय समाज में नारी भाग 1.अर्जुन पब्लिशिंग हाउस. 2016 .पृष्ठ संख्या 17
[2]राकेश कुमार. नारीवादी विमर्श. आधार प्रकाशन हरियाणा. 2001. पृष्ठ संख्या 41

विरोध करने के लिए भाषा को माध्यम बनाकर अपने भावों की अभिव्यक्ति करने लगी है। जागृत स्त्री उपन्यासों में अपने सुख–दुख की अभिव्यक्ति लेखन के माध्यम से कर रही है और इसीलिए महिलाओं का रचना संसार बहुत ही विस्तृत हो रहा है। मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन के अंतर्विरोध और पितृसत्तात्मक समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए वह सदैव संघर्षरत है। नारी जीवन की त्रासद स्थितियों के दायरे से बाहर निकल कर अपने जीवन के अनेक आयामों का चित्रण करने लगी है। क्योंकि स्त्रियां स्वयं भुक्तभोगी हैं, पीड़िता हैं। इसलिए वे नारी जीवन की समस्याओं एवं उनकी प्रताड़ना को भलीभांति समझती हैं। और अपने साहित्य में उसी को आधार बनाकर अधिक स्पष्ट और प्रखर रूप से अभिव्यक्त करती हैं। स्त्री उपन्यास कारों का रचना संसार से अवगत होना बहुत अधिक आवश्यक है।

साहित्यिक विधाओं में उपन्यास आधुनिक जीवन का एक महाकाव्य है। जो समाज के कई समस्याओं से टकराता है और समाधान का संकेत भी देता है। इसीलिए साहित्य की इस विधा में भाव अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना गया है। 21वीं सदी की दहलीज पर कई नारी उपन्यासकारों ने साहित्य के क्षेत्र में आगमन कर एक क्रांतिकारी बदलाव लाने का प्रयास किया है। लेखिकाओं ने इसमें परिवर्तित मूल्यों और परिस्थितियों के कारण निम्न परिस्थितियों के लड़ते हुए नारी की भूमिका का चित्रण किया है। आज की नई परिस्थितियों में भी नारी शोषण खत्म नहीं हुआ है, बल्कि विभिन्न रूपों में मौजूद है। इसी के परिणाम स्वरूप शोषित स्त्री का पैमाना बढ़ता ही जा रहा है। आज की शोषित नारी की अनेक समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत करने के लिए कई प्रमुख महिला उपन्यासकारओ ने अपने उपन्यासों में नारी को केंद्र स्थान प्रदान किया है।[3]

नारी लेरवन केवल घर की चारदीवारी के भीतर ही अपनी पारिवारिक समस्याओं तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि परिवार से बाहर निकलकर समाज में व्याप्त समस्याओं से जोड़कर उसका सृजन कर रही हैं। महिला लेखन की परंपरा बहुत ही प्राचीन है आज महिला लेखन में वह दर्द, व्यथा, वेदना सब कुछ मौजूद है जिसे वह स्वयं बर्दाश्त करती है। नारी की पीड़ा और अनुभव की बात नारी ही अधिक प्रमाणिकता से प्रस्तुत कर सकती है।

महादेवी वर्मा जी ने अपने उपन्यास श्रृंखला की कड़ियां में भी व्यक्त किया है वे लिखती हैं।

"कि पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है, परंतु अधिक सत्य नहीं विकृति के अधिक निकट पहुंच सकता है परंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व कल्पना है परंतु नारी के लिए अनुभव

[3]रमेशकुमारी. संस्कृत साहित्य स्त्री(एकआलोचनात्मक विमर्श). अकादमिकप्रतिभादिल्ली. 2008. पृष्ठ संख्या 145 146

अतः अपने जीवन का जैसा सचिव चित्र वह हमें दे सकती है वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद दे सकता है।"[4]

भारतीय नारी ना तो अपनी प्रभुता की इच्छुक है और ना ही अपने प्रभुत्व की। बल्कि वह तो अपने समाज में अपना वह अस्तित्व पाना चाहती है, जिसके बिना किसी समाज का विकास संभव नहीं है। पुरुष और नारी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं अर्थात दोनों ही इंसान है। उनकी विभिन्नता ही संसार का सौंदर्य एवं संबंधों में निहित सुख है कुछ सप्ताह पूर्व एक लेख में दुनिया भर में नारी पर होने वाले अत्याचारों की चर्चा पर एक टिप्पणी निकली स्वीडिश पुरुष अपनी पत्नियों से बेहद प्रेम करते हैं इसलिए वहां अत्याचार की मात्रा ना के बराबर है। यह सूचना बेहद खुशी देती है पर साथ ही इस बात का भी दुख था कि क्या भारतीय पुरुष अपनी पत्नियों से प्रेम नहीं करते जो रोज ही विभिन्न प्रकार की घटनाएं सुनने और पढ़ने को मिलती है। पूरे पिछले वर्ष का अवलोकन किया जाए तो ज्ञात होता है कि सुख और सौंदर्य वास्तव में करुणा की हद तक दुखों का कारण नारी के एक बड़े वर्ग को सारा जीवन कारावास में डाले रखता है उनकी स्वतंत्रता का नाम हत्या या आत्महत्या है।[5]

इसी चेतना को जगाने के लिए स्त्री लेखन नें बहुत बड़ी भूमिका अदा करी है। उन्होंने ना केवल नारी चित्रण को ही समाज के सम्मुख रखा है बल्कि समाज के द्वारा उनके शोषण के विरुद्ध भी आवाज को बुलंद किया है। भारत की आजादी के पश्चात जिस प्रकार का स्त्री लेखन सामने आया है, उसने स्त्री की पारंपरिक परछाईं को हटा करके एक नई स्त्री को सामने प्रकट करने का प्रयास किया है।

नारी उपन्यास लेखन नारी के ही मन की अभिव्यक्ति है। उसके शब्दों में मौन है परंतु उसके लेखन में आवाज है। पुरुष लेखक के लिए नारी एक मूरत के समान है, परंतु नारी लेखन में नारी उपन्यासकार अपनी भावनाओं को अपने उपन्यासों में व्यक्त करती हैं। इस प्रकार नारी लेखन में नारी के चरित्र को एक सजीव चित्रण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और समाज को वास्तविक दृश्य, वास्तविक समस्याओं, वास्तविक नारी जीवन की कठिनाइयों से अवगत कराया जाता है।

हमेशा से ही साहित्य की दुनिया में नारी लेखिकाओं से यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपने लेखन पितृक मर्यादाओं के दरमियान ही करें लेकिन जब से नारी विमर्श समाज के सम्मुख आया है इसने नारी के सोचने समझने लिखने की शैली में बहुत प्रभाव डाला है उसके स्वत्व अधिकारों के प्रति चेतना को भी विकसित किया है और हर क्षेत्र में

[4]शोधगंगाinflibnet.ac.in 4 सितंबर

[5]नासिरा शर्मा औरत के लिए औरत समायिक प्रकाशन नई दिल्ली 2014 पृष्ठ संख्या 21

चाहे वह कविता हो या कहानी हो उपन्यास लेखन हो अपनी अलग कलाकृतियों में तीखी आलोचना द्वारा नारीवादी सोच को साफ–साफ पहचाना है और नारी मुक्ति के विभिन्न प्रश्न जो कि नारी जागृति द्वारा ही संभव हो रहे हैं

उनके लेखन में विरोध की भावना उत्पन्न होती है और यह तब तक दूर नहीं होती जब तक वास्तविक जीवन में पुरुष प्रधान समाज अपनी दृष्टि को नहीं बदलते। लेखन और जीवन दो अलग–अलग चीजें हैं परंतु लेखन वास्तविक जीवन पर ही निर्धारित होता है। और जिस प्रकार हम अपने आसपास के समाज को देखते हैं, उसी प्रकार उसको समझ करके, सोच कर के, विचार करके लिखने का प्रयास भी करते हैं। आज स्त्री लेखन स्त्री समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।[6]

नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों के केंद्र बिंदु स्त्री की वह भयावह समस्याएं हैं जिन्हें पितृसत्तात्मक मर्यादाओं ने घेर रखा है। जिसमें स्त्री को समाज में खुलने नहीं दिया बल्कि उनका दमन किया है। वह उन अभद्र नियमों के खिलाफ संघर्ष करना चाहती हैं। नारी लेखन उस समय समाज की जरूरत थी उसका उद्देश्य समाज में नारी के मूल्यों को परखना और उनके गलत प्रतिमानो को खारिज करके नए मूल्यों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना था। नारी लेखिकाओं को कई सामाजिक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता था जिसके कारण कई बार उन्हें व्यंग का पात्र भी बनाया जाता था। और उन पर यह भी आरोप लगाया जाता था कि वह सिर्फ नारी समस्याओं पर ही लेखन कर सकती हैं। पर शायद समाज के उस तबके को यह नहीं पता था कि नारी लेखन करना कितना मुश्किल है क्योंकि एक नारी के लिए उस पीड़ा को समझना कई ज्यादा गुना आसान हो जाता है जिस पीड़ा को समाज का अन्य वर्ग नहीं समझ सकता। वह अपने उपन्यासों में उस पीड़ित नारी का सजीव चित्रण करके और नारी की तमाम मुश्किलों और कठिनाइयों का सामना वह समाज से करा सकती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारी जागरण और नारी शिक्षा के बहुत ही व्यापक प्रचार–प्रसार के बाद महिला उपन्यासकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ है। जिसमें कई महान महिला रचनाकार हैं जैसे शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, दीप्ति खंडेलवाल, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, चंद्रकांता, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा ,मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा अग्निहोत्री, प्रभा खेतान, मधु कांकरिया आदि इन महिला उपन्यासकारओ ने महिला जीवन पर तो बहुत ही सारे उपन्यासों को रचा है और समाज में चल रहे नारी के साथ व्यवहार को बहुत ही रचनात्मक और सजीव तरीके से लिखा है। इन सभी महिला उपन्यासकारों का बहुत बड़ा श्रेय

[6]राकेश कुमार नारीवादी विमर्श आधार प्रकाशन पंचकूला हरियाणा 2001 पृष्ठ संख्या 60

साहित्य लेखन में नारी समस्याओं को उभारने के लिए माना जाता है। परंतु यह कहना सही नहीं होगा कि इन्होंने सिर्फ नारी समस्याओं को ही समाज के सामने अपने उपन्यासों के द्वारा प्रस्तुत किया है परंतु इन्होंने आज पढ़े लिखे समाज की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। उसमें इंसान की सोच पितृसत्तात्मक समाज की सोच को उभारा है जिससे केवल नारी ही नहीं बल्कि समाज के कई अन्य वर्ग भी शिकार उनकी सोच का शिकार हुए हैं। इसलिए नारी लेखन का साहित्य में बहुत बड़ा योगदान है और यह सब आधुनिक नारी उपन्यासकार हैं जिन्होंने नारी की समस्याओं को महसूस किया उसको समझा उसको हिम्मत दी और अपनी हिम्मत के द्वारा अपने लेखन के द्वारा उन्हें समाज के सम्मुख रखने का प्रयास किया है। इन सभी साहित्यकारों में कई ऐसे महान कलाकार महान उपन्यासकार हैं जिन्होंने साहित्य अकैडमी पुरस्कार प्राप्त किया है अपने अच्छे साहित्य के लिए।

जैसा कि हमें पता है उपन्यास साहित्य की सर्वाधिक प्रचलित विधा और समाज का आईना होता है स्वतंत्रता के बाद उपन्यासों का मुख्य विषय स्त्री और पुरुष के बीच संबंधों को गहराई से आंकने का प्रयास जारी हो गया था और स्वतंत्रता से उत्पन्न नई सुशिक्षित नारी उपन्यासों का केंद्र पात्र बनने लगी थी स्त्री और पुरुषों के संबंधों में पति–पत्नी के रूप प्रेमी प्रेमिका के तथा अन्य रूपों को उकेरा जाने लगा नारी जीवन से संबंधित उनके संघर्षरत जीवन को कई महिला लेखिकाओं ने भी अपने उपन्यासों में जगह दी।

इस पाठ में पांच नारी उपन्यासकारों के महत्वपूर्ण उपन्यासों को प्रस्तुत किया है। जिसमें उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, लीला अवस्थी और मैत्रेयी पुष्पा हैं। जिन्होंने नारी लेखन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और 1950 से 2000 तक मैंने इस पाठ को पांच भागों में विभाजित किया है जिसमें नारी चित्रण के उतार–चढ़ाव और हर दशक में आए बदलावों को लिखा है।

3.1 लीला अवस्थी 1950–60

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्रथम दशक में नारी लेखन उतना उत्कृष्ट नहीं था। जितना 1960 के पश्चात देखने को मिलता है। 1950 में कुछ महत्वपूर्ण नारी लेखन मिलता है जो कि ज्यादातर मूल रूप से बंगाली में लिखे गए उपन्यासों का अनुवादित रूप ही मिलता है। लीला अवस्थी 1950 के दशक की एक महत्वपूर्ण लेखिका थीं। जिन्होंने तीन उपन्यास लिखे हैं, इनका प्रथम उपन्यास दो राहें नारी प्रधान उपन्यास है जिसे उन्होंने 1958 में लिखा था। यह हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी से प्रकाशित हुआ और उन महत्वपूर्ण और सुंदर रचनाओं में से एक है जिसमें नारी के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है।

लीला अवस्थी जी का यह पहला उपन्यास था। उन्होंने इसके बारे में स्वयं ही कहा था कि "अभी तक मैं अपनी कहानियों में नारी के विविध रूपों को केंद्रित करती रही हूं। परंतु इस उपन्यास में मैंने उन परिस्थितियों और वातावरण का चित्रण करने का प्रयत्न किया है जो नारी को एक विशेष रूप प्रदान करते हैं।"[7]

दो राहें

यह कहानी हिंडन नदी में आई बाढ़ से प्रारंभ होती है। यह बाढ़ इतनी तेज थी कि नदी के किनारे बसे गांव के लोग गांव छोड़ छोड़ कर के शहर जाने लगे। 12 अक्टूबर 1944 की तेज बाढ़ के कारण लोगों को अपने घरों को छोड़कर जाना पड़ रहा था। हिंडन नदी का पश्चिमी तट वीरान पड़ा हुआ था यह चंदौली ग्राम से उत्तर की दिशा में लगभग 1 मील दूर था। चंदौली ग्राम के हेड मास्टर चंद्र प्रकाश तिवारी थे। और वीरान मैदान को फिर से आबाद करने के लिए एक सैनिक टुकड़ी आई थी सब लोग वहां पर तंबू लगाकर रहते थे साफ सफाई का पूरा इंतजाम कर रखा था।

कैप्टन रघुनाथ इस टुकड़ी के निरीक्षक के रूप में आए थे। कैप्टन रघुनाथ अपनी पत्नी और बेटी को भी अपने साथ यहाँ घुमाने के लिए ले आए थे परंतु कैप्टन साहब को जब वहां की स्थिति का पता चला तो वह बहुत झल्ला गए उन्होंने अपना सारा गुस्सा सारी नाराजगी काका पर निकाल दी। परन्तु काका ने बड़े ही शांत स्वर में कैप्टन रघुनाथ को समझने का प्रयास किया। यह गांव है और गांव की पुरातन सभ्यता में सत्यता है यह कृत्रिम नहीं है शहर की दुनिया कृ त्रिम और बनावटी होती है। यहां पर प्राकृतिक सौंदर्य मन मोह रहा है परंतु कैप्टन रघुनाथ को यह सब पसंद नहीं आया और उन्होंने बस इतना ही कहा कि पता नहीं काका तुम्हें शहरी जीवन से इतना क्यों नफरत है।

यहां पर काका और कैप्टन रघुनाथ के बीच में गांव और शहर को लेकर बहस जारी थी जब बहस बहुत ज्यादा बढ़ गई तो कैप्टन रघुनाथ को ही रुकना पड़ा उन्होंने देखा कि काका बहुत नाराज हो गए है और उनका मुंह लाल होता जा रहा है तो कैप्टन रघुनाथ शांत हो गए और बोले "मैं तो यह सब तुमसे इसलिए कह रहा था कि यहां के निर्जीव वातावरण में मुझे शांति नहीं मिलती यहां तो समय काटे नहीं कटता दिल्ली में कम से कम दफ्तर, क्लब, सिनेमाघर।"[8]

हिंडन नदी पूरी तरह से उफान मार रही थी। पूरा गांव हिंडन नदी के उफान से डरा हुआ था परंतु चंदोल के प्राइमरी हेड मास्टर चंद्र प्रकाश तिवारी को इसकी ज्यादा चिंता नहीं थी क्योंकि उनका स्कूल एक टीले पर था और उसी के पास उनका घर था वह अपनी बहन रधिया के साथ रहते थे। और एक मुंह बोले भाई परमानंद थे परंतु चंद्रप्रकाश के

[7]लीला अवस्थी. दोराहे. हिंदीप्रचारकपुस्तकालय वाराणसी 1.निवेदन.1958

[8]वही पृष्ठ संख्या 6

मन में अपने जीवन को लेकर संतुष्टि न थी। वे अपने जीवन में कुछ अच्छा करना चाहते थे परंतु वह एक छोटे से स्कूल के हेड मास्टर रहने तक ही सीमित रह गए थे उन्हें अपने जीवन में संतुष्टि की हमेशा कमी महसूस होती थी, वह साहित्य से बहुत प्रेम करते थे और दिन–रात उसी में डूबे रहते थे। एक दिन चंदू और परमानंद गंभीर बातचीत में लगे हुए थे तभी रधिया भागते हुए हाथों में एक बेहोश लड़की को लेकर के आई और जोर जोर से चिल्लाने लगी। अरे जल्दी आओ जल्दी आओ बेचारी बेहोश है सब लोग इकट्ठा हो गए बच्ची को उल्टा करके परमानंद ने उसकी पीठ में दो तीन झटके दिए जिससे कि उसके पेट का सारा पानी बाहर आ गया। रधिया से पूछा गया तो पता चला कि ष्सारागांव नदी किनारे खड़ा है उत्तर की ओर से लाशें बहकर आ रही हैं सुना है एक नाव उलट गई यह बच्ची न जाने कैसे मंदिर वाली सीढ़ियों के पास आ लगी तो मैं कुछ पानी में उतर कर इसे उठा लाई द्य उत्तर के गांव वाले गांव छोड़ छोड़ कर भाग रहे हैं।[9]

जब बच्ची को होश आया तो सब बहुत खुश थे। रधिया ने उसको गौरी नाम दिया। वह चार बरस की थी और बहुत ही प्यारी थी यहीं से चंदू के जीवन को एक लक्ष्य मिल गया और उसने यह तय किया कि जब तक वह गौरी को अपने सगे मां–बाप के पास नहीं भेज देता तब तक वह चौन की सांस नहीं लेगा। दूसरी तरफ कैप्टन रघुनाथ अपनी बच्ची के खो जाने से बेहद परेशान थे। वह इधर–उधर भटक रहे थे और बहुत चिंतित हो रहे थे पर वह दिल्ली वापस आ गए उन्होंने रेडियो से एलान कराया, उनकी 4 वर्षीय बच्ची बेबी खो गई है पर यह खबर सुनकर काका तो जैसे पागल ही हो गए थे। वह बेबी को बेहद प्रेम करते थे उनका तो जीवन जीने का एक सहारा ही छूट गया था। वह बेबी को रघुनाथ की बेटी से ज्यादा उसे अपनी बेटी समझते थे हिंडन नदी के तूफान के कारण चंद्रप्रकाश ने वह गांव छोड़कर शहर आ जाएगा। इसके दो कारण थे पहला हिंडन नदी में बाढ़ तेजी से बढ़ रही थी और दूसरा गौरी के माता पिता को ढूंढना। क्योंकि चंद्रप्रकाश ने यह अंदाजा लगाया था इतने अच्छे वस्त्र पहने हुए लड़की किसी गांव की नहीं लग रही यह शहर की है और शहर में ही कहीं ना कहीं इसके मां–बाप से मिल जाएंगे।

चंद्रप्रकाश और उसके अन्य साथी शाहदरा पहुंच गए। और स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला में रुक गए उनके खाने–पीने का इंतजाम एक कांग्रेसी सेठ जी जोकि बहुत धर्म नष्ट थे व्यक्ति थे उन्होंने कर दिया था। चंद्रप्रकाश गौरी पर विशेष ध्यान देता था। कैप्टन साहब का दिल्ली में एक बहुत बड़ा मकान था जो कि स्वतंत्रता से पहले ही एक अंग्रेज ने उन्हें तोहफे के रूप में दिया था वह अपनी पत्नी हेमा के साथ वही रहते थे उनके साथ काका भी रहते थे। काका अपनी जिंदगी में बेबी की कमी को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे और वह बहुत दुखी रहते थे। उसी दौरान हेमा फिर से गर्भवती हुई और उनके घर एक बेटी ने जन्म लिया माता और पिता से उस बेटी को बहुत प्रेम मिला उसका

[9]वही पृष्ठ संख्या 16

नाम उन्होंने रूबी रखा धीरे–धीरे समय बीतता चला गया। रूबी भी उम्र के उस पड़ाव में पहुंच गई जहां वह ट्रू रोमांसेज की काल्पनिक दुनिया में खोने लगी रूबी अपने पिता से बेहद प्रेम करती थी और पिता भी रूबी की सारी इच्छाओं को पूरी करते थे घर में दो नौकर थे एक रसोईया था और एक घर का काम करने वाली सुमित्रा थी।

एक दिन अचानक घर में काम करने वाली सुमित्रा बीमार पड़ गई। जिसकी वजह से काम का बोझ हेमा पर आ गया। हेमा दिन भर काम करती परंतु रूबी बिल्कुल भी उसकी मदद नहीं कराती थी। वह बहुत ही आरामदायक जीवन जीने में विश्वास रखती थी उसे घर का काम करना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। जिसे देखकर काका को कभी–कभी नाराजगी होती थी वह हेमा को समझाते थे कि लड़की है, घर का थोड़ा बहुत काम तो जरूर आना चाहिए। एक ना एक दिन तो उसका ब्याह होगा ही तब पराए घर में भी क्या यह ऐसे ही करेगी परंतु कैप्टन साहब को काका की बातें बिल्कुल भी पसंद नहीं आती थी काका पुराने ख्यालात के थे और उन्हें बेटियों के घर का काम करने में ही अच्छाई नजर आती थी। परंतु कैप्टन साहब रूबी को पढ़ा लिखा कर के लंदन भेजना चाहते थे और उसे घर के कामों से दूर रखना चाहते थे। रूबी ने जूनियर कैंब्रिज की परीक्षा पास कर ली थी परंतु पिता के प्रेम ने रूबी को मनमाने काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया वह धीरे–धीरे गलत रास्ते की ओर जाने लगी वह अपने ही कक्षा में पढ़ने वाले जॉनी के नजदीक आने लगी वह उसके साथ घुलती मिलती उससे बातें करती थी और कहीं ना कहीं उससे आकर्षित भी थी।

काका को रूबी का कान्वेंट में आगे पढ़ना सही नहीं लगा। वह रूबी को इंद्रप्रस्थ स्कूल में पढ़ाना चाहते थे क्योंकि वहां पर हिंदू तौर–तरीकों की पढ़ाई होती थी जबकि कान्वेंट में लड़का लड़की साथ में पढ़ते थे और वहां पर बाइबल वगैरह पढ़ाई जाती थी। परंतु रूबी के पिता उसे कॉन्वेंट में ही पढ़ाना चाहते थे। धीरे–धीरे रूबी का मन ट्रू रोमांस में खोने लगा। वह पर पुरुष के ख्यालों में खोने लगी थी। उसे जॉनी से प्रेम हो गया था। एक दिन हेमा ने रूबी को घर में कहीं नहीं देखा वह चिंतित हो गई वह उसे ढूंढती हुई बाग में पहुंची जहां मां की आवाज सुनते ही रूबी ने जॉनी को वहां से जाने के लिए कहा और मां ने रूबी को वहां देखकर बहुत डांटा रूबी गुस्से में घर चली आई। इधर चंद्रप्रकाश एक स्कूल में पिछले आठ सालों से मास्टर थे गौरी भी बड़ी हो गई थी चंद्र प्रकाश शहर की भागदौड़ से बहुत ऊबने लगे थे परंतु गौरी के माता–पिता को ढूंढने के लिए उन्हें वहां रहना भी जरूरी लगा फिर चंद्रप्रकाश ने दिल्ली जाने का फैसला लिया।

जिससे रधिया थोड़ी नाराज हुई परंतु चंद्रप्रकाश ने गौरी के माता पिता को ढूंढने की ठान रखी थी। जानकी जो कि चंद्र प्रकाश की पत्नी थी, वह रधिया, चंद्रप्रकाश तीनो लोग दिल्ली की तरफ चल पड़े। अब चंद्रप्रकाश बंगाली मार्केट के प्राइमरी स्कूल का हेडमास्टर हो गया है। और उसे वहीं से एक मकान भी दिया गया है जहां पर वह तीनों गौरी के साथ रहने लगे परंतु एक दिन एक रोड एक्सीडेंट में चंद्र प्रकाश की मृत्यु हो गई। चंद्र प्रकाश की मृत्यु के बाद जैसे सब खत्म ही हो गया पत्नी जानकी और रधिया परेशान रहने लगे उनके पास पैसे धीरे–धीरे खत्म हो रहे थे।

रधिया ने वापस गांव जाने की बात कही परंतु जानकी तैयार ना थी क्योंकि चंद्रप्रकाश ने अपनी अंतिम सांस लेते हुए जानकी से वचन लिया था कि वह गौरी को उसके माता–पिता से जरूर मिलवाएगी। स्कूल से दिया हुआ मकान भी अब वापस लेने के लिए नोटिस दे दिया गया था। तभी सामने वाली एक औरत ने आकर जानकी से एक बड़ी कोठी में आया की नौकरी की बात कही रधिया नाराज हो गई कि ब्राह्मण होकर के वह किसी के घर में आया कि नौकरी नहीं करेगी। परंतु जानकी ने तुरंत हां कर दी जिस कारण रधिया और जानकी के बीच कहासुनी भी हुई जानकी ने गौरी के माता पिता को ढूंढने के लिए कैप्टन साहब के घर में नौकरी कर ली।

हेमा जानकी को बहुत मानती थी जानकी धीरे–धीरे उनके घर में घुल मिल गई गौरी भी अपनी पढ़ाई पर ही ध्यान देती थी जानकी को रहने के लिए कैप्टन साहब ने घर के पास ही एक सर्वेंट क्वार्टर दे रखा था। रूबी गौरी को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी एक दिन जानकी को घर की साफ सफाई करते समय उसे एक छोटी बच्ची की तस्वीर मिली।

जो कि बिल्कुल ही गौरी से मिलती–जुलती थी जानकी समझ गई थी कि गौरी कैप्टन साहब की ही बेटी है। परंतु उसके अंदर मातृत्व जाग गया वह अपनी बच्ची को यू नहीं देना चाहती थी, उसके जीवन का एक ही सहारा था गौरी वह सब कुछ जान कर के भी चुप रही उसने हेमा को कुछ नहीं बताया गौरी काका से घुलमिल गई थी काका गौरी से बहुत प्रेम करते थे। और उन्हें वह अपनी बेटी जैसी लगती थी वह गौरी को पढ़ाते और उसके साथ समय व्यतीत करते थे गौरी का बोलना काका को बहुत पसंद आता था हेमा भी गौरी का बहुत ध्यान रखती थी वह गौरी को बिल्कुल रूबी की तरह ही प्रेम करती थी।[10]

एक दिन दिसंबर की 15 तारीख को कैप्टन साहब दफ्तर के काम से कोलकाता चले गए। और एक दिन पहले काका भी एक मित्र की बेटी की शादी में चले गए थे। उस दिन कुछ ऐसा हुआ जिससे कि हेमा बहुत परेशान रहने लगी उस दिन रूबी सुबह–सुबह चाय नाश्ता करके घर से कहीं बाहर चली गई। किसी को कुछ नहीं पता कहां चली गई हेमा बहुत परेशान थी, उसने तुरंत जानकी को बुलाया जानकी और हेमा उसे सब जगह ढूंढने लगे पर वह कहीं नहीं मिली हेमा बहुत परेशान थी, आधी रात बीत चुकी थी अचानक से उन्होंने रूबी को आते देखा वह बहुत नाराज हुई रूबी बिना कुछ बोले अपने कमरे में चली गई। रूबी उस दिन विनोद से मिलने गई थी जिससे वह बहुत प्रेम करती थी। जानकी ने रूबी की जेब से मिले एक पत्र जो कि कवि प्रेमी का एक पत्र था रूबी के नाम पर। वह हेमा को दिखाया जिससे हेमा बहुत नाराज हुई और उसने यह समझ लिया था कि कैप्टन साहब के प्रेम का रूबी गलत फायदा

[10]लीला अवस्थी. दोराहे. हिंदीप्रचारकपुस्तकालय वाराणसी 1958 पृष्ठ संख्या 65

उठा रही है।[11] हेमा यह समझ चुकी थी कि रूबी कवि प्रेमी नाम के व्यक्ति के चक्कर में बुरी तरह से फंस चुकी है वह बहुत डर गई थी। अपनी बेटी की काली करतूतों के कारण उसका सर झुक ना जाए हेमा को बहुत धक्का लगा जिसके कारण से वह बीमार हो गई जानकी ने जी–जान से हेमा की सेवा करी परंतु रूबी उसे एक बार भी देखने नहीं आई वह सिर्फ विनोद के ख्यालों में खोई रहती उसके पत्रों को पढती और लिखती।

रूबी के एग्जाम आ गए थे उसके पेपर बहुत खराब हुए थे जिसके कारण वह बहुत उदास रहने लगी। इधर गौरी भी आठवीं कक्षा के एग्जाम दे रही थी उसके एग्जाम बहुत अच्छे हो रहे थे गौरी खूब खुश थी जब परीक्षाफल निकला तब पता चला गोरी पास हो गई और वह भी कक्षा में प्रथम आई है। गौरी बेहद खुश थी उसकी खुशी देखकर हेमा भी बहुत खुश थी और काका की तो खुशी का ठिकाना ही नहीं था उन्होंने गौरी को बहुत आशीर्वाद दिया काका ने गौरी के आगे पढ़ाई के लिए इंद्रप्रस्थ स्कूल की फीस जमा करा दी। गौरी का मन पढ़ाई में बहुत लगता था इधर रूबी को पता चला कि विनोद के पिताजी का तबादला हो गया है और वह यहां से सब कुछ छोड़ कर जा रहे हैं रूबी को विनोद ने आज रात को 11:00 बजे मिलने के लिए बुलाया था। वह बेहद परेशान थी कि वह कैसे जाएगी क्योंकि मां का पहरा अब दोगुना हो चुका था परंतु फिर भी रूबी छुपते छुपाते विनोद से मिलने चली गई विनोद ने उसे एक पत्र दिया और तुरंत वहां से दोनों लोग चले गए।

रूबी का परीक्षा फल आया रूबी फेल हो चुकी थी। रघुनाथ को बिल्कुल भी विश्वास नहीं था कि रूबी इस तरह से करेगी परन्तु काका को पूरा विश्वास था कि रूबी इस साल पास नहीं हो पाएगी हेमा भी संदिग्ध थी। अब सब को इस बात की चिंता होने लगी थी कि रूबी इतने बड़े घर की बेटी है वह फेल हो गई और एक नौकरानी की बेटी पास हो गई वह भी कक्षा में अव्वल आ करके सब बहुत दुखी थे। उसी समय उन्हें पता चला की रूबी गर्भवती है। जिससे सबको दोगुना झटका लगा उसके बाद काका की तबीयत अचानक खराब हो गई इतनी ज्यादा तबीयत खराब हुई कि डॉक्टर भी उन्हें देखकर कुछ परेशान से हुए वह बड़बड़ाने से लगे थे वह अपनी बेबी को बहुत याद करते थे वह दिन रात उसे याद करने लगे। यह सब देखकर जानकी को बहुत तकलीफ हो रही थी क्योंकि वह अच्छे से जानती थी कि बेबी ही गौरी है परंतु वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। फिर उसने भगवान से प्रार्थना की कि काका को अगर ठीक कर देंगे तो वह उन्हें सब सच बता देगी। कुछ समय बीता धीरे–धीरे काका की तबीयत में सुधार आने लगा और जानकी ने दिल पर पत्थर रख कर के उन्हें सारी बात बता दी। परंतु काका ने जब यह पूछा कि मैं कैसे मान लूं कि तेरी गौरी ही मेरी बेबी है तो जानकी ने उसके बचपन की फ्रॉक और उसके कान के बुंदे जो काका नहीं दिलवाए थे। और उसके

[11]लीला अवस्थी. दोराहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. पृष्ठ संख्या 86

छोटे की एक तस्वीर जो चंद्र प्रकाश ने मेले में खिंचवाई थी तीनों चीजें लाकर के काका के सामने रख दी। जिसे देखकर काका फूले न समाए कान के बूंदों को तो वह तुरंत ही पहचान गए उन्होंने गौरी को गले से लगा लिया।

उन्होंने जोरों से चिल्लाते हुए हेमा और रघुनाथ को बुला लिया। और उन्हें सब सच बता दिया कि गौरी ही उनकी बेबी है देखो हमारी बेबी मिल गई कैप्टन रघुनाथ खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। हेमा भी बेहद खुश थी उन्होंने गौरी को गले से लगा लिया और गौरी एक नौकरानी से रानी बन गई रूबी को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि वह उसे एक नौकरानी समझती थी। गौरी के मिलने की खुशी में उन्होंने एक पार्टी का आयोजन किया जिसमें वह ऐलान करना चाहते थे कि उनकी खोई हुई बेटी वापस मिल गई है। और जानकी का भी परिचय कराना चाहते थे जिसने उनकी बेटी को इतने प्यार से पाला था परंतु जानकी का रो रो कर बुरा हाल था क्योंकि वह अपनी बेटी अब खो चुकी थी जिस दिन पार्टी का आयोजन था। उस दिन हेमा जब जानकी को लेने पहुंची तो कोठरी में वह नहीं थी हेमा परेशान हो गए फिर उसने बाकी सब मेहमानों के सामने अपनी खोई हुई बेटी के मिलने का ऐलान किया।

रूबी के गर्भवती होने के पश्चात रघुनाथ बहुत परेशान थे वह उसका विवाह जल्दी से जल्दी करवाना चाहते थे। उसी समय रूबी को पढ़ाने के लिए आने वाले मास्टर कुंजीलाल ने रूबी से विवाह करने का निर्णय लिया। परंतु रघुनाथ ने उनसे पूछा कि आप रूबी से क्यों विवाह करना चाहते हैं जबकि यह किसी और का बच्चा है।

कुंजीलाल ने कहा कैप्टन साहब मैं रूबी को इसलिए स्वीकार करूंगा कि एक मनुष्य की हत्या ना हो मुझे ब्याह का मोह नहीं है मोह है तो सिद्धांतों का, इंसानियत का है, इंसानों का है, एक मनुष्य का गला घोट कर आप ईश्वर की एक सर्वोत्तम कृति का नाश कर देंगे। एक मां की ममता का गला घोट देंगे एक बाप के दुलार की हत्या कर देंगे मुझे उसी से प्यार है और अगर आप चाहे तो मैं रूबी को स्वीकार करने को तैयार हूं।[12] रूबी का विवाह कुंजीलाल के साथ हो जाता है समय बीतता जाता है रूबी के मुन्ने की वर्षगांठ है आज रूबी के विवाह को एक वर्ष बीत चुका है और उसका जन्मदिन मनाने के लिए रघुनाथ जी ने एक आयोजन रखा है।

आयोजन में जानकी को भी बुलाया गया और मेहमानों के सामने उसकी बहुत तारीफ करी गई गौरी का विवाह भी सेंट स्टीफन कॉलेज के प्रोफेसर कैलाश के साथ तय कर दिया गया। और नौकरानी से रानी तक का यह सफर गौरी का समाप्त हो गया। इस कहानी में एक एक ही मां बाप की दो बेटियां एक गरीबी में पली–बढ़ी और एक अमीरी में अमीरी में पली–बढ़ी बेटी गलत रास्तों पर चल दी और गरीबी में पढ़ी–लिखी बेटी अपने आदर्शों और उसूलों को ही सब कुछ मानते हुए आगे निकल गई लीला जी ने बड़े ही रचनात्मक ढंग से दोनों पात्रों को रचा।

---

[12]लीला अवस्थी. दोराहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. पृष्ठ संख्या 147

3.2 उषा प्रियंवदा 1960–70

उषा प्रियंवदा हिंदी उपन्यास साहित्य में एक चमकता हुआ सितारा है। हिंदी उपन्यास साहित्य में ऐसे असंख्य परिपक्व उपन्यासकार हैं जिन्होंने हिंदी उपन्यास साहित्य को चमक और समृद्धि प्रदान की है जिसमें एक नाम हम उषा प्रियंवदा जी का भी लेते हैं। इनके उपन्यासों में प्रेम, दयालुपन, बलिदान आदि नारी के चित्रण हैं। उषा प्रियंवदा जी ने एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में पाठकों को प्रभावित किया है। उनके लेखन का क्षेत्र बहुत ही बड़ा है और उसमें वास्तविकता को महत्व दिया गया है। वे बीसवीं शताब्दी के छठे दशक की एक महत्वपूर्ण और सशक्त लेखिका है। उषा जी ने अपने लेखन में आधुनिक समाज में नारी के दर्द और दुख को दिखाया है और उसकी समस्याओं और दुर्बलताओं को अपने लेखन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। इनके बहुत सारे उपन्यास पुरुष और महिलाओं के मानसिक और सामाजिक संकट को दर्शाते हैं।

प्रारंभिक जीवन

उषा जी का जन्म 24 दिसंबर 1931 को कानपुर में हुआ था। जहां उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की उन्होंने मास्टर डिग्री अंग्रेजी साहित्य में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की और वहीं से उन्होंने अपने पीएचडी भी पूरी की। इसके बाद उन्होंने दिल्ली और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नौकरी की पोस्टडॉक्टोरल करने के लिए वह ब्लूमिंगटन इंडियन यूनिवर्सिटी गई, अपने रिटायरमेंट के बाद उन्होंने लेखन को अपने जीवन में शामिल कर लिया।

उषा प्रियंवदा जी का विवाह किम विल्सन से हुआ था जो कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। उषा प्रियंवदा जी और उनके पति में संस्कृतियों का बहुत अंतर था उनके देश अलग अलग थे इसके बावजूद भी वह दोनों एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करते थे उनके पति के परिवार ने भी उषा जी को बहुत ही प्रेम से स्वीकार कर लिया था। जबकि उषा जी को इस पर आश्चर्य होता था वह लिखती हैं" किम का बचपन मुझसे कितना मिलता है, इस सागर, झीलों और चीड़ के वनों के बीच दूसरे महायुद्ध के नीचे उनकी तुलना में मेरा बचपन कितना घटना ही लगता है। मैं कानपुर जैसे भीड़ वाले नगर में मिल की चिमनीयों के धुए से मटमैले आकाश के नीचे पली हूं, पर कितने सहज भाव से सब ने मुझे स्वीकार कर लिया है जैसे मैं कुछ भी फर्क या नवीन नहीं हूं।"[13]

समय के उस पड़ाव में लेखिका उषा प्रियंवदा –बहुत चर्चित लेखिका रही किंतु उन्हें लेखन में उस मुकाम तक पहुंचने के लिए बहुत ही संघर्ष करना पड़ा। उस समय ऐसी लेखिका बहुत कम थी जो अपने विचारों को अपने लेखन में उतार सकें। बीसवीं शताब्दी नारी के उत्थान का युग था नारी प्राचीन सामाजिक बंधनों रीति–रिवाजों में जकड़ी हुई थी

[13] शोधगंगाinflibnet.ac.in 04 nov19

लेकिन आज वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तैयार है और समाज में कई उच्च पदों पर वह अपना स्थान बना चुकी है। आधुनिक नारी और उसकी परिवारिक जीवन को समझ कर पति–पत्नी के संबंधों पर नानी की मन– स्थिति को समझ कर अपने लेखन में उसको उतारने का कार्य उषा प्रियंवदा जी ने बखूबी किया है यथार्थ को दर्शाते हुए उषा जी ने नारी के स्थान को अपने लेखन के द्वारा समाज को बताने का प्रयास किया है।

उषा प्रियंवदा जी के साहित्य में उनके जीवन का और व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है एक स्त्री होने के नाते नारी की स्थिति में उतार–चढ़ाव को वह बखूबी समझती हैं।

उषा प्रियंवदा जी का रचना लेखन

उषा प्रियंवदा जी 1960 से 70 के दशक की एक बेहतरीन उपन्यासकारा थी। 1961 में प्रकाशित उनका पहला उपन्यास पचपन खंभे लाल दीवारें ने तो सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। और उषा जी का हिंदी साहित्य एक जाना माना नाम हो गया। उषा प्रियंवदा जी के साहित्य की नारी अपने प्रतिभा अपने चिंतन अपनी संवेदनशीलता के कारण पाठकों पर पाठकों के मन पर अपने कभी न मिटने वाले छाप छोड़ जाते हैं। उषा जी के उपन्यासों में मुख्य महानगर और विदेश में बसे पति के साथ जीवन यापन करने वाली स्त्री के मन को अपने कलम के द्वारा उपन्यासों में चित्रित करते हैं।

आज का मनुष्य नवीन भौतिक सुख सुविधाओं की ओर बढ़ रहा है जिस प्रकार भौतिक सुख सुख सुविधाएं उसके मन पर हावी होती चली जा रही हैं उसी तरह उसके जीवन में अकेलापन और उदासी भी पनपने लगी है। उषा जी की चित्र नारी मुक्त जीवन यापन करना चाहती हैं वह पारंपरिक बंधुओं को तोड़कर नवीन जीवन जीना चाहती हैं और स्वतंत्रता से अपने जीवन का निर्वाह करना चाहती हैं। वह एक सशक्त नारी को चित्रित करती हैं जोकि अपने खुले विचारों और अपनी स्वतंत्रता को समाज के प्रति बेहिचक रखें जिस समाज में स्त्रियों को हमेशा दूसरे दर्जे पर रखा है।

उषा प्रियंवदा जी के जाने–माने उपन्यास

पचपन खंभे लाल दीवारें 1961

रुकोगी नहीं राधिका 1967

शेष यात्रा 1984

अंतर वंशी 2000

रुकोगी नहीं राधिका

रुकोगी नहीं राधिका उपन्यास में केंद्रीय नायिका राधिका अपने पिता से बहुत ही प्रेम करती हैं। उसकी मां की मृत्यु हो गई थी जब वह 18 वर्ष की थी हो गई थी। और उसके पिता ने अपनी उम्र से बहुत छोटी लड़की विद्या से विवाह कर लिया था। तभी से राधिका के व्यवहार में बहुत अंतर आ गया था। जिसकी वजह से उसके अंदर बदला लेने की भावना उत्पन्न होने लगी थी राधिका अपने से 18 वर्ष बड़े लड़के के साथ समझौता कर लेती है तथा उसने राधिका को शिकागो विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलवा दिया। वहीं पर उसकी भेंट मनीष नाम के लड़के से हुई, कई वर्ष विदेश में रहने के बाद वह अपने देश वापस लौट आती है।

राधिका स्वतंत्र मन की नारी है तथा वह देश छोड़कर विदेश में जाकर बसती है जिससे उसका संघर्ष प्रारंभ होता है। राधिका के जीवन में अकेलापन और अपनेपन की कमी का भाव है राधिका को अपने जीवन यात्रा में कई पुरुष साथी मिले जिसमें अक्षय और मनीष हैं। इस उपन्यास में उषा जी ने भारतीय और विदेशी दोनों सभ्यताओं को बताया है अपनी भी माता विद्या के प्रति राधिका का भाव बहुत तीव्र है। आधुनिक समाज में युवा संतानों के सामने पिता अथवा माता की दूसरे विवाह के कारण उत्पन्न विचलन दर्शाता है जैसा कि राधिका के पिता के दूसरे विवाह के समय राधिका के मन को विचलित हुआ था। इस उपन्यास में उषा जी आधुनिक नारी के बदलती हुई दृष्टि को चित्रित करती हैं तथा राधिका को आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व बताती हैं।

शेष यात्रा

उषा जी के कई उपन्यासों में सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास शेष यात्रा है। इसमें उन्होंने उपन्यास की केंद्रीय नारी अनु के मन में होने वाले आत्म द्वंद को समझ कर चित्रित करने का प्रयास किया है। अनु अपने पति द्वारा उपेक्षित स्त्री है। परंतु उसके बावजूद वह पारंपरिक सामर्थ्य हीनता को तोड़ने का प्रयास करती है। अपने साहस से वह अपनी किस्मत बदलने का सफलतापूर्वक प्रयास करती है। और मध्यवर्गीय भारतीय समाज का चित्र उषा जी इस उपन्यास में यथार्थता के साथ किया हैं। शेष यात्रा उषा जी का उपन्यास है जिसमें नव जीवन की कठिन स्थितियों का एक सफल दस्तावेज कहां जा सकता है। इसकी नायिका अनु का संघर्ष जोकि बखूबी साहस पूर्ण है और उसी का कलात्मक स्वरूप चित्रित किया गया है। उपन्यास में पति द्वारा तलाक दिए जाने के बावजूद अनु नए विचारों को ग्रहण करती है ना की अबला बनकर सहन करती है समाज में चल रहे अंतर्विरोधों का उषा जी ने यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने विदेश में रह रहे प्रणव का विवाह अनु के साथ हो जाता है और वह उसके साथ अमेरिका चली जाती है। परंतु धीरे–धीरे वहां पहुंचने के बाद अनु को कुछ सच्चाई यों का पता चलता है जिसमें डॉक्टर प्राण का रुचि रुचि उसकी सहयोगिनी चंद्रिका के साथ भी होती है। चंद्रिका ही नहीं बल्कि कई और स्त्रियों के साथ ही प्रणव के संबंध रह

चुके हैं। अनु जो कि मन से बहुत ही साहसी साहसी स्त्री है जब उसे यह सब पता चलता है तो उसके जीवन में एक वज्रपात हो जाता है। बाद में उसका तलाक प्रणब से हो जाता है प्रणब अपने जीवन में सब कुछ हार जाता है। कई वर्षों के बाद अनु के सामने टूटे हुए और बीमारी से घिरे हुए प्रणब को देखकर वह पुनः विचलित होती है। अनु भगवान से विनती करती है और अपने प्रणव को देखकर उसके पास जाना चाहती है। इस प्रकार उषा जी ने नारी जीवन की स्थितियों का कठिनाइयों का सफल लेखन किया है और अपने पात्रों के साथ वह अंतरंगता से जुड़ी हैं उन्होंने समाज के यथार्थ को अपने लेखन में उतारा है। और उपन्यास की नायिका विभिन्न परिस्थितियों में भी समाज को बदलने का की प्रेरणा देती है अन्नू अपने सहेली दिव्या से प्रेरित होकर डॉ बनती है और दीपांकर के साथ विवाह करती है वह आशावादी है। और अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए तत्पर है सहेली दिव्या उसे आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती है तथा सामाजिक परिवर्तनों में योगदान प्रदान करती है।[14]

अंतर्वंशी

उपन्यास लेखन में एक लंबे अंतराल के बाद उषा प्रियंवदा जी ने सन 2000 में अंर्तवंशी को रचा। विदेश की भूमि पर स्थित एक भोली भाली भारतीय पत्नी के मन की तकलीफों को और उसके बाहरी परिवर्तन से उभरी हुई उसकी प्रतिभा का प्राक्कलन लेखिका ने बड़े ही सीधे साधे रूप में अंतर्वंशी में किया है। इस उपन्यास में विदेश में रहने वाले पति के जीवन यापन और उसके साथ भारतीय स्त्री के सुख दुख की सच्चाई को बड़ी गहराई से महसूस करके चित्रित किया है ।

अंतर्वंशी उपन्यास के मुख्य नायिका बनारस की वनश्री या बांसुरी है। जो कि अमेरिका में पहुंचकर वाना बन जाती है। उषा जी वाना की मनो स्थिति के माध्यम से विदेश में रह रही है। भारतीय नारी के सामाजिक और मानसिक विषमता का मार्मिक लेखन करती हैं और दोनों के बीच के द्वंद को प्रस्तुत करते हैं। अपने पति और दोनों बेटों के साथ वाना जीवन के बदलती घटनाओं से मैं उलझी हुई है। घरेलू स्त्री के समान है परंतु जब उसका परिचय शिक्षित और विचारशील पाश्चात्य विचारों से प्रभावित व्यवसायिक महिलाओं शालिनी, सारिका, क्रिस्टीन, ग्रेस, आदि से होता है तो उसके मन में कई विचार प्रवाहित होने लगते हैं।[15]

[14]उषा प्रियंवदा, शेष यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984

[15]उषा प्रियंवदा, अंतरवंशी, उत्तम प्रकाशन आनंदविहा,र दिल्ली 2003

अपने पति और बच्चों के साथ खुश है परंतु कहीं ना कहीं उसके भीतर की नारी अपनी स्वयं की पहचान बनाने के लिए व्याकुल हो रही है। उसके जीवन का अर्थ परंपरागत धारणाओं से अलग है। वह भी अपना अस्तित्व परिवार से अलग कायम करना चाहती है उसका संबंध जहां एक और शिक्षित नारियों से है तो दूसरी ओर अपने परिवार पति, बेटों, बुआ और चाची से हैं। इन सभी ने हमेशा बाना का साथ दिया है और विपरीत परिस्थितियों में भी उसके जीवन को संभाला है इस प्रकार वह अपने जीवन में दोनों ही परिस्थितियों से जूझती और उससे उभरती हुई नारी है जोकि अपने अंतर्मन के धूम को सुन पाती हैं और अपने जीवन में ठहराव को अनुभव कर पाती है।

पचपन खंभे लाल दीवारें

पचपन खंभे लाल दीवारें उषा जी का पहला उपन्यास है। यह 21 अध्यायों में विभक्त है। उषा जी ने इस उपन्यास में भारतीय नारी की उन विशेषताओं से जन्मी हुई मानसिक प्रताड़ना जो कि सामाजिक और आर्थिक विशेषताओं के कारण हुई है का चित्रण किया है। इस उपन्यास की मुख्य नायिका सुषमा है जिसके माध्यम से उषा जी ने अपने विचारों को प्रकट किया है। सुषमा अपने घर में सबसे बड़ी बेटी है और वह अपने पूरे परिवार का खर्च चलाती है। वह पुरुष के समान ही कार्य करती है परंतु इस उपन्यास में सुषमा की भावनाओं और परिवार तथा सामाजिक परिवेश के बीच में एक संघर्ष सा चल रहा है।

सुषमा एम. ए. तक पढ़ी है एम ए जो कि दिल्ली के एक महिला विद्यालय में अध्यापिका है जिसके लिए घर का अर्थ उपार्जन करना ही मुख्य काम है। जबकि घरवाले उसके विवाह का बिल्कुल भी प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। पचपन खंभे लाल दीवारें उपन्यास में उषा जी ने भारतीय नारी के सामाजिक और उससे उपजे हुई मानसिक विषमताओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। इस उपन्यास में केंद्रीय नायिका सुषमा जो कि छात्रावास में रहती है और उसे पचपन खंभे लाल दीवारें जो उस का प्रतीक है से घुटन का एहसास होता है। परंतु फिर भी वह उससे मुक्ति नहीं पा पाती है। इन परिस्थितियों में जीना उसकी नियति बन गई है लेखिका ने इस उपन्यास के द्वारा यह प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि आधुनिक जीवन में जो हम नहीं करना चाहते हैं, वह भी हमें करना पड़ता है। और उसका उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से बड़ा ही कलात्मक और हृदय ग्राही रूप प्रस्तुत किया है।

उषा जी का साहित्य संग्रह शहरी परिवारों पर ही ज्यादातर लिखा गया है और उसमें आधुनिक जीवन की अकेलेपन उदासी आदि का अंकन बहुत ही गहरे ढंग से यथार्थता के करीब लिखा गया है। नारी जहां आत्मनिर्भर बनना चाह रही है वही उसे उस आत्मनिर्भरता के मूल्य को भी चुकाना पड़ता है। नारी के ऊपर कई दायित्व होते हैं जिसे निभाते निभाते कभी–कभी वह ऊब जाती है पर अपने संयम को बरकरार रखती हैं। कई स्त्रियां तो अपने सामाजिक दायित्व को बनाने के लिए आजीवन विवाह भी नहीं करती हैं। आज की नारी घर को चलाने के लिए बाहर निकल कर

पैसे कमाने जाती हैं और पढ़ी लिखी नारी का कई बार भावात्मक तरीके से भी शोषण होता है लेखिका ने उस नारी की जिसके भीतर सही संवेदना को देखते हुए उसे अपने उपन्यास के द्वारा लिखा है।

इस उपन्यास की शुरुआत नायिका सुषमा के अतीत अवलोकन से होता है। वह अपने अतीत के बारे में सोच रही हैं। उसे ऐसा लगता है जैसे कि नील उसके पास आकर खड़ा हो गया है परंतु यह सिर्फ एक भ्रम था सुषमा को रात्रि के अंधेरे में अपने अंधकार जीवन की याद आती है। और वह अपने अतीत के दुख में जीवन में खो जाती है वह अपने अतीत को देखती है और अकेली ही रह जाती है वह यह भूल जाती है कि वह उन पलों को पार कर चुकी है तथा वह उन कष्टों से आगे बढ़ चुकी है।

सुषमा को अपनी मासी की याद आती है और वे अपनी मासी को एक पत्र लिखती है। उसकी मौसी उस पत्र के जवाब में कुछ बताती है। कि उसकी सहेली कौशल्या की एक रिश्तेदार दिल्ली आ रहे हैं जिनके साथ उन्होंने साड़ियां भेजी हैं। सुषमा से उसकी मौसी विवाह करने के लिए कहती हैं। मौसी के बात सुनकर सोचने लगती हैं पर उसके ऊपर अपने घर की कई जिम्मेदारियां होती हैं जिसे वह ना चाह करके भी निभाना चाहती है।[16]

सुषमा के माता–पिता सोचते हैं की अगर पढ़ी–लिखी लड़की को विवाह करने की क्या जरूरत है? वास्तव में वह सुषमा का विवाह नहीं होने देना चाहते हैं। क्योंकि उसकी आमदनी से घर का खर्च चलता है और छोटे बच्चों के पढ़ाई लिखाई उसी के दिए हुए पैसे से चलती है। यदि कोई सुषमा के विवाह की बात भी चलाता है तो वह सब कुछ सुषमा पर ही डाल देते हैं सुषमा भी कुछ कह नहीं पाती है तथा वह नजरें चुराने लगती हैं। शादी की बात चलते ही अम्मा कृष्णा मौसी से कहती हैं कि तुम जानो सुषमा की शादी तो अब हमारे बस की बात नहीं है। इतना पढ़ लिख गई है अच्छी नौकरी है और अब तो क्या कहते हैं हॉस्टल में वार्डन बनने वाली है। बंगला और चपरासी अलग से मिलेगा बताओ इसके जोड़ का लड़का मिलना मुश्किल ही है। तुम्हारे जीजा तो कहते हैं कि लड़की सयानी है जिससे मन मिले उसी से कर ले हम खुशी–खुशी शामिल हो जाएंगे।[17]

सुषमा की मौसी जवाब देते हुए कहती हैं, कि यह गैर जिम्मेदारी तो जीजा जी की ही है जब सुषमा पढ़ रही थी तभी उसका विवाह कर देना चाहिए था। अब क्या बिन ब्याही बेटी अच्छी लगती है। सुषमा के माता–पिता सोचते हैं की अगर पढ़ी–लिखी लड़की है तो उसे विवाह करने की क्या जरूरत है वास्तव में वह सुषमा का विवाह नहीं होने देना

[16]उषा प्रियंवदा. पचपन खंभे लाल दीवारें. राजकमल प्रकाशन. 2009. पृष्ठ संख्या

[17]उषा प्रियंवदा. पचपन खंभे लाल दीवारें. राजकमल प्रकाशन. 2009. पृष्ठ संख्या 13

चाहते हैं। सुषमा की मां पहले तो नहीं चाहती थी कि लड़की घर से बाहर निकल कर के कार्य करें परंतु घर की परिस्थितियां कुछ ऐसे ही थे। लेकिन बाद में वह खुश रहने लगे और उसका पूरा ध्यान सुषमा के छोटे भाई बहनों पर ही रहने लगा अम्मा सुषमा की नौकरी से खुश थे। सुषमा कहीं ना कहीं यह चाहती थी कि उसके जीवन में आये उथल पुथल को अम्मा समझने का प्रयास करें।

इधर हॉस्टल में कार्य और बढ़ गया था जिसका सारा कार्य सुषमा के ऊपर ही आ गया था। सारी अध्यापिका कुछ ना कुछ बहाना बनाकर एक चली जाती थी। एक बजे के बाद के सारे कार्यों को सुषमा को दे दिया गया एक मीनाक्षी सुषमा से विवाह करने के लिए कहती है परंतु सुषमा टाल जाती है लेकिन अब अम्मा को निरुपमा की शादी से चिंता होने लगी है और वह सुषमा से कहते हैं कि वह अपने खर्च को कम करें और कुछ पैसों को जोड़ना शुरू करें इसे यह पता चलता है कि निर्भर होने के बावजूद भी सुषमा अपने मन से अपने खर्च को नहीं कर सकती है तथा उस पर दूसरों का दबाव है।

एक सुबह जब सुषमा अपने ऑफिस में बैठे हुए डाक देख रही चपरासी थी उसे बताता है कि आपसे कोई मिलने आया है। सुषमा अपनी मां का खत पढ़ रही होती है तथा उसे पढ़कर वह उससे मिलने जाती है। बाहर उसका परिचय नील से होता है जो कि कुछ समय के लिए उसके जीवन में हरियाली लेकर आता है। सुषमा नील को छोटा समझती है नील भी मजाक में सुषमा को पचास साठ साल की बताता है नील को अपनी तरफ देखते हुए सुषमा को अपने सौंदर्य का बोध होता है। और कॉलेज का घंटा बजने पर नील जाने के लिए खड़ा हो जाता है परंतु सुषमा उसे रोकती है पर कुछ लड़कियां नील को अंदर झांकते हुए नील को देख कर मुस्कुराती हैं तो नील चलने के लिए तैयार हो जाता है सुषमा अपना रजिस्टर उठाती है और बाहर तक नील को छोड़ने के लिए जाती है और जाते समय को साड़ियों के लिए शुक्रिया अदा करती है।

सुषमा की मौसी की सहेली कौशल्या जी का फोन आता है और वह नील आने का समाचार देती है इसे सुनकर सुषमा खुश हो जाती है और वह अपने घर को सजाने लगती है। वह खुद भी उनके आने से पहले तैयार हो जाती है और जो कौशल्या जी के साथ नील को भी देखती है तो वह और विस्मय हो जाती है। कौशल्या जी से बातें करते समय कभी–कभी नील की तरफ से देखती है कौशल्या जी से बात करते हुए कौशल्या जी सुषमा से कहती हैं कि ष्कृष्णा कहती है कि सुषमा ने तो भाई बहनों के कारण अपने आपको मिटा दिया है।[18] कौशल्या की यह बात सुनकर के वह असहज रह जाती है और सहजता खत्म हो जाती है।

[18]उषा प्रियंवदा. पचपन खंभे लाल दीवारें. राजकमल प्रकाशन. 2009. पृष्ठ संख्या 33

एक दिन सुषमा अपने कॉलेज मैं बैठी होती है तभी अचानक से उसकी सहेली मीनाक्षी आ जाती है जो कि उसके पर्स से पैसे निकाल रही होती है। वह किसी पुरुष के साथ डिनर पर जा रही होती है जिसे देखकर सुषमा को अपने अकेलेपन का एहसास होता है अचानक ही उसे नील की याद आने लगती है। बहुत दिनों से उसकी कोई खबर नहीं मिली उसके आने से एक सुकून सा सुषमा को मिलता था सोचती है कि शायद नील को उसकी उम्र का पता नहीं है पर वह नील को पसंद करती है परंतु उसके सामने उसके परिवार की जिम्मेदारी आ जाती है और वह कुछ नहीं कर सकती परंतु चाहती है कि कोई उसे भी सहारा दे।

3.3 ममता कालिया 1970 –80

2 नवंबर 1946 को ममता जी का जन्म वृंदावन उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम विद्या भूषण अग्रवाल और माता का नाम श्रीमती इंदुमती था। ममता जी को बचपन से ही माता और पिता ने बड़े ही प्यार से पाला था। उनके पिताजी को साहित्य का बहुत साहित्य में रुचि थी जिससे कि बचपन से ही उन्हें एक साहित्यिक वातावरण मिला था।

ममता जी की शिक्षा बड़े–बड़े महानगरों जैसी गाजियाबाद, मुंबई, दिल्ली, इंदौर, पुणे में हुआ था। उनके शुरुआती पढ़ाई गाजियाबाद में हुई उनके पिता रेडियो स्टेशन में कार्यरत थे इसकी वजह से हर 2 साल में उनका तबादला हो जाता था। हर 2 साल में ममता जी को भी अपना स्कूल बदलना पड़ता था। पूना में ममता जी ने एसएससी की परीक्षा दी इंदौर के विक्रम विश्वविद्यालय में 1968 में बी. ए. की परीक्षा प्राप्त की। इसके बाद 1963 में अंग्रेजी में एम. ए. की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। ममता जी ने दौलत राम महाविद्यालय दिल्ली में अध्यापिका के पद पर नौकरी करें उसके बाद श्रीमती नाथी बाई दामोदर ठाकुर सी महिला विश्वविद्यालय मुंबई में सेवारत रही तथा महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज में 1973 में इलाहाबाद में प्रधानाचार्य बनी। अपने साहित्य में स्वतंत्र लेखन के द्वारा नारी चिंतन विषय पर लिख कर अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं।

12 दिसंबर 1964 को दिल्ली में ममता जी का विवाह जाने–माने रचनाकार रविंद्र कालिया जी के साथ हुआ दोनों का परिचय एक साहित्य गोष्ठी में हुआ था। विवाह के पश्चात रविंद्र जी के साथ उनका जीवन सुखी और संघर्ष रहित बना।

रविंद्र कालिया जी ने ममता जी के लिए कहा था "मैंने जीवन में जब जब कोई जोखिम उठाया है ममता एक चट्टान की तरह मेरे साथ खड़ी रही है। मेरे कारण ही उसने अपने भविष्य को कई बार दांव पर भी लगाया है। मेरे साथ कई नौकरियां छोड़ी ,हैं संघर्ष किए हैं और कई कष्ट भी झेले हैं। ममता ने साथ ना दिया होता तो शायद मैं मुंबई कभी

छोड़ नहीं पाता।"[19] ममता कालिया के सभी उपन्यासों साहित्य के प्रथम पाठक रवींद्र कालिया जी हैं और प्रथम आलोचक भी वही है उनकी रचनाओं को उचित शीर्षक भी वही देते हैं और कई बार विचार–विमर्श भी करते हैं।

रवींद्र कालिया जी ने अपनी पत्नी ममता जी को उनके लेखन व्यक्तित्व को बहुत महत्व दिया और उनके लेखन कार्य को प्रोत्साहित किया। रवींद्र जी ममता जी को लिखने के लिए हमेशा साहस देते थे। ममता जी के साहित्य जीवन के दो प्रमुख व्यक्तित्व हैं जिन्होंने हमेशा उन्हें साहित्य जीवन के लिए प्रोत्साहित किया है उनके पिता और उनके पति।

ममता जी ने उपन्यासों में अपने आसपास के समाज का ही उल्लेख किया है उन्होंने समाज में हो रहे बदलाव को निकटता से परख कर अपने लेखन में जगह दी है। भारत में प्राचीन काल से ही नारी की स्थिति दयनीय बनी हुई है जब ममता जी ने लेखन कार्य शुरू किया उस समय नारी सशक्तिकरण का दौर प्रारंभ नहीं हुआ था। शिक्षित प्राप्त नारी भी पुरुष के शिकंजे में पूरी तरह से फसी हुई थी। ममता जी एक संवेदनशील व्यक्तित्व होने के नाते नारी की समस्याओं पर उनके द्वारा सहन करने वाले कष्टों को अपनी रचनाओं की अभिव्यक्ति बनाई और समाज के यथार्थ को उन्होंने अपनी रचनाओं में जगह दी। ममता जी ने अपने गुस्से को अपने लेखन कार्य में ग्रहण किया वे स्वयं लिखती हैं "कितना ही सच अपनी नसों पर ढेला है कितना कुछ औरों को झेलते देखा है। इस समय जो भी लिखा उसमें अपनी पूरी ताकत लगा दी है हर साल लिखा किसी भी मूड में लिखा अपना गुस्सा, अपना प्रेम, अपनी शिकायतें, अपनी तकलीफ हो को हमेशा अपने लेखन में मददगार पाया है। जो कुछ भी सामने कहने में सात जन्म लेने पड़ते हैं वह सब अपने साहित्य में किसी न किसी के मुंह से निकलवा दिया।"[20]

ममता जी के उपन्यास साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी और पुरुष को सामान दिखाना है नारी के विभिन्न रूपों में संघर्ष को दिखा कर अपने उद्देश्य तक पहुंचने के नारी के सफर को वह अपने उपन्यासों में व्यक्त करती हैं। वह नारी को हमेशा बराबरी की की जिम्मेदारी देती हैं और उसे भी समाज में उतना ही हकदार समझती है जितना के पुरुष है। उनके उपन्यासों में नारी पात्र एक सशक्त व्यक्तित्व वाले है ममता जी की रचनाओं में स्वतंत्र भारत के समाज को आईना दिखाया गया है जिसमें आधुनिक शिक्षित नारी के इर्द–गिर्द घूमती हुई समस्याओं और कष्टों को समझ कर उसे अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप प्रदान किया है।

ममता कालिया जी के उपन्यास

[19]म्मता कालिया. ममता कालिया की कहानियां खंड एक. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2005 .पृष्ठ संख्या 14

[20]म्मता कालिया. 10 प्रतिनिधि कहानियां. किताबघ रप्रकाशन नई दिल्ली. 2005. पृष्ठ संख्या 8

बेघर

नरक दर नरक

प्रेम कहानी

लड़कियां

एक पत्नी के नोट

दौड़ 2000

अंधेरे का ताला

ममता कालिया जी के लेखन में उन मध्यवर्गीय शिक्षित स्त्रियों का वर्णन हुआ है। जिन की समस्याएं और तकलीफों को समाज के सम्मुख रखना चाहिए था। घर परिवार के बीच फैले मनमुटाव तथा नौकरी पर जाने वाली नारी की व्यवस्थाओं को उन्होंने नजदीक से देख कर परखा है और अपने उपन्यासों के द्वारा उनकी आवाज बनी। उनके उपन्यासों में नारी के विभिन्न रूपों को चित्रित किया गया है चाहे वह बेघर उपन्यास की नारी हो जोकि अपने परंपरागत अवधारणा को खत्म करना चाहती है और इसमें विवाह से पूर्व स्त्री पुरुष के संबंधों का खुला ब्योरा दिया गया है। इसी प्रकार दूसरे उपन्यास में युवा पीढ़ी का संघर्ष बताया है उनके लगभग सभी उपन्यासों में वैवाहिक सामाजिक राजनीतिक आर्थिक आदि विडंबना का यथार्थ रूप मिलता है। आज के समय में दुनिया में हमारा देश तरक्की कर रहा है उसी समय कुछ संकुचित सोच वाले लोग सामंती और सामंती सामुदायिकता और पित्रसत्तात्मक जैसी पुरानी सोच कि और भी बढ़ रहे हैं।

नरक दर नरक

नरक दर नरक ममता कालिया का दूसरा उपन्यास था। इस उपन्यास में ममता जी ने गृहस्थ और मध्यम वर्गीय जीवन की विडंबना का चित्रण किया है। इसमें साधारण से इंसान के जीवन में आने वाली कठिनाइयों और आर्थिक समस्या से उत्पन्न होने वाली कुंठा और निराशा का वर्णन किया है। जो कि इन परिस्थितियों के कारण एक साधारण इंसान का जीवन नर्क के समान बना देती है इस उपन्यास में उषा और जगन का की मुख्य भूमिका है जो कि विवाह के पश्चात होने वाली समस्याओं को सुलझाने में नाकाम होते हैं और एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। इस उपन्यास में अलग–अलग परिवेश से आए उषा और जगन के दांपत्य संबंधों में आने वाले विघटन का चित्रण किया गया है।

ममता जी ने अपने इस उपन्यास में समाज के की सच्चाई का वर्णन किया है इसमें एक ऐसे इंसान की कहानी है जिसमें इमानदारी है, मेहनती है, प्रतिभाशाली है, और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण डिग्रियां भी हैं। परंतु फिर भी वह रोजगार के लिए दर–दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। जगन को मुंबई के चिड़िया कॉलेज में प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति मिल जाती है। जगन गर्मियों की छुट्टियों में भी संस्थान से जुड़ा रहता था जहां पर जगन की मुलाकात उषा से होती है। उषा किसी विषय में अध्यापक से बहस करने लगती है उसका निखरता हुआ रूप और अपनी बातों को चुनौतीपूर्ण रखने वाला व्यक्तित्व जगन को बहुत प्रभावित करता है। जगन रात में हॉस्टल में हाजरी लेने जाता है जहां वह उषा को उम्दा पाकर उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। फिर लिफ्ट में अचानक से उषा को देखते हुए जगन तत्काल उसके गालों पर चुंबन दे करके अपने प्यार का इजहार करता है। उषा जो कि अकेलेपन का शिकार हुई लड़की है वह जगन के इस व्यवहार से उसकी ओर प्रेरित होती है और उसके सम्मुख खिंचती चली जाती है। माता और पिता के खिलाफ जाकर जगन से विवाह करने का निर्णय लेती है। और विवाह के पश्चात दे मुंबई में ही रहने लगते हैं परंतु जगन के कम वेतन और आर्थिक तंगी के कारण दोनों के बीच परिवर्तन आने लगता है। नौकरी के प्रति समर्पित जगन से उषा बुरी तरह से ऊब जाती है और दूसरी तरफ केडिया कॉलेज के प्रिंसिपल और विभागाध्यक्ष जगन को किसी मामले में फंसाकर कॉलेज से निकाल देते हैं।

बेरोजगारी और बेकारी के चलते जगन और उषा वापस चंडीगढ़ जहां के रहने वाले हैं ,चले जाते हैं। वहां पर वह अपनी पुश्तैनी जमीन बेचकर इलाहाबाद में एक प्रेस खरीदने का निर्णय लेते हैं यह प्रेस उन्हें आर्थिक कष्ट से मुक्ति दिलाता है। लेकिन जगन इन कार्यों में अधिक व्यस्त हो जाता है जिसकी वजह से उषा को अपना अकेलापन लगता है जिसके द्वारा वह अपनी जिंदगी बेमतलब से समझने लगती है। हताश होकर पूछा मां बनने का निर्णय लेती है तथा उसे यह लगता है कि बच्चे का जन्म होने के बाद उसका खालीपन खत्म हो जाएगा। उषा पढ़ी–लिखी शिक्षित नारी है परंतु नौकरी हासिल करने में वह नाकाम हो जाती है फलता उसका विद्रोह पूरे देश में फूट पड़ता है। मोहर्रम के जुलूस में भीड़ के आक्रमण के कारण जगन की सारी जमा राशि नष्ट हो जाती है और दोनों का बेटा बबलू भी खो जाता है ऐसी स्थिति में जगन और उषा दोनों अपने बेटे बबलू को ढूंढने के लिए आतुर हो जाते हैं परंतु बेटे के मिलते ही जगन दुनिया की सबसे बड़ी उपलब्धि समझता है और वह बेटे और पत्नी को फिर से अपना लेता है।[21]

प्रेम कहानी

ममता जी का तीसरा उपन्यास प्रेम कहानी है। इसके माध्यम से यह बताना चाह रहे हैं कि चिकित्सालयों में भ्रष्टाचार अन्याय क्रूरता इतनी ज्यादा फैल गई है। कि उसको समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना जरूरी हो गया है। इस

[21]म्मता कालिया नरक दर नरक किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2008

उपन्यास ममता जी ने जीवन के बदलते हुए संदर्भ में अस्पतालों डॉक्टरों की पृष्ठभूमि पर प्रेम को निर्धारित करते हुए प्रेम की जरूरत को प्रस्तुत किया है। ममता जी ने नारी के जीवन को इस उपन्यास में सुंदर रूप से दर्शाया है और यह बताने का प्रयास किया है कि नारी पुरुष के हाथों की कठपुतली नहीं है बल्कि वह सारे दुखों को बर्दाश्त करके भी पुरुष को खुश रखना जानती है।

इस उपन्यास की शैली आत्मकथात्मक है। इस उपन्यास में ममता जी बेमेल विवाह का चित्रण करती है। जिसमें माता–पिता की इकलौती संतान अपने माता–पिता के विरोध के बावजूद प्रेम विवाह करती है और उसके दांपत्य जीवन में तनावों को अनुभव उपन्यास का मुख्य विषय है। उपन्यास में दो नारी हैं जया और यश दोनों को ही समानांतर बिंदु पर रखा गया है। एक अपने माता पिता के विरोध के बावजूद प्रेम विवाह करती है और दूसरी परंपराओं से पुरानी परंपराओं से विवश होकर अपने प्रेम का त्याग करती है। दोनों ही लड़कियों ने प्रेम किया एक ने अपने देश में रहने वाले व्यक्ति से और दूसरे ने विदेश में रहने वाले व्यक्ति। जैसा कि उपन्यास के शीर्षक से ही पता चलता है परंतु दोनों ही नारी कुछ समय बाद एक जैसा ही अनुभव महसूस करती हैं चाहे वह प्रेम विवाह हो या माता–पिता की मर्जी से दोनों में ही व्यक्तिगत और सामाजिक मान्यताएं शामिल हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि सामाजिक यथार्थ का जब कोई नारी सामना करती है तो वह प्रेम और विवाह के द्वारा देखे गए सपनों को टूटता हुआ पाती है। जया और यशा दोनों ही किशोरावस्था से ही अपनी कल्पना से गुजर कर जब यथार्थ के सामने जाती हैं तो दोनों ही अपने आप को असंतुष्ट पाते हैं।

डॉ गुप्ता दिनेश चक्रधर आदि डॉक्टरों के माध्यम से होने वाले अस्पतालों में राजनीति और भ्रष्टाचार के वातावरण का ममता जी ने यथार्थ चित्रण किया है।

लड़कियां

ममता कालिया जी का उपन्यास लड़कियां एक लघु उपन्यास है। इस उपन्यास में ममता जी ने महानगर मुंबई में रहने वाली लड़कियों के सपने और उनकी महत्वाकांक्षाओं का चित्रण उनके मनोवैज्ञानिक जमीन पर किया है इसमें अविवाहित कामकाजी नारी का चित्रण लेखिका ने किया है।

महानगर की दुनिया के असली रूप को और उसकी सच्चाई को सच्चाई से प्रस्तुत करते हुए अकेले रहने वाली स्त्री का वर्णन है।अफशां नायिका के बॉस की कजन है जो कि पाकिस्तान से आती है अफशां नायिका की दोस्त बन जाती है। और उसको देखकर नायिका के अविवाहित रहने का फैसला उसको गलत प्रतीत होता है। महानगर में रहते हुए नायिका कुंठित सा व्यवहार करती है एक दिन नायिका को अफशां की अलमारी में एक पिस्तौल मिलता है। जिसकी वजह से वह घबरा जाती है और वह यह सोचने लगती है कि कहीं उसे मारने की कोई साजिश तो नहीं बना रही परंतु

अक्षय उसकी गलतफहमी बहुत ही जल्दी दूर कर देता है। अक्षय अपने देश लौटते समय वह हथियारों को फेंक देती है और यह बताती है कि उसने यह हथियार अपनी हिफाजत के लिए रखे थे। परंतु अफशां यह मानती हैं यदि कोई मुसीबत आएगी तो उसमें इंसान ही इंसान के काम आता है हथियार नहीं। अतः इस कहानी में ममता जी ने महानगर की सच्चाई को प्रस्तुत किया है कि लोग अपनी जिंदगी को हिफाजत में रखने के लिए भी हथियार का इस्तेमाल करते हैं।[22]

एक पत्नी के नोट्स

ममता जी का उपन्यास एक पत्नी के नोट्स दांपत्य जीवन में होने वाले विचारों के मतभेदों और स्त्री के अस्तित्व के संघर्ष की गाथा है। ममता जी ने इस उपन्यास में एक प्रबुद्ध नारी के जीवन में होने वाली विसंगतियां और त्रासदी को व्यक्त किया है।

इस उपन्यास में ममता जी पुरुष की मानसिकता का उल्लेख करना चाहती हैं। इस उपन्यास का प्रमुख नायक संदीप एक प्रशासनिक अफसर है वह एक मध्यमवर्गीय कन्या से प्रेम विवाह करता है। संदीप को अपने पद पर और अपने ज्ञान पर बहुत अहंकार है वह अपने से ऊंचे पद पर किसी को देख नहीं सकता है चाहे वह उसकी पत्नी ही क्यों ना हो क्योंकि पति से ज्यादा अगर पत्नी बुद्धिमान है तो पुरुष मानसिकता बर्दाश्त नहीं कर सकती। पुरुष प्रधान समाज में आज भी यह मानसिकता है कि महिला पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर के ना चले बल्कि दो कदम उसे पीछे ही चलना चाहिए। इसमें आधुनिक संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को दर्शाया गया है परंतु उसके साथ–साथ भारतीय संस्कृति में पुरुषों की मानसिकता को भी घरेलू माहौल में चित्रित किया गया है।

इस उपन्यास में समाज के कटु सत्य को दिखाया गया है। जहां 21वीं सदी की नारी पति के साथ कदम से कदम मिलाकर के चलना चाहती है वही पति उसे पीछे ही रखना चाहता है। और इसी कारण पारिवारिक संबंधों में झगड़े शुरू हो जाते हैं कालिया जी ने भी इस उपन्यास में संदीप के माध्यम से समाज के पुरुषों की मानसिकता को उनके आत्म केंद्रित और पाखंडी पंखों सच्चाई से दर्शाया है। जबकि वह इस कहानी की मुख्य नायिका कविता के माध्यम से आधुनिक समाज की नारी नारी के जीवन की त्रासदी को अंकित करती हैं और इस कहानी को नायिका के अस्तित्व का संघर्ष ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत संघर्ष की कथा भी बनाती है नारी को आधुनिक समाज में अपने व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए भी समाज के खिलाफ अपने परिवार के खिलाफ एक लंबी लड़ाई लड़नी पड़ती है जिसका ममता जी ने इस उपन्यास के द्वारा चित्रण किया ह[23]

[22]ममता कालिया लड़कियां किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2007

[23]ममता कालिया एक पत्नी के नोटस किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2007

दौड़

दौड़ ममता कालिया जी का एक बहुचर्चित लघु उपन्यास है। जोकि 21वीं शताब्दी में आधुनिक समाज की एक ऐसी दौड़ का चित्रण करता है जिसकी कोई दिशा नहीं है अथवा रुकने का भी कोई कारण नहीं है। इस उपन्यास में ममता जी ने ऐसी समस्याओं को जैसे बेरोजगारी, गरीबी, आरक्षण को उजागर किया है। जिसमें कई मानवीय मूल्यों का विघटन हो रहा है इस भौतिकवादी दौड़ में इंसान कई मानवीय मूल्यों का ह्रास करता है। इस उपन्यास में ममता जी एक छोटे परिवार के द्वारा औद्योगिक क्षेत्र में होने वाली रफ्तार से अवगत कराना चाहते हैं इस उपन्यास का प्रमुख नायक पवन है जो कि अपने माता पिता को इस भागमभाग की जिंदगी से रूबरू कराता है ।

पवन एक गैस एजेंसी में मैनेजर के पद पर है जोकि आर्थिक लालसा से ग्रस्त है। और वह आज के इस भागम भाग वाले बाजार में नैतिक मूल्यों को अनुपयुक्त मानता है और कंपनी के लाभ को प्राथमिकता देता है। आधुनिक समाज के युवा बड़े शहरों की तरफ भाग रहे हैं। क्योंकि उन्हें यह लगने लगा है कि भविष्य को सुनहरा बनाने के लिए बड़े शहर में कार्य करना जरूरी है अपने परिवार को अकेला ही छोड़ जाते हैं। आजकल के समाज में एकल परिवार ज्यादा स्थापित होने लगे हैं ममता जी ने अपने इस उपन्यास में इस बात को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है कि आजकल सामूहिक परिवार टूटने और बिखरने लगे हैं आधुनिक समाज में युवा अपने भविष्य को लेकर के चिंतित हैं।

21वीं सदी में अर्थ और काम के अतिरिक्त शायद मानव के पास और कोई जीवन का उद्देश्य रह ही नहीं गया है। भौतिक सुख सुविधाओं को पाने के कारण वह जीवन में दौड़ रहा है उसके लिए परिवार और समाज के मूल्यों में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है तथा अपने भविष्य को सफल बनाने के लिए वह घर से दूर महानगरों में और बड़े–बड़े शहरों में भाग रहा है। उपन्यास के द्वारा ममता जी नई पीढ़ी को यह संदेश देना चाहती हैं कि अपने मूल्यों को बचा कर के रख कर किसी भी परिस्थितियों से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए और अपने परिवार अपने माता पिता को भी अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए ना कि उन्हें पीछे छोड़कर। अपने भौतिक सुख सुविधाओं के कारण दूसरे शहरों में जाकर बस जाना चाहिए। इस उपन्यास में बाजारों में बढ़ती हुई चीजों से मनुष्य प्रभावित होता है और केवल आर्थिक केंद्रीकरण ही इंसान का प्रमुख उद्देश्य बन गया है इन सब बाजार व्यवस्था का ममता जी ने एक बहुत ही सुंदर रूप दौड़ उपन्यास के द्वारा समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

बेघर

ममता कालिया ने अपने प्रखर भाषा से उपन्यासों में मध्यवर्गीय शिक्षित नारी की समस्याओं को आश्रय दिया है। उन्होंने मध्यवर्गीय नौकरीपेशे वाली नारी की समस्याओं को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है उनके उपन्यास बेघर में

नारी के विवाह से पूर्व संबंधों को उकेरा है। इसमें विवाह से पूर्व एक ऐसी नारी की कहानी है जो प्रेम में पड़ कर अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है।इस उपन्यास के द्वारा ममता कालिया जी यह दिखाना चाह रही हैं कि एक नारी की पवित्रता की कसौटी उसकी मानसिक एकात्मता और समर्पण में है ना कि शारीरिक कुंवारे पन में।[24]

यह कहानी परमजीत से शुरू होती है। जो कि दिल्ली का रहने वाला एक युवा है एक मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित जिसमें पिता लस्सी की दुकान लगाता है और मां सिर्फ घर का काम या फिर अपने बच्चों को संभालती है। परमजीत का ज्यादा पढ़ने में मन नहीं लगता था परंतु फिर भी वह अपनी हर कक्षा में पास होता चला जाता था। धीरे–धीरे परमजीत ने शिक्षा प्राप्त करें और वह मुंबई के कंफर्ट रेफ्रिजरेशन कंपनी में एजेंट के रूप में नियुक्त हो गया। नारी के प्रति परमजीत का दृष्टिकोण उपभोग पहले उसकी नजर सिर्फ लड़कियों के चेहरे पर रहती थी परंतु धीरे–धीरे उसकी नजर दुपट्टे पर भी पड़ने लगी। परंतु मुंबई की भाग दौड़ भरी जिंदगी में वह कुछ अकेला पड़ गया। वह जिस ट्रेन से ऑफिस जाता था उसमें एक लड़की संजीवनी उसे अक्सर दिखाई देती थी। जो बहुत ही सीधी–सादी सी थी वह संजीवनी की तरफ धीरे–धीरे आकर्षित होने लगा वह उसी के बारे में दिन–रात सोचने लगा एक दिन वह संजीवनी से मिला और संजीवनी भी धीरे–धीरे मुलाकातों के साथ ही साथ परमजीत को पसंद करने लगी। परमजीत कभी भी संजीवनी से विवाह का प्रस्ताव नहीं रख पाया परंतु मन ही वह समझ चुके थे कि वह एक दूसरे के लिए ही बने हैं।

एक दिन परमजीत ने सारी हदों को पार कर दिया और विवाह से पूर्व ही संजीवनी के साथ संबंध स्थापित कर लिया परंतु उसके कुंवारे पन का सबूत ना मिलने पर उसने संजीवनी को छोड़ दिया। वह बहुत नाराज था वह मन ही मन इस बात से घुट रहा था कि वह संजीवनी के जीवन में पहला पुरुष नहीं है इससे पहले भी संजीवनी के जीवन में कोई और था। उनका प्रेम सुखद परिणति तक पहुंचने से पहले ही धराशाई हो गया वह एक दूसरे से अलग हो गए और फिर परमजीत ने कभी मुड़ कर के भी संजीवनी को नहीं देखा संजीवनी अपना सब कुछ देने के बावजूद भी परमजीत को ना पा सकी।[25]

परमजीत वापस दिल्ली चला गया जहां मां ने वहीं की एक लड़की के साथ उसका विवाह करा दिया। उसे रमा सुंदर लगने लगी वह रमा से बेहद प्रेम करने लगा उसे इस बात का भी सकून हो गया कि वह रमा के जीवन में प्रथम पुरुष है। वह रमा से और प्रेम करने लगा रमा रूढ़िवादी विचारधारा की नारी थी। फिजूलखर्ची उसे बिल्कुल भी नहीं पसंद थी वह परमजीत के साथ मुंबई आ गई वह धीरे धीरे अपने रंग में परमजीत को रंगने लगी। परमजीत के दो पुत्र

[24]डॉ रामचंद्र तिवारी हिंदी का गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2015 पृष्ठ संख्या 330

[25]ममता कालिया. बेघर. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2009. पृष्ठ संख्या 92 93

हुए पुत्रों की प्राप्ति के कारण रमा और भी खुश रहने लगी कि उसने दो पुत्रों को जन्म दिया है रमा परमजीत की मां को बिल्कुल पसंद नहीं करती थी। क्योंकि वह परमजीत से पैसे लिया करती थी परमजीत भी रमा की रूढ़िवादी विचारधारा से ऊबने लगा था मैं उसे कहीं न जाने देती थी ना आने देती थी, ना पैसे खर्च करने देती थी वह सारे पैसे बचा कर के अपने पुत्रों के लिए ही रखना चाहती थी।

परमजीत धीरे–धीरे रमा के इस विचारधारा से परेशान रहने लगता है उसे समझ नहीं आता कि वह क्या करें पर वह रमा की मासूमियत से बेहद प्रेम करता था। वह सब कुछ भूल कर सिर्फ उसका हो करके ही रहना चाहता था परंतु एक दिन उसे दिल का दौरा पड़ जाता है और वह इस दुनिया से चला जाता है रमा और दोनों बच्चे बहुत रोते हैं वे बेहद दुखी होते हैं कि उनका सहारा उनसे छिन गया।[26]

बेघर ममता कालिया का प्रथम उपन्यास है। और इसमें उन्होंने ऐसे नायक का चित्रण किया है जिसने दो नारियों की जिंदगी को प्रभावित किया है संजीवनी के साथ बेहद प्रेम करने के बावजूद वह उसके कौमार्य पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है और अपनी रूढ़ीवादी मानसिकता के चलते अपने अपने प्रेम की बलि चढ़ा देता है।

परमजीत के जीवन में दूसरी नारी रमा उसकी पत्नी का चित्रण है जो स्वयं रूढ़िवादी विचारधारा से प्रेरित है। और परमजीत उसकी इस विचारधारा के कारण परेशान रहने लगता है वह जीवन में अपने आपको निढाल और संघर्ष हीन पाता है। वह उसे प्रेम करने की बहुत कोशिश करता है परंतु कर नहीं पाता इसमें ममता कालिया जी ने परमजीत के चरित्र को दर्शाते हुए लिखा है कि वह जिस से प्रेम करता था उससे विवाह नहीं कर पाया और जिस से विवाह किया उससे वह प्रेम नहीं कर पाया। एक पुरुष ने अपनी रूढ़िवादी विचारधारा के कारण दो नरियों की जिंदगी खराब कर दी।

3.4 नासिरा शर्मा 1980–90

साहित्यकार बहुत ही संवेदनशील प्राणी होता है उसके लेखन में उसके व्यक्तित्व और उसके परिवारिक परिवेश का बहुत असर पड़ता है। नासिरा शर्मा जी के साहित्य में महानगर के जीवन का बहुत प्रभाव है परंतु उनके लेखन का दायरा भारत के विभिन्न सामाजिक आर्थिक धार्मिक सांस्कृतिक परिवेश से होकर गुजरा है। और बहुत हद तक कामयाबी भी प्राप्त की है उनके लेखन कार्य में उनके व्यक्तित्व गया विचारों को दर्शाता है। समाज में बढ़ती चिंताओं का मानवीय मूल्यों का उनके लेखन पर बहुत प्रभाव पड़ा है। उन्होंने देश और विदेश के सामाजिक परिवेश के बारे में भी लिखा है और महिला लेखन में अपनी एक छवि प्रस्तुत की है। उनके उपन्यासों में एक सशक्त ता दिखाई देती है जो कि ना सिर्फ महिलाओं बल्कि समाज के लिए भी एक उदाहरण है।

[26]ममताकालिया. बेघर. वाणी प्रकाशननई दिल्ली.2009. पृष्ठ संख्या 184

नासिरा शर्मा जी का जन्म 22 अगस्त 1948 को इलाहाबाद में हुआ था उनकी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद में ही संपन्न हुई सन 1967 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की तथा 1976 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से फारसी भाषा और साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री भी अर्जित की 1980 में उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य प्रारंभ किया। और हिंदी के साथ ही साथ वह अंग्रेजी उर्दू और पश्तो भाषा में भी रुचि लेती थी उन्हें नई भाषाओं को सीखना और समझना बहुत ही अच्छा लगता था और वह इरानी संस्कृति और कला की भी विशेषज्ञ रहे हैं उनका पत्रकारिता में भी सक्रिय योगदान था जिससे कि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी प्रदर्शित होता है।

एक मुस्लिम महिला थी। उनका विवाह 19 वर्ष की आयु में एक हिंदू ब्राह्मण परिवार से संबंधित डॉक्टर रामचंद्र शर्मा से हुआ था रामचंद्र शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भूगोल के प्राध्यापक थे । विवाह उपरांत नासिरा शर्मा अपने पति के साथ लंदन चले गए उनके दो बच्चे बेटा अनिल और बेटी अंजुम ने लंदन में ही जन्म लिया नासिरा शर्मा के पति डॉ रामचंद्र शर्मा का नासिरा शर्मा जी पर प्रबल प्रभाव स्थापित हुआ नासिरा शर्मा जी के पति का देहांत 13 नवंबर 2009 को दिल्ली में हो गया।

नासिरा शर्मा जी ने साहित्य में अपनी एक खास जगह बना रखी हैं उन्होंने उनका उन्होंने अनेक उपन्यास कहानियां अनुवाद साहित्य तथा अन्य साहित्यिक यात्राएं की हैं।

उनके महत्वपूर्ण उपन्यास

सात नदिया एक समंदर

शाल्माली

ठाकरे की मंगनी

जिंदा मुहावरे

आदि उपन्यासों को रचा है

पुरस्कार एवं सम्मान

पुरस्कार साहित्यकार के लिए एक सम्माननीय और उसके साहित्य को प्रतिष्ठित करने में सहायक की भूमिका अदा करता है। नासिरा शर्मा जी को भी अपनी रचना और हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करने के लिए हिंदी

अकैडमी दिल्ली द्वारा 1987–88 में अर्पण सम्मान, शाल्मली एवं मध्य पूर्वी देशों के लिए लेखन में महादेवी वर्मा पुरस्कार 1997 प्राप्त हुआ।

सात नदियां एक समंदर 1984

नासिरा शर्मा का पहला उपन्यास सात नदिया एक समंदर जो कि ईरानी क्रांति पर आधारित है। जिसका नाम अब बहिश्ते जहरा है। उपन्यास की मुख्य कहानी ईरानी क्रांति विभिन्न विचारधारा सत्ता द्वारा आम इंसानों पर शोषण और अत्याचारों का होना नागरिकों के विद्रोह महिलाओं का प्रदर्शन आदि पर आधारित है। इस कहानी की मुख्य भूमिका में जो कि इस उपन्यास के प्रारंभ में भी तेहरान विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली सात सहेलियों की है जिनके नाम मेहनाज परी सनोबर, अख्तर, तैयबा, सुसन, मलीहा है। इस उपन्यास में इरान में चल रही धार्मिक क्रांति के आरंभ होते ही यह सातों अपने अपने घरों में कैद कर दी जाती हैं और इनके अलग–अलग विवाह हो जाते हैं नासिरा शर्मा जी ने इरान की खूनी क्रांति के माध्यम से दर्शकों के आगे आम जनता की समस्याओं को युवा पीढ़ी के कष्ट को दर्शाया है। जनता शाह रजा पहलवी को सत्ताच्युत करके अयातुल्लाह खुमैनी को सत्तारूढ़ करना चाह रहे थे शाह के विरुद्ध लोगों ने जुलूस निकालना और तोड़–फोड़ करना शुरू कर दिया था। इसी विरोध प्रदर्शन विरोध पर प्रतिबंध लगाने के लिए मार्शल लॉ को जारी किया गया जिसमें बेकसूर बच्चों, पुरुषों, महिलाओं आदि पर गोलियां चलाई गईं।

नासिरा शर्मा ने इस उपन्यास को अपने इरान की चार यात्राओं में रहकर जो देखा समझा उस पर आधारित है। उपन्यास की रचना के समय उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकारा है कि "मेरे अंदर यादों का कब्रिस्तान आबाद है जिसकी सच्ची तस्वीर इस उपन्यास में है।"[27]इन परिस्थितियों के दौरान इरान केवल लगभग वैसे ही स्थिति हो गई थी जिस प्रकार से इंदिरा गांधी द्वारा अपने देश में जब इमरजेंसी लगाई गई थी तो विपक्षी राजनीतिक दलों ने की थी जो इन सब का विरोध करने के लिए एक ही मंच पर इकट्ठे हो गए थे।

इरान में स्त्रियों ने भी शाह विरोधी आंदोलन में भूमिका निभाई थी वह उनकी सक्रिय भागीदारी इस आंदोलन के दौरान रही "मसहद में लगभग 60000 औरतों ने जुलूस निकाला काली चादरों में लिपटा पूरा शरीर और आधे खुले हुए चेहरे से निकलते नारे खुमैनी अजिजम बेगू खून वे रीजम।"[28]नासिरा शर्मा जी ने इस उपन्यास में स्त्रियों की भूमिका का

[27]नासिरा शर्मा. सात नदिया एक समंदर. सामयिक प्रकाशन दिल्ली. 1984. पृष्ठ संख्या 10

[28]वही पृष्ठ संख्या48

बहुत ही विस्तार से वर्णन किया है। वे लिखती हैं वह हसीन गुड़िया जो सजना और सवरना जानती थी उसने आज हाथ में बंदूक उठानी सीख ली थी इस क्रांति ने ईरान के अस्तित्व को पूरी तरह से हिला कर रख दिया था।

ईरान में इतने विरोध प्रदर्शन के पश्चात आखिर में सत्ता परिवर्तित हुई और धार्मिक नेता अयातुल्लाह खोमेनी को शासन स्थापित करने का अवसर मिला खुमानी के शासन संभालते ही वहां की आम जनता में प्रसन्नता फैल गई। खुमानी के साथ ही ईरान में धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ गई और वह सर्वशक्तिमान हो गया परंतु इसका विपरीत हुआ जिस धर्म की रक्षा के लिए यह क्रांति हुई थी। वहीं अब निरंकुश तानाशाह में परिवर्तित हो रही थी कट्टरवादी मौलवियों के हाथों में सत्ता की और उसके प्रति उठने वाली हर आवाज को खुमानी धर्म विरोधी कहकर खत्म कर देता था।

नासिरा शर्मा जी ने जिस प्रकार से उपन्यास की शुरुआत में सात सहेलियों की बात कही थी। वह स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीती हैं और आखिर में वे इस क्रांति का हिस्सा बन जाती है इन सहेलियों में एक तैयबा जो है वह सशक्त नारी का रूप है और वह पत्रकार बन जाती है। जो कि जनसामान्य को जागरूक करने में तत्पर रहती है परंतु सत्ता में होने के कारण वे लोग तैयबा को उसके कठोर विरोध के चलते जेल में डाल देते हैं उसको जेल में बहुत कष्ट दिए जाते हैं परंतु वह इन कष्टों से ना तो विचलित होती है और ना ही पीछे हटने की सोचती है। इससे नासिरा जी इरान के कारावास ओं में रहने वाली महिलाओं की त्रासदी का भी विवरण करती हैं जो बहुत ही सोचनीय है और वह समाज में को उसे पूछने पर मजबूर हो जाती है कि "समाज के हर बदलाव की मार औरत की पीठ पर ही क्यों पड़ती है।"[29]

शाल्मली 1987

शाल्मली उपन्यास नासिरा शर्मा द्वारा लिखा गया दूसरा उपन्यास था। जिसे महादेवी वर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उपन्यास शाल्मली द्वारा नासिरा जी एक आत्मनिर्भर भारतीय नारी के संघर्ष को दर्शाना चाह रही हैं उन्होंने पढ़े लिखी नारी के समक्ष आने वाले आर्थिक सामाजिक तथा अन्य समस्याओं से निकल कर एक आत्मनिर्भर बनने की प्रक्रिया के रूप में नारी को प्रदर्शित किया है।

शाल्मली की कहानी एक महानगरीय परिवेश में जन्म लेने वाली उस नारी की कहानी है। जो अपने माता पिता की इकलौती संतान थी जिसे उन्होंने एक पुत्र की तरह पाला था शाल्मली जोकि इस उपन्यास की मुख्य नायिका है। उनके पिता ने उनके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार किया परंतु उनकी मां के अंदर कहीं ना कहीं उन परंपरागत संस्कारों ने जगह बना रखी थी। और वह अपनी पुत्री के विवाह के पक्ष में थी शाल्मली की मां ने हंसकर कहा।[30] लड़की पराया

[29]नासिरा शर्मा. सात नदिया एक समंदर. सामयिक प्रकाशन दिल्ली. 1984. पृष्ठ संख्या 289
[30]नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. 2013. पृष्ठ संख्या 11

धन है पति के घर में ही उसको सुख है यही सबसे बड़ा आशीर्वाद होता है मां बाप का शाल्मली की मां ने हंसकर कहा। परंतु शाल्मली इन सब बातों से अलग अपने एक अलग पहचान बनाना चाहती थी इसलिए वह बहुत सी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में अपने को व्यस्त रखती थी इन्हीं सब के बीच में शाल्मली के माता–पिता को नरेश नाम का वर शाल्मली के लिए दिखाई दिया उन्होंने उसे पसंद कर लिया था।

नरेश ने शाल्मली को विवाह के उपरांत नौकरी ना करने का परामर्श देता है और कहता है कि "पढ़ाई लिखाई तो अब छोड़ दो जीवन भर इस मगजपच्ची से कुछ नहीं मिलना है विवाह हो गया बस।[31] "

"तुम घर में रहकर गृहस्थी और मुझे भी संभालो मेरा इतना हाथ बटाओ"[32] इन दोनों कथनों से यह साफ पता चलता है कि नरेश को शाल्मली का बाहर जाकर काम करना बिल्कुल भी पसंद नहीं था अतः वह चाहता था कि विवाह के पश्चात शाल्मली घर में रह करके उसका और उसके घर का ध्यान रखें।

इस उपन्यास में नासिरा शर्मा यह बताना चाह रही है कि पढ़ा लिखा इंसान भी पुराने रूढ़ीवादी विचारों को मानता है। और इस उपन्यास का नायक नरेश शाल्मली से कहता है कि लड़कियां सिर्फ इसलिए पड़ती हैं ताकि उन्हें एक अच्छा जीवन साथी मिल सके उसकी सोच बहुत ही संकीर्ण प्रवृत्ति की है। जबकि इसके विपरीत शाल्मली नौकरी करना चाहती है तथा वह नौकरी का ही निर्णय लेती है परंतु नरेश हमेशा उसे नौकरी छोड़ने के लिए ही प्रेम भरी बातें करता रहता है किंतु कुछ समय पश्चात ही वह उसे जबरदस्ती नौकरी छोड़ने के लिए प्रभाव डालने लगता है। परंतु शाल्मली अपने निर्णय पर अटल रहती है और नौकरी ना छोड़ने का फैसला करती है परिणामरू उसके दांपत्य जीवन में उसका प्रभाव गलत पड़ता है और तनाव उत्पन्न हो जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं को इसलिए पढ़ाया जाता है ताकि वह अपने निर्णय स्वयं ले सकें। और अपने जीवन को एक सफल जीवन के रूप में व्यतीत कर सकें जहां एक और शाल्मली अपने दांपत्य जीवन में बहुत कुछ अपमान बर्दाश्त कर रही थी। वहीं दूसरी ओर वह अपने कार्य क्षेत्र में 1 पद और प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही थी उसके कार्य में बहुत तेजी से वृद्धि होती जा रही थी। परंतु स्वार्थी मन का उसका पति नरेश उसकी नौकरी से पूरी तरह से संतुष्ट नहीं था और वह उसके पद का जो कि वह मंत्रालय में डिप्टी सेक्रेटरी थी का पूरा पूरा लाभ उठाना चाह रहा था। इसीलिए अपनी पत्नी के कार्यक्षेत्र में वह अपना पूरा अधिकार समझता था और उसे अक्सर कोई भी कार्य करने के लिए आदेश देता था धीरे धीरे शाल्मली की नौकरी से नरेश संतुष्ट रहने लगा क्योंकि वह जिस प्रकार के उच्च स्तरीय जीवन की चाह रखता था वह अब उसकी नौकरी से उसे प्राप्त हो रही थी। और उसकी इच्छाएं पूरी हो रही थी परंतु शाल्मली

---

[31]वहीपृष्ठ संख्या 25

[32]नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. 2013. पृष्ठ संख्या 44

कहीं ना कहीं अपनी प्रगति से खुश तो थी पर वह अब एक बच्चे की कल्पना करने लगी थी उसे मां बनने का सुख प्राप्त करने की चाहत थी। लेकिन नरेश उसके नौकरी के ऐसो आराम में इतना डूब चुका था कि वह किसी भी तरह का परिवर्तन बर्दाश्त नहीं कर सकता था तथा उसे अपनी पत्नी शाल्मली की इच्छाओं की बिल्कुल भी कदर नहीं थी तथा वह उसके लिए महत्वहीन मात्र थी। नरेश हमेशा से यह चाहता था कि शाल्मली हमेशा उसकी ही बात माने और उसका उसने एक दायरा बना दिया था।

शाल्मली कुछ दिनों के लिए अपने पति नरेश के साथ में उसके गांव गई उसे वहां पर बहुत अच्छा लगा। वह जल्दी ही गांव की औरतों के साथ घुलमिल गई उसे यह सब देख कर के बहुत ही प्रसन्नता हुई छोटे से परिवार में शाल्मली पली–बढ़ी थी। और इतने भरे पूरे परिवार को देख कर के वह मुग्ध सी हो गई थी शाल्मली नरेश के परिवार से बेहद खुश थे वह उनका पूरा ध्यान रखती थी। और वापस लौटते समय उसने नरेश की मां से साथ चलने के लिए भी कहा था परंतु उन्होंने कहा कि वह आगे आएंगी दोनों दिल्ली वापस लौट आए जैसे ही शाल्मली घर वापस लौटे उसे खबर मिली कि उसके पिताजी की तबीयत बहुत खराब है हस्ती गुनगुनाती शाल्मली अचानक से शांत और दुखी हो गई और वह तुरंत ही चलने लगी परंतु नरेश ने उससे कहा अभी कहां जा रही हो थोड़ी देर रुकते हैं। नाश्ता करके नहा धो करके शाम तक चलेंगे नरेश का यह व्यवहार बिल्कुल भी पसंद नहीं आया यह उसके पिता की बात थी तथा उसने अकेले ही जाने का फैसला लिया और वह यह कहती हुई चली गई कि तुम्हें जब समय मिले तो आ जाना।[33]

शाल्मली का उसके कार्य क्षेत्र में निरंतर बढ़ोतरी होती रही धीरे–धीरे शाल्मली के कार्यक्षेत्र को देखते हुए नरेश के सपने भी बढ़ने लगे और उसे कार और मकान के सोते जागते सपने से दिखाई देने लगे। और वह शाल्मली पर दबाव डालने लगा कि वह कार के लिए लोन लोन अप्लाई कर दें और मकान के लिए फॉर्म भर दें उसका लालच दिन–ब–दिन बढ़ता ही जा रहा था। अब नरेश अपने से ज्यादा शाल्मली के ऑफिस के कार्यों में रुचि लेने लगा था।[34]और वह हर दबाव को बड़ी ही सहनशीलता से बर्दाश्त करती चली गई उसे कभी–कभी अपनी जीवन से निराशा भी होती है कि नरेश दोहरा जीवन किस प्रकार से व्यतीत कर रहा है परंतु परिस्थितियों का विपरीत होना उसे एक समझौता वादी बना देता है। वह सोचती है कि "संबंधों को तोड़ने में जरा भी देर नहीं लगती परंतु उसे टूटने से बचाए रखने के लिए बहुत ही मेहनत करनी पड़ती है।"[35] अतः उसकी इसी सोच के कारण उसके व्यक्तित्व की एक नई पहचान

[33]नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. 2013. पृष्ठ संख्या 50

[34]वहीपृष्ठ संख्या57

[35]वहीपृष्ठ संख्या 151

होती है वह अपने कार्य में खुशी जाती है और अपने कार्य के सिलसिले में उसे शिलांग जाना पड़ता है वह अपना कार्य पूरा करने के बाद जब वापस अपने घर लौटती है वहां उसे नरेश के किसी दूसरी स्त्री के संबंध के साथ संबंधों का अनुमान होता है किंतु वह घबराकर कोई भी ऐसा फैसला नहीं लेना चाहती है जिससे कि कोई भी समस्या खड़ी हो सके वह अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखते हुए उन परिस्थितियों के साथ संघर्ष करने का फैसला लेती है। और यह मान लेती है कि जब भी नरेश को समझ आएगी तो वह लौटकर उसी के पास आएगा।

इस विषय को लेकर के शाल्मली कई बार नरेश से बात करने का प्रयास किया परंतु नरेश ने हर बार उसे इग्नोर कर दिया। एक दिन शाल्मली ने इस विषय पर उससे बात की तो नरेश ने बिना किसी हिचक के शाल्मली से कहा कि क्या तुम मुझे बांध कर रखना चाहती हो नरेश को जरा सी भी लाज नहीं थी। कि वह कितना गलत कार्य कर रहा है परंतु उसके अंदर एक मर्द बोल रहा था की समाज में मर्दों को कुछ भी करने की पूरी स्वतंत्रता है और जितने भी नियम कानून बनाए गए हैं। वैसे औरतों के लिए बनाए गए हैं। इसके पश्चात तुषार के पास कोई शब्द ही नहीं थे और वह धीरे–धीरे नरेश से दूर होती चली जा रही थी। परंतु उसने निर्णय लिया कि मैं तलाक नहीं दूँगी परंतु मन पर लगा घाव क्या कभी भर सकता है। चांदनी का जीवन उसे बेकार सा लगने लगा वह बीमार रहने लगी थी और बहुत ही ज्यादातर मानसिक तनाव में रहने लगी थी। सोचने लगी थी कि यह घर सच में मेरा है मैं इसे छोड़कर कहां जाऊंगी वह नरेश से कुछ नहीं कहती थी सिर्फ उसकी आंखों में झांकने का प्रयास करती थी वह बहुत अकेली पड़ गई थी। इन सब बातों के चलते एक दिन शाल्मली के पास सरोज का फोन आया कि वह शाम को उससे मिलने को आना चाह रही है शाल्मली ने उसे आमंत्रित किया और उसके पूछे जाने पर कि तुम्हारे और नरेश के संबंध कैसे हैं शाल्मली ने अपनी पूरी आपबीती सरोज के सामने खोल कर रख दी सरोज झुनझुना सी गई और वह शाल्मली को समझाने लगी। उसने कहा कि "सच में आदमी को औरत को ठग कर बड़ा ही सुख प्राप्त होता है। जो कि प्रेम उसे इमानदारी से भी प्राप्त नहीं हो पाता।"[36] शाल्मली हर बार सरोज को नरेश के प्रति घृणा को कम करने के लिए ही कहती रहती क्योंकि वह आज भी नरेश से बेहद प्रेम करती थी। परंतु सरोज के बराबर समझाए जाने पर उसे समझ में आने लगा और उसने कहा कि तुम सही कहते हो सरोज थोड़े समय के लिए मैं अवश्य ही परंपरागत रूढ़िवादी औरतों के समान ढल गई थी। मेरी आंखों में भी स्वार्थ का पर्दा पड़ गया था। मगर बहुत ही जल्दी मैं उससे मुक्त हो गई हूं।[37] अंत में सरोज ने शाल्मली को समझाते हुए कहा कि तुम्हारे सामने केवल अपने पति से निपटने और उससे स्वतंत्र होने की समस्या है

[36]नासिरा शर्मा शाल्मली किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2013 पृष्ठ संख्या 163

[37]वहीपृष्ठ संख्या 164

मगर मेरी नजर में नारी मुक्ति, समाज की सोच और स्त्री की स्थिति को बदलने में है घर के बाहर निकलो या अपने घर में ही रहो हर तरफ पुरुष प्रधान समाज तुमसे टकराएगा ही।

"तलाक की वजह से टूटा हुआ परिवार, एक कलह पूर्ण परिवार से अच्छा ही है..... बच्चे काफी अनुकरण शील होते हैं और अपने घर में उपेक्षा पूर्ण वातावरण और मां–बाप के बीच झगड़े को देखकर उन पर बुरा प्रभाव ही पड़ता है।"[38]

शाल्मली एक पढ़ी–लिखी स्त्री होने के बावजूद हमेशा से सिर्फ यही सोचती रही कि जिस प्रकार हर समस्या एक विशेष समय की स्थिति की उपज होती है। उसी प्रकार समाधान भी एक विशेष स्थिति में मिल ही जाएगा।[39] आज भी नारी इस कहानी से हमें यह पता चलता है कि आज भी नारी चाहे वह कितनी भी पढ़ी लिखी हो नौकरी करती हो पर पुरुष प्रधान समाज में उसकी गिनती हमेशा दूसरे नंबर पर ही होनी है। वह चाह करके भी उस स्थिति में नहीं जा सकती है जिसमें उसका दिल जाना चाहता है वह नरेश के खिलाफ नहीं जाना चाहती वह अपने घर को तोड़ना नहीं चाहती इन्हीं सब बातों को लेकर के आज भी समस्या यह बनी है कि पुरुष समाज स्त्रियों को अपने से नीचे का दर्जा ही देना पसंद करता है।

ठीकरे की मंगनी

उपन्यास महरुख और रफत के इर्द–गिर्द ही घूमता है महरुख के जन्म को त्यौहार की तरह उसके माता–पिता ने मनाया। उसके जन्म लेते ही उसकी मौसी ने उसे अपने पुत्र रफत के लिए मांग लिया। जोकि की ठीकरे पर चांदी का रुपया फेंक कर मांग होती है महरुख इस रिश्ते से अनजान थी। उसे इसके बारे में इंटर पास होने के बाद पता चला उसके पास होने की खुशी में उसकी मौसी और उसका पुत्र रफत उसे बधाई देने के लिए आए है महरुख ने रफत से आगे पढ़ने के लिए इच्छा जाहिर की परंतु रफत के माता पिता अपनी पुरानी मानसिकता के कारण राजी ना हुए जिससे रफत क्रोधित हुआ। मेहरूख के माता–पिता भी विवाह के जल्दी में नहीं थे उन्होंने एक वर्ष बाद दोनों को दिल्ली भेज दिया दिल्ली में मेहरूख आधुनिक परिवेश से कुछ अलग थी इसलिए वह वहां सिमटी सिमटी सी रहती थी। रफत ने उसे आत्मविश्वास दिलाया और आधुनिक विचारों को अपनाते हुए परिवर्तन के लिए प्रेरित किया। कुछ समय पश्चात महरुख एक परिवर्तित नारी के रूप में नजर आई जो कि आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत थी परंतु किसी ना किसी

[38]श्रामचंद्र गुहा भारत गांधी के बाद पेंगुइन बुक्स गुड़गांव हरियाणा 2011 पृष्ठ संख्या 296

[39]नासिरा शर्मा शाल्मली किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2013 पृष्ठ संख्या 169

कारण से मेहरूख और रफत का विवाह टलता ही चला गया कुछ समय पश्चात रफत का अमेरिका में किसी लड़की के साथ संबंध का अनुमान महरुख को हुआ अतः वह टूट गई।

मेहरूख पीएचडी अधूरी छोड़कर गांव में नौकरी करने चली जाती है। उसके शालीन और सादे जीवन को देखकर गांव वाले उससे बहुत प्रभावित होते हैं। मेहरूख के लिए गांव के प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार रिश्ते भी बताते हैं परंतु वह आजीवन विवाह ना करने का निश्चय कर चुकी होती है। और वह गांव के लोगों को शिक्षा के लिए प्रेरित भी करती थी और जागरूक भी बनाना चाहती थी ताकि कोई भी उन्हें उनका आर्थिक शोषण ना कर पाए इस उपन्यास में एक मोड है जहां पर नेहरू की बहन के विवाह में मेहरूख की भेंट रफत से होती हैं। रफत मेहरूख के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है जिसे वह ठुकरा देती है और वह यह समझ चुकी होती है कि ''एक घर स्त्री का अपना भी तो हो सकता है जो उसके पिता और शौहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का हो।''[40] और वे लौटकर उसी गांव में शिक्षिका के रूप में अपना जीवन बिताने लगती है।

जिंदा मुहावरे

नासिरा शर्मा का उपन्यास जिंदा मुहावरे भारत पाकिस्तान विभाजन के पश्चात के 45 वर्षों की कहानी है। जिसमें भारत और पाकिस्तान में रहने वाले युवाओं के दर्द की कहानी है इसके मुख्य किरदार रहीमुद्दीन व उसका परिवार है जोकि उत्तर प्रदेश के फैजाबाद में रहता है रहीमुद्दीन भारत में ही रहते हैं तथा उनकी तमाम मुश्किलों के बाद भी वह अपनी जमीन अपना देश अपना गांव नहीं छोड़ना चाहते परंतु उनका पुत्र निजाम भारत छोड़कर के पाकिस्तान चला जाता है।

प्रारंभिक समय में निजाम को पाकिस्तान में बहुत तकलीफ होती है परंतु धीरे–धीरे वह कपड़ों की फेरी से अपना जीवन यापन प्रारंभ कर देता है। निजाम की निपुणता देखकर पड़ोस में रहने वाले असद उल्लाह उसको कपड़ों की दुकान ले देते हैं धीरे–धीरे निजाम कपड़ों के व्यापार में अपना नाम करने लगता है और एक छोटी सी दुकान से उसने बड़ी पहचान बनाने में कामयाबी हासिल कर लेता है। काम के दौरान उसे एक पुराना पत्र जो कि भारत से आया होता है प्राप्त होता है जो कि सेंसर के कारण बीच में रुक गया होता है। निजाम पत्र पढ़कर बहुत उदास हो जाता है इससे पता चलता है कि उसकी माता उसके पाकिस्तान चले आने पर दुखी होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है और पिता उदास रहने लगता है बहन रज्जू की शादी हो गई है और मंगेतर सुगरा का भी विवाह दूसरी जगह हो गया है।

[40]नासिरा शर्मा. ठीकरे की मंगनी. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. 1989. पृष्ठ संख्या197

इधर निजाम की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है और वह पाकिस्तान में ही कराची के परिवार की सबीहा नाम की लड़की से विवाह कर लेता है। निजाम का व्यापार इतना बढ़ जाता है कि वह एक्सपोर्ट और इंपोर्ट का कार्य प्रारंभ कर देता है उसका नाम अब शहर के रईसों में गिना जाता था धीरे–धीरे वह अपने कार्य में इतना खो जाता है कि उसे भारत से आए पत्रों को पढ़ने का समय भी नहीं मिल पाता। एक दिन उसका बड़ा बेटा दादा दादी और घर परिवार के बारे में अपने पिता से पूछता है तक निजाम को अपने घर की याद आती है वह गांव जाना चाहता है परंतु भारत पाकिस्तान में जंग छिड़ने के बाद नहीं जा पाता और वह अपने घर पत्र भेजता है। पाकिस्तान से आए हुए पत्र उसके पिता रहीमुद्दीन को मिलता है तो रहीमुद्दीन के घर पुलिस छानबीन के लिए जाती है रहीमुद्दीन को यह एहसास होता है कि भारत में रहने पर भी उसे अपना वतन अपनी मातृभूमि मानने के बाद भी पुलिस उस पर शक कर रही है तो उसे सदमा लगता है जिसके कारण उसकी मृत्यु हो जाती है निजाम 43 वर्षों के बाद अपने भाई इमाम व उसके परिवार से मिलने के लिए दिल्ली आता है। अपने चाचा को लेने के लिए के भाई का पुत्र गयासुद्दीन हवाई अड्डे पर पहुंचता है सभी एक दूसरे को देखकर प्रसन्नता और भावुक हो जाते हैं परंतु निजाम को अपने माता–पिता की कमी बहुत खलती है। निजाम गयासुद्दीन के साथ जब रायबरेली पहुंचता है तो गयासुद्दीन की शान देखकर अचरज में पड़ जाता है उसके आगे पीछे अर्दली चपरासी कर्मचारी और शहर के लोग चक्कर काट रहे थे। तब वह महसूस करता है कि "आज तक हिंदू और मुसलमानों के फसाद की खबरें जो भी पाकिस्तान आती थी परंतु यह खबर वहां नहीं पहुंची थी कि एक मुसलमान अफसर के नीचे हजारों हिंदू भी कार्यरत हो सकते हैं और असलियत वह नहीं जो बताई जाती बल्कि वह है जो नजर आ रही है।"[41]

निजाम मन ही मन यह एहसास करता है कि जिस प्रतिष्ठा को पाने के लिए उसने जिंदगी के 43 वर्ष बिता दिए वह प्रतिष्ठा तो उसके सभी रिश्तेदारों को प्राप्त है। और वह उस पल को धिक्कार ने लगता है जिस पल वह घर और माता पिता को छोड़कर पाकिस्तान गया था।[42] वह भारत से एक बार फिर रिश्ता जोड़ना चाहता है वह अपने पुत्र का विवाह भारत की किसी कन्या से करना चाहता है परंतु भारत में कोई भी पाकिस्तान से आए लड़के के साथ अपनी कन्या का विवाह नहीं करना चाहता। अतः वह पाकिस्तान वापस लौट जाता है इसी उधेड़बुन में उसे दिल का दौरा पड़ता है वह गमगीन हो जाता है।

[41]नासिरा शर्मा. जिंदा मुहावरे. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2016. पृष्ठ संख्या 127

[42]वहीपृष्ठ संख्या 131

नासिरा शर्मा इस उपन्यास के द्वारा यह बताना चाह रहे हैं कि भारत पाकिस्तान विभाजन के कारण जो राजनीतिक प्रपंच हुआ उसने आम जनता को तकलीफों का सामना करने पर मजबूर कर दिया उन्हें बहुत ही प्रताड़ित किया गया।

3.5 मैत्रेयी पुष्पा 1990–2000

हिंदी साहित्य के महान उपन्यास कारों में एक नाम मैत्रेयी पुष्पा जी का भी है। जिनका जन्म अलीगढ़ जिले के एक ब्राह्मण परिवार में 30 नवंबर 1944 में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित हीरालाल तथा माता का नाम कस्तूरी था। मैत्रेयी पुष्पा जी का नाम पुष्पा हीरालाल पांडे है। पूरा नाम विवाह के बाद पुष्पा जी रमेश चंद्र शर्मा हुई। उन्होंने मैत्रेयी पुष्पा के नाम से साहित्य क्षेत्र में लेखन प्रारंभ किया। कम उम्र में ही उन्होंने अपने पिता को खो दिया था। उनकी मां एक कर्मठ और मजबूत इरादों की थी उनकी मां ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात शिक्षा प्राप्त की और 1 ग्राम सेविका के रूप में नौकरी की।

मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने प्रारंभिक जीवन में बहुत कठिनाइयों का सामना किया। पिता की मृत्यु असमय हो गई थी और मां ग्राम सेविका की नौकरी की वजह से मैत्रेयी को अधिक समय नहीं दे पाती थी। मैत्रेयी जी की पढ़ाई का प्रबंध उनकी मां ने झांसी में किया जिससे वह झांसी के परिवेश में पली–बढ़ी और शिक्षा प्राप्त करने के लिए झांसी में ही रहे।

मैत्रेयी पुष्पा जी ने इंटर की परीक्षा 1960 में डी वी इंटर कॉलेज मोठ से पास की। और 1962 और 1964 में बी ए और एम ए हिंदी साहित्य से बुंदेलखंड कॉलेज झांसी से पास किया। मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार ष्मैंने हिंदी स्नातकोत्तर तक शिक्षा पूरी की है मेरी पढ़ाई जिला झांसी के बुंदेलखंड कॉलेज से हुई है।[43]मैत्रेयी जी की माता उन्हें पीएचडी कराना चाहती थी। उनका विवाह डॉक्टर रमेश चंद्र शर्मा के साथ हुआ जो कि अलीगढ़ के निवासी थे तथा उनकी नौकरी दिल्ली के एक अस्पताल में लग गई और मैत्रेयी जी उनके साथ दिल्ली में ही बस गई। मैत्रेयी जी की तीन बेटियां हैं और वे तीनों ही डॉक्टर हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी को साहित्य के प्रति लगाव बचपन से ही था उन्होंने अपना साहित्य जीवन विवाह के पश्चात ही शुरू किया उनकी पहचान एक लेखिका के रूप में हुई और यह पहचान दिलाने में राजेंद्र यादव जी का बहुत बड़ा योगदान था।

हिंदी साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसा नाम है, जिनके नाम से ही एक सशक्त स्त्री का चित्रण होने लगता है। उनके उपन्यासों में नारी को एक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वह समाज के उस नारी को अपने उपन्यासों में मुख्य भूमिकाओं पर रखती हैं, जो एक आम जीवन व्यतीत कर रही हैं।

---

[43]मैत्रेयी पुष्पा.गुड़िया भीतर गुड़िया. राज कमल प्रकाशन दिल्ली. 2010 .पृष्ठ संख्या 25

मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एक प्रतिभा संपन्न लेखिका का व्यक्तित्व है, जिसके बहुआयामी प्रकृति का परिचय उन्होंने अपनी आत्मकथा में दिया है। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, प्रेम, कठोर, साहस, मित्रता आदि विशेषताएं दिखाई देती हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी ने भले ही उपन्यास के संसार में देर से प्रवेश किया परंतु अपने उपन्यासों में बुंदेलखंड के ग्रामों को भारत में नारी स्वतंत्रता और उसकी अस्मिता को केंद्र बिंदु दिया जोकि हमें उनके बारे में सोचने के लिए मजबूर करता है।

मैत्रेयी पुष्पा जी का बचपन बहुत ही संघर्ष में रहा। उनकी आर्थिक स्थिति के कारण उनके माता–पिता दोनों ही पीड़ित रहे। जमीदारों ने जबरन ही उनकी जमीन ले ली और उनके पिताजी को कोणों से का आघात दिया जिसकी वजह से उनके पिताजी की मृत्यु हो गई। मैत्रेयी पुष्पा जी के बचपन पर इसका बहुत ही बुरा असर पड़ा और उन्होंने यह ठान लिया कि वह जमीदारी प्रथा के खिलाफ लड़ने के लिए समाज को जागृत करने का प्रयास करेंगे।

मैत्रेयी पुष्पा जी की दृष्टि में उपन्यास साहित्य

मैत्रेयी पुष्पा जी की रचनाओं में बुंदेलखंडी भाषा का सशक्त प्रयोग किया गया है क्योंकि बुंदेलखंड से उनका विशेष लगाव रहा है। अपने साहित्य में स्त्री समस्याओं को जागृत करना और उनका समाधान करना मैत्रेयी पुष्पा जी का प्रमुख उद्देश्य रहा है। मैत्रेयी पुष्पा जी आधुनिक समय की जानी पहचानी लेखिका है और उन्होंने अपने साहित्य में बुंदेलखंड के जनजीवन को विस्तारपूर्वक लिखा है। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा गुड़िया भीतर गुड़िया उन्हें और उनके व्यक्तित्व को पहचानने के लिए एक अच्छा साहित्य है।

मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास साहित्य में नारी पात्रता को आधार बनाया गया है, नारी मुक्ति के विचारों को केंद्र में रखा गया है। वह भारतीय संस्कृति में नारी को सशक्त और समान अधिकार वालों की छवि में रखना चाहती हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यासों में ज्यादातर ग्रामीण परिवेश का चित्र दिखाई देता है। महात्मा गांधी द्वारा "भारत की आत्मा उसके गांवों में ही निवास करती है।"[44]उनका साहित्य में दृष्टिकोण बहुत ही व्यापक है अतः वह नारी को चाहे वह ग्रामीण हो अथवा शहरी उसे आत्मनिर्भर देखना चाहती हैं।

अपने जीवन के प्रारंभिक समय से ही मैत्रेयी पुष्पा जी ने कष्टों का सामना किया है अतः अपनी माता को उन कष्टों से लड़ते हुए देखा है इसलिए नारी विमर्श के प्रति उनका झुकाव स्वाभाविक है अतः उनके साहित्य में नारी जीवन के कष्टों का निवारण करना प्रमुख लक्ष्य बन गया।

[44] रामचंद्र गुहा, भारत गांधी के बाद, पेंगुइन बुक्स गुड़गांव हरियाणा, 2011, पृष्ठ संख्या 251

मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास साहित्य में नारी संवेदना के विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है। स्त्री और पुरुष के समान रूप की बात करते हुए डॉक्टर दया दीक्षित लिखती हैं कि "आखिर अकेली स्त्री से समाज की उम्मीद करता है कि वह शुचिता का ख्याल रखेगी। आज भी स्त्री अगर रात के बारह बजे तक घर से बाहर रहने की बात करती है तो लोग आसमान सिर पर लेते हैं, लेकिन पति तीन बजे रात में भी घर आना चाहे तो उसका स्वागत होता है। ऐसी विसंगति क्यों? जब किसी को पता है वह कितनी पवित्र है। उनकी परिभाषाएं पुरुष नहीं कर सकते पुरुष वर्चस्व के दायरे में स्त्री की देह ही होती है। जन्म से शादी तक उसी देह की रक्षा होती है और विवाह के बाद उसका उपभोग से हटकर सोचें तो पता लगेगा कि स्त्री क्या है।"[45]

मैत्रेयी पुष्पा जी प्रारंभिक समय से ही ग्रामीण जीवन से परिचित रही है। वह बुंदेलखंड जिला झांसी के किल्ली गांव की रहने वाली थी। अपनी समग्र रचनाओं में मैत्री पुष्पा जी ने नारी के सुख और दुख से उत्पन्न हुए विद्रोह को महत्व दिया है। नारी की पीड़ा और दर्द को अभिव्यक्त किया है और अपनी रचनाओं में नारी संघर्ष को एक केंद्र बिंदु के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कई कहानियां और उपन्यासों को रचा है। जिसमें उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनीतिक, नारी समस्याओं से रूबरू कराया और उनके समाधान को भी बताया है। यही उनके साहित्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है। उनके साहित्य में आम जनजीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। डॉ राजेंद्र यादव के अनुसार "ग्रामीण सहजता एवं अन्य अनंता इनकी रचनाओं की अपनी विशेषता है, यही इनकी आंचलिक पृष्ठभूमि पर लिखी रचनाओं की लोकप्रियता का एक सबसे बड़ा कारण भी है।"[46]

मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास

चाक,

अल्मा कबूतरी

बेतवा बहती रही

विजन

आंगन पाखी

कहीं ईसुरी फाग

[45]दया दीक्षित. तथ्य और सत्य. सामायिक प्रकाशन नई दिल्ली. 2010. पृष्ठ संख्या 110

[46]शोधगंगाinflibnet.ac.in18Nov2019

त्रिया हठ

गुनाह बेगुनाह

इदन्नम

इदन्नम उपन्यास

इदन्नम उपन्यास 1994 में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास में पिछड़े जीवन के यथार्थ को बताते हुए नारी की नियति को केंद्र बनाया गया है। इस उपन्यास में नारी का जो रूप दिखाया गया है वह सहने, झेलने और जूझने पर आधारित है। इस उपन्यास में मंदा नाम की नारी को केंद्र में रखा गया है मंदा अपनी दादी के लिए "बावरी शिरीन" है। अभिलाख नाम का शोषको का प्रतिनिधि उसे काल भैरवी कहता है। उसका एक अन्य नाम जो कि सरकारी तंत्र के लोगों ने रखा है वह महाकाली है। इन सभी नामों से मंदा की विशेषताओं का पता चलता है, परंतु इस उपन्यास में कई विसंगति और गंभीर सरोकार भी है।

मंदा के परिवार को गरीबी के कारण बहुत सारे कष्टों का सामना करना पड़ता है। जिसमें कुसुंभा वे भी अपनी दुर्गति को गरीबी का ही जिम्मेदार बताती हैं। यह कहानी तीन पीढ़ियों के नारियों की कहानी है जिन्होंने पुरुष प्रधान व्यवस्था के मूल्यों को झेला है। अपने गांव में भूमिखोरों और लुटेरे रिश्तेदारों से बचने के लिए पराए गावों में जा करके उन्होंने शरण ली है। परंतु इसमें मंदा ने हार नहीं मानी है और उसने अपनी लड़ाई खुद लड़ने का फैसला किया। मंदा की मां भी समाज की दृष्टि में एक कुलटा के समान है परंतु उसे ने भी अपनी लड़ाई खुद ही लड़ी थी और अपने आप को स्वार्थीओं के चंगुल से मुक्त भी कराया था। कोयले वाले महाराज और बंदा मिलकर के असहायों को संगठित करके उन्हें भरोसा दिला रहे थे। इस कहानी में जटिलता और शोषण की भयावहता को साथ साथ दर्शाया गया है। जिसमें मां की प्रेरणा और एक स्त्री को अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ने के लिए समाज के उस तबके से जोकि शोषक वर्ग है दर्शाया गया है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने इस उपन्यास में भाषा पर एक एकाधिकार किया है। जिसमें पात्रों की स्थिति और मनोज स्थिति के अनुरूप शब्दों को और वाक्यों को गढ़ा है। तरह तरह के शब्दों का जो कि उपन्यास की केंद्रीय पात्र मंदा के लिए प्रयोग किए गए हैं उसमें मैत्रेयी जी ने एक मिठास और अपनापन डाला है। लेखिका ने अपने अनुभव से इन शब्दों को गढ़ा है और इदम् को एक एक प्रखर कृति बनाया है।

बेतवा बहती रही

मैत्रेयी पुष्पा जी को अपने दूसरे उपन्यास बेतवा बहती रही से उनकी पहचान कायम हुई। बेतवा बहती रही एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसका परिवार बहुत गरीब और बहुत कम पढ़ा लिखा था उर्वशी नाम की लड़की की संघर्ष गाथा है बेतवा बहती रही में गरीबी के कारण उसके माता–पिता उसका विवाह सर्वदमन से कर देते हैं। सर्वदमन नए युग का लड़का है और सुशिक्षित है पेशे से वह एक वकील है तथा उर्वशी से बहुत ही प्रेम करता है। किंतु दुर्भाग्य वश उर्वशी बहुत ही कम उम्र में विधवा हो जाती हैंवश इसके बाद उसका संपूर्ण जीवन बदल जाता है उसका सगा भाई 10 बीघा जमीन के लिए अपनी बहन का विवाह उससे दोगुनी उम्र के दोस्त बरजोर सिंह से कर देता है। बरजोर सिंह उसकी सहेली मीरा का पिता है उर्वशी अपने बच्चे को अपने जेठ के पास छोड़कर यह दुख सहने के लिए तैयार हो जाती है। वह सब कठिनाइयों को सहन करती है और कभी कुछ नहीं कहती हैं परंतु बरजोर सिंह के बड़े पुत्र की मृत्यु होने के बाद उसके छोटे पुत्र का विवाह वह पैसे के लोभ में उसकी मर्जी के बिना तय कर देता है। तब उर्वशी कहती है "उदय की शादी के लिए जो लोग आए हैं पैसा वाले हैं। अपनी बिटिया के लिए आसानी से उदय जैसा वर खोज लेंगे लेकिन हमारे विजय की बहू कहां जाएगी? उसे कौन ब्याहने आएगा? उदय की सहमति से उसका विवाह विजय की विधवा से करा देती है।"[47] परंतु बरजोर सिंह बर्दाश्त नहीं कर पाता और वह व्यक्ति की मदद से उर्वशी को धीरे धीरे दवाई के रूप में जहर देने लगता है। जब उर्वशी अपनी अंतिम सांसें गिनती है तो वह प्रार्थना करती है कि वह बेतवा के किनारे ही उसका अंतिम संस्कार करें। इस उपन्यास में मैत्रेयी जी ने विकास के नाम पर जनता का शोषण करने वाले सरकारी कर्मचारियों की घूसखोरी का अमानवीय व्यवहार चित्रित किया है। उपन्यास में सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें एक गांव की स्त्री को जागृत होते हुए दर्शाया गया है। जो सदियों से चुपचाप रह कर के कष्टों का सामना करती है और इसमें उर्वशी के रूप में दर्शाई गई केंद्रित नारी पुरुष वर्चस्व को चुनौती देने के लिए आगे कदम बढ़ाती है।

झूला नट

झूला नट एक लघु उपन्यास है। जिसमें बुंदेलखंड के एक ग्रामीण परिवार की कहानी है। इस परिवार में 4 सदस्य हैं जिसमें उसकी मां दो बेटे सुमेर और बालकिशन तथा बड़े पुत्र सुमेर की पत्नी शीलू है सुमेर पुलिस में है और बालकिशन गांव में खेती करता है। सुमेर अपनी पत्नी शीलू को पसंद नहीं करता है अतः वह शहर में दूसरा विवाह कर लेता है। अपनी सास के कहने पर शीलू बाल किशन के साथ बैठ जाती है। इसके बाद सुमेर गांव में आना–जाना शुरू करता है और शीलू से उसी प्रकार से प्यार जताने लगता है परंतु शीलू सुमेर से साफ कह देती है कि बालकिशन वैसे ही हैं जैसे तुम्हारे लिए वह दूसरी औरत है। सुमेर लौट जाता है पूरी जमीन बालकिशन के कब्जे में आ जाती है शीलू और उसकी सास की बनती नहीं है। दोनों के बीच बालकिशन पिसता रहता है। अंततः वह घर छोड़कर चला जाता है

[47]मैत्रेयी पुष्पा. बेतवा बहती रही. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली.2006. पृष्ठ संख्या 142

इस पूरे उपन्यास में बाल किशन के झूलते हुए नट के समान है तथा इसे झूला नट कहा गया है उपन्यास में शीलू का चरित्र सबसे सशक्त दिखाया गया है तथा इस उपन्यास के द्वारा एक नए आयाम को प्रस्तुत किया गया है।

अल्मा कबूतरी

यह कहानी अल्मा नाम की स्त्री की संघर्ष गाथा है। जो कि कबूतरी जनजाति में जन्मी है। इस जनजाति के लोग अपना संबंध महाराणा प्रताप, रानी पद्मिनी और झांसी की रानी के प्रिय सहेली झलकारी बाई से जोड़ते हैं। अलमा के पिता रामसिंह उसे पढ़ाते लिखाते हैं और उसके लिए सपने संजोय थे। मंसाराम माते और कदमाबाई कबूतरी का बेटा राणा भी राम सिंह के संरक्षण में ही पड़ता और लिखता है वह दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं तथा विवाह करना चाहते थे। किंतु पुलिस राम सिंह को डाकू करार देते हुए मार डालती है। राम सिंह की मृत्यु के बाद स्थितियां बदल जाती हैं अलमा सूरजभान जैसे राजनेता के चंगुल में फंस जाती है जो कि सर्किट हाउस में मंत्रियों को लड़कियां पेश करता था। इसी रास्ते चलकर वह राजनीति में आगे बढ़ा था। मनसा माते का भांजा धीरज सूरजभान की नौकरी करता है सूरजभान नेउसको एक लाख रूपए में अल्मा की निगरानी रखने का काम सौंपा। धीरज धीरे–धीरे अल्मा से प्रेम करने लगता है तथा वह उसे सूरजभान के चंगुल से भगा देता है। सूरजभान धीरज के ऊपर नाराज होता है तथा उसे अमानवीय यंत्रणा देता है। धीरज अलमा से मिलने का प्रयास करता है और एक बार उससे मिलता है। तथा उसे एक पत्र देता है जिसमें कबूतरा जाति के बारे में लिखा होता है जिसे पढ़कर अलमा सजग होती है तथा वह अपनों से मिलने के लिए तड़पती है परंतु धीरे–धीरे वह श्री राम शास्त्री कि मंत्री, दासी, प्रेयसी सब कुछ एक साथ बन जाती है। श्री राम शास्त्री की हत्या कर दी जाती है परंपरा को चुनौती देते हुए अलमा राम शास्त्री का अंतिम संस्कार करती है। इस उपन्यास में सामाजिक चढ़ता को तोड़ती हुई अलमा जैसी दलित नारी की अजय की गाथा है नारी चेतना को शक्ति और प्रेरणा देने वाली इस उपन्यास में अन्ना का एक सशक्त रूप प्रस्तुत किया गया है।[48]

आंगन पाखी

आंगन पाखी उपन्यास में मैत्रेयी जी ने ग्रामीण परिवेश में चल रहे अंतर्विरोध को ही उजागर किया है। यह कहानी स्त्री विमर्श की ही नहीं है बल्कि इसमें संपत्ति विमर्श और शक्ति विमर्श भी है। इन विमानों का केंद्र बिंदु इस उपन्यास की नायिका भुवन है जो अपने जेठ के द्वारा मृत घोषित किए जाने के बावजूद एक दिन उठ खड़ी होती है। और कचहरी में हाजिर होकर अपने पति के हक के लिए हलफनामा पेश करती है।भुवन का अदम्य साहस और व्यक्तित्व ही इस कहानी को नया बनाता है।

[48]मैत्रेयी पुष्पा. अल्मा कबूतरी , राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2013.

विजन

उपन्यास की मुख्य नायिका नेहा पेशे से डॉक्टर हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी ने इस उपन्यास में गांवों से हटकर शहरों में हो रहे नेत्र चिकित्सा के पेशे से जुड़े हुए डॉक्टरों की कहानी पर जोर दिया है मैत्रेयी जोकि पैसे वाले मरीजों को घेरकर अपने अस्पताल का शिकार बनाते हैं। परंतु नेहा आज मानवीय संवेदना के विरुद्ध इस व्यवसाय में रोशनी तलाशने का कार्य कर रही है।[49]

कहीं ईसूरी फाग

कहीं ईसूरी फाग एक बड़ा उपन्यास है। इस उपन्यास में पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर वर्षों से चले आ रहे अत्याचार का पर्दाफाश किया गया है। ईसूरी के फाग बुंदेलखंड मैं बहुत ही प्रसिद्ध है। अतः जगह जगह मैत्रेयी पुष्पा ने ईसूरी के फाग कथा उद्धृत किया है। उन्होंने इसके द्वारा अपनी सोच और भावनाओं को प्रेरणा दी है उपन्यास में इतिहास और प्राचीन और वर्तमान के कहानी को आकर्षक और सार्थक बनाया है।

त्रिया हट

उपन्यास बेतवा बहती रही के पात्रों को ही इस उपन्यास का माध्यम बनाया गया है। तथा यह कहानी एक विधवा स्त्री उर्वशी की है जिसने सिर्फ इतना अपराध किया था कि वह अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीना चाहती थी। तथा उसके पुत्र देवेश को यह पता चलता है कि उसकी माता को जहर देकर दवा के रूप में मार डाला गया। अतः वह सच्चाई जानने के लिए तत्पर हो जाता है इस उपन्यास में पुराने ढांचे को तोड़कर एक नवीन ढांचे को प्रस्तुत किया गया है।

चाक

मैत्रेयी पुष्पा जी का उपन्यास चाक सदी के आखिरी दशक का महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। इसकी अंतर्वस्तु एक ऐसी सामाजिक संरचना पर आधारित है जिसमें नए और पुराने तथा मध्यवर्गीय किसानों और उच्च वर्गीय लोगों के बीच द्वंद की तस्वीर है। जिस प्रकार से इस उपन्यास का नाम मैत्रेयी पुष्पा ने चाक रखा है इससे साफ पता चलता है कि जिस प्रकार बर्तन चाक पर रख कर के अपना आकार लेता है उसी प्रकार से जीवन भी कई विद्रोह और उतार–चढ़ाव के बाद पूर्णता हासिल करता है।

[49] मैत्रेयी पुष्पा विजन वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2016

उपन्यास की शुरुआत में ही काश यह मौत होती है[50] वाक्य से प्रारंभ होता है। यह वाक्य साफ दर्शाता है कि यह एक प्रश्न है क्योंकि किसी के अंदर यह बात थी कि रेशम अपनी मौत नहीं मरी है। बल्कि उसकी हत्या हुई है। यह कहानी सारंग की है जो कि इस उपन्यास की मुख्य और केंद्रीय पात्र है। यहां सारंग की बहन रेशम की मौत हो चुकी है। वह सारंग की बुआ की बेटी थी उम्र में उस से पांच वर्ष छोटी थी। सारंग को रेशम की मौत से झटका लगा है, वह बहुत दुखी है और उसके मन में सिर्फ एक ही बात बार–बार उभरती है कि यह मौत, नहीं हत्या है। इस उपन्यास में मैत्रेयी जी ने कहानी के साथ साथ उन लोकगीतों को भी विषय वस्तु बनाया है। जिसमें उन लोकगीतों के द्वारा भी कहानी को और स्पष्टता से समझाया जा सके।

अतरपुर गांव में यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी कई दास्ताने दर्ज हुई है जैसे "रस्सी के फंदे पर झूलती रुकमणी, कुएं में कूदने वाली रामदेई, करबन नदी में समाधिस्थ नारायणी।"[51]और सिर्फ यही नहीं बल्कि कई और भी औरतें हैं जिन्हें इसी प्रकार से अपनी जान गवानी पड़ी।

रेशम जो कि अब जीवित नहीं है। उसका विवाह साध जी के बेटे कर्मवीर से हुआ था। वह फौज में था एक दिन कर्मवीर जहरीली शराब पीकर के मर गया रेशम विधवा हो गई और समाज के सारे अच्छे दरवाजे उसके लिए बंद हो गए। लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि विधवा सिर्फ विधवा होती है औरत नहीं रह जाती। परंतु रेशम कहां बाधने वालों में से थी, वह तो अपने यौवन की बहार में बह रही थी। पति के मरने के बाद वह पांच महीने की गर्भवती हो गई। परंतु उसने अपनी दिलेरी से अपने गर्भधारण होने का एलान कर दिया। परंतु समाज के लिए यह बहुत बड़ा अपराध था हुकुम कौर जो कि रेशम की सास थी उन्होंने रेशम को बहुत सारी गालियां दी बहुत उल्टा सीधा कहा। परंतु रेशम ने किसी की एक न सुनी उससे अपने घर की लाज के लिए हुकुम कौर माफी मांगने लगी, गिड़गिड़ाने लगी। उसने भी साफ शब्दों में कह दिया अगर मैं मर गई होती तो क्या तुम्हारा बेटा ना दूसरी शादी कर लेता। तब तो तुम बहुत खुश होती परंतु मेरे इस कदम से तुम इतनी दुखी क्यों हो। उसने समाज के सारे नियम कानून मानने से इनकार कर दिया सारंग बहुत उदास थी। सारंग में रेशम से कहा भी कि यहां चली आ बहन वो लोग तुझे मार डालेंगे अगर एक बार इस घर से निकल गई तो दोबारा इस घर में घुसने नहीं देंगे।[52]

---

[50]मैत्रेयी पुष्पा. चाक. राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली. 1997. पृष्ठ संख्या 7

[51]वही पृष्ठ संख्या 7

[52]वही पृष्ठ संख्या21

धीरे–धीरे परिस्थितियां बदलने लगी रेशम की अपने ससुराल में बहुत पूछ होने लगी। सास हुकुम कौर रेशम को प्यार करने लगी, उसके खाने–पीने का ध्यान रखने लगी। साध जी बहू को भी लाड से बुलाने लगे, उसके जेठ उससे अच्छे से बात करने लगे। परंतु इन सब के बावजूद भी कहीं ना कहीं सारंग को हमेशा से यही लगता रहा की बलि से पहले बकरे को खूब खिलाया पिलाया जाता है। पता नहीं क्यों सारंग को रेशम बलि का बकरा ही लग रही थी सारंग सोचती "मेरी बहन कबूतर और हिरण की तरह ही भरमा कर मौत के घाट उतार दी गई।"[53]

गजाधर सिंह के दो पुत्र हैं रंजीत और दलवीर सारंग गजाधर सिंह के छोटे बेटे रंजीत की पत्नी हैं। बड़ा बेटा दलवीर पुलिस में दीवान है। रंजीत ने एमएससी किया है वह पढ़ा लिखा है परंतु अच्छी नौकरी ना मिलने की वजह से वह गांव में खेती संभालता है। गांव की ज्यादातर औरतें अनपढ़ हैं कुछ औरतें पढ़ी लिखी है पर वह भी गांव की किसानी गोबर पानी का कार्य करती हैं। सारंग जोकि कन्या गुरुकुल में पढ़ी है। वह गांव में उसकी गिनती पढ़ी लिखी औरतों में होती हैं वह मंत्र भी अच्छे से जानती हैं, और अपने अधिकारों के लिए उन लोगों से जो कि गांव के बड़े हैं हिसाब भी मांगती है। सारंग का पति रंजीत उसका साथ देता है परंतु पढ़े लिखे होने के बाद भी नौकरी न मिलने की वजह से कुंठित रहता है सारंग और रणजीत का एक पुत्र चन्दन भी है।

सारंग और रंजीत ने पूरे गांव को डोरिया के खिलाफ करके जेल भिजवा दिया जिससे वह गाँव का नायक बन गया। परंतु कुछ ही समय बाद डोरिया वापस लौट आया उसके आने पर गांव में दहशत बन गई थी। जिसके कारण रंजीत ने अपने बेटे चंदन को अपने भाई के घर आगरा भेज दिया। सारंग इसके लिए तैयार न थी वह अपने बेटे को अपने से दूर नहीं करना चाहती थी। परंतु रंजीत डर गया था रंजीत अब हाईकोर्ट में अपील करने की सोचने लगा। परंतु गांव के लोग उसे पागल कहने लगे और उसकी तुलना आ बैल मुझे मार वाली कहावत से करने लगे। आगरा से आने के बाद रंजीत का व्यवहार कुछ बदला–बदला सा चिड़चिड़ा सा लगने लगा। सारंग यही सोचती रहती कि जब से वह आगरा से लौटे हैं शांति से क्यों रहते हैं क्या कोई बात हुई है उसका मन अपने बेटे की बिना बिल्कुल नहीं लग रहा था रंजीत ठीक से सारंग से बात भी नहीं कर रहे थे।

कैलासीसिंह जोकि भंवर की बुआ की बेटी का जेठ है सारंग ने भंवर से कहकर कैलासीसिंह को डोरिया के खिलाफ दंगल लड़ने के लिए गांव में बुला लिया। कैलासीसिंह अतरपुर में अचानक आ गए रंजीत देखते ही हैरान रह गया कि जो इतने सालों से नहीं आए वह अचानक से कैसे आ गए परंतु उन्हें यह लगता था कि उनको भवर ने बुलाया है। परंतु असली में तो सारंग ने ही भंवर से कहकर कैलाशी सिंह को गांव में बुलाया था। सारंग कहती हैं "कि रंजीत को बिना बताए कैलाश सिंह को बुला लेना छल है या अपराधी धर्म और लोक धर्म कहां रहा मर्यादा और परंपरा कहां

[53]वही पृष्ठ संख्या 25

रही अभी तक भंवर का शक है। रंजीत को असल बात मालूम हुई तो यही कहेंगे कि किसी दिन बदमाश बुलाकर मेरा कत्ल करा देना हे भगवान।"[54]सारंग कैलाशी सिंह को देखकर बहुत खुश हो जाती थी कैलाशी सिंह पूरे जोर–शोर से अखाड़े पर उतरा और उसने डोरिया को अखाड़े में चित्त कर दिया सारंग खुशी से फूली नहीं समा रही थी।

गांव का हेड मास्टर थानसिंह था। जो कि शिक्षक कम राजनीति बाज ज्यादा था वह राजनीति के दांव पेच बहुत अच्छी तरह से जानता था और चुनाव में प्रधानी का पद पाने के लिए और उस पर अड़े रहने के लिए वह हर प्रकार के दांव लगाता था। रंजीत अपने बेटे से मिलने आगरा जाते हैं गांव के स्कूल का मास्टर श्रीधर है जो कि सारंग को हमेशा साहस बंधाता हैं। सारंग श्रीधर को देखकर रोमांचित होती है सारंग धीरे–धीरे श्रीधर के प्रति आकर्षित होती हैं। और जब वह घायल होता है तो उसके सामने वह अपना सब कुछ हार जाती है। सारंग ने रंजीत के लिए करवा चौथ का व्रत रखा है तभी वहां श्रीधर आ जाते हैं। सारंग हड़बड़ा जाती हैं श्रीधर से कहती है "मेरा व्रत खंडित मत करो श्रीधर से कहती है श्रीधर तुम मेरा व्रत खंडित करने चले आए तो यह भी जानते हो कि इस लौ को फूंक मारकर मैं बुझा नहीं पाऊंगी।"[55] रंजीत को श्रीधर और सारंग के प्रेम के बारे में पता चलता है तो वह गुस्से से पागल हो उठता है वह सारंग को बहुत ही गलत बातें बोलता है।

गांव में प्रधानी का चुनाव होने वाला है "चुनाव माने दंगल! ऐसा दंगल जिसमें गांव के हर आदमी को कुश्ती लड़नी है द्य पैंतरे पर पैंतरा, दांव पर दांव लगाने की जुगत में अलावों को घेरे रहते हैं लोग – आधी आधी रात तक।"[56] रंजीत जोर शोर से प्रधान की तरफदारी करने लगता है तभी श्रीधर उससे कहता है कि तुम प्रधान की तरफदारी इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम खुद ही प्रधान बनना चाहते हो रंजीत पढ़ा लिखा है। जिसकी वजह से फत्ते सिंह जो कि इस समय गांव के प्रधान है उसे अपनी ओर मिलाना चाहते हैं और उस से मीठी मीठी बातें करके उसका विश्वास जीतते हैं रंजीत भी उनकी बातों में आ जाता है।

चुनाव को लेकर इतनी गर्मा गर्मी बढ़ चुकी थी कि रंजीत और श्रीधर के बीच लड़ाई शुरू हो जाती है। रंजीत श्रीधर को धमकी देता था कि अगर वह अर्जी पर दस्तखत नहीं करेगा तो वह उसे प्रधान की लड़की को भगाने के जुर्म

---

[54]मैत्रेयी पुष्पा. चाक. राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली. 1997. पृष्ठ संख्या 95

[55]वही पृष्ठ संख्या190

[56]वही पृष्ठ संख्या274

में रिपोर्ट कर देगा। परंतु श्रीधर डरने वालों में से नहीं था उसे रंजीत से ऐसी आशा नहीं थी परंतु रंजीत कुछ लोगों के भड़काने पर भड़क चुका था।

उसके बाद अतरपुर में प्रधानी के चुनाव तेजी से आगे बढ़ने लगे। रंजीत प्रधानी पद के लिए अपनी उम्मीदवारी का पर्चा भरने जा रहे थे तभी श्रीधर ने भी सारंग को रंजीत के विरुद्ध प्रधानी के चुनाव में खड़े होने के लिए कहा पहले तो सारंग मना करती रही। परंतु श्रीधर के मनाने पर वह मानने के लिए तैयार हो गई। श्रीधर ने उसे समझाया ष्यह बताओ ,जब घर परिवार में औरतों का दखल हो सकता है, तो राजकाज में क्यों नहीं? तुम पढ़ी लिखी हो, खूब जानती हो हमारे संविधान में औरतों को बराबरी का दर्जा मिला हैद्य तुम कब तक औरत के पत्नी होने की दुहाई देती रहोगी? मैं निमित्त बनूंगा तुम्हारे खड़े होने का भले कितना ही रोको। उसी तरह का निमित्त जैसे कुम्हार घड़ा बनाने का होता है तुम्हें प्रधान बनना होगा–हर हालत में।[57] चुनावी जंग के द्वारा स्त्री और पुरुष के बीच का संघर्ष प्रारंभ हो गया। नारी जाति के लिए इस उपन्यास में मैत्रेयी जी ने सारंग का चरित्र उस स्त्री के रूप में प्रदर्शित किया है जो समर्पण, लांछन ,यंत्रणा, और विश्वास, के साथ ही साथ चुनाव में जीत दर्ज करती है। अतरपुर गांव में रिश्तो का महायुद्ध होता है और गुरुकुल की पढ़ी लिखी यह लड़की अपने आप से युद्ध करती हुई उस जगह पहुंच जाती हैं जिसे उसने कभी सोचा न था।

मैत्रयी पुष्पा जी का उपन्यास चाक, इदन्नम के बाद प्रकाशित हुआ था। एक गांव की कथा है इसमें खेती और किसान से जुड़े हुए जाटों के बारे में चित्रण किया गया है और आधुनिक समाज की बदली हुई परिस्थितियों का विश्वसनीय चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में जो नारी चित्रण किया गया है वह ग्रामीण परिवेश में एक उभरती हुई नारी है इसमें जाट समाज के रीति–रिवाजों और पुरानी पीढ़ी की दकियानूसी सोच और बर्ताव का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा जी ने बड़ी यथार्थता से किया है। यह एक स्त्री की कहानी है जो कि पुरुष प्रधान समाज में राजनीति में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती है इस उपन्यास में समाज में ऐसी स्त्री का क्या स्थान है। यह बताया गया है चाक उपन्यास सदी के आखिरी दशक का वह उपन्यास है जो गावों में नई उम्मीदों और आकांक्षाओं को तलाशता है।

मैं लेखक की तरह अंधेरों में दफन हो जाऊं मगर वह सत्य खोलना पड़ेगा कि मैंने चाक और अल्मा कबूतरी आंगन पाखी और इदन्नम जैसे उपन्यास क्यों लिखें मुझे लिखने की जरूरत क्यों महसूस हुई? और मैं यह भी बताने में संकोच नहीं कर रही कि अपनी और अपनी मां की जिस जिंदगी को खोलने के लिए बाध्य हो रही हूं वहीं, बहुत कुछ छुपाना भी चाहती हूं। ना छुपा सकी तो बहुत संभव है, ऐसी भूमिका लिखूं कि मेरे साथी पात्र तो कम से कम बच जाएँ, जिन्हें बदनामी का डर ईश्वर के डर की तरह दहशत में रखता है। मुझे यह भी ध्यान है कि मैं पति सत्ता के किले में रहती हूं जहां गुप्त चर और पहरेदारों की चौकसी नजर है। निश्चित ही लिखते समय मैं अपने कागज कलम बचाकर

[57]मैत्रेयी पुष्पा. चाक. राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली. 1997 पृष्ठ संख्या 400

रखूंगी। रात और दिन के वे लम्हे चुराऊंगी, जिन्हें कोई चोर सबसे ज्यादा सुरक्षित समझता है, यानी कि खाली घर मेरे मालिक देखेंगे सुनेंगे तो डर जाएंगे और समझाएंगे–अपने घर में सेंध तो चोर भी नहीं लगाता ।[58]

इस प्रकार पांचों नारी उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा समाज में नारी की स्थिति में बदलाव लाने का प्रयास किया है। और अपने सशक्त भावों के साथ नारी की स्थिति को बयां किया है इन पांचों दशक में नारी की स्थिति में बहुत अधिक बदलाव देखने को मिलता है।अधिकतर नारी उपन्यास कारों ने शिक्षित, पढ़ी–लिखी और आत्मनिर्भर नारी की समस्याओं का जिक्र किया है और एक पढ़ी लिखी नारी की समस्या को समाज के सम्मुख उभारा है।

[58]मैत्रयी पुष्पा गुड़िया भीतर गुड़िया राजकमल पेपर बैक्स नई दिल्ली 2016 पृष्ठ संख्या 326 327

अध्याय चतुर्थ

पुरुष उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण

अध्याय चतुर्थ

पुरुष उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समानता के लिए स्त्रियों के संघर्ष में और तेजी दिखाई दी। भारतीय संविधान 1950 में लागू हुआ, जिसकी धारा 14 व 15 में स्त्री और पुरुष को पूर्ण समानता की गारंटी दी गई। 1956 के हिंदू उत्तराधिकार कानून ने पिता की संपत्ति में बेटे के बराबर ही बेटी को भी अधिकार दिया। हिंदू विवाह कानून 1955 में कुछ विशिष्ट आधार के अनुसार विवाह विच्छेद करने का भी अधिकार दिया गया। स्त्री और पुरुष दोनों के लिए ही एक विवाह अनिवार्य बना दिया गया दहेज लेने और देने पर प्रतिबंध लगाया गया। परंतु इसके बावजूद भी आज तक दहेज लेने और देने की परंपरा जारी है। संविधान के नीति निर्देशक तत्व में समान कार्य के लिए समान वेतन का सिद्धांत भी है।[1] परंतु अधिकारों से भरे इस संविधान के बावजूद भी नारी को व्यवहार में समानता के लिए अभी भी जूझना पड़ता है अपनी पहचान और अपने अधिकार के लिए उसे निरंतर प्रयत्न करते रहना पड़ता है

साहित्य कई हद तक समाज में हो रही क्रियाओं पर ही आधारित होता है। परंतु जो जैसा है वैसा दिखाना साहित्य का उद्देश्य नहीं है बल्कि जैसा है उसकी तरह से अपने शब्दों में गढ कर प्रस्तुत करना साहित्य है। साहित्य की एक विशेष धारा उपन्यास को कहा जाता है क्योंकि उपन्यास में आपके आसपास के समाज में आने वाली क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का प्रतिबिंब उभरकर सामने आता है।

उपन्यास के बारे में किसी ने ठीक ही कहा है कि आज के जमाने में उपन्यास एक ही साथ शिष्टाचार का संप्रदाय, बहस का विषय, इतिहास का चित्र, और पॉकेट का थिएटर है।[2]

मुंशी प्रेमचंद्र जी के द्वारा 'उपन्यास की ऐसी कोई परिभाषा नहीं है जिस पर सब लोग सहमत हों।[3] फिर भी उन्होंने उसे समझने का प्रयत्न किया है। वे कहते है कि मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हू, मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।'[4]

---

[1] बिपिनचंद्रा, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या 234

[2] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी. साहित्य सहचर. नैवेद्य निकेतन वाराणसी. 1965. पृष्ठ संख्या 77

[3] वहीपृष्ठ संख्या 77

[4] वही पृष्ठ संख्या 77

जब कोई लेखक कोई ग्रन्थ लिखता है, तो उसके अध्ययन के लिए चार बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। पहला वह किस काल में पैदा हुआ, दूसरा वह किस जाति और समाज में पैदा हुआ, तीसरा उसके समसामयिक और पूर्ववर्ती अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ कार कौन कौन थे और उनसे उसका कोई संबंध था या नहीं, तथा चौथा उसका व्यक्तिगत जीवन क्या और कैसा था।[5] क्योंकि उसका सीधा प्रभाव उसके द्वारा लिखी गई पुस्तक पर पड़ता है।

भारत में स्वतंत्रता एक महत्वपूर्ण कदम था 1947 के बाद भारत बिल्कुल बदल सा गया था। राजतंत्र और गुलामी को जड़ से उखाड़ फेंक कर एक नए गणतंत्र भारत की स्थापना की गई। देश के कई महानुभवों ने देश की आजादी में जो योगदान दिया था, उसे भुलाया नहीं जा सकता। समाज में स्वतंत्रता के पश्चात नए आयामों के अंतर्गत नए देश का उत्थान हो रहा था। इसमें समता, न्याय और बंधुत्व की स्थापना करना एक महत्वपूर्ण कदम की शुरुआत थी। स्वतंत्रता का जितना प्रभाव समाज के अन्य चीजों पर पड़ रहा था उतना ही प्रभाव साहित्य पर भी पड़ना स्वाभाविक ही था। स्वतंत्रता के पश्चात कई उपन्यास व्यक्ति विषयक उपन्यासों की नई शुरुआत के साथ लिखे गए। बाहरी जीवन के साथ–साथ उपन्यास कारों ने अंतर्मुखी व्यक्तित्व को भी उभारना प्रारंभ किया। नर और नारी के प्रति अपने विचारों को खुले रूप से उन्होंने अपने उपन्यासों में जगह दी। कई मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने नारी के अंतर्मन में झांकते हुए नारी प्रधान उपन्यासों को लिखा। उसकी समस्याओं को समाज के सम्मुख रखा और कई पहलुओं को दृष्टिगत किया। नई पीढ़ी, नया भारत और नया उपन्यास तेजी से बढ़ रहे थे। जिसके द्वारा उपन्यास कारों ने खुले तौर पर नारी के जीवन को अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया। पुरुष उपन्यास कारों ने नारी के उस रूप को प्रदर्शित करने का प्रयास किया जो वह वास्तविकता में वह जीना चाहती थी।

एक सफल उपन्यासकार हमेशा समाज के शुभचिंतक और पथ प्रदर्शक के रूप में ही अपने को देखता है। इसीलिए कई बार रचनाकारों की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की झलक भी हम देख पाते हैं, तो कभी रचनाकार के रचनाओं में समाज के और जनजीवन में हो रही परिस्थितियों के बदलाव को देखते हैं।

4.1 जैनेंद्र 1950–60

जैनेंद्र जी की रचनाओं में मनोविश्लेषणात्मकता प्रमुख रही है। इनका जन्म 2 जनवरी 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री प्यारे नाम था और माता का नाम श्रीमती रामा देवी बाई था। दो वर्ष की अल्पायु में ही जैनेंद्र जी के सर से उनके पिता का साया हट गया। इन विपरीत परिस्थितिओं में जैनेंद्र जी की माता ने उनको संभाला और उनका पालन पोषण किया उसके पश्चात वह अपने भाई भगवानदीन के यहां आ गई अपने बच्चों का लालन पोषण करने के लिए।

[5]आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी. साहित्य सहचर. नैवेद्य निकेतन वाराणसी. 1965. पृष्ठ संख्या 9

जैनेंद्र जी की प्रारंभिक शिक्षा ऋषभब्रह्मचर्य आश्रम जैन गुरुकुल में हुई। इसके पश्चात 1918 में मैट्रिक की परीक्षा पंजाब से उत्तीर्ण किया इंटरमीडिएट की परीक्षा के लिए उन्होंने बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज में प्रवेश लिया परंतु पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। जैनेन्द्र जी बहुत ही संकोची प्रवृत्ति के थे राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान इनका रुझान भी आंदोलन के तरफ ही था महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर उन्होंने अध्ययन छोड़ दिया था और स्वाधीनता आंदोलन में बराबर हिस्सा लेते रहे।

उन्हें काफी समय तक कोई नौकरी ना मिलने के कारण बेरोजगारी से परेशान जैनेंद्र जी ने अपना ज्यादातर समय पुस्तकालय में देने का निश्चय किया। उन्होंने अपने विचारों और अपनी कुंठा ओं को साहित्य का रूप देने के लिए और उन्होंने उसके माध्यम से हीन विचारों घुटन और कुंठा का चोला उतारने का प्रण लिया।[6]1929 में जैनेंद्र जी का प्रथम उपन्यास परख प्रकाशित हुआ। 1929 में जैनेंद्र जी का विवाह हुआ और इसी साल उन्हें अपने प्रथम उपन्यास परख के लिए साहित्य अकैडमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। गांधी जी के संपर्क में हमेशा रहे और उन्होंने उनके साथ दांडी यात्रा में भाग लिया। वह इन राजनीतिक जीवन के दौरान जैनेंद्र कई बार जेल गए परंतु धीरे–धीरे उनका मन साहित्यिक जीवन की ओर बढ़ने लगा 1935 में इनका अगला उपन्यास सुनीता प्रकाशित हुआ।

जैनेंद्र जी को अपने कई लेखिनी की वजह से कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें 1968 में साहित्य अकैडमी पुरस्कार से नवाजा गया, 1971 में पद्म विभूषण दिया गया, 1972– 73 में आगरा और दिल्ली विश्वविद्यालय से होने डी लिट की मानद उपाधि प्राप्त हुई, 1978 में तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया, 1979 में तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के अनुग्रह पर संयुक्त राष्ट्र संघ में मानव अधिकार आयोग के भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। 1984 में जैनेंद्र जी को हिंदी संस्थान द्वारा भारत भारतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

तेरासी वर्ष की उम्र में 24 दिसंबर 1988 को जैनेंद्र जी की मृत्यु हो गई।

साहित्यिक जीवन

जैनेंद्र जी ने कुल 12 उपन्यासों लिखा है

उपन्यास

परख 1929

[6]डॉ कृष्णदेव शर्मा एवं डॉ मायाअग्रवाल. समीक्षक एवंव्याख्या कारत्यागपत्र एक विवेचन. अनीताप्रकाशननईदिल्ली. पृष्ठ संख्या 2

सुनीता 1935

त्यागपत्र 1937

कल्याणी 1939

सुखदा 1953

विवर्त 1953

व्यतीत 1953

जयवर्धन 1956

मुक्तिबोध 1956

अनन्तर 1973

अनाम स्वामी 1973

दशार्क

विवर्त

1953 में विवर्त उपन्यास को रचा यह उपन्यास नारी प्रधान ना होकर पुरुष प्रधान है। परंतु इसमें भी जिस नारी का चित्रण जैनेंद्र जी ने किया है उस नारी की भी मुख्य भूमिका प्रस्तुत की गई है। यह कहानी मुख्य नायिका भुवन मोहिनी नायक जितेन की है। भुवन मोहिनी न्यायाधीश की पुत्री है जबकि जितेन अंग्रेजी पत्र में संपादकीय का कार्य करता है। दोनों में आपस में प्रेम हो जाता है भुवन मोहिनी अपनी सुख–सुविधाओं को जितेन के सामने अक्सर प्रदर्शित करती है जिससे जितेन और उसके बीच में आर्थिक दशा में के कारण विवाह नहीं हो पाता है जितेन कुंठा का शिकार हो जाता है और क्रन्तिकारी रूप धारण कर लेता है।

चार वर्ष उपरांत जीतें भुवन मोहिनी के घर आता है क्योंकि उसका नाम पंजाब मेल गिराने में शामिल होता है वह नाम परिवर्तित करके उसके घर आता है कि एक बडे बरिस्टर के घर में उसे कोई तलाश नहीं करेगा। भुवन मोहिनी के घर पर बीमार हो जाता है परंतु इलाज और भुवन मोहिनी के सेवा के कारण वह जल्दी ही ठीक हो जाता है वह भुवन मोहिनी के द्वारा दिखाए गए अपने कोठी और जेवर को आज भी वह उसी कुंठा से देखता है। एक दिन जितेन भुवन मोहिनी के सारे आभूषण लेकर चला जाता है भुवन मोहिनी को इसकी आशंका होती है वह तलाशती है और उसे

कोई आभूषण नहीं मिलता है। जितेन अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ मिलकर मोहिनी का अपहरण करने की योजना बनाते हैं उसके साथी भुवन मोहिनी का अपहरण करके ले आते हैं। जितेन भुवन मोहिनी से आभूषणों के बदले पचास हजार रुपयों की मांग करता है भुवन मोहिनी का उसके साथ अच्छा बर्ताव उसका प्रेम और करुणा के व्यवहार के कारण धीरे–धीरे जितेन का हृदय परिवर्तित होने लगता है धीरे–धीरे वह क्रांति रास्ता खत्म करके आत्मसमर्पण कर देता है मोहिनी के प्रेम और समर्पण के कारण जितेन अपने क्रांतिकारी जीवन से मुक्ति पा लेता है।

जितेन के बारे में उपन्यासकार ने लिखा है कि उसका स्वभाव अपराध नहीं है मानो कि वह दबाव में है, ग्रंथि में है, यह विवर्त में है। विवर्त के अंत में विभाव का शमन होता है और नायक जितेन के चित्र का यह परिष्कार कथा की भुवन मोहिनी के असंदिग्ध पर मर्यादाशील स्नेह के प्रभाव से ही निष्पन्न होता है। उपन्यासकार ने यह उपन्यास राजनीतिक चेतना पर लिखा गया उपन्यास है भले ही यह पूरी तरह से क्रांतिकारी प्रक्रियाओं से मेल न खाता हो परंतु इस उपन्यास में जैनेंद्र जी ने गांधीवादी दृष्टिकोण को रखते हुए इस उपन्यास की समाप्ति की है कि प्रेम और सद्भाव से हृदय परिवर्तन किया जा सकता है।

व्यतीत

जैनेंद्र जी का अगला उपन्यास व्यतीत है। जो कि 1953 में प्रकाशित हुआ यह कहानी एक ऐसे पुरुष की है जो कि प्रेम में धोखा खाया हुआ है और दुनिया से अपने आप को अलग रखना चाहता है। इस कहानी का मुख्य नायक जयंत है जोकि अपने पिता के दोस्त की पुत्री अनीता से प्रेम करता है परंतु अनीता किसी और के साथ विवाह कर लेती है वह उसे अपना अच्छा दोस्त ही मानती थी। जयंत यह बर्दाश्त नहीं कर पाता है और वह सब कुछ छोड़ कर के कविता करने लगता है और एक समाचार पत्र में सह संपादक का कार्य करने लगता है। उसके पिता उसे सिविल सर्विस की तैयारी कराना चाहते थे परंतु उसके इस कार्य के कारण उसे घर से बाहर निकाल देते हैं वह एक कमरे में रहकर अपने जीवन यापन करने लगता है। एक दिन अनीता जयंत से मिलने उसकी कोठरी पर आती है और उसे उसके पिता की तबीयत खराब होने का समाचार देती है जयंत अपने पिता को देखने के लिए घर जाता है परंतु उससे पहले ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है वह वापस चला आता है। अनीता जयंत के मालिक को जयंत की स्थिति से अवगत कराती है जिससे कि जयंत के मालिक को उस पर दया आती है और वह उससे अपनी बेटी सुमिता के साथ विवाह का प्रस्ताव रखता है परंतु जयंत उसे मना कर देता है। जयंत वहां से शिमला चला जाता है जहां पर उसकी मुलाकात एक पुराने मित्र कुमार से होती है वह अपनी पत्नी और भतीजी के साथ विदेश जाना चाहता है परंतु उसकी पत्नी उसकी भतीजी को ले जाना नहीं चाहती जिसके कारण कुमार जयंत से उसकी जिम्मेदारी लेने के लिए कहता है और वह उन दोनों का विवाह करवा देता है। जयंत और चंद्री में किसी बात को लेकर के विवाद हो जाता है जिसके कारण जयंत सेना में भर्ती होने के लिए चला जाता है वहां पर वह बुरी तरह से घायल हो जाता है।

जयंत अभी भी चंद्री से उदासीन सा रहता है अनीता उससे पूछती है कि आखिर वह क्या चाहता है क्या वह आज भी उससे प्रेम करता है वह अपने आपको उसे समर्पित करने के लिए तैयार हो जाती है। परंतु उसका यह समर्पण देखकर के जयंत डर सा जाता है और सन्यासी पूर्ण जीवन वैराग्य जीवन जीने के लिए सन्यासी बन जाता है। इस उपन्यास में जैनेंद्र जी ने बड़े ही भाव मन से यह बताने का प्रयास किया है कि नायक प्रेम में ठुकराया हुआ किस प्रकार से कुंठा ग्रस्त हो जाता है। और नायिका के अपमान को सहन ना करते वह क्रांतिकारी जीवन में परिवर्तित हो जाता है परंतु अपनी प्रेमिका के प्रेम भरे व्यवहार को देखकर वह इस जीवन से मुक्ति पाने के लिए सन्यासी बन जाता है। जयंत खुद कहता है ''मैं सन्यासी भला किसे प्यार देने से बच सकता था लेकिन लगता है जीवन व्यर्थ भार ही है क्यों कहीं इसे कभी देकर खो नहीं सका, ताकि कुछ पा जाता और यों भटकता न फिरता लेकिन सुनता हूं ,दूसरा भी जन्म है अब तो उसी में आस है।''[7]

जयवर्धन

जैनेन्द्र जी का अगला उपन्यास 1965 में जयवर्धन प्रकाशित हुआ। जयवर्धन उपन्यास जैनेंद्र जी के बाकि उपन्यासों में कुछ हटकर लिखा गया है। इसमें जैनेंद्र जी ने कुछ नए प्रयोग किए हैं यह उपन्यास एक अमेरिकी पत्रकार विल्वर लूस्टन को माध्यम बनाकर के 21वीं शताब्दी की कुछ घटनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है इसमें लूस्टन की मानसिक उपज द्वारा लिखी गई एक डायरी जो भारत के भविष्य को लेकर की गई है उस पर आधारित है इसका मुख्य नायक जयवर्धन है। जिसके आयामों को जैनेन्द्र जी ने दो तरीकों से प्रस्तुत किया है प्रथम राजनीति से राजनीति से जुड़ाव दूसरा उसका अपना व्यक्तिगत जीवन जयवर्धन और इस उपन्यास की नायिका इला बिना विवाह किए दोनों एक साथ में रहने लगते हैं जिसके कारण लोगों को कुछ अपवाद भी होते हैं। इसमें स्वामी चिदानंद मुख्य हैं इन्ही के आश्रम में इला का पालन–पोषण हुआ है वह इसे समाज और भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात समझते हैं तो दूसरी तरफ प्रगति शील विचारों के नेता हैं वे इसे सामाजिक प्रगति बताते हैं और रूढ़िवादी परंपरा का दमन करते हैं इस उपन्यास में जैनेन्द्र जी ने अलग–अलग विचारधाराओं को प्रस्तुत किया है।

जैनेंद्र जी ने इस उपन्यास में कई पात्रों को रचा है जो कि अपने अलग अलग विचारधारा के कारण मुख्य भूमिका में है इसमें नाथ और लिजा खुले विचारों के हैं चिदानंद पुरातन विचारों का है आचार्य गांधीवादी हैं और इंद्रमोहन वह आतंकवादी की भूमिका में लिखा गया है आचार्य जो के इला के पिता है जयवर्धन में विश्वास करते है।

[7]निर्मला जैन, प्रदीप कुमार व्यतीत जैनेंद्र रचनावली भाग 2 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली .2008. पृष्ठ संख्या 253

इला के पिता अभी कैद में है परंतु उनके छूटते ही जयवर्धन और इला का वे विवाह करा देते हैं जय का अपना एक राजनीतिक कैरियर है जिससे वह विवाह के बाद त्यागपत्र दे देता है और उसकी कल्पना आने वाले सालों में एक राजनेता के रूप में जैनेंद्र जी ने की है। जिस जोकि अंतर्द्वंद में उलझा रहता है इस उपन्यास में जैनेंद्र जी ने प्राचीन नवीन और तत्कालीन परिस्थितियां को बताने का प्रयास किया है।

मुक्तिबोध

मुक्तिबोध जैनेंद्र जी का एक और राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास का मुख्य नायक सहाय के राजनीतिक जीवन पर लिखी गई कहानी है मुक्तिबोध राजनीति के साथ–साथ प्रेम और विवाह जैसे विषयों को भी आधार बनाया है। नायक सहाय की पत्नी और प्रेमिका दोनों को ही जैनेन्द्र जी ने स्थान दिया है पत्नी समर्पण सेवा और प्रेम दर्शाती है तो प्रेमिका उसे प्रेरणा और तेजी देती है।

इस उपन्यास में तो जैनेंद्र जी नीलिमा के जरिए अपनी अप्रसन्नता को व्यक्त करते हैं कि अभागिनी है वह जो स्त्री है और राजनीति में आती है या उसका विचार भी करती है स्त्रीत्व के साथ ऐसे समझौता ही होता है, पालन नहीं होता राजनीति करें वह स्त्री जिस स्त्री के पास पुरुष ना हो।[8]

अनन्तर

जैनेन्द्र जी का अगला उपन्यास अनन्तर है। जोकि स्त्री पुरुष संबंधों के द्वंद पर आधारित है। उपन्यास की मुख्य नायिका अपरा है जो कि अपने विचारों और कार्यों में हमेशा आगे रहती है वह विदेश में अपने व्यवसाई पति के साथ आठ वर्षों तक रहने के बाद तलाक ले लेती है और वापस भारत आ जाती है। उसका विश्वास भारतीय संस्कृति और भारतीय पतिव्रता स्त्रियों पर है परंतु उपन्यास के पुरुष पात्र प्रसाद और आदित्य के साथ उसके व्यवहार को देखते हुए उसके विचारों में कहीं ना कहीं धुंधला हट सी आ जाती है।

अपरा और प्रसाद में आयु का अंतर है परंतु अब अपरा उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। और वह प्रसाद के समीप आना चाह रही है परंतु प्रसाद कुछ दुविधा में पड़ जाता है। जिसे देखते हुए अपरा कहती हैं ष्क्या ठीक नहीं है मेरा स्त्री होना ठीक नहीं है? या आपका पुरुष होना ठीक नहीं है? या ऐसे होने पर दोनों का आसपास होना

[8]रोहिणी अग्रवाल हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2015 पृष्ठ संख्या 50

ठीक नहीं है? मेरी जगह रामेश्वरी होती तो बेहद ठीक हो गया होता व्हाट इज रॉन्ग इन मी।[9] इस उपन्यास का दूसरा नायक आदित्य है जो कि दो बच्चों का पिता है परंतु वह अपरा के प्रेम में पड़ जाता है और उसकी पत्नी चारू उसके इस व्यवहार से परेशान होती है और इसकी शिकायत अपनी मां और पिता से करती है चारू के पिता इस बात को इतना महत्व नहीं दे पाते जैनेन्द्र जी ने इस उपन्यास में मानव स्वभाव को प्रदर्शित किया गया है।

अनाम स्वामी

जैनेंद्र जी का अगला उपन्यास अनाम स्वामी है। जो कि 1973 में प्रकाशित हुआ था अनाम स्वामी की कथावस्तु शुरू के 12 अध्यायों में जज प्रमोद का अनाम स्वामी के साथ प्यार विवाह हिंसा अहिंसा ब्रह्मचर्य आदि कई विषयों पर वार्तालाप से संबंधित हैं परंतु उपन्यास का अगला भाग एक प्रेम त्रिकोण पर आधारित है।

उपन्यास की मुख्य नायिका वसुंधरा है जिसका पति कुमार होता है। वह पूर्ण पति ना बनने के कष्ट से पीड़ित है और वह अपनी पत्नी को पूर्णता ना दे सकने के कारण दुखी रहता है। शंकर जो कि इस उपन्यास का दूसरा नायक है वसुंधरा का पूर्व प्रेमी है वसुंधरा के साथ उसका विवाह ना हो सकने के कारण वह समाज सेवा को अपना लेता है और पुरानी विचारधारा को खत्म करके एक मुक्त समाज की विचारधारा में लग जाता है।

वसुंधरा के पति कुमार वसुंधरा को उसके पूर्व प्रेमी शंकर के पास पूर्णता प्राप्त करने के लिए भेजते हैं। परंतु शंकर उसका तिरस्कार करता है और वह उसे वहां से जाने के लिए कहता है परंतु वसुंधरा फिर भी शंकर से मिलती–जुलती रहती है शंकर अपनी पहली पत्नी को मार चुका होता है। वसुंधरा के साथ विवाह ना होने के कारण उसका पत्नी पर से भरोसा उठ चुका था और इसी के कारण वह अपनी पत्नी को मार देता है। वसुंधरा इसके लिए अपने आप को दोषी मानती है और उससे लगातार मिलती रहती हैं परंतु आगे चलकर शंकर वसुंधरा को भी जहर की सुई लगाकर मार डालता है और दस साल बाद खुद भी वही जहर वाली सुई लगाकर आत्महत्या कर लेता है।

इस उपन्यास में नारी के आत्मसमर्पण की कहानी प्रस्तुत की गई है। जिस प्रकार जैनेन्द्र जी के उपन्यास सुनीता में अपने पति श्रीकांत के कारण सुनीता हरिप्रसन्न के पास जाने के लिए तैयार हो जाती है उसी प्रकार इस कहानी में भी वसुंधरा अपने पति के कहने पर शंकर के पास जाने के लिए तैयार हो जाती है।

[9]निर्मला जैन, प्रदीपकुमार. अनंतर जैनेंद्र कुमार जैनेन्द्र रचनावली भाग 3. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली. 2008. पृष्ठ संख्या 24

दशार्क

जैनेंद्र जी का अंतिम उपन्यास दशार्क है जोकि 1985 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास के विषय वस्तु केंद्रीय कहानी एक वैश्या की है। पैसों की वजह से वैवाहिक संबंध के टूटने से एक स्त्री को वैश्या का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश दिखाया गया है। मर्यादा और मानवता के समापन पर स्त्री एक वस्तु बनकर रह जाती है ।[10]

यह कहानी नायिका रंजना की है जो कि बड़े घर की बेटी होती है और उसका विवाह विश्वविद्यालय के प्रवक्ता के साथ हो जाता है और उसके प्रवक्ता पति की आय बहुत सीमित हैं जिसके कारण वह अपनी पत्नी और ससुर के सामने हीन भावना का शिकार हो जाता है। धीरे–धीरे वह जुआ खेलना शुरू कर देता है जिसके कारण वह अपनी पूरी संपत्ति गँवा बैठता है जिससे परेशान होकर रंजना पति से अलग हो जाती है और अपना अलग व्यवसाय खोल लेती है किसी भी समाज के लिए यह खुले तौर पर सही नहीं माना जा सकता है। उसके यहाँ सभी वर्गों के लोग आते हैं उसका पति भी उसके पास आता है।

रंजना अपने प्रेम के लिए स्पष्ट करती है कि ''लेकिन मैंने पाया कि तन से भी ज्यादा कुछ प्यास है जो मन की है प्यास की उस तड़प को कोई नहीं पूछता वह तन कि नहीं उससे बड़े की प्रेम की प्यास है मैंने उस बात को समझा और जाना कि उस प्यास में जीवन में फैले कई रोगों का गहरा इलाज भी है लोगों को वह इलाज मुझसे मिला है और पैसे अपने आप मुझ तक आते हैं यह सिफत हर औरत में है और वह चाहती है कि वह उन्हें पहचाने तभी हिंसा कि ज्वाला जो सब ओर फैली हुई है ठंडी होगी।''[11]

सुखदा

जैनेन्द्र जी का उपन्यास सुखदा एक ऐसा उपन्यास है जोकि पूरी तरह से नारी जीवन जीवन को समर्पित है। मुझे सुखदा उपन्यास ने ही सबसे ज्यादा प्रभावित किया क्योंकि वह एक ऐसी नारी की कहानी है जो पुरुषों से अधिक मानसिक बल रखती है उसके अंदर आत्मशक्ति हैं, प्रेम है, भावनाएं हैं, और समाज के प्रति कुछ करने की इच्छा है।

इस उपन्यास की कहानी फ्लैशबैक में चलती है जिसमें एक नारी जो कि अस्पताल में है, अकेली है, अपने पति से दूर है और अपने कहानी के उन पलों को याद करती है जब वह अपने स्वामी के साथ थी जोकि सुखदा जो इस उपन्यास की मुख्या नारी है कि "मेरे मां बाप मुझे बहुत चाहते थे उनकी मैं पहली लड़की नहीं थी भाई बड़े थे इसलिए

[10]डॉ रामचंद्र तिवारी हिंदी का गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2015 पृष्ठ संख्या 214

[11]जैनेंद्र कुमार दशार्क भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली 2008.पृष्ठ संख्या 180

मुझसे झगड़ते नहीं थे मुझे लाड में रखते थे हर पल मेरी बात रखी जाती थी मुझे पता था मैं सुंदर हूं पता था मैं बड़े आदमी की बेटी हूं।"[12]

वह एक संपन्न परिवार की लड़की है उसके पिता बैरिस्टर थे और वह अपने माता–पिता की इकलौती संतान थी माता पिता ने बड़े ही प्रेम से पाला था उसकी सारी इच्छाओं को उसके कहने से पहले ही पूरी कर देते थे। विवाह को लेकर भी सुखदा के अंदर ऐसी ही प्रेम भरी कल्पनाएं थी जिसकी उड़ान में वह उड़ जाना चाहती थी वह अपने विवाह को लेकर बहुत से सपने संजोय हुई थी की उसका विवाह एक ऐसे पुरुष से हो जो कि विदेश में कार्यरत होये परंतु भाग्य को शायद कुछ और ही मंजूर था। जिसके कारण सुखदा का विवाह एक मामूली सी आमदनी वाले व्यक्ति से हो गया जिससे उसे प्रेम तो मिला परंतु उसे उन सभी सुख सुविधाओं को त्यागना पड़ा जो उसे अपने माता पिता से प्राप्त हुई थी।

उसका विवाह कांत नामक व्यक्ति से हो गया जोकि एक क्लर्क था और महीने के डेढ़ सौ रुपए मिलते थे विवाह के डेढ़ वर्ष पश्चात उन्हें एक बालक हुआ परंतु सुखदा का मन गृहस्थी में बिल्कुल भी नहीं लगता था वह अपने माता–पिता के द्वारा प्राप्त की गई प्रतिष्ठा और संपन्नता के साथ ही जीना चाहती थी जिसके कारण वह कभी–कभी अच्छे वस्त्र पहनकर बाजार चली जाया करती थी घर पर पति के साथ उसकी हिसाब को लेकर अक्सर खटपट हो जाया करती थी।[13]

एक दिन कांत एक लड़के को लेकर के घर आते हैं और सुखदा से कहते हैं कि तुम्हें कार्य करने के लिए एक लड़के की तलाश थी मैं एक लड़के को ले आया हूं जिसका नाम गंगा सिंह है। सुखदा उस लड़के को देख कर खुश हो गई कि मुझे घर का कार्य नहीं करना पड़ेगा परंतु कहीं ना कहीं सुखदा के मन में उसे लेकर एक बेचौनी सी थी उसने अपने पति से पूछा क्या यह किसी क्रांतिकारी दल का है।[14]परंतु कांत ने घुमा फिरा के उसका जवाब दिया एक दिन अचानक वह बालक घर से गायब हो गया और उसी के तीसरे दिन एक घटना में वह गिरफ्तार हुआ और उसका नाम गंगा सिंह बताया गया जोकि सुखदा ने अंग्रेजी अखबार में पढ़ा था वह बेचौन हो गई और कांत से बोली कि मैं ना कहती थी कि यह किसी क्रांतिकारी दल का है।

यह खबर पढ़कर के सुखदा का मन राजनीति के प्रति क्रांतिकारी विचारधारा को लेकर सशक्त हो गया और वह अपने सशक्त विचारों को रखते हुए अपने पति से कहती है की "घर की दासी जो स्त्री बन सकती है वह मैं नहीं

[12] जैनेंद्र कुमार. सुखदा. भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली. 2014. पृष्ठ संख्या 13

[13] वही पृष्ठ संख्या 15

[14] वही पृष्ठ संख्या 20

हूं।"[15]एक सभा से लौटकर सुविधा घर पहुंचे तो पति ने पूछा पूछा कि सभा कैसी रही सुधार बेहद खुश नजर आ रही थी और बोली कि सभा में पूरे 20 आदमी ना होंगे पर स्त्री में अकेली थी।

उसका नाम उपाध्यक्ष पद के लिए सामने रखा गया वह थोड़ा सा हिचकिचाई फिर हरीश ने उससे कहा "क्या माना जाए कि भारत में पुरुष ही है स्त्रियां नगण्य है।"[16]यह कैसे हो सकेगा स्त्रियों के बिना भला पुरुष चल सकते हैं अकेले वे एकडग नहीं चल सकते यह अभाग्य है कि हिंदुस्तान में स्त्री–पुरुष बँट गए हैं लेकिन दुर्भाग्य को हम कायम तो नहीं कर सकते।"[17]

धीरे–धीरे सुखदा राजनीति में क्रांतिकारी सोच लेकर आगे बढ़ने लगे अपने खुले विचारों के कारण उसका और उसके पति के बीच विचारधाराओं के मतभेद होने लगा सुखदा अपने देश के लिए कुछ करना चाहती थी। धीरे धीरे हरिदा लालजी के साथ देश में होने वाले क्रांतिकारी क्रियाओं को अंजाम देना चाहती थी यहां से उसका सफर प्रारंभ हुआ था और धीरे–धीरे उसने वह मुकाम भी हासिल कर लिया था। परंतु इन सब चीजों को पाने की लालसा में वह अपने पारिवारिक जीवन से दूर होती जा रही थी सुखदा के अंदर एक अहम् आ गया था परंतु उपन्यास के अंत में वह अकेली पड़ गई थी। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते करते अपने परिवार को अपने पति को अपने बेटे को कहीं दूर छोड़ आई थी। वह महत्वाकांक्षी जरूर थे परंतु अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने में इतनी व्यस्त हो गए थे अपनों को उसने अपने से ही दूर कर दिया।

4.2 राजेंद्र यादव 1960–70

राजेंद्र यादव जी का जन्म 28 अगस्त 1929 को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में हुआ था। राजेंद्र जी का परिवार एक संयुक्त परिवार था। उनके दादाजी आगरा कमिश्नरी में बड़े बाबू की नौकरी पर थे उस जमाने में उन्होंने बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी की थी। राजेंद्र यादव जी के पिता का नाम मिश्रीलाल और माता का नाम ताराबाई था। उनका वास्तविक नाम राजेंद्र सिंह यादव का जो कि आगे चलकर सिर्फ राजेंद्र यादव ही रह गया उनके तीन भाई सत्येंद्र भूपेंद्र और हेमेंद्र थे और छह बहने थी।

[15] वही पृष्ठ संख्या 25

[16] वही पृष्ठ संख्या 26

[17] वही पृष्ठ संख्या 26

राजेंद्र यादव जी का परिवार सुशिक्षित और समृद्ध था। शिक्षित परिवार होने के कारण राजेंद्र जी की शिक्षा पर भी बहुत ध्यान दिया गया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में हुई आगे की पढ़ाई के लिए वह अपने चाचा के साथ मेरठ के मवाना गए। उनकी अध्यापन के साथ–साथ खेलकूद में भी बहुत रूचि थी उन्हें हॉकी खेलना बहुत पसंद था। राजेंद्र यादव पढ़ने में बहुत ही अच्छे थे उन्हें पढ़ना बेहद पसंद था और धीरे–धीरे यह उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया। हॉकी के दौरान उनके पैर में लगी चोट के कारण राजेंद्र जी ठीक प्रकार से चल नहीं पाते थे। जिसकी वजह से उनका खेलकूद पूरी तरह से बंद हो चुका था। ऐसे में वह किताबों के साथ ही अपना जीवन अपना समय बिताते थे राजेंद्र यादव जी ने "अपनी छोटी आयु में ही दुनिया के सबसे बड़े उपन्यास दास्तान ए अमीर हमजा को पढ़ लिया था।"[18]

राजेंद्र यादव जी ने मैट्रिक की पढ़ाई झांसी से की। उसके बाद वह वापस आगरा आ गए जहां पर उन्होंने अपना स्नातकोत्तर तक के अध्ययन को पूरा किया। खुद राजेंद्र यादव जी के शब्दों में "मेरी मैट्रिक तक की पढ़ाई झांसी में हुई मैट्रिक हो जाने के पश्चात झांसी छोड़कर मैं आगरे में अपने पिता के घर में आया आगे की पढ़ाई आगरे में शुरू हुई यहीं रहकर मैंने हिंदी विषय लेकर बी. ए. किया और 1951 में हिंदी विषय लेकर ही एम. ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की।"[19]

राजेंद्र यादव जी ने स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात रिसर्च करने की लिए सोचा। 1954 में वह आगरा छोड़कर कोलकाता गए अपने शोध कार्य को हासिल करने के लिए वह कलकत्ता की नेशनल लाइब्रेरी में पढ़ने जाने लगे। वहां पर साहित्य में उनका मन लगने लगा धीरे–धीरे साहित्य में इतना खो गए कि उन्होंने रिसर्च का विचार त्याग दिया और पढ़ते पढ़ते जिस ज्ञान की प्राप्ति हुई थी उस ज्ञान को उन्होंने अभिव्यक्त करने के लिए एक मार्ग ढूंढ लिया था।

राजेंद्र यादव जी ने एक लेखक के रूप में अपने आप को प्रतिष्ठित किया और आत्मविश्वास के साथ अपनी कल्पना को आधार देना प्रारंभ कर दिया यादव जी साहित्य में साहित्यकार रांगेय राघव और यशपाल जी को बहुत अहमियत देते हैं और कहते हैं कि "हिंदी में जो मेरा बचपन का बैकग्राउंड रहा है वह तो मुख्य रूप से यशपाल और रांगेय का ही है"।[20]

---

[18] डॉ चंद्रभानु सोनवणे. कथाकार राजेंद्र यादव. पंचशील प्रकाशन जयपुर. 1982. पृष्ठ संख्या 14

[19] डॉ अर्जुन चौहान. राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन. राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली. 1995 पृष्ठ संख्या 21

[20] राजेंद्र यादव. मेरे साक्षात्कार. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. 1994. पृष्ठ संख्या 27 28

राजेंद्र यादव जी नौकरी करना पसंद नहीं करते थे क्योंकि उन्हें ऐसा लगता था कि नौकरी करने वाला बंधनों से बंध जाता है जबकि वह स्वतंत्र रहकर लिखना और घूमना पसंद करते थे और तरह–तरह के सपनों में खोए रहते थे। उनका जीवन अब कई तरह की लेखन में लगने लगा था। वह उपन्यास, कहानी आदि लिखना पसंद करते थे और वह उसी को स्वतंत्र जिंदगी का सबसे बड़ा आयाम मानते थे। पैसों की खातिर उन्होंने कुछ जगहों पर कुछ कुछ महीनों के लिए नौकरी करी। परंतु उन्हें ऐसा लगने लगा कि नौकरी और उनका लेखन कार्य दोनों विपरीत हैं इसलिए उन्होंने नौकरी से इस्तीफा भी दे दिया। वह अपनी जिंदगी में बहुत खुश थे हंसी मजाक करना उन्हें बेहद पसंद था।

राजेंद्र यादव जी का विवाह मन्नू भंडारी जी के साथ हुआ जो कि एक प्रसिद्ध लेखिका थी। यह एक प्रेम विवाह था। मनु जी के पिता को यह रिश्ता पसंद नहीं था इसलिए उन्हें रजिस्टर्ड मैरिज करनी पड़ी।

राजेंद्र जी ने हमेशा मन्नू को अपने साथ बराबर का दर्जा दिया। वह समानांतर दुनिया में विश्वास रखते थे इसलिए मन्नू जी हमेशा उनका आदर करती रही। दोनों साथ में लिखते थे दोनों में से किसी का भी लेखन कार्य एक दूसरे पर हावी नहीं हुआ और दोनों मैं आपस में मिलकर 'एक इंच मुस्कान' नामक उपन्यास भी लिखा।

यादव जी के घर 17 जून 1961 में एक बेटी ने जन्म लिया। जिसका नाम रचना पड़ा। राजेंद्र जी की बेटी की देख रेख मन्नू जी की बहन सुशीला ही करती थी। मन्नू जी एक अध्यापिका थी और सुबह विद्यालय जाने से पहले वह अपनी बेटी को बहन के यहां छोड़ देती थी और शाम को लौटते समय वह वहां से उसको ले लेती थी।

राजेंद्र यादव एक जनवादी लेखक थे और भारतीय समाज में फैली प्राचीन परंपरा और दकियानूसी विचारों के विरोध करते थे। वह 1984 – 85 में जनवादी लेखक संघ के उपाध्यक्ष भी रहे।

राजेंद्र यादव जी का रचनाएं

राजेंद्र यादव जी ने आजादी से पहले ही कहानियां लिखना प्रारंभ कर दिया था। तब वह छात्र थे और गंभीरता से लिखते थे वह कहते थे मेरा रचना संसार चोरी के माल की नुमाइश है। मेरा मतलब है कि मैंने जो कुछ भी लिखा है वैसा दूसरों का है दूसरों की भावनाएं हैं जिन्हें मैंने उन्हें बिना बताए उन सबके भीतर घुस कर ले ली और अपना बना लिया। एक किताब के रूप में एक उपन्यास की शक्ल में कहानी की शक्ल में और फिर लोगों को आमंत्रित किया कि वह आए और इस नुमाइश को देखें।

राजेंद्र यादव जी के उपन्यासों में नारी एक महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आई। वह यह समझते थे कि आरंभिक उपन्यासों में नारी चित्रण या तो ग्रहणी के रूप में और या तो वेश्याओं के रूप में ही किया गया है। प्रेमचंद्र जी के ने अपने उपन्यासों में नारी को की स्थिति को बहुत अच्छे से प्रस्तुत किया परंतु उनके उपन्यासों में भी नारी जीवन दुख में

और घर के भीतर ही रहने वाली नारी को प्रदर्शित करता है। घर से बाहर निकल कर कार्य करने वाली नारी का चित्रण न के बराबर है।

खुद या राजेंद्र यादव जी की नजर में "आपसी संबंधों में सबसे नाजुक सबसे निर्णायक और सबसे विस्फोटक संबंध नारी और पुरुष का है इसलिए संसार के सारे कथा कारों का केंद्रीय विषय भी यही रहा है।"[21]

राजेंद्र यादव जी ने कुल सात उपन्यास लिखे हैं

सारा आकाश 1951 से 1960

उखड़े में हुए लोग

कुलटा

शह और मात

एक इंच मुस्कान (सहयोगी उपन्यास था जो कि मन्नू भंडारी के साथ लिखा गया था)

अनदेखे अनजाने पुल

मंत्र विद्ध

सारा आकाश

सारा आकाश उपन्यास राजेंद्र यादव जी ने अपने छात्र जीवन में ही लिखा था जिसका नाम प्रेत बोलते हैं 1952 में प्रकाशित हुआ। उसके लगभग 10 साल बाद इसका नया नामकरण हुआ उसका नाम सारा आकाश रखा गया। सारा आकाश उपन्यास दो खंडों में विभाजित है इस उपन्यास की कहानी एक मध्यवर्गीय विवाहित जोड़े की है जोकि कभी न खत्म होने वाली समस्याओं से ग्रसित हैं। उपन्यास की मुख्य केंद्र बिंदु परिवार में कम आमदनी और खर्च ज्यादा की कहानी है। यादव जी ने इस रचना को अपने मित्र कि एक कहानी से प्रेरित होकर लिखा है। इसमें समर नाम का युवक है जिसका विवाह प्रभा नाम की कन्या से हो जाता है। समर अभी पढ़ाई कर रहा है विवाह के पश्चात पति पत्नी एक दूसरे से बात नहीं करते हैं। यह जानकर घर वाले बहुत खुश नजर आते हैं क्यूंकि प्रभा दहेज बहुत कम लाई होती है। घर में समर के बड़े भाई हैं जिनकी छोटी सी नौकरी है, पिताजी को थोड़ी बहुत पेंशन मिलती है, बड़े भाई की पत्नी

[21]राजेंद्र यादव. उपन्यास ; स्वरूप और संवेदना. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 1997 पृष्ठ संख्या 15

गर्भवती है, मां घर का सारा कार्य प्रभा के कंधों पर आ जाता है एक दिन प्रभा छत पर बैठकर के कार्य कर रही होती है तभी घर वाले उस पर चरित्र हीनता का आरोप लगा देते हैं। इसके कारण वह बहुत रोती है पर समर उससे उस समय पहली बार बात करता है और उसे समझाता है।

समर अपने दोस्त की मदद से प्रूफ़ रीडर की नौकरी पा जाता है। उसके नौकरी लगते ही घरवालों का व्यवहार उसके प्रति थोड़ा बदल जाता है। परंतु महीने के अंत में पिताजी जब उससे पैसे की मांग करते हैं तो पैसे ना देने के कारण पिताजी उसकी बहुत ही बेज्जती करते हैं, उसको मारते हैं। समर के मन में आत्महत्या कर लेने का विचार आता है परंतु वह अपनी पत्नी प्रभा को देखकर चिंतित रहता है और वह इसी प्रकार से जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हो जाता है।

सारा आकाश एक ऐसे मध्य वर्गीय नारी की कहानी है। जो अपने पति की महत्वाकांक्षाओं के साथ चलने के लिए तैयार है परंतु आर्थिक सीमाओं के चलते वह द्वन्द में फंसी रहती है। और उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं बचता है। इस कहानी में प्रभा का जीवन ऐसी नारी का दिखाया गया है जो सब कुछ बर्दाश्त करने के बावजूद भी अपने पति का साथ नहीं छोड़ती।[22]

उखड़े हुए लोग

उखड़े हुए लोग राजेंद्र यादव जी का दूसरा उपन्यास है। जो कि 1956 में प्रकाशित हुआ था यह उपन्यास पृष्ठ संख्या के नजर से काफी बड़ा उपन्यास है। इस उपन्यास की मुख्य धारा राजनीति के गंदे और भ्रष्टाचारी लोगों पर आधारित है जोकि अपनी गंदी राजनीति से आम और असहाय लोगों को अपने मजबूत मुट्ठी में बंद कर लेते हैं।

इस उपन्यास में राजेंद्र यादव जी ने नारी विमर्श के कुछ संवेदनात्मक सरोकारों पर घात लगाते कुछ आप्तवचन दिए हैं कि नारी बड़ी डोमिनेटिंग होती हैद्य बड़ी क्रुएल! इसके संपर्क में आने पर आदमी की बर्बादी को कोई रोक नहीं सकता, और इसके संपर्क से वंचित आदमी सड़ जाता है और विकास नहीं कर सकता।[23]

उपन्यास का मुख्य नायक शरद है जो कि एल एल बी पास है आईएस की तैयारी करना चाहता है। परंतु उसके घर की स्थिति इतनी अच्छी नहीं कि वह उसे आईएस बना सकें वकालत वह करना नहीं चाहता है आखिर में उन्हें एमपी देशबंधु जी के यहां एक नौकरी मिल जाती हैं और वह नौकरी करना शुरू कर देता है।

[22] राजेंद्र यादव. सारा आकाश , राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2008.

[23] रोहिणी अग्रवाल हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2015 पृष्ठ संख्या 205

वह एक लड़की से प्रेम करता है जिसका नाम जया है। वह बी बी ए, टी सी पढ़ी है, और एक स्कूल में पढ़ाती है। शरद की नौकरी लगने के बाद जया अपनी नौकरी छोड़ देती है। वह दोनों विवाह तो नहीं करते परंतु पति पत्नी बन कर एक दूसरे के साथ रहने लगते हैं। देशबंधु जी के स्वदेश महल में ही उन्हें एक क्वार्टर दिया जाता है जहां पर वह दोनों अपने नए जीवन की शुरुआत करते हैं। वहां पर उनका परिचय भाभी मगर पुकारने में बहन माया देवी के साथ हो जाता हैं। उनकी बेटी पद्मा शरद के कक्षा में साथ में थी पदमा जया से दोस्ती कर लेती है।

देशबंधु जी 'बिगुल' नाम की एक पत्रिका प्रकाशित करते हैं जिसका संपादन सूरज नाम का लड़का करता है परंतु पत्रिका की विषय वस्तु में क्या होगा इसका निर्णय देशबंधु जी ही करते हैं। एक दिन देश बंधु जी के बेटे की मिल में मजदूरों की हड़ताल हो जाती है वहां पर गोलियां चलती हैं सूरज पत्रिका बिगुल में इस घटना को छपवा देता है परंतु उसकी इस ईमानदारी का फल भोगना पड़ता है और वह अपनी नौकरी से निकाल दिया जाता है।

एक दिन देश बंधु जी अपने स्वदेश महल में एक बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन करते हैं जिसमें कई बड़े बड़े मंत्रियों को आमंत्रित किया जाता है। परंतु उसी समय शरद को यह समाचार प्राप्त होता है कि उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल जी की मृत्यु हो गई है और राष्ट्रीय शोक होने के कारण सभी कार्यक्रम बंद कर दिए जाएं। यह बात देशबंधु जी को पता चलती है परंतु वह अपनी पार्टी को रोकते नहीं है उस दिन पद्मा का पार्टी में नृत्य होता है वह नृत्य समाप्त करने के बाद अपने कमरे में सोने चली जाती है परंतु एमपी देशबंधु शराब के नशे में धुत उसके कमरे में ऊपर जाता है और अंदर से सिटकनी बंद कर लेता है उसकी नियत खराब होती है। यह देख कर पदमा खिड़की से नीचे कूद जाती है और शरद को यह सब बताती है शरद और पदमा जल्दी से जल्दी वहां से निकलने के भागते हैं और जाकर एक रेल गाड़ी में बैठ जाते हैं परंतु उन्हें यह अंदाजा नहीं होता है कि यह रेल गाड़ी कहां जाएगी कब जाएगी और जाएगी भी कि नहीं।

कुलटा

कुलटा राजेंद्र यादव जी का तीसरा महत्वपूर्ण उपन्यास है। जो कि 1957 में प्रकाशित हुआ। यह कहानी मिसेज तेजपाल नाम की महिला के इर्द–गिर्द ही घूमती है जोकि अपने अतीत को छोड़कर नए जीवन की शुरुआत करती है। वह मिस्टर तेजपाल से विवाह करती हैं मिस्टर तेजपाल एक रॉबीले मेजर हैं। निरूपक के रूप में एक पात्र यहां राजेन है जो कि कंपनी से स्पेशल ट्रेनिंग के लिए कोलकाता जाते हैं। वहां अपनी बहन बीनू से उन्हें पता चलता है कि मिसेस तेजपाल कुल्टा है। राजेन मिसेज तेजपाल को बहुत अच्छे से जानते थे परंतु उन्हें कभी भी इस बात का आभास नहीं हुआ था परंतु उन्हें अपनी बहन पर भी पूरा विश्वास होता है कि वह बातें बनाकर नहीं बोल सकती क्योंकि बीनू ही एकमात्र उसकी सहेली थी।

मिसेज तेजपाल बेहद खूबसूरत और गाने गुनगुनाने वाली महिला थी। परंतु मेजर तेजपाल उनसे बिल्कुल उलटे थे उन्हें जोर से हंसना गाना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। मेजर तेजपाल के इस व्यवहार के कारण मिसेज तेजपाल का वहां दम घुटता था उनकी कोई अपनी संतान भी नहीं थी और धीरे–धीरे उनका उनके बीच तनाव का वातावरण बनता जा रहा था। एक दिन मिस मेजर तेजपाल को कैंप के लिए बाहर जाना पड़ा वह अपनी पत्नी को अपने घर भेजना चाह रहे थे परंतु मिसेज तेजपाल ने मना कर दिया।

मिसेज तेजपाल ने अपने भाई के मित्र को वाइलेन सिखाने के लिए पत्र लिखा और मेजर की अनुपस्थिति में उसे अपने घर आने का आमंत्रण दिया। एक हफ्ते तक मिसेज तेजपाल ने उसे बॉयलन सिखाया और लगभग एक हफ्ते बाद वह मेजर तेजपाल के नाम पत्र लिखकर उस वायलिनिस्ट के साथ भाग गई। पत्र को पढ़ते ही मेजर तेजपाल की दिमागी स्थिति खराब हो गई जिसकी वजह से वह कोलकाता की सड़कों पर भटकने लगे।

राजेंद्र यादव जी ने इस उपन्यास में परंपरागत रूप से चली आ रही नारियों द्वारा सही जाने वाली परंपराओं को ठुकरा कर मिसेस तेजपाल के रूप में नारियों को अपनी जिंदगी अपने मन से जीने का सुझाव दिया है। परंतु कई जगहों पर संभ्रांत परिवार वाले ऐसी नारियों को कुलटा की उपाधि दे देते हैं।[24]

शह और मात

शह और मात राजेंद्र यादव जी का चौथा उपन्यास था। इस उपन्यास की मुख्य नायिका सुजाता है जोकि एम ए की छात्रा है उसकी साहित्य में बहुत रुचि है और वह एक क्रियाशील लेखिका भी है। अंतर विश्वविद्यालय कहानी प्रतियोगिता में उसे पुरस्कार मिलता है। और अपनी कहानियों के कारण वह ख्याति भी प्राप्त करती है। वह तेज नाम के युवक से प्रेम करती है परंतु उसका विवाह हो चुका है और वह लंदन में रहता है सुजाता उसे कभी भूल नहीं पाई मगर वह सुजाता को पूरी तरह भूल चुका है।

वह अपने प्रेमी की शक्ल अपने दोस्त उदय में देखती है। अपने विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में ही सुजाता का परिचय उदय होता है वे दोनों ही साहित्य से जुड़े होते हैं। सुजाता और उदय अक्सर मिला करते थे और साहित्य पर चर्चा किया करते थे। एक दिन उदय अपनी प्रशंसक अपर्णा का पत्र सुजाता को दिखाता है सुजाता अपर्णा के बारे में पूछती है तो वह उसको अपनी बहन बताता है। सुजाता उदय के बारे में सब कुछ जानना चाहती हैं परंतु वह उसे बहुत कुछ बताना नहीं चाहता वह दोनों आपस में साहित्य की बातें करते हैं सुजाता उधर से उसकी उपन्यास की नायिका रश्मि के बारे में जानने के लिए उत्सुक होती है। उदय बताता है कि वह पिछले 10 वर्षों से रश्मि से प्यार करता है परंतु रश्मि एक अमीर लड़की है, और वह टीचर के साथ नहीं रहना चाहती। सुजाता को यह सब सुनकर बड़ा दुख होता है

[24]राजेंद्र यादव. राजेंद्र यादव के दो लघु उपन्यास कुलटा अनदेखे अनजाने पुल. अक्षर प्रकाशन दिल्ली.1969

और वह उदय के बारे में और उसके इर्द–गिर्द के पात्रों का अध्ययन करके एक कहानी लिखती है। जिससे उदय अचरज में पड़ जाता है इसी बीच सुजाता की मुलाकात प्रिंसेस अपर्णा से होती है और वह लौटते समय उदय को बताती है उसका परिचय प्रिंसेस अपर्णा से हुआ। उदय यह सुनकर सुजाता को प्रिंसेस अपर्णा के बारे में और जानने के लिए सुजाता को माध्यम बनाता है परंतु बहुत जल्दी ही उसे पता चल जाता है की बहन अपर्णा ही प्रिंसेस अपर्णा है। क्योंकि उसके हाथों उदय का पत्र लग जाता है तब वह यह समझती है कि उदय उसके साथ चाल चल रहा है। उदय के इस व्यवहार से राजेंद्र यादव जी एक लेखक के खंडित व्यक्तित्व का परिचय इस उपन्यास से देते हैं।[25]

एक इंच मुस्कान

एक इंच मुस्कान राजेंद्र यादव का उपन्यास है जो कि मन्नू भंडारी जी के साथ में लिखा गया है। वास्तव में देखे तो इसकी विषय–वस्तु मन्नू भंडारी जी ने ही तैयार की थी परंतु परामर्श लेने के लिए यह उपन्यास राजेंद्र यादव जी को दिया गया था इस उपन्यास में नायिका पात्रों का चित्रण बहुत ही सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया था। परंतु पुरुष पात्र कमजोर थे बाद में राजेन्द्र यादव जी ने पुरुष पात्रों को लिखा।

इस कहानी के मुख्य विषय वस्तु त्रिकोण प्रेम पर आधारित है। जो की मुख्य नायक अमर, उसकी पत्नी रंजना और प्रेमिका अमला पर है। अमर एक लेखक है जिसकी प्रेरणा उसकी प्रेमिका अमला है। वह एक स्कॉलरशिप इंटरव्यू के लिए कोलकाता जाता है जहां पर उसकी मुलाकात एक संभ्रांत परिवार की अमला से होती है।

अमला जब उससे उसकी लेखन प्रेरणा के बारे में पूछती है तो वह अपनी प्रेमिका रंजना का नाम लेता है और कहता है कि हम दोनों जल्दी विवाह करने वाले हैं। अमर की बात सुनकर अमला उसे विवाह के लिए मना करती है वो कहती है कि एक लेखक को सामाजिक जिम्मेदारियों से अलग रहना चाहिए। अमला हमेशा अमर को लिखने के लिए ही प्रेरित करती है अमर उसके प्रति आकर्षित होने लगता है।

इधर रंजना अमर का पिछले छह सालों से इंतजार करती है और उसके माता–पिता द्वारा लाए गए सभी लड़कों के लिए मना कर देती है। वह जब अमर से विवाह की बात कहती है तो उसे अमर मना कर देता है। रंजना दुखी हो जाती है और वह अमर की भाभी मंदा और भाई टंडन के पास जाकर अपनी बात बताती है। अमर के भाई भाभी की सिफारिश पर अमर रंजना से विवाह के लिए तैयार हो जाता है। रंजना दिल्ली के कॉलेज में टीचर है छह दिन वह

[25]राजेंद्र यादव .शह और मात. राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली. 2005.

बाहर पढ़ाने जाती है और अमर दिन भर घर में बैठकर के लिखता था इतवार को रंजना घर पर होती थी तो अमर बाहर घूमने निकल जाता था।

एक दिन अमला अमर से मिलने उसके घर आती है रंजना किसी कारणवश विद्यालय से जल्दी आ जाती है और वह अमला को अपने घर में पाकर दुखी हो जाती है। एक दिन अमर के नाम पर अमला का एक पत्र आता है जिसमें वह उसके शरद पूर्णिमा की रात मिलने के लिए कहती हैं यह पत्र रंजना पढ़ लेती है और वह बहुत दुखी हो जाती है जिसकी वजह से अपने पति का प्यार पाने के कारण वह दूसरा विवाह कर लेती है। दूसरी तरफ अमर को समाचार प्राप्त होता है कि अमला की मृत्यु हो गई है।

इस प्रकार अमर के जीवन में काफी उतार–चढ़ाव आता है और उसके जीवन में ना तो पत्नी और ना ही प्रेमिका का सुख होता है यह एक पुरुष के व्यक्तित्व की कहानी है जिसमें वह किसी भी एक महिला के प्रति ईमानदारी नहीं दिखा पाता है।[26]

अनदेखे अनजाने पुल

राजेंद्र यादव जी का यह है एक लघु उपन्यास है। जोकि पूरी तरह से निन्नी नामक नारी के जीवन पर आधारित है। निन्नी काली और कुरूप लड़की का चित्रण है जोकि ईश्वर से मिली इस कुरूपता के कारण उसे पल पल हीनता की अनुभूति होती है। और इस अनुभूति को और भी तीव्रता उसके पास पड़ोस और स्कूली मित्रों एवं उसके रिश्तेदार और अधिक बढ़ाते हैं।

इतने वर्षों के पश्चात भी अनदेखे अनजाने पुल की निन्नी आज भी अपने कालेपन से मुंह चुराती है और गोरेपन को प्रेम और विवाह का मूल आधार समझने वाला यह समाज उसे हीन भावना से देखता है। आज भी समाज में सफेद रंगत और कृष काया को महत्ता है उसके नीचे नारी के नैसर्गिक मानसिक बौद्धिक विकास को बाधित करता है। सौंदर्य प्रसाधन और सौंदर्य प्रतियोगिताएं आज समाज में फल फूल रही है और ग्लैमर के मूल्य में देह को एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत कर रही है। निन्नी और उसके समान अन्य लड़कियां इसका शिकार होती है और अनजाने ही पितृसत्तात्मक व्यवस्था के संस्कार और वर्जनाओं को जीवन का मूल्य बना करके जी रही हैं। आधुनिकता के इतने आगे बढ़ जाने के

[26]राजेंद्र यादव. एक इंच मुस्कान ,राजपाल एंड संस नई दिल्ली. 2011.

बावजूद भी नारी के रंग और रूप को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है और ऐसी ही उसी नारी का चित्रण राजेंद्र जी ने किया है जो अंदर ही अंदर अपनी कुरूपता के कारण अपना आत्मविश्वास खो चुकी है।[27]

इस कहानी की शुरुआत ही एक नुमाइश से होती हैं निन्नी के दादा दिल्ली में इंटरव्यू के लिए जाते हैं तो निन्नी भी पीछे लग जाती है कि दिल्ली नुमाइश देखने साथ चलेगी। दोनों दिल्ली में उसके भाई के एक दोस्त दर्शन के यहां जाते हैं निन्नी वहां पहुंचकर बहुत अजीब अजीब सी बातों को सोचती है कि दर्शन पहली बार उसे देखकर उसकी करूपता का मजाक ना उड़ाए। इसलिए वह उससे कटी कटी सी रहती है और जल्दी ही उसके सामने नहीं पड़ती परंतु दर्शन उसके बाहरी सौंदर्य को महत्व न देकर आत्मीयता को महत्व देता है।

धीरे–धीरे वहां रहते हुए निन्नी दर्शन से खुल जाती है। और वह अच्छे दोस्त बन जाते हैं और वह उसके साथ घूमने नुमाइश देखने चली जाती है धीरे–धीरे निन्नी अपने मन में दर्शन की अलग पहचान बनाने लगती है और वह दिल ही दिल में उसे पसंद करने लगती हैं। निन्नी को उसके घर को सजाना सवांरना उसके लिए खाना बनाना अच्छा लगने लगता है दर्शन निन्नी के खाने की बहुत तारीफ करता है "अच्छा खाना तो उसी समय से छूट गया जब से घर छोड़ा हमेशा या तो हॉस्टलों में खाना खाया या होटलों में आप गलत मत समझना चाहे मां हो या बहन या कोई और हो खाने में नारी का स्पर्श ही कुछ अजब सार्थकता ले आता है। आज आपने एक बड़ी नई सी अनुभूति मन में जगा दी है जी हां घर पर मां नहीं है बड़े भाई भाभी हैं नहीं बहन कोई नहीं है वहां मन ही नहीं लगता समझिए घर खेती ही होती है।"[28]

दोनों के बीच बहुत ही खुली वार्तालाप शुरू हो चुकी थी। दोनों लोग आपस में रोमन कला की बात करते हुए पुरुष और स्त्री के सौंदर्य पैर चर्चा कर रहे थे। उसी रात रम्मी से से धीमी आवाज में दर्शन ने कहा "मैं तो बहुत ही परेशानी में पड़ गया हूं देखो तुझसे क्या छुपाना और मैं तो अब किसी से भी नहीं छुपाता शादी तो उसी से करूंगा सुना है उन लोगों ने मारपीट भी की है बस यही डर है किसी दिन यही ना चली आए"[29]यह सब निन्नी सुन रही थी और सुनते ही वह अपने आप पर ही झुँझला उठी थी उसने अपनी कुरूपता के कारण आज अपने सपने को खो दिया उसे

[27] रोहिणी अग्रवाल हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ राजकमल प्रकाशन 2015 पृष्ठ संख्या 216

[28] राजेंद्र यादव. राजेंद्र यादव के दो लघु उपन्यास कुलटा अनदेखे अनजाने पुल. अक्षर प्रकाशन दिल्ली. 1969 पृष्ठ संख्या 143

[29] वही पृष्ठ संख्या 165

अपने आप को ही मारने का मन करने लगा सारी रात वह करवटें बदलती रही और यही सोचती रही कि ईश्वर ने उसे इतना कुरूप क्यों बनाया है क्या उसकी किस्मत में कोई नहीं है।

अगले दिन रम्मी और निन्नी अपने शहर के लिए निकल जाते हैं निन्नी का मन अपने शहर में बिल्कुल भी नहीं लगता है। और वह दिल्ली में बिताए हुए दर्शन के साथ के दिन याद करने लगती है लौटते ही वह दर्शन को एक कृ तज्ञता भरा खत लिखती है कि दिल्ली में बिताये दिन उसे हमेशा याद रहेंगे। उसके जवाब में दर्शन भी उसे पत्र लिखता है धीरे–धीरे पत्रों का सिलसिला शुरू हो जाता है। और निन्नी बेसब्री से दर्शन के पत्रों का इंतजार करती है निन्नी का मन धीरे–धीरे पढ़ाई में भी नहीं लगता है वह दिन–रात पत्र के बारे में ही सोचती रहती है और उसी की प्रतीक्षा करती रहती है।

फिर एक दिन दर्शन का पत्र मिला जिसमें उसने अपने विवाह की बात कही निन्नी यह सुनकर स्तब्ध सी रह गई। उसकी आंखों में पानी भर आया और वह सोचने लगी कि वह कहां उड़ने की कोशिश कर रही थी। और उसने दर्शन द्वारा लिखे गए सारे पत्रों को जला दिया वह अंदर से टूट चुकी थी तभी उसे दर्शन का दूसरा पत्र मिला कि वह काम के सिलसिले में उसके शहर आ रहा है और उससे मिलना चाहता है पर निन्नी ने बहाना बना दिया कि वह अपनी मौसी के यहां जा रही है। शायद वह दर्शन की पत्नी के सामने जाना नहीं चाहती थी क्योंकि वह खुद को इतना कुरूप समझती थी उसे हमेशा लगता था कि उसकी पत्नी उसे देखकर क्या कहेगी।

कुरूप होने के कारण इसका विवाह भी नहीं हो पा रहा था क्योंकि उसके आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं थी वह यह समझ लेती है कि उसके भाग्य में गृहस्थी का सुख ही नहीं है वह कई बार अपने आप को मरना चाहती है परंतु हिम्मत नहीं जुटा पाती।

निन्नी को एक दिन अपने रिश्तेदार की यहां शादी की घटना याद आती है जिसमें उसके रिश्ते की बहन संध्या को समझकर एक अंधेरे कमरे में बैजल जो कि उसकी बहन संध्या से प्रेम करता था उसे संध्या समझ कर उसका चुम्बन ले लेता है। जब बैजल को पता चलता है कि वह संध्या नहीं बल्कि निन्नी है तो वह तुरंत ही उस जगह से चला जाता है निन्नी उस एहसास में खो जाना चाहती थी उसे बैजल का उस दिन वाला चुंबन उसके मन और दिलों दिमाग पर छाने सा लगा था।[30]

[30] वही पृष्ठ संख्या 165

परंतु वह जल्दी ही समझ जाती है कि वह उसके लिए नहीं था वह तो संध्या समझ कर यह सब हो गया था। निन्नी अपनी जिंदगी को उद्देश्य रहित समझ कर अपने आप को दंड देना प्रारंभ कर दिया वह ठंड में भी ठंडे पानी से नहाती थी इसके कारण उसकी तबीयत खराब हो जाती है और उसे निमोनिया हो जाता है। बीमार निन्नी को देखने दर्शन उसके घर आता है और उसे बहुत समझाता है उसे निराश ना होने के लिए कहता है और उसको प्रेम से चूम लेता है निन्नी दर्शन के चले जाने के बाद बैजल और दर्शन के चुंबन में अंतर को समझती है गलती से लिया गया चुंबन और आत्मीयता से लिया गया चुम्बन में अंतर पता चल जाता है।

राजेंद्र जी ने निन्नी का बहुत ही सशक्त चित्रण किया है वे लिखते हैं कि "मैंने निन्नी से करुणात्मक प्रेम करता लेनी के प्रति मेरी सहानुभूति नहीं हो सकती है मेरा शारीरिक दोष जिससे मैंने जीवन भर हीनता की अनुभूति की है निन्नी के रूप में प्रकट हो उठा है।"[31]

मंत्र विद्ध

मंत्र विद्ध उपन्यास राजेंद्र यादव जी का अंतिम उपन्यास था। यह 1967 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास कोलकाता जैसे महानगरों की गलियों के इर्द–गिर्द ही घूमता है। उपन्यास का मुख्य नायक बंगाली शादीशुदा व्यक्ति है जो कि लड़कियों के प्राइवेट कॉलेज में एक अध्यापक भी हैं उसकी पत्नी उसके तीन बच्चों के साथ गांव में रहती है पति पत्नी से अलग नहीं हुआ परंतु यह कहता है कि उसके सिर्फ एक ही संतान है बाकी के दो संतान उसके नहीं है।

वहीं दूसरी तरफ तारक दत्त एक पंजाबी लड़की सुरजीत से विवाह कर लेता है। पिता के डर से वह दिल्ली छोड़कर कलकत्ता अपने दोस्त के यहां भाग आते है दोस्त के यहाँ एक ही कमरा होने के कारण वे वहां से दूसरे दोस्त के यहां जिसका नाम मोहन होता है उसके यहाँ चले जाते है दोस्त मोहन का किसी लड़की से प्रेम था। जिसके कारण उसकी अपनी पत्नी के साथ नहीं बनती है परंतु सुरजीत और तारक दत्त के आ जाने से दोनों के मध्य बोलचाल शुरू हो जाती है। सुरजीत और तारक दत्त दिन उनके दोस्त के यहाँ गुजरने लगते हैं धीरे–धीरे तारक दत्त के पैसे खत्म होने लगते हैं और उसे कोई नौकरी भी नहीं मिलती है सुरजीत नौकरी करना चाहती हैं और तारक दत्त सुरजीत की सुंदरता के कारण उसे बाहर भेजना नहीं चाहता कि कहीं किसी की नजर उसपर न पड़ जाए।

इंदु और मोहन भी उन दोनों का बोझ उठा कर के थक चुके हैं परंतु कुछ कहते नहीं हैं एक दिन सुरजीत के हाथों तारक दत्त उसके पिता को खत लिखवाता है। उसके पश्चात एक सरदार जी रेल का टिकट लेकर उनके घर

[31]डॉ राधा गिरधारी. राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज. चंद्रलोक प्रकाशन नई दिल्ली. 1995 पृष्ठ संख्या 29

आते हैं और उन्हें दिल्ली जाने वाली ट्रेन में बैठा देते हैं परंतु मोहन नहीं चाहता कि वह कलकत्ता से वापस जाएं मोहन लाख मिन्नतें करता है परंतु वह उन्हें नहीं रोक पता।

राजेंद्र यादव जी ने इस उपन्यास के द्वारा जीवन के अंतर्विरोधों और जटिलताओं का वर्णन किया है। जिसमें की महिलाओं का चित्रण सशक्त है इसमें तीन मुख्य भूमिका में नारियां हैं। जिसमें पहली तारक दत्त की पत्नी जो कि पति के बिना तीन बच्चों को पाल रही है। दूसरी सुरजीत जो कार्य करने के लिए तत्पर है और वह बाहर जाकर कार्य करके अपने परिवार को चलाना चाहती है। तीसरी इंदु जो कि यह जानती है कि उसके पति का किसी दूसरी महिला के साथ प्रेम था उसके बाद भी वह उसके साथ रह रही है तीनों नारियों का चित्रण बहुत ही सजीवता और मनोवैज्ञानिक तरीके से किया गया है।

4.3 कमलेश्वर 1970–80

कमलेश्वर जी स्वतंत्र भारत में हिंदी साहित्य के एक कीर्ति स्तंभ माने जाते हैं उनका नाम हिंदी साहित्य के विकास के साथ घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है। उन्होंने हिंदी साहित्य में कई विधाओं पर लेखन किया है और अपने लेखन के द्वारा समाज के सम्मुख समाजिक बुराइयों और जीवन के उतार–चढ़ाव का यथार्थ चित्र सामने रखा है।

कमलेश्वर जी का जन्म 6 जनवरी 1932 को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में हुआ था उनके पिता का नाम जगदंबा प्रसाद और माता का नाम शांति देवी था। उनका प्रारंभिक जीवन बड़ी कठिनाइयों से गुजरा बचपन में ही इनके पिता की मृत्यु हो गई थी उनके पिता ने दो विवाह किए थे और कमलेश्वर जी उनके पिता की दूसरी पत्नी के सबसे छोटे पुत्र थे। कमलेश्वर जी की प्रारंभिक शिक्षा मैनपुरी के सरकारी हाई स्कूल में हुई थी और दसवीं के बाद उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद भेज दिया गया था । 1954 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से परास्नातक की उपाधि प्राप्त की आगे चलकर उन्होंने पी एच डी करना शुरू किया परंतु उसे अधूरा ही छोड़कर साहित्य के मार्ग पर निकल पड़े।

कमलेश्वर जी की पत्नी का नाम गायत्री था और वह भी लेखिका थी उनसे कमलेश्वर जी को एक पुत्री हुई जिसने आगे चलकर अध्यापन का कार्य किया।

कमलेश्वर जिले 1950 के बाद हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाई उन्होंने हिंदी के साहित्य की सभी विधाओं पर सफलतापूर्वक लिखा और अपनी रचनाओं के द्वारा सामाजिक और सांप्रदायिक कुप्रथा को द्रष्टव्य किया कमलेश्वर जी पर प्रगतिशील विचारधाराओं का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। उनके उपन्यासों में नारी जीवन को भी महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की गई है।

कमलेश्वर जी के उपन्यास

एक सड़क सत्तावन गलियां 1961

डाक बंगला 1962

लौटे हुए मुसाफिर 1963

तीसरा आदमी 1964

समुद्र में खोया हुआ आदमी 1965

काली आंधी 1974

आगामी अतीत 1976

वही बात 1980

रेगिस्तान 1988

कितने पाकिस्तान2000

एक और चंद्रकांता 2002

एक सड़क सत्तावन गलियां

यह उपन्यास कमलेश्वर जी ने मैनपुरी कस्बे के इर्द–गिर्द लिखा है जिसमें मुख्य पात्र की भूमिका में सरनाम सिंह है जो कि एक लॉरी ड्राइवर है। वह डकैती भी करता है डकैती के दौरान ही उसकी बंसरी नाम की स्त्री से मुलाकात होती है डकैती में वह पकड़ा गया परंतु बंसरी ने उसका साथ दिया और वह जेल से छूट गया इस स्थिति को देखकर बंसरी से सरनाम को प्रेम हो जाता है क्योंकि पहले सरनाम स्त्रियों से नफरत करता था परंतु बंसरी से मिलने के बाद उसके मन में स्त्रियों के लिए इज्जत बनी थी।

उसके बाद बंसरी जो कि नौटंकी करती थी से उसकी मुलाकात 2 साल बाद फिर से मेले में होती है। बंसरी उसे अपने पीड़ादायक जीवन के बारे में बताती हैं और वह सरनाम के साथ रहने लगती है परंतु रंगीले जोकि सरनाम का क्लीनर था। उसकी असावधानी के कारण दोनों लोग पकड़े जाते हैं और सरनाम जेल भेज दिया जाता है बंसरी

सत्तार के साथ फिर से किसी सर्कस में चली जाती है बंसरी सरनाम का इंतजार करती थी। इसी के बाद लगभग तीन साल के पश्चात सर नाम से बंसरी की दोबारा मुलाकात होती है जिसमें बंसरी पूरी तरह से बदली सी नजर आती है।

इस उपन्यास के अंत में उतार–चढ़ाव और बंसरी के जीवन के कई पहलुओं पर कमलेश्वर जी ने प्रकाश डाला है कि कई मुश्किलों से बंसरी होते हुए अंत में वापस सब नाम के पास आ जाती है और सर नाम ही उसके बच्चे की देख रेख करता है।

इस उपन्यास में कमलेश्वर जी ने नारी जीवन की विसंगतियों को उकेरा है जनसामान्य के में नारी के को स्वतंत्रता सीमित मिली है और वह बाहरी दुनिया में अकेली सी नजर आती है।[32]

डाक बंगला

कमलेश्वर जी का उपन्यास डाक बंगला ऐसी विधवा स्त्री की कहानी है जो की अपने जीवन की टूटे हुए अनुभूतियों को अनेक प्रतिबिंबों के द्वारा अभिव्यक्त करती है। इसका नाम इरा है जिसके माध्यम से डाक बंगले के प्रतीक को रूप प्रदान किया गया है यह फ्लैशबैक में चलने वाली इरा की आत्मकथा है। जिसे वह तिलक और सोलंकी को कश्मीर यात्रा के दौरान डाक बंगले में सुनाती है।

इस उपन्यास के द्वारा कमलेश्वर जी ईरा के माध्यम से सामान्य नारी के जीवन में आंतरिक और बाह्य संघर्ष को रूपायित करते हैं। इरा की जिंदगी में चार पुरुष पात्रों का आगमन है जिसमें वह विमल के साथ प्रेम में पड़ जाती है परंतु विमल उसका फायदा उठाता है और उसे छोड़ देता है। बत्रा सोलंकी और डॉक्टर यह तीन अन्य पुरुष पात्र हैं इरा अभी भी विमल के प्रति आकर्षित है किंतु विमल ने उसके साथ जो भी किया था वह उसे भूल नहीं पाती है विमल ने इरा को बत्रा नाम के दलाल के यहां नौकरी दिलाई थी।

इरा के जीवन का दूसरा मोड़ बत्रा के साथ शुरू होता है बत्रा उसके साथ गलत काम करता है जिसकी वजह से वह गर्भवती हो जाती है बत्रा उसका गर्भपात करा देता है और इसके बाद इरा को डॉ चंद्रमोहन के साथ बत्रा आसाम भेज देता है। जहां वह उसके साथ विवाह कर लेती है परंतु कुछ समय पश्चात वह विधवा हो जाती है फिर वह तिलक और सोलंकी के संपर्क में आती है और उनसे घुल मिल जाती है। वह तिलक से कहती है षजिसे मैंने सब कुछ बनाया उससे विवाह न कर सकी क्योंकि मैं यह नहीं कह सकती कि तुम मेरी जिंदगी में पहले आए हो जो भी मेरी जिंदगी में आया उसने जाने अनजाने घुमा फिरा कर या सीधे–सीधे हमेशा यही जानने की कोशिश की कि मैंने पहले किसी से प्यार

[32]कमलेश्वर. एक सड़क सत्तावन गलियां , राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली 2011.

तो नहीं किया पुरुष का यही सबसे बड़ा संतोष है और मैंने अपने हर प्रेमी से यही कहा कि तुम मेरी जिंदगी में पहले हो तुम प्रथम हो।"[33]

इस उपन्यास के द्वारा कमलेश्वर जी नारी के जीवन में बदलते रिश्तो और उसकी भावनाओं को बताने का प्रयास करते हैं। इरा ने जो भी अपनी जिंदगी में भुगता है वह उसमें इतना उलझ गई थी कि उसे अब अच्छाइयों और आदर्शों के प्रति विश्वास ही नहीं रह गया था। उसे अपनी जिंदगी में जो भी पुरुष मिला वह सिर्फ उसके बाहरी सौंदर्य का ही प्रयोग करता था वह इसलिए कहती है कि ष्लोग आत्मा की बातें करते हैं पर तन पर एकांतिक अधिकार चाहते हैं ऐसा अधिकार उनकी वासना के घड़ी के मुताबिक चलता है उनके लिए बुरी से बुरी औरत एक क्षण में पूरी तरह अच्छी बन सकती है अगर वह उन्हें समर्पित हो जाए।"[34]

लौटे हुए मुसाफिर

यह उपन्यास देश के विभाजन से उत्पन्न हुई त्रासदी को मुख्यधारा बनाकर कमलेश्वर जी ने लिखा है कमलेश्वर जी इस उपन्यास के द्वारा देश के विभाजन की संवेदना को गहरे मन से अनुभव करते हैं।

तीसरा आदमी

तीसरा आदमी उपन्यास कमलेश्वर जी का मध्यवर्गीय परिवार पर आधारित है जिसमें पति–पत्नी के संबंधों को दर्शाया गया है। पति पत्नी के रिश्ते में किसी व्यक्ति के आ जाने से संबंधों में पड़ी दरार की कहानी है जिसमें मुख्य पात्र अपनी पत्नी के साथ सुमंत के घर आता है और वह यह कहानी वही से आरंभ होती है वह समझ नहीं पाता के चित्रा और उनके बीच कुछ चल रहा है या नहीं इसमें कमलेश जी ने मध्यवर्गीय परिवारों में कुंठाओं और आर्थिक उतार चढाव का बहुत ही यथार्थ चित्रण किया है।

समुद्र में खोया हुआ आदमी

यह उपन्यास कमलेश्वर जी का आर्थिक विषमताओं से जूझते हुए एक मध्यवर्गीय बिखरते हुए परिवार की कहानी पर आधारित है। यह तत्कालीन समाज के उच्च मध्यवर्गीय परिवार का यथार्थ चित्रण है जो कि महानगर में आर्थिक उतार–चढ़ाव को सहता है वह भीड़ में भी अपने आप को अकेला कर्ज में डूबा बेरोजगारी की मार सहता है। यह

[33] कमलेश्वर. डाकबंगला समग्र उपन्यास. राजपाल एंड संस नई दिल्ली. 2014 पृष्ठ संख्या 258

[34] वही पृष्ठ संख्या 239

कहानी श्यामलाल जो की अपनी बेटी तारा को हरवंश के यहां नौकरी के लिए भेज देते हैं श्यामलाल बहुत ही कमजोर और टूटे हुए व्यक्ति दर्शाए गए हैं वह कोई भी फैसला लेने में समर्थ नहीं है।

इस उपन्यास में परंपरा वादी समाज के कई रूढ़िवादी धारणाओ और पुराने मूल्यो को अर्थहीन घोषित किया गया है। वहीं नए सामाजिक मूल्यों और संबंधों को दृष्टिगत किया गया है। तारा जो कि विवाह से पहले ही किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध बनाती है परंतु इसके बावजूद भी हरवंश सब कुछ भूल कर भूल कर उसका हाथ थाम लेता है और उससे विवाह कर लेता है।

आगामी अतीत

आगामी अतीत उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वर जी पूंजीवादी समाज में उत्पन्न हुई प्रतिस्पर्धा को दर्शाते हैं। मानव के लिए प्यार लगाव सब कुछ पूंजी से खरीदा जा सकता हैं यह कहानी कमल बोस की है जो कि अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के कारण अपने प्रेम की बलि दे देते हैं।

कमलेश्वर जी ने हमेशा ही जीवन के यथार्थ को ही अपने उपन्यास की विषय वस्तु बनाया है। चांदनी नाम के पात्र जोकि एक वेश्या है उसकी व्यथा और पीड़ा को इस उपन्यास में लिखा है चांदनी का पात्र यथार्थ जीवन में भोगे गए कष्टों की कहानी है। इस उपन्यास में उसके द्वारा कहा गया हर एक वाक्य उसके अंतर्मन के संघर्ष को बताता है।[35]

वही बात

वही बात उपन्यास कमलेश्वर जी का एक नारी प्रधान उपन्यास है। इसमें नारी समीरा की कहानी है जोकि प्रशांत की पत्नी होती है दोनों के बीच बहुत प्रेम और विश्वास होता है परंतु कहीं ना कहीं जीवन के सफलताओं के कारण वह प्रेम कहीं पीछे छूट जाता है। प्रशांत अपने कार्यों में इतना व्यस्त हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि समीरा कब पीछे छूट गई है समीरा अपने आप को बहुत अकेला महसूस करती है और दोनों के बीच एक कड़वाहट सी आ जाती है। प्रशांत समीरा को उपेक्षित समझता है और वह अपने मन में चल रहे संघर्ष के कारण नकुल के साथ जुड़ जाती है। परंतु बहुत ही जल्दी उसे नकुल के साथ जुड़ने का पश्चाताप होता है क्योंकि वह मन ही मन प्रशांत को अभी भी प्रेम करती थी। प्रशांत भी समीरा को बहुत प्रेम करता था परंतु संघर्षमय जीवन के कारण दोनों के बीच दूरियां बढ़ गई थी धीरे–धीरे समीरा का मन नकुल के साथ भी नहीं लगता।

[35]कमलेश्वर.आगामी अतीत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2007.

समीरा का मन बार–बार इस बात से कचोटता है कि उसने प्रशांत के साथ गलत किया है। प्रशांत भी समीरा को लेकर मन ही मन परेशान सा रहता है। इस प्रयास में कमलेश्वर जी ने स्त्री और पुरुष संबंधों में आज के समय में समाज में चल रही प्रतिद्वंद्विता के कारण आए दरारों का चित्रण किया है महत्वाकांक्षी स्त्री और पुरुष आपसी संबंधों को कहीं ना कहीं खत्म करते जा रहे हैं।

रेगिस्तान

रेगिस्तान उपन्यास में कमलेश्वर जी हिंदी की महत्ता को बताते हैं स्वतंत्रता से पूर्व जो लोग गांधीजी के पद चिन्हों पर चलकर स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते थे स्वतंत्रता के पश्चात सब कुछ बदला सा नजर आता है। इस उपन्यास के मुख्य पात्र विश्वनाथ जो कि हिंदी कार्यों के लिए समर्पित है वह गांधी जी के आदर्शों पर चलते हैं हिंदी का प्रचार प्रसार करने के लिए वह दक्षिण भारत में कार्यरत हैं प्रयाग की सुशीला से वह विवाह करना चाहते हैं परंतु उनके ताऊजी उनका विवाह नहीं होने देते।

कमलेश्वर जी हिंदी को समर्पित इस पात्र को इस उपन्यास के माध्यम समाज के सम्मुख हिंदी की दुर्दशा को बताते हैं हिंदी की स्वतंत्र भारत में हिंदी की बहुत ही दयनीय स्थिति हो गई थी।

कितने पाकिस्तान

कितने पाकिस्तान उपन्यास कमलेश्वर जी का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में इतिहास को ही नायक और खलनायक के रूप में कमलेश्वर जी ने प्रस्तुत किया है। घटनाओं के कालचक्र के रूप में राजनीतिक प्रयासों को इसमें उकेरा गया है वास्तव में अंग्रेजों द्वारा पाकिस्तान का निर्माण हर दृष्टिकोण से गलत था इसमें सत्ता के लिए उत्पन्न होने वाले संघर्षों का कलात्मक ढंग से कमलेश्वर जी ने चित्रण किया है शाहजहां के शासनकाल में प्रारंभ हुए सत्ता के लिए संघर्ष को दिखाया गया है विद्वेष और घृणा कभी भी किसी भी समाज की तरक्की में अवरोध बन सकती है कमलेश्वेर जी बताते हैं कि यदि आज हम सांप्रदायिक और जातिवादी जैसे विषयों में फंसे रहेंगे तो हम अपना वर्तमान और भविष्य दोनों ही नष्ट कर देंगे हमारे समाज के लिए यह बेहद घातक हैं ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारतीय संस्कृति भारतीय गरिमा की त्राहि त्राहि हुई है। कमलेश्वर जी ने इस उपन्यास के द्वारा यह आह्वान करने का प्रयास किया है कि "जो कुछ टूट चुका है उसे भूल जाओ परंतु जो कुछ टूटने के बाद बचा है उसे संभाल कर रखो जितने मुल्क बनेंगे वह सिर्फ इंसान को तक्सीम करेंगे जरूरत से ज्यादा इस दुनिया का बंटवारा हो चुका है खुदा के लिए बंटवारे के इस जहांनियत को खत्म करो।"[36]

[36]कमलेश्वर. कितने पाकिस्तान. राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली. 2011. पृष्ठ संख्या 153

काली आंधी

कमलेश्वर जी ने काली आंधी उपन्यास की रचना एक लंबे अंतराल के बाद 1974 में की थी। यह एक संक्षिप्त 120 पन्नों का उपन्यास है। और इस उपन्यास की कथावस्तु राजनीति पर आधारित है जोकि कभी अच्छी तो कभी गंदगी बन जाती है। इस उपन्यास की मुख्य नायिका मालती है मालती का विवाह जग्गी बाबू के साथ हो जाता है सच्चाई यही है कि जग्गी बाबू ही मालती को राजनीति में लाए थे यह पूरा उपन्यास गुरु शरण नाम का चित्रण बताता है इस उपन्यास में जग्गी बाबू और मालती के बीच संबंधों की कहानी है और मालती के राजनीति में प्रवेश होने के पश्चात उसके और उसके परिवारिक जीवन पर पड़ने वाले असर को कमलेश्वर जी ने बहुत ही यथार्थ पूर्णता से चित्रित किया है।

यह उपन्यास प्रमुखता दो पटलों पर आधारित है एक सामाजिक और एक व्यक्तिगत व्यक्तिगत जीवन में मालती के और जग्गी बाबू के रिश्तो को लेकर के चल रहे उतार–चढ़ाव को कमलेश्वर जी ने बताया है। और सामाजिक तौर पर राजनीति में प्रवेश करने के बाद मालती के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव और समाज पर उनकी भूमिका को बताया है। उपन्यास की शुरुआत में ही जग्गी बाबू मालती से नाराज लगते हैं होटल गोल्डन सन के वह मैनेजर है जिन्होंने अपनी जिंदगी से हताश हो कर के अपने जीवन की घड़ी को कहीं रोक दिया है वह ना तो जल्दी किसी से मिलना चाहते हैं और ना खुल कर उससे बात करना चाहते हैं।

मालती जो इस उपन्यास की सबसे प्रमुख चित्रण है वह नारी का ऐसा रूप है जिसने राजनीति की ऊंचाइयों को छूने के बाद कभी पलट कर नहीं देखा गुरुशरण कहते हैं "करीब करीब उन्हीं दिनों से मैं भी राजनीति में हूं जबसे मालती जी राजनीति में आईं, यू तो मैं मालती को बचपन से जानता रहा हूं मैं मालती जी के पिता बैरिस्टर प्रताप राय के दफ्तर में असिस्टेंट था और वहीं से मालती जी के परिवार के साथ हमारे रिश्ता शुरू हुआ था।"[37]

मालती की शुरुआत राजनीति में एक धमाके के साथ हुई वह सफलता की सीढ़ियों को चढ़ती चली गई और पीछे मुड़कर उसने कभी नहीं देखा। पहला चुनाव उसने मुंसिपल बोर्ड कमेटी का लड़ा और वह जीत गई राजनीति में मालती को लाने का पूरा श्रेय जग्गी बाबू को जाता है जग्गी बाबू ने ही मालती को राजनीति में जाने के लिए प्रोत्साहित किया था। शुरू में मालती थोड़ा सा घबराई और हिचकिचाई परंतु जग्गी बाबू हमेशा उन्हें हिम्मत दिलाते थे किसी ने उनसे कहा कि जग्गी बाबू आपको ही चुनाव में खड़े होना चाहिए था। तो जग्गी बाबू ने तपाक से बोला "देश के निर्माण में औरतों को भी आगे आना चाहिए औरतें यानी हमारी आधी जनसंख्या जब तक इस तामीर में हाथ नहीं बटायेंगी तब

---

[37]कमलेश्वर. काली आंधी. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017. पृष्ठ संख्या 6

तक हर काम की स्पीड आधी रहेगी यह बेहद जरूरी है कि हमारे घरों की औरतें आगे आएं और हर काम में मर्दों का हाथ बँटायें।"[38]

शुरू में मालती जी के बढ़ते प्रभाव में जगी बाबू हमेशा उनके साथ रहते थे परन्तु धीरे–धीरे वह मालती के पीछे चलने लगे समय गुजरता गया तो वह कारों की कतारों में सबसे पीछे वाली कार पर चलने लगे और धीरे–धीरे गायब ही हो गए। जिस तरह से मालती एक कदम बढ़ता गया जग्गी बाबू कहीं पीछे छूटते गए मालती और जग्गी जग्गी बाबू की एक बेटी लिली थी बाबू अपनी बेटी को लेकर दूसरे शहर में बस गए और उन्होंने एक होटल में मैनेजर की नौकरी कर ली। मालती अपने आप को राजनीति में इतना सक्रिय कर चुकी थी कि उससे निकलना और पीछे मुड़कर देखना संभव ही नहीं था इस राजनीति में तो मालती ने कहीं ना कहीं अपने आप को खो दिया था परंतु अपने पारिवारिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन में वह कहीं पीछे ही छूट थी वह इस समय अकेले ही उस सफलता को चूम रही थी। जिसमे उनके पति बेटी उनके साथ नहीं थे जग्गी बाबू के अंदर धीरे–धीरे मालती के इस व्यवहार को लेकर नफरत सी फैलती जा रही थी उन्होंने लिली का एडमिशन एक बोर्डिंग स्कूल में करा दिया था। जग्गी बाबू राजनीति को बहुत ही गंदा और घटिया ही मानते रहे वे कहते हैं कि "गुरु शरण तुम्हारी राजनीति बहुत ही घटिया है तुम लोग हर वस्तु को बखूबी इस्तेमाल करना जानते हो बाढ़ आई तो उसका इस्तेमाल करोगे, सूखा पड़े तो उसका इस्तेमाल करोगे, कहीं कोई लड़की भाग जाए तो उसे इस्तेमाल करोगे कहीं कोई मर गया तो उसका इस्तेमाल करोगे तुम लोगों ने आदमी के आंसुओं और जज्बातों तक को नहीं छोड़ा।"[39]

जग्गी बाबू के इस विचार का पूरा पूरा मतलब उस समय समाज में फैली राजनीति के घटिया रूप से संबंधित था इंसान अगर राजनीति में प्रवेश करता है तो उसका मकसद देश के भविष्य को बनाना ना हो कर के बल्कि भ्रष्टाचार से सिर्फ और सिर्फ अपने मतलब को निकालना है परंतु इस उपन्यास में उस नारी ने अपने कर्तव्यों और अपने उद्देश्यों को महत्वपूर्ण बनाया उसको प्रमुखता दी। जब तक पति ने साथ दिया या पति के ना साथ देने पर भी वह रुकी नहीं वह आगे बढ़ती ही चली गई। क्योंकि बहुत से लोगों की उम्मीदें उसके लिए थी परंतु कमलेश्वर जी ने कहीं ना कहीं इस उपन्यास में नारी के एक सशक्त चित्रण को तो प्रस्तुत किया भी हैं। परंतु कहीं ना कहीं पारिवारिक जीवन से लड़ती और संघर्ष करती हुई एक नारी का चित्रण भी है एक दिन होटल में बारह साल बाद मालती की मुलाकात जग्गी बाबू से हो जाती है जग्गी बाबू उसे देखते हैं उनके मन में पुरानी यादें उमड़ने लगती हैं। वहां किसी को यह नहीं पता होता है कि होटल के मैनेजर जग्गी बाबू ही है जो कि मालती जी के पति हैं मालती ने भी इस तरह से व्यवहार किया जैसे कि वह

[38] वहीपृष्ठ संख्या 7

[39] वही पृष्ठ संख्या7

ज्यादा कुछ नहीं जानती। परंतु धीरे–धीरे अखबारों में छपी अफवाहों ने इतना बड़ा रूप ले लिया कि जग्गी बाबू पूरी तरह से नाराज हो गए उसमें उनके ऊपर बहुत गलत इल्जाम लगाए गए। मालती पर भी कई इल्जामों को विपक्ष ने डाला विपक्ष को शायद डर था कि मालती सशक्त होती जा रही थी फिर से चुनाव ना जीत जाएं फिर भी मालती ने हारी और उन्होंने शांतिपूर्वक ही अपना कार्य करना प्रारंभ किया उन्होंने अपने पार्टी के सभी लोगों को हिम्मत दी और कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अपनी बेटी लिली को देखकर वह वह टूट गई थी क्योंकि वह उसे पहचान नहीं पाई थी और दोनों लिली और जग्गी बाबू को देखकर अपने मन में बसी ममता और प्रेम को रोक ना पाईं जग्गी बाबू के समक्ष जाकर के वह बहुत रोई परंतु उनके लिए लौटना असंभव था। जिसके कारण जग्गी बाबू ने अपना रास्ता अपनाया और चुनाव जीतने के पश्चात मालती ने राजनीति को ही अपना भविष्य बना लिया। इस तरह कमलेश्वर जी ने इस उपन्यास में राजनीति के उस रूप को भी सामने रखा है परंतु उससे लड़ती हुई एक नारी शक्ति का भी चित्रण किया है।

4.4 अमृतलाल नागर 1980–90

अमृतलाल नागर जी का जन्म उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में गोकुलपुरा में 17 अगस्त 1916 को हुआ था। इनके पूर्वज मूल रूप से गुजराती थे परंतु बहुत सालों पहले ही वह उत्तर प्रदेश में आकर बस गए थे उनके पिता का नाम पंडित राजा राम और माता का नाम विद्यावती था यह अपने माता पिता की इकलौती संतान थे। माता पिता अमृत लाल जी को चिकित्सक बनाना चाहते थे परंतु इकलौते पुत्र के मोह के कारण उन्होंने नागर जी को बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जिसके कारण वे इंटर की परीक्षा पास करने के बाद में पोस्ट ऑफिस में क्लर्क बन गए नागर जी में कई गुण समाविष्ट थे जिसके कारण उन्होंने कई जगहों पर अपने आप को साबित करने में कुशलता प्राप्त की।

अमृतलाल जी का विवाह 31 जनवरी 1931 को श्रीमती प्रतिभा जी के साथ हुआ उस समय अमृतलाल जी दसवीं कक्षा में पढ़ते थे उनके साहित्यिक जीवन के चढ़ाव में उनकी पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रतिभा जी अमृतलाल जी की आदर्श पत्नी सहयोगिनी और कुशल ग्रहणी के रूप में सिद्ध हुई उनका आत्मविश्वास अधिक था वे घरेलू स्त्रियों को कढ़ाई, सिलाई, संगीत, शिक्षा सिखाने के लिए स्कूल चलाती थी। स्वयं उस स्कूल के लिए घूम घूम कर चंदा भी इकट्ठा करती थी उस समय उन्होंने एक वैश्या को संगीत शिक्षा हेतु अध्यापिका पद के लिए नियुक्त करके अदम्य साहस का परिचय भी दिया था। अमृत लाल जी का प्रमुख उपन्यास यह कोठे वालियों के लिए प्रतिभा जी ने वेश्याओं के इंटरव्यू के प्रबंध में उनका सक्रिय सहयोग किया था प्रतिभा जी के लिए अमृतलाल नागर जी ने अपनी जीवन कथा टुकड़े टुकड़े दास्तान में स्वयं लिखा है "मेरे जीवन में दूसरा प्रभाव कितना ही तीव्र और

शक्तिशाली क्यों न हो परंतु मेरे मन की लक्ष्मण लीक में प्रवेश नहीं पा सका, जहां प्रतिभा अटल छत्र धारिणी होकर विराजमान है प्रतिभा का प्रभाव अंगद के पैर की तरह अडिग था।"[40]

अमृत लाल जी के चार संताने थी जिनमें दो पुत्र और दो पुत्रियां थी इनके बड़े पुत्र कुमुद नागर जोकि आकाशवाणी दिल्ली में लेखक थे दूसरे पुत्र शरद औषधि रसायन शास्त्र में शोध कार्य करने के समस्त साहित्य की व्यवस्था करते तथा रंग भारती पत्रिका का संपादन भी करते थे। इनकी बड़ी बेटी श्रीमती अचला नागर आकाशवाणी मथुरा की रेडियो नाटक लिखित कलाकार थे छोटी बेटी आरती ऍम ए. किया और रंगमंच और रेडियो में नाटक कर्मी भी रही।23 फरवरी 1990 की शाम को अमृतलाल नागर जी की मृत्यु हो गई।

अमृतलाल नागर जी बहुत ही सजीव व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। जिंदगी को असली मायनों में जीना उन्होंने सिखाया उनके लिए जीवन जीना कर्म की एक परिभाषा है जिजीविषा का पर्याय हैं वह हिंदी साहित्य जगत के एक प्रमुख आधार थे उनके साहित्य को उनके व्यक्तिगत जीवन और अनुभवों को उनके मूर्त रूप में देखा जा सकता है क्योंकि उनके साहित्य में उनके जीवन की भावनाओं की छाया थी। उनके साहित्य में सब कुछ उनके जीवन के निकट सच्चाई की गहराइयों को छूने वाला है समाज के विभिन्न इकाइयों को विविध रंगों और चित्रों के साथ उन्होंने प्रस्तुत किया है उनके साहित्य में सब कुछ सजीव सा बोलता हुआ प्रतीत होता है उन्होंने अपने जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उसे परखा और जाना है उसके पश्चात ही अपनी कृति में उसकी सर्जना की है।

डॉ रामविलास शर्मा जी ने अमृतलाल नागर जी के बारे में कहा "अमृतलाल नागर की रचनावली भारतीय जीवन के चित्रावली है पुराने रईस नए रईस बिगड़े रईस साहूकार जमीदार संपत्तिहीन सामंत पुरोहित कथावाचक मध्यवर्ग के पढ़े–लिखे पुरुष गरीबी और बेकारी का सामना करने वाले नौजवान व्यभिचारी एवं पाखंडी बड़े आदमी हर तरह के अत्याचार का सामना करने वाली स्त्रियां अपने अधिकारों के लिए लड़ती हुई नारी कथाकार कवि महात्मा संत समाज हर स्तर के लोग नागर जी की कथा साहित्य में अपनी पहचान बनाते हुए मिलेंगे।"[41]

अमृत लाल जी के साहित्य साधना उनका उपन्यास है उनके निम्नलिखित उपन्यास है

महाकाल 1943

सेठ बांकेमल 1944

[40] अमृतलाल नागर. सुहाग के नूपुर. राजपाल एंड सन्स प्रकाशन दिल्ली. 1963 . पृष्ठ संख्या 190

[41] श्रीलाल शुक्ल. अमृतलाल नागर भारतीय साहित्य के निर्माता . प्रकाशन साहित्य अकेडमी नई दिल्ली. 1963 पृष्ठ संख्या 91

बूंद और समुद्र 1956

शतरंज के मोहरे 1958

सुहाग के नूपुर 1960

अमृत और विष 1966

सात घूंघट वाला मुखड़ा 1968

एकदा नैमिषारण्ये 1972

मानस का हंस 1972

नाच्यौ बहुत गोपाल 1980

खंजन नयन 1980

खरे तिनके 1982

अग्निगर्भा 1983

करवट1985

पीढ़ियाँ 1990[42]

सेठ बांकेमल

सेठ बांकेमल अमृतलाल जी का दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास की शैली बातचीत पर आधारित है इस उपन्यास में दो घनिष्ठ मित्रों सेठ बांके मल और उनके दिवंगत मित्र पारसनाथ चौबे की कहानी है। बांकेमल उत्तर प्रदेश के आगरा के व्यापारी थे वह अपने वर्तमान से ज्यादा अपने भूत की यादों में खोए रहते थे उन्हें अपने अतीत की जिंदगी बहुत शानदार लगती थी और वह उसी के साथ ही जीना पसंद करते थे। एक दिन अचानक से उन्हें अपने मित्र पारसनाथ चौबे का पुत्र दिखाई दिया उन्होंने उसे बुलाकर अपनी दुकान में बैठाया और अपने और उनके पिताजी के अतीत में बिताए गए साथ में शानदार पलों को वह कहानी की तरह उनके बेटे को सुनाने लगे कि किस तरह उन्होंने खूब सारा धन कमाया राजा और दिल्ली के नवाबों को किस तरह से बेवकूफ बनाया पनघट पर बैठकर के पानी भरने

[42]डॉ रामचंद्र तिवारी हिंदी का गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2015 पृष्ठ संख्या 244

आने वाले पनिहारी नो का इंतजार करते थे उनके साथ कैसा व्यवहार करते थे। इन सब के बारे में उन्होंने बताया और धीरे–धीरे जैसे–जैसे शाम ढलने लगी उनकी कहानियां खत्म होने लगी अमृत लाल जी इस उपन्यास के द्वारा ये बताना छह रहे हैं कि सामंतवादी जीवन पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था। समाज में व्याप्त जर्जर होती रूढ़िवादी परंपरागत बातें नई सभ्यता और नई शिक्षा प्रणाली पर भी उन्होंने दुख प्रकट किया है अशिक्षित और अल्प शिक्षित समाज में फैली दुर्बलता ओं को बताया है।

बूंद और समुद्र

बूंद और समुद्र अमृतलाल जी का तीसरा उपन्यास है। यह उपन्यास एक मोहल्ले की कहानी पर आधारित है इस कहानी में राजा बहादुर नाम का व्यक्ति है जो कि लखनऊ का जाना माना रईस है परंतु पहले उसकी यह स्थिति ना थी जब उसका विवाह ताई से हुआ तो उसका भाग्य अचानक से बदल गया उसके पास वैभव वापस आ गया इसमें कहीं ना कहीं ताई को लक्ष्मी का रूप दिखाया गया है। ताई की अपनी सास से नहीं बनती थी ताई को एक पुत्री होती है पर राजा बहादुर और उनकी मां को वंश चलाने के लिए पुत्र की चाह थी। और कहीं ना कहीं ताई को यह लगने लगता है कि यह लोग उनकी पुत्री को हानि ना पहुंचाएं परंतु कुछ कारणों से आठ महीने बाद ही उनकी पुत्री चल बसती है जिसके कारण ताई का व्यवहार एकदम से बदल जाता है और उन्हें ऐसा लगता है कि राजा बहादुर और उनकी मां के कारण उनकी पुत्री चल बसी।

अपने वंश को चलाने के कारण राजा बहादुर दूसरा विवाह कर लेते हैं दूसरी पत्नी के आते ही ताई अपने पुरखों की पुरानी कोठी में चली जाती हैं और वहां से उस मोहल्ले में अशांति फैलाने लगती है उनका व्यक्तित्व एकदम से पूरी तरह से बदला सा नजर आता है और वह अपने इस व्यवहार से मोहल्ले के लोगों को भी उचित अनुचित व्यवहार करके परेशान करने लगती हैं।तभी सज्जन वर्मा नाम का एक व्यक्ति ताई की हवेली में किराएदार बनकर रहने आता है सज्जन मोहल्लों पर आधारित जीवन पर अध्ययन कर रहा होता है सज्जन पहला व्यक्ति है जिससे ताई से प्रेम मिला था सज्जन को उसी मोहल्ले की एक खुले विचारों वाली कन्या वनकन्या से प्रेम हो जाता है और वे दोनों विवाह कर लेते हैं और अपने धन को सामाजिक कल्याण में लगा देते हैं ।

इसी उपन्यास में इसी उपन्यास का एक मुख्य पात्र महिपाल भी है महिपाल बहुत ही प्रगतिशील विचारों का लेखक है। वह आर्थिक स्थिति से कुछ कमजोर है उसके घर का खर्च बहुत ही मुश्किल से चलता है उसकी पत्नी कल्याणी पतिव्रता रूढ़िवादी नारी है वह पूर्णता अशिक्षित है महिपाल अपनी पत्नी के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास करता है परंतु धीरे धीरे क्लेश पैदा होता है। इस उपन्यास में महिपाल की एक प्रेमिका डॉक्टर शीला स्विंग है जोकि पश्चिमी विचारों से प्रेरित है डॉ शीला स्विंग महिपाल से प्रेम करती है और उसे जीवनसाथी बनाना चाहती है परंतु

महिपाल अपने परिवार को नहीं छोड़ सकता है। किन्ही कारणों की वजह से शीला स्विंग को महिपाल को छोड़ कर जाना पड़ता है अपनी भांजी के विवाह के लिए महिपाल चोरी करता है परंतु पकड़े जाने पर वह नदी में डूब कर आत्महत्या कर लेता है। इस उपन्यास में अमृत लाल जी ने व्यक्ति को बूंद के रूप में प्रदर्शित किया है और समाज को समुद्र के रूप में प्रदर्शित किया गया इसमें नागर जी ने सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।[43]

शतरंज के मोहरे

शतरंज के मोहरे अमृत लाल जी का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास के द्वारा नागर जी लखनऊ के नवाबों के शासन का व्यवहारिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं 1820 से 1836 तक के समय में नवाबों के शासनकाल के दौरान चारों ओर फैले भ्रष्टाचार अराजकता और आतंक का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है दासियों और स्त्रीओं के साथ किए गए नवाबों के विलासिता पूर्ण व्यवहार को प्रदर्शित किया है और उस समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक संप्रदाय स्थितियों को सजी रूप से इस उपन्यास के द्वारा समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

इस उपन्यास में नागर जी ने कुंदरिया नामक सामान्य परंतु खूबसूरत वैश्या की कहानी लिखी है जोकि पढ़ी लिखी और नृत्य तथा संगीत में प्रवीण है वह भाग्य से राजमहल के सुख भोगती है। अपने गुण और रूप की बदौलत लोगों को अपने प्रेम से बांध लेती है। वह नासिरुद्दीन से प्रेम करती है परंतु दुर्बल बादशाह उसके व्यक्तित्व पर संदिग्ध दृ ष्टि डालते हैं और कुंदरिया बेगम को अपमानित करके कहता है कि जो इस के गर्भ में जो संतान है वह नसरुद्दीन की ना हो करके किसी और की है कुंदरिया वैश्या जरूर है परंतु वह नारी के सम्मान के लिए वह अपने जीवन को त्यागने के लिए मजबूर हो जाती है और वह आत्महत्या की लेती है उपन्यासों में नागर जी ने वेश्यावृति के प्रति घिनौने जनमानस के व्यवहार को प्रदर्शित किया है।

सुहाग के नूपुर

सुहाग के नूपुर अमृत लाल जी का एक और ऐतिहासिक उपन्यास है। जो कि दक्षिण भारत के कावेरिपट्टनम के दो सर्वश्रेष्ठ धनि सेठ मासातुवन और मानाइहन के साथ शुरू होता है। इसकी कहानी मुख्य रूप से एक वेश्या और कुलवधू के ऊपर आधारित है यह दोनों से बहुत घनिष्ठ मित्र होते हैं और पूरा शहर इनकी बातें मानता है एक दिन दोनों फैसला करते हैं कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह करके दोनों एक हो जाए वे अपने पुत्र और पुत्री दोनों का विवाह करते हैं विवाह समारोह में उस समय की सबसे बड़ी नर्तकी माधवी को नृत्य करने के लिए बुलाया जाता है।

[43]अमृतलाल नागर बूंद और समुद्र , किताब महल इलाहाबाद 1978

माधवी का नृत्य देखकर कोवलन मंत्रमुग्ध हो जाता है और उसे अपनी प्रेमिका बनने का प्रस्ताव भेजता है नर्तकी उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है और उसकी आकांक्षाएं धीरे–धीरे बढ़ने लगते हैं। कोवलन कन्नगी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता है बल्कि वह के माधवी के ऊपर सारा धन खर्च करने लगता है कन्नगी बहुत ही शांत स्वभाव की होती है एक दिन कन्नगी के पैरों में बंधे सुहाग के नूपुर पर माधवी की नजर पड़ती है और वह उसे पाने के लिए कोवलन से कहती है वह शराब के नशे में उसको उसे देने के लिए कहता है परंतु कन्नगी मना कर देती है। जिसके कारण वह कन्नगी को बहुत मारता है और उसे घर से बाहर निकाल देता है कन्नगी के पिता उसे लेने आते हैं परंतु वह मना कर देती है जिसके कारण वह संसार की मोह माया से अलग हटकर सन्यास ले लेते हैं और अपनी धनसंपदा को समाज में बांट देते हैं।

कोवलन मदिरा और रति रास में खोया रहता था। और माधवी कन्नगी के सतीत्व और सुहाग के नूपुर को पाने में प्रयासरत रहती है। कोवलन को माधवी के इस विश्वासघात का पता चलता है और वह बहुत ही क्षुब्ध होता है इसके कारण वह कन्नगी के पास वापस लौट आता है। और वह दोनों उस जगह को छोड़कर कहीं और चले जाते हैं कन्नगी अपने सुहाग के नूपुरों को कोवलन को देकर नया व्यापार शुरू करने के लिए कहती है और दूसरी तरफ माधवी पागल हो जाती है और बौद्ध धर्म के शरण में चली जाती है।[44]

अमृत और विष

अमृत और विष उपन्यास में नागर जी का वृहदाकार उपन्यास है इस उपन्यास की कथावस्तु दो भागों में विभाजित है। जिसमें समाज के यथार्थ जीवन का वर्णन किया गया है। पहली कथावस्तु में एक लेखक की कहानी है जिसका जीवन बहुत ही संघर्ष में होता है इसका नाम अरविंद शंकर है वह अपने पारिवारिक जीवन में बहुत संघर्ष करता है परंतु अंत में वह उदास और निराश हो जाता है। अरविंद शंकर के घर में उनकी पत्नी माया और दो बेटे दो बेटियां हैं बड़े बेटा अपनी शादी के बाद परिवार से अलग हो जाता है बड़ी बेटी ससुराल में खुश नहीं थी छोटी बेटी छय रोग से ग्रस्त है और छोटा बेटा पढ़ाई कर रहा है। वह जीवन की कठिन परिस्थितियों से थक चुके थे धीरे–धीरे उनकी परिस्थितियां बद से बदतर होती चली गई उनकी छोटी बेटी विवाह से पहले ही गर्भवती हो गई और छोटा बेटा आईएएस करने के बाद आत्महत्या कर लेता है। अपने पुत्र की मृत्यु पर अरविन्द को बहुत आघात पहुंचता है जिससे वह उबर नहीं पाता और जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने में असफल दिखाई देता है परंतु धीरे–धीरे वह नए सिरे से जीवन को जीने का प्रयास करना प्रारंभ करता है।

[44]अमृतलाल नागर.सुहाग के नूपुर ,राजपाल एंड संस दिल्ली 1963.

इस उपन्यास का दूसरा भाग अरविंद शंकर द्वारा लिखा गया उपन्यास से है। इस उपन्यास में नई पीढ़ी और पुरानी मान्यताओं के बीच चल रहे संघर्ष की कहानी है जिसमें नवयुवक रमेश और बाल विधवा रानी बाला की प्रेम कथा भी है। रमेश रानी वाला से प्रेम करने लगता है परंतु रानी बाला के बाल विधवा होने के कारण रानीबाला स्वयं भी संकोच करती है और गांव का कोई भी बुजुर्ग उन्हें विवाह की अनुमति देने के लिए तैयार नहीं होता है इस उपन्यास में अंत में रानी बाला और रमेश का विवाह हो जाता है और वह अलग रहने लगते हैं इस उपन्यास में कई राजनीतिक दलों द्वारा चल रहे संघर्षों का भी वर्णन नागर जी ने किया है और समाज के उज्जवल और कलुषित दोनों पक्षों का यथार्थ चित्रण किया है।[45]

सात घूंघट वाला मुखड़ा

नागर जी का अगला उपन्यास सात घूंघट वाला मुखड़ा एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। इसमें नवाबों और और अंग्रेजों के संघर्ष की गाथा है इस उपन्यास में मुख्य रूप से नवाब और बेगम समरू जोकि एक क्रय विक्रय करने वाले व्यापारी बशीर खान की प्रेमिका होती है जो कि बाद में उसके हाथों नवाब को बेचे जाने के बाद नवाब के पास आ जाती हैं और अपने दिल और देह के द्वारा उसके राज्य पर राज करने लगती है इस उपन्यास में नागर जी ने मानवीय संबंधों पर सत्ता को हावी होते दिखाया है।

एकदा नैमिषारण्ये

अमृतलाल नागर जी ने एकता नैमिषारण्य उपन्यास में संपूर्ण भारत की सभ्यता और संस्कृति को एक भावनात्मक सूत्र में बांधने का प्रयास किया है।

एकदा नैमिषारण्ये उपन्यास की नायिका इज्या है। जोकि बहुत सुंदर और बुद्धिमान होने के साथ–साथ एक कवयित्री भी है वह अपने पति को कर्म करने की प्रेरणा देती है इज्या का पति भी उससे बहुत प्रेम करता है इज्या भी उसकी सेवा में हमेशा तत्पर रहती है और पति को चंद्रगुप्त से राज्य के कामों में भाग लेने का मशवरा देती है। नागर जी के उपन्यासों में मुख्यतः पत्नी के आदर्श रूप को ही चित्रित किया गया है जो कि पति के प्रति समर्पित और एक निष्ठ सेवारत हैं परंतु पति के अन्याय पूर्ण व्यवहार को सहन ना करते हुए उसका विरोध करने के लिए तैयार है।

इसलिए यह कह सकते हैं कि अमृतलाल जी ने "एकदा नैमिषारण्य के द्वारा सांस्कृतिक प्रतिमानो के प्रस्थापन उपस्थापन करके अपने आस्था वादी दृष्टिकोण को ही औपन्यासिकता प्रदान की है। पौराणिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित नागर जी का यह उपन्यास विपुल ज्ञान भंडार का एकत्र संग्रह है शीर्षक की भांति और पृष्ठभूमि के अनुरूप पौराणिक

[45]अमृतलाल नागर. अमृत और विष,. लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद. 1976

संस्कृत भाषा में लिखा गया यह व्याख्यान अपने उद्देश्य का बहुत दूर तक प्रसार प्रचार करता है। यह उपन्यास पौराणिक संदर्भों से युक्त ऐतिहासिक घटनाक्रम में राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करता है लेखक के व्यापक एक देशीयता ने एक विशेष भूखंड को समक्ष रखकर के भी संपूर्ण भारतीय संस्कृति को ही दृष्टिगत बनाया है और उसे आधुनिक मानवता बोध के संवेदनशील दृष्टि प्रदान की है।"[46]

मानस का हंस

मानस के हंस उपन्यास में नागर जी ने महाकवि तुलसीदास जी के जीवन के विविध चरणों का सजीव और सुंदर चित्रण किया है जिसमें तुलसीदास जी को प्रारंभिक जीवन में मिले कष्ट तत्पश्चात उनका भक्ति के प्रति मोह राम भक्ति द्वारा सब के अंतर्मन में बसना और इस उपन्यास की नायिका रत्नावली के प्रति उनके प्रेम को दर्शाया है। उनके जीवन के शुरू से लेकर के अंतिम पड़ाव तक नागर जी ने बड़ा ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है जिसमें नारी के मुख्य रूप को केंद्र बनाकर तुलसीदास जी के जीवन पर इस कहानी को रखा है।

नाच्यौ बहुत गोपाल

नाच्यौ बहुत गोपाल उपन्यास की विषय वस्तु नारी जीवन पर आधारित है जिसकी मुख्य नायिका ब्राह्मण परिवार की होती है। बचपन में उसे नानी नाना ने पाला होता है कुछ समय पश्चात वह अपने पिता के घर आती हैं जहां पर उसके पिता की रखैल स्वामिनी मिलती है। स्वामिनी को वह अम्मा कहती है परंतु वह निर्गुनिया को आदमी फसाने का एक माध्यम बनाती है जब वह स्वामिनी के पुत्र द्वारा गर्भवती हो जाती है तो स्वामिनी उसका विवाह उसके पिता से भी बड़ी उम्र के व्यक्ति से कर देती हूं मसूरियादीन निर्गुनिया को घर में कैदियों की तरह रखता है और वह दो साल तक वहीं चारदीवारी में ही जीवन जीती है ।

उसके घर में काम करने वाली जमादारिन उसकी सहेली होती है। एक दिन जमादारिन जब छुट्टी पर होती है तो उसका नवयुवक पुत्र मोहना उसकी जगह कार्य करने आता है निर्गुणा उसे देख कर उसकी तरफ आकर्षित होती है और वह उसके साथ भाग जाती है। वह अपने साथ कुछ पैसे और जेवर भी लेकर जाती है वह मोहना के साथ कहीं अलग रहकर व्यापार करने के लिए कहती है परंतु मोहना उसकी बात नहीं मानता है और वह अपने घर ले जाता है जहां पर मोहना के माता–पिता उसे स्वीकार करने से मना कर देते हैं। उसके बाद वह अपने मामा मामी के घर रहने लगते हैं के मामा मामी निर्गुनिया के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं किन्ही परिस्थितियों के कारण मोहना डाकू बन

[46]डॉ सुरेश बत्रा. अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिद्धांत. पंचशील प्रकाशन जयपुर.1989. पृष्ठ संख्या 145

जाता है और निर्गुनिया अकेले ही जीवन जीने लगती है मोहना के जाते ही उसके मामा मामी निर्गुनिया को घर से निकाल देते हैं।

मोहना निर्गुनिया से संपर्क में रहता है निर्गुनिया को मास्टर बसंत लाल अपनी रखैल बनाने का प्रस्ताव भेजता है परंतु निर्गुनिया उसे मना कर देती है तो वह मसूरियादीन के साथ मिलकर उसे परेशान करने लगता है। परंतु मोहना उन्हें ऐसा नहीं करने देता है और वह मसूरिया दीन की हत्या कर देता है। निर्गुनिया मसीता के घर आ जाती है और वहां बस्ती के बच्चों के लिए एक स्कूल खोलती है मोहना से उसे एक पुत्री होती है और बाद में उसे एक पुत्र जन्म लेता है। मसीता की एक सहेली जो निर्गुनिया को पसंद नहीं करती थी वह पुलिस को मोहना की खबर दे देती है और मोहना मारा जाता है मसीता बीमार होती है तो उसे देखने डॉक्टर आता है जो कि निर्गुनिया को देखकर उससे प्रभावित हो जाता है । और उससे विवाह का प्रस्ताव रखता है परंतु निर्गुनिया मोहना से प्रेम करती थी और उसकी पत्नी बन करके ही सुखी थी।

वह डॉक्टर निर्गुनिया की बेटी को अपने साथ अमेरिका ले जाता है और उसका बेटा भी बहुत बड़ा अफसर बन जाता है। निर्गुनिया दिन में मेहतरानी का कार्य करती थी और रात में स्कूल में बच्चों को पढ़ाती थी अंत में वह यह लिख कर के आत्महत्या कर लेती है कि मोहना उसे बुला रहा है। इस उपन्यास में ब्राह्मण स्त्री की कहानी है जो प्रेम में मेहतरानी बन जाती है और हर वर्ग द्वारा उसके साथ शोषण को दिखाया गया है और एक नारी की त्रासदी को नागर जी ने इस उपन्यास द्वारा प्रस्तुत किया है।[47]

खंजन नयन

खंजन नयन उपन्यास में अमृतलाल नागर जी ने सूरदास के काल का चित्रण किया है उनके हाथ में संघर्ष का विश्लेषण प्रस्तुत किया है उन कमियों को उजागर किया है जिसके कारण सूरदास जी महान बन सके जिसमें उनके प्रेम संबंध का भी वर्णन है और समाज में फैले धार्मिक कट्टरता के दुष्परिणामों कि और भी लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है।

खरे तिनके

इस उपन्यास के द्वारा अमृतलाल नागर जी ने नौकरशाहों द्वारा समाज में फैले भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी के विषयों को उजागर किया है और पुरानी पीढ़ी तथा युवा पीढ़ी के लोगों की मान्यताओं के बीच में चल रहे संघर्ष को

[47]अमृतलाल नागर.नाच्यौ बहुत गोपाल ,राजपाल एंड संस दिल्ली 1978.

चित्रित किया है भावी पीढ़ी अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए प्रयासरत है और अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करती है।

करवट

उपन्यास की मुख्य विषय वस्तु अंग्रेजों के समय की भारत में स्थिति है कि अंग्रेज किस प्रकार व्यापारी के रूप में भारत में आगमन करते हैं परंतु धीरे–धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए वह नवाबों और बादशाहो के राज्यों को हड़प लेते हैं। अंग्रेजों ने भारत की सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक और राजनीतिक जीवन पर अपना प्रभाव डालना प्रारंभ कर दिया था और धीरे–धीरे मुगल सल्तनत का विनाश होना शुरू हो गया था। इस उपन्यास में लखनऊ के एक नवयुवक तनकुन के द्वारा नागर जी ने इस पूरी कहानी का बताने का प्रयास किया है।

इसी उपन्यास की नायिका नैंसी कहती है कि "मेरे जैसी जवान हिंदुस्तानी विधवा अपने लिए नए मित्र की कल्पना भी नहीं कर सकती वह अगर मजबूर होगी तो सिर्फ व्यभिचारिणी बनने के लिए ही।"[48]

करवट उपन्यास की दो मुख्य नारी पात्र चंपक लता और कौशल्या एक आदर्श रूप में प्रस्तुत की गई हैं। चंपक बंशीधर के पत्नी और कौशल्या देश दीपक की पत्नी थी दोनों ने अपने पति का पूरा साथ देते हुए समाज सेवा में उनका हाथ बटाया। अमृत लाल जी ने इन नारी पात्रों को आदर्श हिंदू नारियों के रूप में प्रस्तुत किया है जो समाज के प्रति स्वाधीन चिंतन और अपने पतियों की सच्ची सहधर्मिणी भी थी।

एक रूढ़िवादी परिवार से आई एक कम उम्र की नारी निरक्षर चंपक जब कलकत्ता अपने पति के पास आती है तो वह उस वातावरण और अपने पति की इच्छा के अनुसार अंग्रेजी और संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करती है। तथा नए विचारों नए रहन सहन के द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाती है दूसरी नारी कौशल्या भी अपने पुत्र को जैसे–जैसे वह बड़ा होता है उसे समाज सेवा के लिए जागरूक करती है नारी जागृति और सामाजिक कार्य के लिए वह आगे बढ़ती है इन दोनों नारियों का चित्रण नागर जी ने समाज के कल्याण के लिए रचा है।

पीढ़ियाँ

उपन्यास पीढ़ियाँ नागर जी की अंतिम कृति है। इस उपन्यास की विषय वस्तु इतिहास पर आधारित है और इसमें उन्होंने स्वाधीनता से पूर्व और बाद के भारत में होने वाले राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन पर विस्तार से चर्चा की है। इसमें देश के उन लोगों का वर्णन है जिन्होंने डटकर भारत की राजनीति में अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह किया

[48]अमृतलाल नागर .करवट. राजपाल एंड सन्स दिल्ली. 1985 पृष्ठ संख्या 60

और उसके बाद कि भारत की राजनीति में भाग लिया परंतु कुछ ऐसे युवा की भी कहानी है जिन्होंने हार मानकर पीछे हटकर जीवन से पलायन कर लिया। अच्छे लोगों के पलायन वादी विचारधारा को अपनाने से देश की राजनीति खतरे में पड़ सकती है और व्यक्ति जो कि अपने नैतिक मूल्यों के साथ में जीवन बिताना चाहता है उसके लिए राजनीति में रहना संभव नहीं हो सकता इस उपन्यास के द्वारा नागर जी ने जनसाधारण के पीड़ा को व्यक्त करने का भी प्रयास किया है और आज की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति पर चिंतन भी व्यक्त किया है।

अग्निगर्भा

नागर जी के कई उपन्यासों में अग्निगर्भा भी एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह कहानी उस नारी की है। जो अपनी दो घनिष्ठ मित्रों की तरह ही अपने जीवन को भी एक नया मोड़ देना चाहती थी इसमें तीन सहेलियां सीता, मैत्रेयि और कुसुम है। मैत्रेयि डॉ. गोडबोले से अन्तर्जातीय प्रेम विवाह केर लेती है और बेहद खुश है वह खुद भी पीएचडी है और जॉब करती है कुसुम भी अच्छे घर में ब्याही है। सीता जो कि इस उपन्यास की मुख्य नायिका है वह भी पढ़ी लिखी लड़की है वह आगे पीएचडी करना चाहती है। परंतु उसके घर की स्थिति बहुत खराब है पैसे ना होने के कारण उसके पिताजी उसे आगे पढ़ने के लिए मना कर देते हैं वह बहुत निराश होती है कहीं से भी अगर उसे बुलावा आ जाता था तो वह आस लिए पैदल ही दौड़ जाती थी उसके पिता के अविचारपूर्ण निर्णय ने उसका सारा कैरियर खराब कर दिया था पिता मां से बोले ष्अब इसे आगे पढ़ने की जरूरत नहीं किसी कालिज वालिज में नौकरी करें तब तक मैं कोई लड़का देखकर इसके हाथ पीले कर दूंगा नौकरी में लगी लड़की को दहेज कम देना पड़ेगा।[49]

इस उपन्यास में अमृतलाल नागर जी ने एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या पर भी लिखा है। दहेज प्रथा पूरे उपन्यास में मुख्य आधार दहेज ही है सीता के विवाह से पहले पिता को बेटी के विवाह में दहेज देने के लिए उसका नौकरी कराना और विवाह के पश्चात सीता के ससुराल वालों का दहेज मांगना और उसको ना दे पाने पर किसी भी तरह से वसूल करना इस उपन्यास का प्रमुख विषय रहा है जिसे अमृतलाल जी ने बहुत ही यथार्थता से प्रस्तुत किया है। सीता अपने पति की कल्पना भी के पति जो कि प्रोफेसर थे बहुत ही विद्वान व्यक्ति थे और कुसुम का विवाह एक कुलीन घराने में हुआ था जिसमें वह बहुत ही अश्व राम से जिंदगी व्यतीत कर रही थी सीता ने अपने पति की कल्पना डॉक्टर गोडबोले की तरह ही की थी उसे एक कुशाग्र विद्वान व्यक्ति ही पति के रूप में चाहिए था।

सीता के मन में भी अपने भविष्य को लेकर के बहुत अच्छे विचार थे वह सब जगह है अर्जियां देती थी वह भी अपनी सहेलियों की तरह कुछ करना चाहती थी परंतु उसे अपनी योग्यता का कोई भी मूल्य नहीं मिल रहा था। तभी

[49]अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 .पृष्ठ संख्या 2

उसकी मुलाकात शीला से हुई जो कि एक चपरासी की पत्नी थी सीता डिप्टी सेक्रेटरी उपाध्याय जी के यहां उनकी इंटर में पढ़ने वाली बेटी को ट्यूशन पढ़ाती थी जहां शीला चौका बर्तन करती थी। वह शीला के घर जाती है शीला के पति को उसका चौका बर्तन करना बिल्कुल भी पसंद नहीं था वह उसे शराब पीकर के बहुत मारता था सीता को उसकी स्थिति पर बहुत दया आती है और वह उसकी सहायता करना चाहती हैं।[50]

डी डी एम कॉलेज में समाजशास्त्र के लेक्चरर की खाली जगह के संबंध में सीता अपनी मां के साथ सरस्वती देवी के घर जाती है वहां उसकी मुलाकात रामेश्वर से होती है जो कि दुलारी देवी ट्रस्ट का अधीक्षक है और कॉलेज के सभी कार्य का वही एकमात्र जिम्मेदार है। इस उपन्यास में रामेश्वर को एक लालची व्यक्ति के रूप में भी प्रस्तुत किया है सीता को देखता है वह उसकी सुंदरता और उसके कुशाग्र विचारों से बहुत ही प्रभावित होता है और उससे दोस्ती बढ़ाकर वह उसे लेक्चरर बनाने की पूरा आश्वासन देता है। धीरे–धीरे उनकी मुलाकात बढ़ती है और दोनों में प्रेम हो जाता है रामेश्वर सीता से विवाह के लिए कहता है परंतु रामेश्वर के घर वाले इस विवाह के विपरीत थे क्योंकि वह रामेश्वर का विवाह ऐसी लड़की से करना चाहते थे जोकि उन्हें ढेर सारा दहेज दे सके परंतु सीता के पिता बहुत ही गरीब होते हैं और वह उन्हें लाखों रुपए दहेज में नहीं दे सकते थे। रामेश्वर भी सीता से विवाह करना चाहता था परंतु वह दहेज भी चाहता था ऐसे माहौल में दोनों परिवारों के बीच बीस हजार रूपए में बात तय हो गई।[51]

रामेश्वर की माता रामेश्वर से नाराज हो जाती है तब रामेश्वर ने अपनी माता को समझाते हुए कहता है कि ष्मैं झूठी प्रतिष्ठा के लिए अपने भविष्य की योजना पर लात नहीं मार सकता बप्पा जी ने समझाया आपको मैं भी उल्लू का पट्ठा नहीं हूं इस घर में लाऊंगा तो तुम्हारी दासी ही बनाकर रखूंगा। एक लाख साल तो यूं आएगा और उसकी टेक्सबुक्स स्कीम में तो सेठ द्वारकादास बंसल का घर भर लूंगा और तुम्हारा भी।[52] और प्रिंसिपल बन जाने दो ,फिर देखना इसकी बदौलत लक्ष्मी ही लक्ष्मी आएगी घर में घबराती क्यों है हां इतनी प्रार्थना एक बार फिर सभी के सामने तुमसे करता हूं मेरी एंबीशंस में धक्का ना दे मैं चलूंगा अपनी चाल पर ही किसी का दबाव सहन नहीं करूंगा चेताये देता हूं।ष सीता के पिता सीता के पिता बीस हजार रूपए भी इकट्ठा करने के में समर्थ नहीं थे परंतु उन्होंने किसी तरह से पैसे इकट्ठा करके विवाह कर दिया परंतु वह उस विवाह में शामिल नहीं हुए इधर धीरे–धीरे रामेश्वर का लालच बढ़ता ही जा रहा था। सीता अपने कमाए हुए पैसे से एक पैसा भी खर्च अपने ऊपर नहीं करती थी सारे पैसों का हिसाब किताब रामेश्वर ही रखता था।

---

[50] अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 .पृष्ठ संख्या 12

[51] वही पृष्ठ संख्या 51

[52] वही पृष्ठ संख्या 53

इधर सीता की छोटी बहन गीता ने बिना किसी को बताए बैंक में नौकरी के लिए अर्जी दे दी थी इम्तिहान देने जाने लगी तो उसके पिताजी ने उसे वहां जाने से मना किया उन्होंने उससे पूछा "तुमने किस की मर्जी से यह अर्जी दी थी गीता ने कहा अपनी आत्मा से बड़ी आत्मा वाली आई है मैं लड़कियों को इस तरह से जॉब करना वेश्या व्यवसाय मानता हूं एम ए. छोड़कर यह ढकोसला लादा है फेल होकर बैठ रही तो तेरी पढ़ाई भी छुड़वा दूंगा यह बतलाए देता हूं।"[53]

गीता चिढ करके चली गई वह पास हो गई और उसकी नौकरी बैंक में लग गई गीता का विवाह दिनेश गोयल के साथ हो गया। सीता से उसके ससुराल में उसकी सास और उसकी ननद जो कि मायके में ही रहती थी क्योंकि उसके पति ने किसी और स्त्री के साथ संबंध बना रखे थे इसलिए वह अपना घर छोड़कर अपने मायके आ गई थी। सीता को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी सीता अस्पताल में एक पुत्र को जन्म देती है और छठवें दिन पुत्र को लेकर अपने घर आ जाती है उसके जेठ कामेश्वर और जेठानी मीनाक्षी उसका स्वागत करते हैं ससुर जी भी बहुत खुश होते हैं परंतु सास खुश नहीं होती उसे लगता है कि बेटा अब बहू को और प्रेम करेगा।

एक दिन सीता की मां अपनी पुत्री से मिलने उसके कॉलेज आती है और उसे भाई बृजेश की खराब तबीयत के बारे में सूचना देती है और उससे कुछ पैसे उधार मांगती है सीता उसे ₹200 उधार दे देती है वह उसे उन्हीं ₹700 की गड्डी से देती है। जो कि रामेश्वर ने बैंक से निकलवा करके जमा करने के लिए उसके पास रखवाए थे रामेश्वर को जब इस बात का पता चलता है तो वह सीता को बहुत ही अपमानित करता है और अकड़ कर रूप से बोलता है कि ष्तुम्हारी कमाई का एक–एक पैसा मेरे दहेज की कमाई का है।[54] तुम्हारा तुम्हारी कमाई पर कोई अधिकार नहीं है सीता इस बात पर बहुत दुखी हो जाती है और रोने लगती है और रामेश्वर उसकी बहुत बेइज्जती करता है उसे अपने से नीचे काम करने वाली स्त्री प्रमिला के नीचे काम करने के लिए कहता है परंतु सीता यह बर्दाश्त नहीं कर पाती। और सीता चढ़कर बोलती है ष्मैं नहीं करूंगी मैं नहीं करूंगी स्त्री का अधिकार समान है।[55] किताबों में जरूर लिखा है लेकिन हमारे समाज में स्त्री तो पति की दासी मात्र है गुलाम गुलाम दर गुलाम माना गया है।[56]

---

[53] वही पृष्ठ संख्या 98

[54] वहीपृष्ठ संख्या113

[55]अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली 2.017 पृष्ठ संख्या 115

[56]वहीपृष्ठ संख्या115

सीता रामेश्वर से अलग होने का फैसला कर लेती है और रामेश्वर भी उससे से बाहर जाने के लिए कह देता है बेटे को मां से अलग कर देता है जिसके कारण सीता और उत्तेजित हो जाती है। रामेश्वर उसे ससुराल में छोड़ आता है अपनी मां के पास जहां उसकी मां और उसकी बहन सीता पर बहुत अत्याचार करते हैं उसे बहुत मारते हैं इन सब से तंग आकर सीता घर छोड़ देती है और हज्जिन बी के यहां रहने लगती है। और वह समाज सेवा करने की ठान लेती है वह उन महिलाओं जो कि किसी न किसी शोषण का शिकार हुई थी अधिकारों के लिए वह आंदोलन छोड़ देती है कई लेख छपवाती है जो कि उन लोगों के खिलाफ होते हैं जो स्त्रियों पर अत्याचार करते हैं इसमें वह अपने ससुराल वालों को भी नहीं छोड़ती। उसका एक लेख नेशनल कॉल में छपा होता है जिसकी बहुत चर्चा होती है यह सब देख कर गुलशन राय और उसका बेटा और उसकी मां उससे लड़ने चली आती हैं उस सीता की मकान मालिक हज्जिन से बहुत लड़ती हैं जब सीता को यह पता चलता है तो वह आवेश में आकर के उन को घर से बाहर निकाल देती है।

उसकी मुलाकात सरोज वर्मा जो कि ऍम ए .पार्ट 2 की छात्रा है वह बहुत दुखी होती हैं वह सीता को अपनी व्यथा सुनते हुए रो पड़ती हैं। सीता उसे देखकर बेहद दुखी हो जाती है सरोज सीता से कहती है क्या समाज में सदा से ही स्त्री इतनी ही पीड़िता है दीदी सीता ने उसे लड़ने के लिए कहा और संगठन साहस और शक्ति के साथ सीता आगे बढ़ गई उसने एक संगठन बनाया जो समाज में होने वाले अत्याचारों के खिलाफ लिखता और लड़ता था। इसी बीच रामेश्वर सीता से माफी मांगने आता है उसे अपने साथ ले चलने के लिए कहता है पैर सीता अब उसके साथ जाना नहीं चाहती क्योंकि वह अब उनके लिए कार्य करना चाहती हैं जिन्हे यह समाज स्वीकार नहीं करता उन दोषियों कोसजा दिलाना चाहती है। जो कि दहेज के कारण स्त्रियों को दुख देते हैं रामेश्वर उसे समझाता है कि इन सब में तुम्हारी जान को भी खतरा हो सकता है परंतु सीता मुड़कर नहीं देखना चाहती। रामेश्वर उसे हज्जिन बी के घर तक छोड़ने जाते हैं वहां पर स्मगलर गुलशन राय का बेटा हिम्मत राय बैठा होता है वह सीता की गाड़ी को देखते ही दरवाजा खोलता है और उससे कहता है मेरी स्त्री जिसे आपने अस्पताल में भर्ती कराया था वह जहन्नुम पहुंच गई और अब आपकी बारी है और वह सीता को गोली मार देता है जिससे सीता मर जाती है।

यहीं पर उपन्यास का अंत हो जाता है बड़ी ही सरलता से अमृतलाल जी ने इस उपन्यास के द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि स्त्री को अगर दुख को मिलता है तो समाज उसका साथ नहीं देता है परंतु वही स्त्री अगर अपने अधिकारों के लिए लड़ने का मन बना लेती है तो अपने घर वालों के साथ साथ वह समाज के कई तबकों को भी अपना दुश्मन बना लेती है जैसे कि सीता का अंत हुआ उसी प्रकार कई स्त्रियों की जबान भी इसी तरह बंद कर दी गई।

4.5 सुरेंद्र वर्मा 1990–2000

सृजनशील प्रतिभा से संपन्न व्यक्तित्व वाले सुरेंद्र वर्मा जी का जन्म 7 सितंबर 1941 में झांसी उत्तर प्रदेश में एक संपन्न और सुशिक्षित परिवार में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा झांसी में ही हुई उच्च शिक्षा इन्होंने डॉक्टर हरिसिंह गौर

विश्वविद्यालय सागर से प्राप्त की वहीं से इन्होंने भाषा विज्ञान में परास्नातक की डिग्री प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। सुरेंद्र वर्मा जी बहुत ही कुशाग्र बुद्धि से संपन्न व्यक्ति थे इसके पश्चात् इन्होंने पीएचडी की डिग्री भी प्राप्त की और अंशकालीन व्याख्याता पद पर भी कार्यरत रहे व्याख्याता पद पर रहते हुए ही इन्होने अपना लेखन कार्य प्रारंभ किया इन्होंने सर्वप्रथम साहित्यिक लेखन में कहानियां लिखना प्रारंभ किया।

उन्होंने कई नाटकों का लेखन भी किया जिसमें प्रमुख कैद ए हयात और द्रौपदी महत्वपूर्ण है। सुरेंद्र वर्मा जी को रंगमंच में प्रारंभ से ही बहुत रुचि थी उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से रंगमंच का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया और बाद में वे इसके प्रशिक्षु भी बने और निर्देशन कार्य भी किया वे हमेशा ऊंची उड़ान भरने के शौकीन व्यक्ति थे। उनके लक्ष्य ऊंचे होते थे बाद में अपनी मन की बातों को विस्तारपूर्वक कहने और उसे अभिव्यक्ति करने के लिए उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि नाटक विद्या कुछ छोटी हो रही है इसी के पश्चात उन्होंने अपना ध्यान उपन्यास विधा की ओर केंद्रित किया और उनके उपन्यास मुझे चांद चाहिए को साहित्य अकैडमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।[57] सुरेंद्र वर्मा जी को प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में गहरी रुचि थी उन्हें रंगमंच और अंतरराष्ट्रीय सिनेमा भी आकर्षित करता था।

मुझे चांद चाहिए

उपन्यास मुझे चांद चाहिए की अंतर्वस्तु एक नारी कलाकार का संघर्ष है। यह संघर्ष दो हिस्सों में बंटा हुआ है एक हिस्सा उस कलाकार का मानव के रूप में अपने परिवार निजी संबंधों, कला के बाजार और विपरीत सामाजिक परिस्थितियों से कठोर संघर्ष रहता है, दूसरे हिस्से पर वह कलाकार अपने माध्यम से कला के मूल्यों कला के परिवेश तथा अपनी कलात्मक लालसा अपनी क्षमता के बीच संतुलन का यह आत्म संघर्ष है। यह संघर्ष एक खतरनाक आत्म संघर्ष का रूप धारण कर लेता है इस तरह के उपन्यास आज के आधुनिक समाज के लिए चुनौती है इसमें लेखक सुरेंद्र वर्मा ने सिनेमा और रंगमंच को अपने उपन्यास मुख्य विषय चुना है जिसमें घर और लक्ष्य के बीच झूलती नारी की एक त्रासद प्रेम कहानी है।[58]

जैसा के उपन्यास के नाम से ही प्रतीत है मुझे चांद चाहिए इसमें अगर हम सुरेंद्र वर्मा जी का व्यक्तित्व देखते हैं तो उसमें भी उन्हें ऊँचे सपने का ख्वाब था और इस उपन्यास की मुख्य नायिका के बारे में बात की जाए तो उसके ख्वाब भी बहुत ऊंचे थे। सुरेंद्र वर्मा जी का यह उपन्यास 1993 में राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित हुआ यह उपन्यास

57 SURENDRA%20VERMA/05_chapter%2001%20(1)%20%

[58]https://ia801303.us.archive.org/29/items/in.ernet.dli.2015.481258/2015.481258.Swantrayottar-Hindi.pdf

सदी के अंतिम दशक का एक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण उपन्यास था यह उस साल का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास था। कहा जाता है कि उपन्यास साहित्य में एक लंबे समय के पश्चात ऐसा उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसने उपन्यास का पुनर्जन्म किया इस उपन्यास ने कुछ ही समय में इतनी लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी कि 1996 में इस उपन्यास के लिए सुरेंद्र वर्मा जी को साहित्य अकैडमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

मुझे चांद चाहिए ये पूरा उपन्यास तीन खंडों में विभाजित है जिसमें एक ऐसे घर की कहानी है जो कि गरीबी के कारण अपने घर का खर्च भी बहुत ही मुश्किल से गुजारता है यह कहानी किशन दास शर्मा जो कि प्राइमरी के संस्कृत अध्यापक हैं। वह किराए के मकान में अपनी पत्नी बड़ी बेटी गायत्री छोटी बेटी सिलबिल उससे छोटी बेटी झल्ली और उससे छोटा बेटा किशोर के साथ शाहजहांपुर में रहते हैं बड़ा बेटा महादेव स्टेट रोडवेज में क्लर्क है जोकि अपनी पत्नी के साथ पीलीभीत में रहता है।

यह उपन्यास नारी प्रधान उपन्यास है इस उपन्यास की नायिका एक युवा अभिनेत्री है। जिसके जीवन में कई बाधाएं आती हैं और उन बाधाओं से वह निकलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करती हैं इस उपन्यास का मुख्य विषय है। इस उपन्यास की मुख्य कहानी सिलबिल नाम के लड़की के इर्द–गिर्द घूमती है सिलबिल एक ऐसी लड़की थी जो कि पिता की सख्ती के बावजूद भी अपने नाम के बदलाव में जरा भी नहीं डरी जब मास्टर जी ने पिताजी को यह बताया कि सिल विल ने अपना बदलकर वर्षा वशिष्ठ रख लिया है तो पिताजी गुस्से से लाल हो गए क्यूंकि उन्हें लगा कि सिलबिल उनके खिलाफ जाकर अपने नाम में परिवर्तन कैसे कर सकती है। अपने पिता के रूढ़िवादी विचारों के खिलाफ सिलबिल का यह पहला कदम था सिलबिल की इसी हिम्मत को और बढ़ाने के लिए दिव्या कत्याल नाम की अंग्रेजी की शिक्षिका मिश्री लाल डिग्री कॉलेज में आती हैं।

वर्षा बहुत ही सीधी साधी लड़की थी पिता की गरीबी और बहन की शादी में लिए गए कर्ज को चुकाने की के कारण पिता उसके दो महीने की स्कूल की फीस जमा नहीं कर पाए थे जिसके कारण वर्षा बहुत दुखी थी। एक दिन अंग्रेजी की कक्षा में पढ़ते समय वर्षा की नजरें मिस कात्याल से जा मिली वर्षा रो रही थी कक्षा समाप्त होने के पश्चात मिस कात्याल ने वर्षा वशिष्ठ को अपने घर बुलाकर उससे मिसेज संपत का दिया हुआ। एक लेख दिखाया जो कि वर्षा ने ही लिखा था जब उस से पूछा गया था कि वह आगे चलकर क्या बनना चाहती हैं वर्षा ने उसमें लिखा था कि "मेरा बस चले तो मैं आकाश की दहलीज पर बनी सात रंगों की इंद्रधनुषी अल्पना बनूँ ,आश्रम में शकुंतला की प्रिय वन ज्योत्सना सखी बनूँ चन्द्रमा को देख कर खिल जाने वाली कुमुदनी बनूँ।"[59]

[59] सुरेंद्र वर्मा. मुझे चांद चाहिए .राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2006 पृष्ठ संख्या 17

यहीं से एक गरीब परिवार में जन्मी वर्षा की महत्वाकांक्षाओं के बारे में उसकी उड़ानों के बारे में पता चला परंतु रूढ़िवादी विचारधारा से भरा हुआ परिवार वर्षा के विपरीत हो गया। दिव्या ने वर्षा का साथ दिया और रंगमंच की दुनिया में उसका पहला कदम पड़ा दिव्या ने रंगमंच पर होने वाले नाटकों में उसको मुख्य किरदार देना प्रारंभ किया और उसे आर्थिक सहायता भी दी धीरे–धीरे दोनों के बीच इतना घनिष्ठ संबंध हो गया था कि दोनों एक–दूसरे से अपना सुख दुःख बांटती थी।

पिछले साल की तरह इस साल भी संस्थापक दिवस पर एक नाटक का आयोजन किया जाना था। जिसमें कई छात्र–छात्राएं रुचि ले रहे थे दिव्या का ध्यान वर्षा की तरफ गया दिव्या ने वर्षा से उस नाटक में हिस्सा लेने के लिए कहा वर्षा सकुचा गई क्योंकि उसने अभी तक कभी भी मंच पर पदार्पण नहीं किया था। तब दिव्या ने वर्षा को समझाते हुए कहा कि "तुम्हारे अंदर जो ज्वार भरा है उसे मुक्ति देने के लिए ढक्कन खोलने की जरूरत है।[60] धीरे–धीरे वर्षा ने दिव्या की बातों को समझा और मान लिया तब उसने अपनी जिंदगी का पहला रंगमंच नाटक अभिशप्त सौम्य मुद्रा में सौम्य मुद्रा की भूमिका अदा करी।

अभिशप्त सौम्य मुद्रा नाटक बहुत पसंद किया गया जिसमें सौम्य मुद्रा के रूप में वर्षा सबको बहुत भायी वर्षा बहुत खुश थी और उसके जीवन में एक नया आयाम रंगमंच जुड़ गया था। वहीं दूसरी तरफ पिता का भय भी उसके मन में था पिता ने उसे नौटंकीबाज की उपाधि दे डाली थी एक दिन पिता ने दोपहर में वर्षा को बुलाकर बताया कि "स्कूल में मिश्रा जी हैं नागरिक शास्त्र के अध्यापक उनका मौसेरा भाई है अनमोल भूषण बिजनौर कचहरी में पेशकार है गांव में खेती–बाड़ी भी है उम्र होगी वही बत्तीस के आस पास।"[61] जैसे ही वर्षा ने इन शब्दों को सुना उसके कानों से धुआं निकलने लगा पल भर को वह चौकी फिर उसने निश्चित और स्थिर स्वर में पिता से विवाह न करने की घोषणा कर दी पिता का आक्रोश बहुत अधिक बड़ा और उन्होंने अपनी बेटी को बहुत खरा खोटा सुनाया भाई ने भी साफ–साफ कह दिया कि तुम्हारे बी ए की पढ़ाई के लिए हमारे पास पैसा नहीं है। वर्षा उदास होकर वहां से चली गई दिव्या को जब सारी बातों का पता चला तो उसने वर्षा को कुछ ट्यूशन पढ़ाने के लिए दिए ताकि उसे आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके और वह आगे बढ़ सके वहीं दूसरी तरफ कमलेश कवि का आगमन हुआ कमलेश वर्षा को पसंद करने लगा जिसके कारण वर्षा ने अपने बड़े होने के अहसास को पहली बार पुरुष की नजर से देखा।

इसके पश्चात वह रंगमंच की दुनिया में छाने लगी उसने कई नाटकों में मुख्य भूमिका का प्रदर्शन किया इसके बाद दिव्या का दो साल की छुट्टियों का समय पूरा हो गया और वह वापस लखनऊ चली गई। उसके जाने से वर्षा

[60] वही पृष्ठ संख्या 25

[61] वही पृष्ठ संख्या 36

बहुत दुखी थी परंतु वह धीरे–धीरे अपने कार्य में व्यस्त हो गई एक नाटक करने के लिए उसे लखनऊ जाना था दिव्या के पास परंतु पिताजी का मन उसे भेजने का बिल्कुल भी नहीं था वर्षा ने पिताजी को बताया कि वह 2 जून को लखनऊ जाएगी घर में मां की तबीयत भी बहुत खराब थी। खाली छोटी बहन ही थी जो घर का कार्य पूरा संभाल रही थी जिसके कारण पिता और भाई क्रोध में थे और उन्होंने वर्षा से साफ मना कर दिया परंतु वर्षा अपनी जिद पर अड़ गई और वह बिना डरे लखनऊ के लिए रवाना हो गई।[62]

लखनऊ की चकाचौंध देखकर वर्षा आश्चर्यचकित रह गई वह शाहजहांपुर जैसे छोटे शहर में बड़ी हुई लखनऊ में दिव्या के घर और रंग नाटक के अन्य पात्रों से मिलकर वर्षा पूरी तरह से आश्चर्य में थी। वर्षा कभी–कभी इन लोगों और इनके संसार की ओर आश्चर्य से देखती नाटक के अलावा इनकी जिंदगी में और कोई चिंता नहीं थी इनके दिन–रात अमूर्त कलात्मक संतोष के लिए ही समर्पित है (मेरे उत्तर प्रदेश में ऐसे सुखी लोग भी हैं उसने इससे सोचा) वर्षा की लखनऊ में मिट्ठू से मुलाकात हुई जिसकी तरफ वह आकर्षित हुई और उसकी जिंदगी में आने वाला पहला लड़का वही था।

लखनऊ में ही वर्षा को नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के बारे में पता चला जहां पर उन लोगों को प्रशिक्षण दिया जाता है जो लोग अभिनय में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं परंतु वहां पर एडमिशन लेना बहुत ही मुश्किल होता है यहीं पर वर्षा ने अपने भविष्य को एक अभिनेत्री के रूप में देखना प्रारंभ कर दिया और दिल्ली जाने की रह में वह आगे बढ़ गई

वर्षा ने किसी को बिना बताए नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा का फॉर्म भर दिया उसका इंटरव्यू लेटर जब उसके घर पहुंचा तो घर में पिता का चेहरा गुस्से से लाल पड़ गया उन्होंने वर्षा का विवाह तय कर दिया था जो कि तीन महीने बाद होना था। परंतु वर्षा किसी भी हाल में विवाह नहीं करना चाह रही थी। और वह दिल्ली वह कोर्स करने के लिए जाना चाहती थी जिसके कारण पिता और भाई गरजते बादलों की तरह उसके ऊपर फट पड़े और उन्होंने वर्षा को बहुत मारा और बाथरूम में बंद कर दिया वर्षा हिम्मत नहीं हारी वह बराबर चिल्लाती रही। तभी डॉक्टर एवं मिसेज सिंघल ने शर्मा जी के घर पर कदम रखा और उन्होंने वर्षा को बाथरूम से बाहर निकालकर स्टेशन तक छोड़ने गए और दिल्ली की ट्रेन में बैठा दिया वर्षा अपनी नई जिंदगी के लिए ऊपर वाले को धन्यवाद दे रही थी।

यहाँ पर उपन्यास का प्रथम खंड समाप्त हो गया द्वितीय खंड में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में वर्षा के जीवन में आये परिवर्तन की कहानी है।

---

[62]सुरेंद्र वर्मा. मुझे चांद चाहिए. राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2006 पृष्ठ संख्या 60

नाट्य विद्यालय में गई शाहजहांपुर की ढीले सलवार कुर्ते में एक सीधी–सादी लड़की बड़े आश्चर्य से सबको देखती थी नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के निर्देशक डॉ अटल का विद्यार्थियों के प्रति पहला संबोधन था। डॉक्टर अटल बहुत ही आकर्षित और तेजस्वी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे जिनको देखकर वर्षा बेहद प्रसन्न हुई थी उनके भाषण से वर्षा यह समझ गई थी कि यहां बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि पाठ्यक्रम बहुत ही बड़ा था हिंदी भाषा के साथ–साथ विदेशी भाषाओं का भी नाटक होना था। देश के अलग–अलग जगहों पर प्रदर्शन होता था उसका रंगमंच का सफर प्रारंभ हो गया उसे कई नाटक में किरदार मिलने लगे नए–नए दोस्त बनने लगे और पहनावे में भी अंतर आने लगा।

यहां वर्षा की शुरुआत कुछ खट्टे मीठे अनुभवों से प्रारंभ हुई कभी–कभी अपनी भूमिका में अच्छा प्रदर्शन न करने के कारण उसे डॉक्टर अटल से डांट भी पड़ती थी इसलिए वह अपने काम के प्रति और भी समर्पित हो गई। इधर लखनऊ में दिव्या का विवाह था जिसके लिए उसे आमंत्रित किया गया था। अपनी सबसे अच्छी सहेली के विवाह में जाने के लिए वर्षा उत्सुक थी परंतु डॉक्टर अटल का डर उसके मन में था परन्तु उसने डॉक्टर अटल से अनुमति प्राप्त करके दिव्या के विवाह में शामिल होने के लिए लखनऊ के लिए निकल गई वर्षा को चतुर्भुज की तरफ से एक नाटक में भूमिका अदा करने का अवसर प्राप्त हुआ। जिसे पढ़कर वर्षा बेहद खुश हुई उसमें वह स्त्री के मुख्य पात्र को निभा रही थी और उसके पति का रोल हर्षवर्धन नाम के वरिष्ठ आईएएस के बेटे को मिला था वह बेहद आकर्षक था हर्षवर्धन को देखकर वर्षा के अंदर डर आया और उसने हर्षवर्धन से कहा देखिए "मैं बिल्कुल अनाड़ी हूं मगर आपने साथ नहीं दिया, तो मेरा राम–राम सत्य हो जाएगा।"[63]

धीरे–धीरे वर्षा और हर्ष की दोस्ती बढ़ने लगी दोनों एक दूसरे की तरफ आकर्षित हुए और दोनों के बीच प्रेम भरा रिश्ता बन गया घर की तरफ से बराबर वर्षा बताया जा रहा था विवाह के लिए परंतु वर्षा किसी भी हालत में स्कूल नहीं छोड़ना चाहती थी और वह अपने सपने पूरे करने के लिए अपने भविष्य को सवारना चाहती थी। वर्षा ने एक नाटक किया था बेवफा दिलरुबा जिसका प्रसारण दिल्ली दूरदर्शन में हो चुका था जिसके कारण वर्षा को लोकप्रियता प्राप्त हुई और वह सेलिब्रिटी की तरह महसूस करने लगे धीरे–धीरे वर्षा के रहन–सहन में भी परिवर्तन आने लगा वह अब अच्छी अंग्रेजी बोलने लगी थी।

वर्षा ने एक नाटक किया था बेवफा दिलरुबा जिसका प्रसारण दिल्ली दूरदर्शन में हो चुका था। जिसके कारण वर्षा को लोकप्रियता प्राप्त हुई और वह सेलिब्रिटी की तरह महसूस करने लगे धीरे–धीरे वर्षा के रहन–सहन में भी परिवर्तन आने लगा वह अब अच्छी अंग्रेजी बोलने लगी थी "वर्षा अपने वर्ग के स्वर्ण पदक विजेता सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री

[63]सुरेंद्र वर्मा. मुझे चांद चाहिए. राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2006 पृष्ठ संख्या 100

घोषित हुई थी।"[64] जिसकी वजह से उसे 470 से 750 वेतनमान की अभिनेत्री बनी कुछ पैसे वर्षा अपने घर भी भिजवाने लगे।

देखते–देखते हर्ष की मदद से वर्षा ने दिल्ली में मिसेज सहगल के यहाँ किराये का एक मकान ले लिया जिसमे दिव्या ने सारी जरुरत की चीजें उसमे रख दी। इधर हर्ष की बहन सुजाता का विवाह तय हो गया था जिसमे वर्षा बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही थी हर्ष के परिवार से वर्षा घुल मिल रही थी वही उसकी मुलाकात शिवानी से होती है जो कि देखने में बहुत सूंदर और अमीर होती है वह हर्ष को पसंद करती थी पर वर्षा को देख कर वह हर्ष और वर्षा के बीच के प्रेम को समझ जाती है।

हर्ष ने सूर्यभान के खिलाफ चुनाव लड़ने का निर्णय कर लिया था जिससे वर्षा थोड़ी चिंतित थी हर्ष से सवाल करने पर उसने जवाब दिया था कि कई लोगों को रेपरटरी में मनपसंद रोल नहीं मिलते। इसीलिए वह उनके खिलाफ संघर्ष करना चाहता है हर्ष के मन में कटुता आने लगी वर्षा यह सब देख कर के बहुत दुखी रहती थी। एकाएक हर्ष के पिता की मौत की खबर ने वर्षा को हिला कर रख दिया उसके मन सबसे पहला सवाल हर्ष का अब क्या होगा आया हर्ष अपने सपने को पूरा करने के लिए मुंबई जाना चाहता था वह अभिनेता बनना चाहता था जबकि हर्ष के माता पिता वर्षा को बहु के रूप में उसे स्वीकार्यता दे चुके थे।

हर्ष मुंबई के लिए रवाना हो गया वहां जाकर उसका व्यवहार वर्षा के प्रति बदल गया था चारु श्री नाम की नायिका के साथ उसके संबंधों की चर्चा होने लगी थी जिसे सुनकर वर्षा को बहुत बुरा लगता था। वर्षा के साथ कुछ भी ठीक नहीं हो रहा था मिसेज सहगल ने वर्षा को महंगाई का वास्ता देते हुए घर खाली करने के लिए कह दिया था। अब वर्षा मुश्किल में पड़ गई थी कि वह कहां जाए पर उस को मिस्टर सहगल ने अपनी बेटी के कमरे में ही रहने की इजाजत दे दी ढाई सौ रूपए के किराये के साथ।

वर्षा की एक अच्छी सहेली अनुपमा ने वर्षा को अपने साथ एक कमरे में रहने के लिए मना लिया था। वर्षा बेहद खुश थी वर्षा को एक बहुत बड़ी खुशी इन दिनों वर्षा को बहुत बड़ी खुशी मिली जब उसे यह पता चला कि उसे अकैडमी अवॉर्ड्स मिला है रेपरटरी में उसका कद और बढ़ गया लोग उससे बहुत ही सम्मान से बात करने लगे उसका आत्मविश्वास और भी बढ़ गया अपने कार्य के प्रति वर्षा हमेशा से समर्पित रही और इसी कारण उसे सबसे कम उम्र की नायिका का पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्षा की खुशी दोगुनी हो गई जब उसे पता चला कि उसके छोटे भाई किशोर का विवाह भी तय हो गया है। इन दिनों उसकी मुलाकात सिद्धार्थ स्याल से हुई जोकि फिल्म इंस्टीट्यूट से डायरेक्शन का

[64]वहीपृष्ठ संख्या135

कोर्स किए हुए था और अपनी पहली फिल्म के लीडिंग रोल के लिए वर्षा हो मनाने आया था वर्षा में बहुत सोचा और उसके बाद उसने वह रोल स्वीकार कर लिया यहां से वर्षा का फिल्मो में अभिनय का सफर प्रारम्भ हुआ।

डबिंग वर्षा को फिल्म की डबिंग के लिए मुंबई जाना पड़ा ट्रेन छूटने वाली थी स्नेह चतुर्भुज शिवानी और अनुपमा सब उसे स्टेशन तक छोड़ने आए थे वर्षा अजनबी शहर में जाने के कारण दुखी थी क्योंकि उसे वहां अपने दोस्त ना मिलते यहां पर मुंबई में अभिनेत्री के रूप में वर्षा की कहानी का तीसरा और मुझे चांद चाहिए उपन्यास का तीसरा खंड प्रारंभ होता है ।

वर्षा का फिल्म में अभिनेत्री बनने का सपना पूरा हो गया था जिसके लिए वह बहुत खुश थी परंतु रंगमंच पर नाटक करना और फिल्म की शूटिंग करने में बहुत अंतर होता है जिसे वर्षा अच्छी तरह से समझ रही थी। मीरा के डायरेक्शन में वह फिल्म बनी उसे दाखां का रोल मिला जिस तरह की भूमिका वह केर रही थी वह उसकी असल जिन्दगी से मिलती जुलती थी उसकी मुलाकात वहां छाया से भी हुई जो कि उसी की तरह उसी फिल्म में दूसरी हीरोइन की भूमिका अदा कर रही थी अजनबी शहर में सिद्धार्थ के अलावा उसे कोई अपना नहीं लगता था जिसके कारण वह सिद्धार्थ के करीब आने लगी थी। उसने मुंबई पहुंच कर हर्ष का पता लगाने का बहुत प्रयास किया परंतु हर्ष का पता नहीं चल पाया वर्षा को लोगों ने सौभाग्यशाली कहना प्रारंभ कर दिया था कि घर बैठे ही उसे एक फिल्म मिल गई वह एक आर्ट फिल्म थी मुंबई की भीड़भाड़ देख कर वर्षा का दम घुटता था छोटे–छोटे कमरों का घर परंतु फिर उसे रहने के लिए एक ऐसा मकान मिला जो के मुख्य शहर से दूर था और शांति और हरियाली से भरा।

एक दिन अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई जानी पहचानी सी आवाज सुनाई दी वर्ष ने दरवाजा खोला तो हर्ष सामने खड़ा था। हर्ष को देखकर वर्षा बेहद खुश हो गई परंतु नाराजगी इतनी ज्यादा थी कि उसने उसके आते ही प्रश्नों का भंडार लगा दिया तब पता चला कि वह यहां था ही नहीं वह किसी रंजना नाम की लड़की के साथ उसके घर पर रहता था रंजना का नाम आते ही वर्षा के चेहरे का रंग उतर गया। उसने उससे पूछा कि क्या तुम उसके साथ सिर्फ फिल्म की हीरोइन के रूप में रहते हो हर्ष ने एक पल को सांस ली फिर कहा नहीं वह मुझ पर आकर्षित है वर्षा नाराजगी और बढ़ गई तब हर्ष ने बताया कि मकान का किराया नहीं दे पा रहा था। जिसके कारण मकान मालिक ने उसका सारा सामान उठाकर फेंक दिया था उसकी यह दशा देखकर वर्षा दुखी हुई एक संपन्न परिवार का बेटा आज दर दर की ठोकरे खा रहा है वर्षा ने अपने पर्स से पैसे निकाले और उसके हाथ में दे दिए और कहा की हो सके तो एक बार माँ को देख आना उनकी तबियत बहुत खराब है।[65]

[65]सुरेंद्रवर्मा. मुझे चांद चाहिए.राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2006 पृष्ठ संख्या315

वर्षा ने अपनी पहली आर्ट फिल्म खत्म ही की थी कि उसे एक व्यावसायिक फिल्म का ऑफर आया। वह बेहद खुश थी उसने उसे अपनी स्वीकार्यता दी और वह उसकी शूटिंग के लिए तैयार हो गई एक के बाद एक जब उसे फिल्म मिलना प्रारंभ हो गई तो लोगों की जलन भी बढ़ने लगी उसे बहुत कुछ ऐसा सहना पड़ा जो उसने कभी सोचा भी ना था। अपने ही बिरादरी के अन्य कलाकारों ने उस पर कई तरह के गंदे इल्जाम लगाए कि वर्षा वशिष्ठ ने फिल्मों में आने के लिए बहुत कुछ गलत कार्य किए हैं कंचन प्रभा जो कि एक मानी हुई अभिनेत्री थी उसने भी वर्षा पर कई गंदे जाम लगाए थे।

एक के बाद एक फिल्मो का सिलसिला शुरू हो गया और वर्षा वशिष्ठ एक नामी अभिनेत्रियों में गिनी जाने लगी वह उसी शान और शौकत से वह रहती थी। परंतु अपनी पुरानी जिम्मेदारियों को वह नहीं भूली थी अपने घर के भी रहन–सहन को पूरी तरह से उसने बदल डाला था। वर्षा बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे थे उसने रंगमंच पर नाटक भी प्रारंभ कर दिए थे परंतु पिता अभी भी अपने परिवार को लेकर तनाव में रहते थे वह अपनी छोटी बेटी के विवाह और बेटे की चिंता में रहते थे "संकट को गहरा करने वाला तथ्य यह था कि चित्र नगरी में पिता को कुछ भी प्रीति कर नहीं था पारिश्रमिक पक्ष को मिला कर मन के स्वास्थ्य के लिए विपुल धन अच्छा नहीं इससे मूल्यों एवं मान्यताओं का संतुलन गड़बड़ा जाता है वैसे भी तुम्हारा अर्जन श्शवलश किस्म का है।"[66]

मानसिक तनाव और यंत्रणा को झेलते हुए भी वर्षा बिना हारे अपने भविष्य की तरफ आगे बढ़ रही थी तभी अचानक से परिस्थितियां बदल गई उसे अचानक से पता चला कि हर्ष मर गया है। वरसोवा बीच में उसकी लाश पड़ी है वर्षा थम सी गई उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था उसे ऐसे लगा जैसे जिंदगी थम गई हैं वर्षा स्तब्ध थी भावात्मक रूप से सुन्न थी वर्षा ने कहा "मेरे वास्ते चंद्रमा हमेशा के लिए बुझ गया है।"[67]

सुजाता ने हर्ष की बहन सुजाता ने वर्षा पर उल्टे सीधे इलजाम लगाने शुरू कर दिए पर हर्ष की मां का प्रेम वर्षा के लिए और अधिक बढ़ गया वर्षा हर्ष के बच्चे की मां बनने वाली थी उसने उस बच्चे को जन्म देने का फैसला किया उसने हर्ष से हमेशा सच्चा प्रेम किया था। और वह उसकी बच्चे को जन्म देना चाहती थी हर्ष की मां और ने हर्ष के बच्चे को अपना लिया परंतु बहन सुजाता ने उसकी परवरिश में उसकी मदद ना करने का फैसला किया।

[66]वही पृष्ठ संख्या 478

[67]वही पृष्ठ संख्या 492

यह उपन्यास जो कि वर्षा के जीवन के उतार–चढ़ाव पर आधारित था यहीं खत्म हो गया एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी लड़की ने नाम पैसा शोहरत सब कुछ कमाया और अंत में अपने प्रेम के लिए अपने स्त्रीत्व को समर्पित कर दिया।

कई पुरुष उपन्यास कारों द्वारा नारी जीवन पर आधारित उपन्यासों को अपने लेखन में जगह दी गई है। उन्होंने नारी से संबंधित समस्याओं को उसकी सामाजिक स्थिति और जीवन के लक्ष्य अपने लेखन का आधार बनाया है। पुरुष उपन्यास कारों ने अलग–अलग विषय को लेकर के नारी जीवन पर उपन्यासों को लिखा समाज में हो रहे नारी के प्रति व्यवहार और उसके महत्व कांक्षाओं की अवहेलना से नारी के जीवन में आए बदलावों को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास पूरी तरह से उपन्यास कारों के दिमाग की उपज नहीं है बल्कि तत्कालीन समाज में नारी की सामाजिक स्थिति को उन्होंने अपने शब्दों में गढ़ा है इसका अंत और प्रारंभ पूरी तरह से उनकी मर्जी पर आधारित है परंतु कहीं ना कहीं समाज में नारी की स्थिति से प्रेरित होकर के ही उन्होंने अपने उपन्यासों को लिखा है।

अध्याय पंचम

नारी जीवन के बदलते स्वरूप

अध्याय पंचम

नारी जीवन के बदलते स्वरूप

इतिहास, लिंग और साहित्य को आमतौर पर एक दूसरे से काफी पृथक और असंबंधित समझा जाता है ऐसी स्थिति में सामान्यतया सावधानीपूर्वक इस विषय पर और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। उपन्यास मानव के मन की अभिव्यक्ति है। उपन्यास का सृष्टा समाज का वह व्यक्ति होता है जो समाज के आर्थिक सामाजिक राजनीतिक धार्मिक आदि रूपों को समाज के सम्मुख अपने उपन्यासों के द्वारा अपनी कलम से रखता है।

1950 का काल उत्थान का आरंभ माना जा सकता है। इस काल में हम कुछ ऐसी चिंता और आकांक्षाओं का आभास कर पाते हैं जो प्रारंभिक उपन्यासों में साफ देखने को नहीं मिलता है। प्रारंभिक उपन्यास मनोरंजक साहित्य निर्माण स्वतंत्र रूप से करने में लगा रहा, परंतु शिक्षित समाज को अपने इस नए उपन्यास साहित्य से काफी उम्मीदें थी। ऊंची शिक्षा प्राप्त किये हुए बड़े–बड़े डिग्री धारकों ने उपन्यास साहित्य के महत्त्व को समझा।[1]

साहित्य हमेशा से एक जैसा नहीं रहता है समय के साथ साथ बदलता है। जिस प्रकार समय के साथ साथ समाज में परिवर्तन का होना स्वभाविक है उसी प्रकार साहित्य में भी समाज के अनुरूप परिवर्तन होना स्वाभाविक है। साहित्य जीवन से वह सामग्री लेता है जिसका आधार समाज के अंतर्गत आता है उस सामग्री को ग्रहण करके एक उपन्यासकार अपने दृष्टिकोण के आधार पर समाज में हो रहे परिवर्तनों को लिखता है। विचार विमर्श एक बहुत बड़ा साधन है स्वतंत्रता के पश्चात कई नारी और पुरुष उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में नारी को मुख्य स्थान दिया है।

ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया और इस सृष्टि के निर्माण में दो महत्वपूर्ण नग नारी और पुरुष का जन्म हुआ। इस सृष्टि में जितना महत्व पुरुष को प्राप्त है उतना ही नारी को भी प्राप्त हुआ है नारी में ईश्वर ने कई ऐसे गुणों और क्षमताओं को पुरुष की अपेक्षा अधिक आरोपित किए हैं जो उन्हें पुरुषों से अधिक ताकतवर बनाती हैं। परंतु समाज में पुरुष अपने बल और शक्ति के द्वारा नारी को कमजोर बनाकर प्राचीन काल से ही उस पर अपना आधिपत्य समझता आ रहा है।

नारी प्रकृति का सबसे सुंदर उपहार है। नारी हमारे समाज हमारी संस्कृति और हमारे साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। स्वतंत्रता के बाद भारत में नारी ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है घर में बंद रहने वाली नारी अचानक से घर के बाहर के क्षेत्रों में दिखाई देती है। आज के युग में नारी सशक्तिकरण का रूप दिखाई देता है। प्राचीन

[1]आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली ,2017 ,पृष्ठ संख्या 415

काल से चली आ रही नारी की स्थिति नारी पर होने वाले अत्याचार और अन्याय कम करके नारी उठने का प्रयास कर रही है और आधुनिक परिस्थितियों में अपनी पहचान बना रही है ।

महात्मा गांधी जी का व्यक्तित्व उपन्यासों के पात्रों को एक संकीर्ण मनो स्थिति के सीमित दायरे से बाहर निकल कर एक व्यापक मानवीय क्षेत्र की ओर बढ़ने के लिए प्रेरणा देता है। त्याग के मार्ग पर चलते हुए गांधीजी एक प्रेरक के रूप में समाज की सेवा में लग जाने के लिए कई पात्रों के लिए प्रेरणादायक बने। समाज और व्यक्ति के विषय में नवीन दृष्टिकोण विकसित करने में गांधी जी ने कई दिशाएं दर्शाई उनके नारी संबंधी चिंतन और कार्यो ने निश्चित ही एक क्रांतिकारी भारतीय समाज को ऊर्जा प्रवाहित करने वाले सांचे में ढालकर उपन्यास को इसी ऊर्जा की उपज बताया है।[2]

नारी को हर काल में एक वस्तु के रूप में ही देखा गया है प्रारंभ से ही पुरुषों ने नारी को दासी के रूप में ही रखने का प्रयत्न किया है। नारी का जीवन चारदीवारी के भीतर घर के अंदर ही रहने को मजबूर किया जाता था। समाज में कन्या का जन्म अपशगुन माना जाता था जिसके कारण जन्म लेने से पहले ही उसकी गर्भ में ही हत्या कर दी जाती थी । नारी पर प्रारंभ से ही चले आ रहे अत्याचारों से तंग आकर सुशिक्षित नारियों के समाज सुधार आंदोलनों द्वारा आवाज बुलंद करी गई पितृसत्तात्मक समाज और पुरुष प्रधान समाज की दकियानूसी सोच के खिलाफ नारी स्वयं अपने अधिकारों के लिए बाहर निकली और अपने जीवन को अपने ढंग से जीने की इच्छा के साथ अपना भविष्य बनाने का फैसला किया।

आधुनिक समय आते आते हिंदी उपन्यासों में मनोविज्ञान का प्रभाव चरित्र और चित्रात्मक में भी देखने को मिलता है। स्त्री चित्रण हिंदी उपन्यासों में लगभग परंपरागत प्रभाव का ही मिलता है स्त्री पात्रों की रचना उन श्रेणियों में की गई है जिसमें संवेदनशील त्याग करने वाली उदार और सदैव अपने प्यार पर अटल रहने वाली जैसे शरतचंद्र के उपन्यासों की नायिका। भारत में स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण में विविधता की कमी देखी जा सकती है इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जिस प्रकार से नारी की दशा में यूरोप में परिवर्तन आया उस प्रकार से भारत में परिवर्तन नहीं आया और नारी की स्थिति वैसे ही बनी रही परंतु धीरे–धीरे नारी की स्थिति में बदलाव उपन्यासों में दिखने लगा इसका एक कारण विश्वविद्यालयों मैं मिलने वाली उच्च शिक्षा जिसमें लड़के और लड़कियों को समान रूप से शिक्षा दी जाती थी। नारी भी अब घर की चार दीवारों से निकलकर पुरुष के समान ही स्वाबलंबी होने की चेष्टा प्रकट कर रही थी और कई बड़े–बड़े क्षेत्रों में उनकी बराबरी के लिए लड़ रही थी परन्तु उसे बराबरी का अधिकार दे भी दिया जाता है तो भी कुछ सीमायें तय कर दी जाती हैं।

[2]डॉ के एम मालती. स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2014. पृष्ठ संख्या 131

हिंदू समाज में प्रचलित कानून बहुत ही दिखावटी और अन्याय पूर्ण थे। हमेशा से नारियों से ही उम्मीद की जाती थी कि वह पुराणों में वर्णित पति व्रत और स्वामी भक्त के नियम का पालन करें। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि "लेकिन याद नहीं आता कि पुरुषों से कभी रामचंद्र और सत्यवान की तरह रहने की उम्मीद की गई हो या उनसे कहा गया हो कि वह इस तरह से आचरण करें। यह सिर्फ महिलाएं हैं जिन्हें सीता और सावित्री की तरह व्यवहार करने को कहा जाता है और पुरुष जैसा चाहे व्यवहार कर सकते हैं।"[3]

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जी ने भी नारी को ज्ञान का अधिकार दिया और पुरुषों के साथ–साथ उनकी आध्यात्मिक क्षमता को महसूस करने का अधिकार दिया, यह भारत में महिलाओं की क्रांति और मुक्ति दोनों थी, जिसने उन्हें स्वतंत्रता और सम्मान दिया।[4]

पात्रों के सृजन की प्रक्रिया को हम यह मानकर चलते हैं कि उपन्यासकार अपने चरित्रों के द्वारा समाज के किसी ना किसी रूप की सच्चाई को उजागर करता है यानी उसका संबंध समाज में रहने वाले लोगों से होता है। उस व्यक्ति के व्यवहार और क्रियाकलापों को उपन्यासकार अपने उपन्यासों में स्थान प्रदान करता है। ई एम फास्टर ने अपने उपन्यासों के पात्रों का चयन अपने ही परिवार से किया था उसके अनुसार "श्रीमती वरलेट उसकी चाची रमिली थी श्रीमती हनो चर्च उसकी दादी मां थी"।[5]

उपन्यासों में कई नारी चित्रण किए गए। पुरुष उपन्यास कारों ने भी अपने उपन्यासों में नारी को केंद्रीय स्थान दिया और स्त्री उपन्यास कारों ने भी अपने उपन्यासों में नारी के जीवन की कठिनाइयों को समाज के सम्मुख रखने का प्रयास किया। दोनों ही उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा नारी अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद की और नारी के विभिन्न रूपों को रचा जिसमें नारी के मुख्य भूमिका पात्र मां का पात्र सखी का पात्र बहन का पात्र सास का पात्र आदि को चित्रित किया हर नारी पात्र में एक अलग सशक्तिकरण को दिखाया गया है। दोनों ही उपन्यासकारों द्वारा अपने उपन्यासों में हर नारी चित्रण की एक अलग पहचान है उसी नारी के विभिन्न रूपों को इस पाठ के द्वारा समाज के सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है क्यूंकि उपन्यास वास्तविकता के बहुत करीब होते हैं इसीलिए उन्हे एक महत्त्वपूर्ण

---

[3] रामचंद्र गुहा, भारत गांधी के बाद, पेंगुइन बुक्स गुड़गांव हरियाणा, 2011, पृष्ठ संख्या 294

[4] मीना आनंद, दलित वूमेनफियर एंड डिस्क्रिमिनेशन, ईशा बुक्स दिल्ली, 2005, संख्या 279

Baba Saheb Bhimrao Ambedkar gave them the right to knowledge and the right to realise their spiritual potentialitie along with men it was both a Revolution and Liberation of women in India which allowed from Liberty and dignity.

[5] प्रदीप कुमार शर्मा स्वतंत्रोत्तर हिंदी उपन्यासों का शिल्पविधान इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद 1976 पृष्ठ संख्या30

स्थान प्राप्त है। औपनिवेशिक युग में आधुनिक हिंदी साहित्य के सबसे उल्लेखनीय शख्सियत के रूप में मुंशी प्रेमचंद्र जी का नाम आता है मुंशी प्रेमचंद्र जी ने नारी के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण का निर्माण किया जिनका उत्तर भारत में जबरदस्त प्रभाव देखने को मिलता है।[6]

1950 के दशक में नारी चित्रण

लीला अवस्थी के उपन्यास दोराहे में नारी के बदलते स्वरूप

लीला अवस्थी जी के जीवन के संबंध में बहुत ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं हो पा रही है कई पुस्तकों में और कई शोध पत्रों में भी उनके नाम और उनके उपन्यास के बारे में भी जानकारी प्राप्त हुई हैं। लीला अवस्थी का प्रथम उपन्यास दो राहे एक सामाजिक उपन्यास है। जिसमें लीला जी ने समाज एवं समय के दुर्भाग्य से प्रताड़ित ऐसे भावुक पात्रों को केंद्र में रखकर एक प्रेम भरी कथानक की रचना की है। उनके कथन को सौद्देश्य रखा है और घटनाओं की परिणति सुखांत में की है। लीला जी का उपन्यास दो राहें कि लेखन कला अपेक्षाकृत प्रौढ़ रूप में व्यक्त हुई है और इसे उनकी प्रतिनिधि रचना माना जा सकता है।[7] लीला जी के उपन्यास दो राहे 147 पेज की कहानी है इसमें कई नारी पात्रों का लीला जी ने वर्णन किया है, जिसमें दो नारी पात्र मुख्य भूमिका में हैं लीला अवस्थी जी का उपन्यास दो राहें 1958 में हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी से प्रकाशित हुआ। उन्होंने इस उपन्यास के बारे में स्वयं ही कहा था की वह कहानियों के द्वारा नारी पात्रों को अपनी कहानी में केंद्रित करती चली आ रही हैं परंतु उपन्यासों द्वारा उन परिस्थितियों और वातावरण का चित्रण करने का प्रयत्न किया है जो कि नारी को एक विशेष रूप प्रदान करते हैं।

5.1 बेबी उर्फ गौरी

इस उपन्यास का प्रारंभ हिंडन नदी में आई बाढ़ से होता है। जिसकी वजह से उसके आसपास के गांव प्रभावित हो रहे थे। वहां के लोग गांव को छोड़ छोड़ कर शहर की तरफ पलायन कर रहे थे। हिंडन नदी के पूर्वी तट पर चन्दोल ग्राम था और पश्चिमी तट पर खूब बड़ा सा बेजान और वीरान मैदान पड़ा हुआ था। हिंडन नदी के पश्चिमी तट को उपजाऊ और हरा–भरा करने के लिए वहां एक सैनिक टुकड़ी भेजी गई जिसके निरीक्षण का कार्य कैप्टन रघुनाथ जी को सौंपा गया। रघुनाथ जी वहां पर अपने परिवार बेटी और पत्नी के साथ पहुंचे थे और पूर्वी तट पर चमोली ग्राम के हेड मास्टर चंद्रप्रकाश तिवारी जिनका स्कूल एक टीले पर था के निवासी थे। और पास में ही उनका घर

[6]Charu Gupta, Portrayal of women in Premchand stories: A Critic, social scientist May- June, 1991, vol 19 No. 5/6 (May- June,1991) pp 88 -113, Social Scientist

[7]07_chapter%203%20LEELA%20AWASTHI.pdf

था।[8] एक दिन चंद्र प्रकाश की बहन रधिया मंदिर से लौटते समय एक चार साल की बच्ची को अपनी गोद में उठाकर के भागती हुई नजर आई चंद्रप्रकाश और साथ में ही बैठे उसके मुंह बोले भाई परमानंद रधिया को देखकर भागे। उन्होंने उस चार साल की बच्ची के पीठ को थपथपाया और उसके अंदर के पानी को बाहर निकाला बच्ची को धीरे–धीरे होश आने लगा चंद्र प्रकाश तिवारी ने उसके माता–पिता को ढूंढने का प्रण लिया और अपनी जिंदगी का यही एकमात्र उद्देश्य बना लिया दूसरी तरफ कैप्टन रघुनाथ की चार वर्ष की बेटी बेबी खो गई थी कैप्टन रघुनाथ उसे पागलों की तरह ढूंढ रहे थे। उनके साथ आए उनके काका भी बेहद परेशान थे क्योंकि वह बेबी को अपनी बेटी की तरह प्रेम करते थे रघुनाथ वापस दिल्ली चले गए और उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो में अपने बेटी के खोने की खबर की घोषणा करवा दी।

रधिया ने उस छोटी सी बच्ची को गौरी नाम दिया। चंद्र प्रकाश को यह एहसास हो गया था कि गौरी इस गांव की लड़की नहीं है बल्कि वह शहर से आई हुई लगती है उसके कपड़ों और उसके कान के बूंदों से उसने यह अंदाजा लगाया था हिंडन नदी का पानी तेजी से बढ़ रहा था। जिसकी वजह से सभी चिंतित थे, चंद्रप्रकाश ने शहर जाने की योजना बनाई और शाहदरा आ गया। उसके शाहदरा जाने के दो ही कारण थे, पहला गौरी के माता–पिता को शहर में ढूंढना और दूसरा हिंडन नदी के तेज उफान से बचना चंद्रप्रकाश अपनी बहन और पत्नी के साथ शाहदरा चले गए और वहां पर वह एक धर्मशाला में ठहरे। शाहदरा में धीरे धीरे चंदू की स्थिति सुधरने लगी उसे वही के एक स्कूल में मास्टर की नौकरी मिल गई और उसके साथ–साथ उसे रहने के लिए एक छोटा सा मकान भी दिया गया ,अब उसे नौकरी करते हुए आठ साल हो गए थे। चंद्रप्रकाश, उसकी पत्नी जानकी और रधिया तीनों गौरी को बहुत ही प्रेम करते थे। चंद्रप्रकाश उसके लिए फ्रॉक और खिलौने लाया करता था, गौरी भी अब धीरे–धीरे बड़ी हो रही थी एक दिन चंदू ने दिल्ली जाने की योजना बनाई क्योंकि दिल्ली के बंगाली मार्किट के प्राइमरी स्कूल से हेड मास्टरी के लिए बुलावा आया था। जिसके कारण रधिया और चंदू की बहुत बहस हुई रधिया दिल्ली जाने के पक्ष में नहीं थी, क्योंकि यहां पर एक बनी बनाई नौकरी छोड़कर चंदू का दिल्ली जाना उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रहा था परंतु चंदू ने गौरी के माता पिता को ढूंढने के लिए दिल्ली जाने का निर्णय लिया।

दिल्ली में एक रोड एक्सीडेंट में चंदू की मृत्यु हो गई उसके बाद तो घर पर दुखों का पहाड़ सा टूट पड़ता है।[9] रधिया जानकी से वापस गांव जाने की बात कहती है गौरी को जब यह पता चला तो उसने मना कर दिया , क्यूंकि वह शहर में रहकर अपने उनसे बाप को ढूंढना और उन से मिलना चाहती थी इसलिए गांव जाने की बात पर वह नाराज हुई वह गांव वापस नहीं जाना चाहती थी क्योंकि वह यह समझ गई थी। कि अगर मैं गांव वापस चली गई तो

[8]लीला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या 3

[9]लीला अवस्थी. दोराहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या45

शायद मेरे माता–पिता कभी मुझे नहीं मिल पाएंगे परंतु दिन बड़े कष्ट से बीत रहे थे। चंद्रप्रकाश की मृत्यु के पश्चात धीरे–धीरे पैसे भी खत्म हो रहे थे तभी सामने सामने रहने वाले एक औरत ने एक सेठ के यहां आया की नौकरी की खबर जानकी को दी जानकी नौकरी करने के लिए तैयार हो गई।

वह गौरी और रधिया के साथ उनके घर गई वह कैप्टन रघुनाथ का घर था उन्होंने जानकी को एक सर्वेंट क्वार्टर दिया था रहने के लिए जिसमें गौरी और जानकी साथ में रहती थी कुछ दिन रहने के बाद रधिया वापस गांव चली गई थी। जानकी जब एक दिन घर की सफाई कर रही थी तब उसे एक छोटी बच्ची की तस्वीर मिली जिसकी शक्ल हुबहू गौरी से मिलती थीद्य जानकी उसी समय समझ गई कि यह तस्वीर गौरी की ही है और गौरी ही कैप्टन रघुनाथ की खोई हुई बेटी बेबी है परंतु अपने मातृत्व के कारण उसने यह किसी को नहीं बताया इधर गौरी बहुत ही चंचल और साधारण सी लड़की थी जिसकी वजह से काका उससे बहुत ही आकर्षित रहते थे। काका उसे अपनी बेटी की तरह प्रेम करते थे, उसे पढ़ाते थे। वह भी काका से बहुत घुलमिल गई थी खाली समय में वह उन्हें रामायण बैठकर के सुनाया करती थीद्य काका का मन गौरी के साथ खूब लगता था।[10] एक दिन गौरी आठवीं कक्षा में पास हो जाती है वह भी प्रथम श्रेणी में जानकी बहुत खुश हुई उसका परीक्षा परिणाम देखकर उसकी मालकिन हेमा भी बेहद खुश होती है, काका की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहता है वह उसे और पढ़ाने के लिए पूछते हैं जानकी भी गौरी को आगे बढ़ाने के लिए हामी भर देती है गौरी भी पढ़ने में बहुत अच्छी थी और वह आगे भी पढ़ना चाहती थी काका उसका एडमिशन एक अच्छे स्कूल में करा देते हैं एक दिन अचानक से काका की तबीयत खराब हो जाती है।

जानकी उनकी बहुत सेवा करती है और ईश्वर से प्रार्थना भी करती है, कि अगर काका ठीक हो गए तो मैं काका को सब सच बता दूंगी धीरे–धीरे काका की स्थिति में सुधार होने लगता है जिसकी वजह से जानकी उन्हें सब सच बता देती है। पहले तो काका विश्वास नहीं करते हैं परंतु जब उसके बचपन की तस्वीर और उसके कपड़े लाकर जानकी उन्हें दिखाती है तो उन्हें सब समझ में आ जाता है और वह बेहद खुश हो जाते हैं वह कैप्टन रघुनाथ और हेमा को आवाज देते हैं और उन्हें बताते हैं कि हमारी खोई हुई बेबी देखो मिल गई गौरी भी बहुत प्रसन्न होती है कि उसके माता–पिता उसे वापस मिल गए उसके मिलने की खुशी में कैप्टन रघुनाथ एक बड़ी सी पार्टी रखते हैं जिसमें वह लोगों से उसका परिचय कराते हैं और बताते हैं कि उनकी खोई हुई बेटी बेबी उन्हें वापस मिल गई है गौरी पढ़ने में बहुत अच्छी होती है जिसकी वजह से वह उसे हाईस्कूल तक पढ़ाते हैं और उसके बाद उसका विवाह सेंट स्टीफंस कॉलेज के प्रोफेसर कैलाश के साथ तय कर देते हैं।[11]जानकी गौरी को अपने असली मां–बाप के पास सौंपकर वापस गांव चली जाती है।

---

[10]लीला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या 62

[11] लीला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या147

गौरी की यह कहानी जो कि नौकरानी से एक रानी तक का गौरी का सफर था यहाँ समाप्त हो गया परन्तु एक अमीर घर में जन्म लेने के बाद भी एक गरीब की तरह पाली यह लड़की जिसमे विश्वास और आत्मसम्मान कूट कूट कर भरा था। उसकी बहन रूबी उसे बिलकुल भी पसंद नहीं करती थी परन्तु गौरी ने कभी भी उससे ईर्ष्या नहीं की। लीला जी ने यह पात्र बेहद ही साधारण,आकर्षित और महत्वपूर्ण तरीके से रचा है।

लीला अवस्थी जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि अमीरी और गरीबी शिक्षा के आड़े नहीं आ सकती। यदि किसी गरीब कन्या को अवसर मिले तो वह भी शिक्षित होकर वह अपनी पहचान बनाने में सक्षम है। सुख सुविधाएं ही जीवन को ऊपर ले जाने में सहायक नहीं होती बल्कि शिक्षा का बहुत बड़ा स्थान होता है शिक्षित नारी अपने आत्मसम्मान के साथ समाज में अपनी पहचान बना सकती हैं। भारत की प्रथम महिला अध्यापक और नारी मुक्ति आंदोलन की प्रथम नेता सावित्रीबाई फुले के द्वारा भी शिक्षा को बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। इससे पहले समाज में नारी के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं था बल्कि नारी अपना आस्तित्व ही खो चुकी थी। नारी को इस व्यवस्था से ऊपर उठाने के लिए महात्मा ज्योति राव फूले ने नारी शिक्षा को अधिक महत्वपूर्ण माना इसीलिए उन्होंने 1848 में पुणे में लड़कियों का एक स्कूल स्थापित किया। इस समय ऐसे स्कूल में अध्यापन कार्य के लिए कोई स्त्री ही नहीं बल्कि पुरुष अध्यापक भी मिलना मुश्किल था परंतु महात्मा ज्योति राव फूले ने सभी समस्याओं को झेलते हुए इस कार्य को प्रारंभ किया और अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढ़ाकर प्रशिक्षित भी किया। सावित्रीबाई ने नारी शिक्षा के कार्य में महात्मा ज्योतिबा राव फूले को जो योगदान दिया वह अक्षुण्ण है।[12]

5.2 रूबी

लीला अवस्थी जी के उपन्यास दो राहें का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र रूबी का है। रूबी एक धनी परिवार में जन्मी और पली–बढ़ी लड़की है। वह कैप्टन रघुनाथ की छोटी बेटी है, उसने प्रारंभ से ही इकलौती संतान होने का सुख प्राप्त किया है क्योंकि जब रूबी का जन्म नहीं हुआ था तभी कैप्टन रघुनाथ की बड़ी बेटी बेबी हिंडन नदी के पश्चिमी तट पर वीरान मैदान में सैर करते वक्त कहीं खो गई थी। बड़ी बेटी के खो जाने के बाद जब छोटी बेटी का जन्म हुआ तो माता–पिता ने बड़ी और छोटी बेटी दोनों का प्यार अपनी छोटी बेटी रूबी को ही दे दिया। पिता कैप्टन रघुनाथ दिल्ली के कान्वेंट स्कूल में जहां लड़के लड़कियां दोनों एक साथ पढ़ते थे वहां पर उसका एडमिशन कराया था, पिता ने बेटी को बेहद प्रेम से पालने का प्रयास किया था। परंतु रूबी अब बड़ी हो रही थी और पिता के लाड प्यार में शायद वह डगमगा सी रही थीद्य क्योंकि उसे ट्रू रोमांचित की दुनिया से प्रेम हो गया था वह दिन भर उन किताबों में खोई रहती

[12] डॉ एम जी माली क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली 1986 पृष्ठ संख्या 39

थी और सपनों के संसार में प्रेमियों की कल्पना किया करती थी उसके मन में पर पुरुष के लिए एक अलग सा एहसास था।

रूबी की मां और कैप्टेन रघुनाथ की पत्नी हेमा को अधिक तवज्जो नहीं देती थी, वह अपनी माता को और काका को अपने ख्वाबों की दुनिया का दुश्मन समझती थी वह सिर्फ अपने पिता को ही बेहद प्रेम करती थी क्योंकि पिता ने उसे जिन्दगी जीने की पूरी छूट दे रखी थी।

रूबी जूनियर कैंब्रिज की परीक्षा में पास हो गई थी। वह अब धीरे–धीरे बड़ी हो रही थी वह अपने नृत्य की कक्षा में साथ में नृत्य सीखने वाले लड़के जॉनी के प्रति बेहद आकर्षित थे वह उससे मिलने झाड़ियों के पीछे जाया करती थी रूबी को जॉनी के साथ बेहद सुख प्राप्त होता था परंतु उसने इस विषय में अपने घर में किसी को भी कुछ नहीं बता रखा था उसके पास होने की खुशी में उसके माता–पिता बेहद खुश थे। मां उसे आगे की पढ़ाई के लिए इंद्रप्रस्थ स्कूल में दाखिला दिलाना चाहती थी क्योंकि वहां पर हिंदू तौर–तरीकों से पढ़ाई होती है परंतु रूबी कान्वेंट में ही पढ़ना चाहती थी और उसका पक्ष उसके पिता ने भी लिया। परंतु धीरे–धीरे उसका मन पढ़ाई से हटने लगा और वह जॉनी के प्रेम में खोने लगी उसे अपने माता और काका का प्रेम भी जॉनी के प्रेम के आगे एकदम फीका लगने लगा था।[13]

रूबी धनी परिवार में पली–बढ़ी एक बिगड़ैल लड़की थी। जिसको जल्दी किसी की बातें अच्छी नहीं लगती थी वह अपना जीवन अपने तरीके से जीना पसंद करती थी। एक दिन सुबह मां ने देखा कि रूबी घर में नहीं है उन्होंने अपनी कामवाली जानकी को बुलाया और उसे ढूंढने निकल गए परंतु बहुत देर तक रूबी नहीं मिली हेमा बहुत घबरा गई थी क्योंकि उस समय का कभी अपने दोस्त की बेटी की शादी में बाहर गए थे और रूबी के पिता कैप्टन रघुनाथ भी ऑफिस के काम से बाहर गए थे। जानकी और हेमा जब रूबी को ढूंढ रहे थे तब जानकी को रूबी के नाम एक पत्र मिला जोकि किसी कवि प्रेमी के नाम का था जिसे पढ़कर हेमा बेहद परेशान हो गए रात के नौ बज गए थे अंधेरा बुरी तरह से बढ़ रहा था परंतु रूबी का कुछ भी पता नहीं था हेमा चिंतित अपने घर में बैठी उसकी राह देख रही थी उसे अपनी बदनामी का बेहद डर लगा हुआ था उसने उतनी ही देर में पता नहीं क्या–क्या गलत बातों को सोच लिया था परंतु उसे यह अवश्य ही पता चल गया था कि उसकी बेटी किसी गलत राह पर निकल चुकी है।

अचानक से रूबी घर आई और चुपचाप अपने कमरे में चली गई उसने दो–तीन दिन तक किसी से भी बातें नहीं की हेमा की तबीयत चिंता की वजह से खराब हो गई परंतु रूबी उसे देखने बाहर तक नहीं आई वह सिर्फ अपने कवि प्रेमी विनोद के ख्यालों में खोई रहती थी। उसके दिए हुए पत्रों को पढ़ा करती थी। रूबी का जब परीक्षाफल आया

[13]लैला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या 37

तो रूबी उसमें फेल हो गई जिसकी वजह से रूबी के माता–पिता को बेहद धक्का लगा वह रूबी के फेल होने से बहुत दुखी थे पिता को बेटी से यह उम्मीद नहीं थी उन्होंने तो बेटी को विदेश भेजने तक का प्लान बना लिया था परंतु बेटी के फेल होते ही वह सब पानी में मिल गया।

दिन बीतते गए और कुछ समय पश्चात पता चला कि रूबी गर्भवती हो गई है। माता और पिता के पैरों के तले जमीन ही खिसक गई उन्होंने अपनी बेटी को इतना प्रेम किया था परंतु उसके बदले में बेटी ने उन्हें धोखा दिया माता और पिता की मुश्किलें बहुत बढ़ गई थी। उन्होंने रूबी से बात करना बंद कर दिया था परंतु यह किसी समस्या का हल नहीं होता यह जानकर पिता ने जल्द से जल्द रूबी का विवाह कराने की इच्छा जाहिर की परंतु एक गर्भवती कन्या से कौन विवाह करेगा इस बात के लिए सब चिंतित थे या तो वह रूबी का गर्भपात करवा दें। वह बीच में फंसे हुए थे कि वह क्या करें रूबी को भी अब अपनी करनी पर पछतावा था तभी कुंजीलाल मास्टर जो कि रूबी को पढ़ाने आते थे उन्होंने रूबी से विवाह करना स्वीकार किया वह किसी लालच में आकर के रूबी से विवाह नहीं करना चाहते थे बस वह तो सिर्फ इतना चाहते थे कि किसी भी मनुष्य की हत्या ना हो ''यह सुनकर सब आश्चर्यचकित रह गए कुंजीलाल आदमी है, देवता है, या पागल किसी की समझ में कुछ नहीं आया हे मां की आंखों में आंसू भर आए वह उठकर अंदर चली गई।''[14] कुंजीलाल से रूबी का विवाह कर दिया गया और एक साल बाद उसके पुत्र का जन्मदिन कैप्टन रघुनाथ ने अपने घर में केक कटवाकर मनाया। लीला जी ने रूबी नाम के पात्र को इस प्रकार से रचा है कि धनी परिवार में जन्मी बेटी को जिस मां बाप ने पूरी तरह से अपने जीवन को जीने की छूट दी उस बेटी ने उस प्रेम का गलत फायदा उठा कर अपने जीवन को कष्टों से भर लिया था वह गलत राह पर चल पड़ी और अपने माता और पिता को इन सब बातों से वंचित रखा।

5.3 राधा

चन्दोल ग्राम के हेड मास्टर चंद्र प्रकाश तिवारी के बड़ी बहन राधा थी जिसे प्यार से गांव में सब रधिया कहकर बुलाते थे। पिता ने रधिया का विवाह पास वाले गांव में एक किसान रमन के साथ कर दिया था परंतु कुछ समय पश्चात रधिया रोती बिलखती वापस अपने मायके आ गई ससुराल वालों ने रधिया को बहुत दुख दिए थे उसने छः वर्ष तक ससुराल वालों के दुख को बर्दाश्त किया। ससुराल वाले यहां तक चाहते थे कि रधिया मर जाए और वह अपने बेटे की दूसरी शादी कर सकें ताकि वह और दहेज मांग सकें मायके वापस आने के सिवाय रधिया के पास और कोई दूसरा

[14]लीला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या 147

विकल्प नहीं बचा था वह बार–बार रधिया के ससुराल वालों की मांगों की पूर्ति नहीं कर पा रहे थे कुछ समय पश्चात रधिया विधवा हो गई और वह अपने भाई चंदू के साथ ही रहने लगी।[15]

रधिया प्रतिदिन नियम से मंदिर जाया करती थी एक दिन मंदिर से लौटते समय चंद्रप्रकाश और परमानंद ने रधिया के गोद में एक चार साल की बेहोश बच्ची को देखा रधिया चंदू चंदू करके चिल्लाते हुए आ रही थी। चंद्रप्रकाश और परमानंद उसकी ओर भागे रधिया के पूछने पर उसने बताया कि यह बच्ची हिंडन नदी में आई बाढ़ में बह कर मंदिर के तो मैंने कुछ सीढ़ी उतारकर इसे उठा लिया रधिया ने उस बच्ची को के होश में आने तक उसकी खूब सेवा करी और उसके बाद उसको पालने की जिम्मेदारी भी ली वह रधिया ने उस छोटी सी बच्ची को गौरी नाम दिया। गौरी को वह अपनी पुत्री की तरह ही प्रेम करती थी और उसका और चंद्र प्रकाश के जीवन का यही एकमात्र उद्देश्य हो गया कि वह गौरी को अपने सगे माँ और पिता से मिलवा सके।

लीला अवस्थी जी ने इस उपन्यास के पात्र रधिया का चित्रण एक गरीब और अपने जीवन में आए दुखों से लड़ने वाली एक हिम्मती लड़की की तरह किया है जिसके अंदर इतना प्रेम था कि उसने एक छोटी सी बच्ची की जान बचाकर उसे मां जैसा प्रेम किया।

5.4 जानकी

जानकी हिंडन नदी के पूर्वी तट पर स्थित चंदौल ग्राम के प्राइमरी स्कूल के हेड मास्टर की पत्नी जानकी थी। जानकी और हेड मास्टर चंद्र प्रकाश ने मिलकर यह तय किया था कि खोई हुई चार साल की गौरी को वह अपने सगे मां–बाप से मिलाएंगे परंतु एक सड़क हादसे में चंद्र प्रकाश की मृत्यु हो जाती हैं और गौरी की पूरी जिम्मेदारी जानकी के कंधों में आ जाती हैं। चंद्र प्रकाश की मृत्यु के पश्चात जानकी के ऊपर बहुत सारे कष्टों का एक साथ प्रहार होता है वह चंद्र प्रकाश के साथ शाहदरा गौरी के माता पिता को ढूंढने आए थे। शाहदरा में एक अच्छी नौकरी लगने के बावजूद भी चंद्रप्रकाश ने दिल्ली जाने का फैसला लिया जानकी ने चंद्रप्रकाश के हर फैसले में उसका साथ दिया पर अचानक से चंद्रप्रकाश की मृत्यु होने के बाद जानकी चिंतित रहने लगी वह एक गरीब औरत थी और धीरे–धीरे उसके पास सारी जमा पूंजी भी खत्म हो रही थी परंतु चंद्रप्रकाश को दिए अंतिम वायदे में उसने गौरी को उसके सगे मां–बाप से मिलाने का वचन दिया था जिसके कारण उसने एक ब्राह्मण होकर के भी एक बड़े घर में आया कि नौकरी की, वह कैप्टन रघुनाथ का घर था। जिसकी असली संतान गौरी थी जानकी के अंदर गौरी को लेकर इतना मातृत्व था कि वह सब जानते हुए भी चुप रही परंतु कब तक चुप रहती एक ना एक दिन तो गौरी को सब सच पता चल ही जाना था यह

[15]लीला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या 8

सोचकर उसने काका को गौरी की सब असलियत बता दी काका गौरी की असली मां हेमा और पिता कैप्टन रघुनाथ बेहद खुश हुए और उन्होंने जानकी का बहुत सम्मान किया।

धन के अभाव में भी जानकी जैसी नारी ने अपनी जिम्मेदारियों से मुंह नहीं फेरा। उसने आया कि नौकरी करते हुए धन की प्राप्ति की उसने अपनी सगी संतान ना होकर के भी गौरी को मां जैसा प्रेम दिया उसे पढ़ाया लिखाया और अंत में अपने वचन को पूरा करते हुए गौरी को उसके सगे माँ बाप से उसे मिलवाया।

5.5 हेमा

कैप्टन रघुनाथ की पत्नी हेमा थी। कैप्टन रघुनाथ एक पैसे वाले व्यक्ति थे उनका दिल्ली में एक बहुत बड़ा मकान था जहां वह अपनी पत्नी हेमा और बेटी रूबी के साथ रहते थे हेमा पैसे से बहुत संपन्न महिला थी परंतु अंदर ही अंदर बेहद दुखी रहती थी। उसने कई बार अपने पति को दूसरी नारियों के साथ देखा था वह इस बात से बेहद चिंतित रहती थी कि कहीं उसके पति उसे धोखा तो नहीं दे रहे हैं उसकी बेटी रूबी भी अपने पिता के अधिक करीब थी क्योंकि पिता उसके आधुनिकतावाद विचारों का कभी विरोध नहीं करते थे और माता उसे एक लड़की होने का एहसास कभी कभी दिलाती थी हेमा बेहद अच्छी नारी थी।[16]

लीला जी ने हेमा का चित्रण एक संपन्न परिवार की सभ्य नारी के रूप में किया है जो अपने पति और बच्चे की सेवा में ही अपने जीवन की पूर्ति मानती है। वह अपने नौकरों के साथ ही बहुत ही प्रेम भरा व्यवहार करती थी जानकी जब उसके यहां आया का कार्य करती थी तो वह जानकी को भी अपने घर की तरह ही समझती थी। गौरी जो की जानकी की पुत्री थी उसे भी वह बेहद प्रेम करती थी परंतु जब उसे यह पता चला कि गौरी उसी की खोई हुई संतान है तो वह अपने आप को रोक ना सकी और उसने बरसों अपने अंदर भरी ममता को गौरी के ऊपर एकदम से उड़ेल दिया वह अपने पति और बच्चों से बेहद प्रेम करते थे।

लीला अवस्थी जी ने इस उपन्यास के हर नारी पात्र को इतनी सहजता से चित्रित किया है कि सब पात्रों में अपनी अलग खूबी और कमियां साफ नजर आती हैं जिसकी वजह से यह उपन्यास अपने आप में एक विशिष्टता प्रदान करता है।

1960 के दशक में नारी चित्रण

[16]लीला अवस्थी. दो राहे. हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी. 1958 पृष्ठ संख्या140

उषा प्रियंवदा का पचपन खंभे लाल दीवारें उपन्यास में नारी के बदलते स्वरूप

उषा प्रियंवदा जी के उपन्यासों का मुख्य केंद्र यथार्थ चित्रण ही रहा है हम जो भी चाहते हैं वह हमें बड़ी आसानी से मिल जाता है परंतु जो नहीं मिल पाता है उषा जी ने उस पीड़ा का वर्णन अपने उपन्यासों द्वारा करती है। जीवन के परिवर्तन और टूटते परिवेश में नारी के जीवन से संबंधित मूल्यों का उषा जी ने बड़ी गहराई से अभिव्यक्त किया है। आज की आधुनिक नारी में बहुत परिवर्तन आ गया है परिवर्तन प्रकृति का नियम भी है समय के साथ–साथ कई चीजों में परिवर्तन आता है उषा जी ने उन्हीं परिवर्तनों को अपनाती हुई नारी का चित्रण बहुत ही व्यक्ति से किया है। उषा प्रियंवदा जी का समकालीन हिंदी उपन्यासों में एक जाना पहचाना नाम है उनके उनके लेखन का क्षेत्र आधुनिक जीवन में स्त्री की मानसिक यंत्रणा बनते बिगड़ते रिश्ते तनाव मुख्य हैं।

उषा जी के लेखन में हमें एक सशक्त लेखनी देखने को मिलती है। उषा जी ने नारी जीवन की विसंगतियों को समझा और उन पर लिखा। विभिन्न समस्याओं से जूझ रही नारी को समाज के सम्मुख लाने का पूर्णतया प्रयास किया है। उनकी कृति पचपन खंभे लाल दीवारें मैं उन्होंने कई नायिकाओं का चित्रण किया है जिसमें सुषमा जो कि इस उपन्यास की मुख्य नायिका है उसके जीवन के एकाकीपन को और घर और समाज से जूझ रहे नारी का चित्रण किया है।

5.6 सुषमा

पचपन खंभे लाल दीवारें के सुषमा एक स्वाबलंबी नारी है जो आज के समाज में उदाहरण प्रस्तुत करती है। अपने बीमार पिता और छोटे भाई बहनों की जिम्मेदारी को उठाते हुए कार्य करती है और कहीं ना कहीं अपनी खुशियों का परित्याग कर देती है। आधुनिक समय की नारी शिक्षित है स्वावलंबी है पर उसे कहीं ना कहीं इसका मूल्य भी चुकाना पड़ता है जिस प्रकार सुषमा को भी चुकाना पड़ा सुषमा अपने कार्य से अपने घर का खर्च चलाती है। अपने घर की जिम्मेदारियां लेती है जिसके कारण उसके माता–पिता उसके विवाह पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते बल्कि यह सोचते हैं। यदि सुषमा का विवाह हो गया तो उनके घर कैसे चलेगा जबकि सुषमा के मन में अपने विवाह को लेकर के एक उत्सुकता थी परंतु अपनी जिम्मेदारियों के कारण उसने उत्सुकता को ही खत्म करने का प्रयास किया।

सुषमा की उपस्थिति यहां पर एक जागृत नारी की है जो अपने सामने हो रही किसी अन्य स्त्री की आलोचना स्वीकार नहीं कर पाती। समय के साथ–साथ नारी के अंदर भी कई बदलाव आए हैं उसके आंतरिक गुणों को एक मुख्य स्थान दिया है आधुनिक नारी बने बनाए पुराने रीति–रिवाजों में बंध करके नहीं रहना चाहती है वह अपने शिक्षा और नई सोच से प्रतिबंधों को तोड़ना चाह रही है जो कि समाज ने निर्धारित किए हैं। वह अब चुपचाप जुल्म को बर्दाश्त

नहीं करना चाहती तथा उसके खिलाफ आवाज उठाती है उषा जी ने इन सब बातों को अपने इस उपन्यास में अपने मुख्य नायिका सुषमा के द्वारा प्रस्तुत करने का सुंदर प्रयास किया है।

उपन्यास पचपन खंभे लाल दीवारें में नायिका सुषमा आधुनिक व्यक्तित्व वाली नारी है परंतु फिर भी कहीं ना कहीं वह कमजोर दिखाई देती है वह खुलकर अपनी मां से अपने परिवार से अपनी इच्छाओं को व्यक्त नहीं कर पाती कहीं ना कहीं उसके मन में वह डर है कि अगर उसने अपनी इच्छाओं को अपने माता–पिता को बताया तो कहीं माता–पिता उसे उसका स्वार्थ ना समझ ले क्योंकि घर में कमाने वाली वही एकमात्र नारी है जोकि पूरे घर का खर्च उठाती है उसके विवाह के कारण घर का खर्च कैसे चलेगा। इसी सोच को लेकर उसके माता पिता उसके विवाह के बात नहीं करते हैं पढ़े लिखे सभ्य समाज में भी आजकल सुषमा जैसे कई स्त्रियां ऐसी हैं जो कि अपने परिवार के खर्च को पूरा कर रहे हैं फिर भी समाज हमेशा स्त्रियों को ही बांधने की कोशिश करता है किसी ना किसी बात पर व्यंग ढूंढने की कोशिश करता है क्योंकि प्राचीन काल से ही हम नारी के व्यक्तित्व को बांधने का प्रयास करते रहे हैं तो आधुनिक समाज उसे पूरी तरह से त्याग नहीं पाया है उषा जी अपने इस उपन्यास में इसी बात पर समाज के इसी दृष्टिकोण को समाज के सम्मुख रखने का प्रयास करते हैं कि जिस तरह से समाज शिक्षित हो रहा है नारी शिक्षित हो रही है पर कहीं ना कहीं अभी भी नारी के प्रति लोगों का नजरिया पूरी तरह से नहीं बदला है।

इस उपन्यास के आखिरी अध्याय में आखिरी खंड में सुषमा कसारा उत्साह और साहस समाप्त हो जाता है हर चीज की सुख–सुविधा होते हुए भी वह असहाय सी महसूस करती है क्योंकि वह एकदम अकेली है चाहते हुए भी वह अनिल के प्रस्ताव को मना कर देती है और अपनी है सपनों में फस सी जाती है सुषमा के जीवन के जैसी ही आज आधुनिक समय में बहुत सी नारियां जीवन जीती हैं जिसमें उनके जीवन में कोई ना कोई प्रश्नचिन्ह जरूर होता है।

5.7 स्वाति

सुषमा की सह अध्यापिका स्वाति एक अन्य पात्र है जिसकी रचना उषा जी ने बहुत ही भावपूर्ण तरीके से की है स्वाति बिन ब्याही मां बनने वाली होती है जिसकी वजह से वह नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या करने की कोशिश करती है। पढ़ी लिखी महिला भी समाज में इस कार्य को अपना नहीं पाती वह समाज की चिंता करके अपने वजूद को ही खत्म कर देना चाहती है। आज भी हमारे भारतीय समाज में कुंवारी मां बनना पाप समझा जाता है ऐसी स्त्रियों का समाज में कोई स्थान नहीं है आधुनिक समाज में नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन आ चुका है परंतु कहीं ना कहीं नारी अभी भी उसी पुराने रीति–रिवाजों में फंसी हुई है जिससे कि उसकी स्थिति दयनीय बनी है। आज नारी पढ़ लिख कर समाज में बाहर कार्य करने जाती है अपने घर की जिम्मेदारियों को उठाती हैं तथा हर क्षेत्र में अपना नाम कर रही हैं परंतु कुछ दकियानूसी रीति रिवाज आज भी नारी को एक बंधन में बांधे हुए हैं। स्वाति के इस कार्य से उसके कॉलेज में

कई अध्यापिका है उसकी इस करनी पर हास्यास्पद व्यंग्य करती हैं जिसे सुषमा बर्दाश्त नहीं कर पाती और वह एहसास करती है कि हम पढ़े–लिखे समाज में रहते हैं अगर किसी लड़की या किसी नारी पर कोई अत्याचार हुआ है तो हमें उसका मुकाबला करना चाहिए ना कि उसे व्यंग बनाना चाहिए। कुछ अध्यापिका जो उसका विरोध भी करती है परंतु उसी पर नील को लेकर के व्यंग कसने लगती हैं और उससे पूछती हैं की आजकल किसके साथ बाहर घूमने जाती हूं कौन तुम्हें देर रात छोड़ने आता है जिसे सुनकर सुषमा खुद भी चौक जाती है और वहां से चली जाती है।

ममता कालिया

ममता कालिया के उपन्यासों में उनके व्यक्तित्व की छवि नजर आती है उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित नारी के जीवन के उतार–चढ़ाव मुख्य विषय रहे हैं। उन्होंने अपनी बेबाक शब्दों और दृढ़ विश्वास के साथ अपने पात्रों को रचा है उनके पात्रों में सामाजिक समस्याओं से जूझती विभिन्न नारियां हैं जिसमें उपन्यास बेघर की नारियां मुख्य रूप से सम्बंधित है बेघर उपन्यास की कहानी को पाठ तीन में संक्षिप्त रूप से पढ़ चुके हैं इस पाठ में ममता कालिया द्वारा रचे गए नारी पात्रों का विवरण करेंगे। ममता कालिया जी को उपन्यास बेघर में अपेक्षित सफलता मिली है क्योंकि उनके लेखकीय व्यक्तित्व में संयम दिखाई पड़ता है लेखन में उनकी गहन तल्लीनता उनके पात्रों पर विशेष प्रभाव डालता है।[17]

इस कहानी का मुख्य पात्र परमजीत है जिसके साथ तीन नारियां संबंधित हैं परमजीत का पात्र ममता जी ने इस प्रकार गढ़ा है कि तीनों नारियों के जीवन पर दिए गए उसके कष्टों की छाप है।

5.8 संजीवनी

संजीवनी उपन्यास की मुख्य नायिका है जो एक सीधी–सादी सादगी से भरी हुई साधारण सी पहनावे वाली नारी है जो अपने ही परिवार के हाथों मजबूर होकर बाहर कार्य करने को बाध्य है। इस उपन्यास में ममता जी ने मध्यवर्गीय परिवार में नारी के समक्ष आने वाली समस्याओं का भी चित्रण संजीवनी के रूप में किया है। अपने घर का खर्च चलाने के लिए बैंक में नौकरी करती थी वह ट्रेन से आती जाती थी उसी ट्रेन में उसकी मुलाकात परमजीत से हुई थी परमजीत उसे पसंद करता था और धीरे–धीरे मुलाकातों का दौर बढ़ा और वह भी उसे पसंद करने लगी।

परमजीत एक शिक्षित व्यक्ति था परंतु उसकी सोच रूढ़ीवादी विचारधाराओं से प्रेरित थी वह नारी को उपभोग की वस्तु ही समझता था। परंतु संजीवनी को देखने के बाद उसके विचारों में अंतर आया वह संजीवनी के सादगी से प्रेरित हुआ उसकी सोच पहले से काफी बदल गई थी ष्उसने कल्पना भी नहीं की थी कि वह किसी लड़की के साथ

[17]चंद्रकांत बंदिवडेकर उपन्यास स्थिति और गति पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली 1977 पृष्ठ संख्या 29

इतनी शिष्टता से पेश आ सकेगा इसके पहले उसने हमेशा सोचा था कि लड़की मिलते ही उसे शेर की तरह फाड़ कर खा जाएगा। उसकी चिंदी चिंदी उड़ा देगा।[18] परंतु संजीवनी के साथ वह हमेशा साथ सादगी सही पेश आता उसे खुश रखने की कोशिश करता और हर समय उससे मिलने का बहाना ढूंढता था संजीवनी भी उसके इस व्यवहार पसंद करने लगी थी परंतु इजहार नहीं कर पाती थी।

परमजीत और संजीवनी की मुलाकातों का दौर चल पड़ा था परमजीत अक्सर ही उसे छूने की कोशिश किया करता था। जिससे वह सहम सी जाती थी उससे अक्सर इस तरह की बातें करता जिससे कि वह डर सी जाती थी परंतु संजीवनी ना नहीं बोल पाती बल्कि घबराई आंखों से उसे दूर हटा देती और कहती ष्तुम्हें संकोच नहीं होता यह बोलने में रात में यह सब बातें कानों में गूंजती हैं तो मन होता है फाटक लाकर सड़क पर दौड़ जाऊं।[19] ममता जी का अक्सर यह प्रयास रहा है कि वह पुरुष का असली चरित्र चित्रण करें जिस प्रकार परमजीत द्वारा उन्होंने ऐसे उत्तेजित पुरुष की कल्पना की है जो सिर्फ नारी को किसी ना किसी बहाने से छूने का प्रयास करता है उसकी लालसा को प्रदर्शित करता है संजीवनी बहुत ही संतुलित नारी थी और वह अक्सर परमजीत के इरादों को समझ कर उसे अपने से दूर से करती रही।

परंतु कहीं ना कहीं उसे परमजीत से प्रेम और लगाव सा हो गया था। वह उसे देखती तो उसे विपिन के साथ बीते हुए पुराने पलों को भूलने का मन करता। एक दिन परमजीत और संजीवनी ने प्रेम की सारी हदों को पार कर दिया परमजीत संजीवनी पर हावी होता चला गया और संजीवनी मना भी ना कर पाई।परंतु इस कहानी का पुरुष समाज उन रूढ़िवादी धारणाओं से जुड़ा हुआ था जो कि स्त्री के कौमार्य पर प्रश्न चिन्ह लगाने में पीछे नहीं हटता था। बिल्कुल उसी तरह जिस प्रकार परमजीत ने संजीवनी पर प्रश्न उठाए उसके कौमार्य को लेकर उसकी सोच और पुरुष सत्ता द्वारा बनाए गए कायदे कानूनों के मुताबिक संजीवनी उसके विपरीत साबित हुई। ममता कालिया का नारी के कौमार्य पर यह पहला उपन्यास था जिसमें उन्होंने पुरुष समाज की उस मानसिकता पर जोर दिया जो सिर्फ नारियों के लिए बना है पुरुषों के लिए नहीं संजीवनी और परमजीत एक दूसरे से दूर हो गए संजीवनी को शायद यह अपराध बोध हुआ और वह उससे कभी भी मुक्त नहीं हो पाई। इस प्रकार संजीवनी परमजीत की प्रेमिका तो बनी परंतु पत्नी कभी नहीं बन पाई ष्बेघर में संजीवनी चुपचाप खून का घूंट पीकर रह गई क्योंकि महानगरों में भी उस समय कौमार्य के मिथक से औरत इतनी मुक्त नहीं हुई थी जितनी आज दिखाई देती है तब नैतिक मर्यादा तोड़ना और तोड़ कर स्वीकार करना ही असंभव था।[20]

---

[18]ममता कालिया. बेघर. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2009. पृष्ठ संख्या 60

[19]ममता कालिया. बेघर. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2009. पृष्ठ संख्या 78

[20] वहीपृष्ठ संख्या12

5.9 केकी अंक्लेसरिया

ममता कालिया जी ने महानगरीय नारियों को ही अपने उपन्यास में मुख्य स्थान दिया है जिसमें महानगरीय यंत्रणा झेलने वाली नारी पात्रों बेघर केकी अंक्लेसरिया है। जिसके पास काफी पुराना कॉटेज रुस्तम विला है परमजीत वहां पर पेइंग गेस्ट बनकर रहने लगता है। परमजीत ने केकी के बारे में कुछ इस प्रकार से वर्णन दिया है "उसे आश्चर्य था कि केकी सिर्फ बत्तीस सालों की थी उसके माथे के ऊपर सफेद बालों की एक नहर थी जो इंदिरा गांधी की याद कराती थी जो चश्मा वह लगाती थी उसका फ्रेम शायद अरसे से बदला नहीं गया था वह पुराना और फीका पड़ गया था। वह आश्चर्यजनक रूप से ठिगनी थी और मोटी परमजीत कहना चाहता था कि उसे अपनी स्थूलता का ख्याल करते हुए फ्रॉक हरगिज नहीं पहननी चाहिए पर वह अब तक यह जान गया था कि आकस्मिक सुझावों पर केकी बियर की सी तेजी से उफनती है उसकी किचकिचाहट भरी भंगिमा पहले ही बातचीत पर गीला कपड़ा डाल चुकी थी अपनी तरफ से बात शुरू करने में परमजीत को खतरा लगता इसलिए वह अक्सर तभी बोलता जब केकी स्वयं बोलती।"[21]

केकी अपनी जिंदगी में इतनी अकेली थी कि लोगों को ऐसा लगता कि उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है उसने अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए दो कुत्ते भी पाल रखे थे केकी के दिमाग में कई तरह के द्वंद चला करते थे उसके जीवन में एक रूखापन सा था। जिसके कारण वह सभी को विद्रोह की नजर से देखती थी यहां तक कि उसके इलाज के लिए आए डॉक्टर को भी वह घर से बाहर निकाल देती थी उसे अक्सर लगता था कि उसको दिल की बीमारी है उसे हार्ट अटैक आ जाएगा और वह एक दिन मर जाएगी। जिसके कारण उसके मन में एक डर सा बैठा हुआ था परमजीत केकी के इस व्यवहार से बहुत डरता था उसे वह खौफनाक और दयनीय भी लगती थी परंतु केकी के जीवन में यह घटनाएं अचानक ही नहीं हुई बल्कि केकी भी सामाजिक परिस्थितियों के कारण इस तरह का व्यवहार करने के लिए मजबूर हो गयी उसके घर वालों ने उस के साथ अच्छा व्यव्हार नहीं किया।

जब परमजीत ने केकी से अपनी बहन के घर जाने के लिए कहा तो वह बोली मैं उसके घर कभी नहीं जाऊंगी कभी नहीं। वह क्या सोचती है मेरा अपमान करना आसान है सोचो तो वह एक–एक करके अपने सभी बच्चे ड्राइंग रूम में ले जाती है और उसका पति अपनी फाउल हंसी से कहता है बच्चों यह तुम्हारी बिग आंटी हैं कि कि बुरा सा मुंह बना कर बैठ गई।[22] पर वह हमेशा से ऐसी नहीं थी उसके अपने ही परिवार ने उसे अकेला कर दिया और उसके अकेलेपन के कारण वह नीरस विद्रोही और कुंठित हो गयी।

5.10 रमा

[21] ममता कालिया बेघर वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2009 पृष्ठ संख्या43

[22] ममता कालिया. बेघर. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2009 पृष्ठ संख्या54

ममता जी के उपन्यास बेघर में तीसरी मुख्य नायिका पात्र रमा है जोकि परमजीत की पत्नी है। यह दिल्ली की तथा बड़े कुटुंब की लड़की है परमजीत के पास उसके माता पिता ने लड़की की तस्वीर भेजी जो कि परमजीत ने बिना ज्यादा कुछ जाने विवाह के लिए हामी भर दी लड़की कम पढ़ी–लिखी मैट्रिक पास थी। उस तस्वीर को देखकर परमजीत के मन में एक सुकून था क्योंकि बम्बई की सजी–धजी संभ्रांत लड़कियां देखकर अब उसे दहशत सी होती थी जल्द ही उसकी शादी रमा के साथ करा दी गई रमा परमजीत के साथ बम्बई आ गई।

ममता जी ने यहां पर रमा के पात्र को बिल्कुल परंपरागत हाउसवाइफ की तरह ही रचा है। जिसे घर को सजाना संवारना पति की देखभाल करना और फिजूलखर्ची ना करना पसंद था। परमजीत ने विवाह के पश्चात रमा को भी उसी तरह का आंकने का प्रयास किया जिस प्रकार उसने संजीवनी को आँका था परंतु वह खुश था क्योंकि उसे एहसास हुआ कि वह रमा के जीवन में पहला पुरुष ही है उसे इस बात से बेहद खुशी हुई क्योंकि उसे ऐसा लगता कि संजीवनी ने उसे धोखा दिया था वह उसके जीवन का पहला पुरुष नहीं था धीरे–धीरे समय बीतता चला गया। और रमा अपने पुराने रंग में ढलने लगी रमा को अपने ससुराल जाना बिल्कुल पसंद नहीं था क्योंकि परमजीत की मां उससे अक्सर पैसे लिया करती थी उसे घर पर ही रहना और घर की देखभाल करना ही बेहद पसंद था। उसने एक दिन परमजीत से भी कहा कि ष्मर्द का काम है कमाना, औरत का काम है बचाना।[23] वह पुरुष और नारी में बेहद फर्क समझती थी कुछ समय बाद उसे पुत्र की प्राप्ति हुई जिसके कारण वह बेहद खुश हुई। उसे लगता था की पुत्र की मां बनने से उसका कद और ऊंचा हो गया है दूसरी बार फिर उसने एक पुत्र को ही जन्म दिया जिसके कारण वह अपने आप को और भी ऊंचा समझने लगी। रमा अक्सर परमजीत पर रोक टोक लगाया करती थी पार्टियां करने और जाने के लिए मना करती थी फिजूलखर्ची के लिए रोकती थी और छोटी–छोटी बातों पर जल्दी ही गर्म हो जाती थी जो कि परमजीत को लगता था परंतु फिर भी वह उस से प्रेम करने का प्रयास करता रहा धीरे धीरे परमजीत का मन रमा से हटने लगा वह उसके परंपरागत विचारों से कभी संतुष्ट नहीं होता था।

धीरे–धीरे परमजीत को यह एहसास होने लगा कि उसने जैसी लड़की चाही थी रमा वैसी बिल्कुल भी नहीं है। वह अपने पुराने विचारों के कारण उसे अपने घर से अपने दोस्तों से दूर कर रही है रमा कभी–कभी परमजीत को ताने भी मारा करती थी। जिसके कारण परमजीत परेशान सा रहने लगा। उसे संजीवनी की दोबारा याद आने लगी परंतु वह ना तो अब रमा को छोड़ सकता था और ना संजीवनी को पा सकता था क्योंकि संजीवनी ने वापस मुड़कर कभी नहीं देखा और रमा अपने घर में अपने बच्चों में इतना खो चुकी थी कि उसे परमजीत के बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलता था। धीरे–धीरे परमजीत बीमार रहने लगा परंतु रमा उसकी दिल से सेवा की उसे लगता था कि पति की सेवा

[23] ममता कालिया. बेघर. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. 2009 पृष्ठ संख्या 153

में ही सब कुछ है परंतु एक दिन परमजीत को हार्ट अटैक आया और वह दुनिया से चला गया। रमा और दोनों बच्चे बहुत चीख चीख कर रट रहे उन्हें नहीं पता था कि अब आगे जीवन में वह क्या करेंगे क्योंकि रमा ने कभी अपने जीवन की कल्पना एक पुरुष के बगैर कभी नहीं की थी। ममता जी ने यहां तीन नारियों का विवरण दिया है तीन ऐसी नारियां जो महानगरीय वातावरण में रहते हुए भी अकेली और किसी ना किसी के द्वारा सताई हैं। संजीवनी प्रेमिका बन गई परन्तु पत्नी नहीं बन पाई रमा पत्नी बन गई परंतु प्रेमिका नहीं बन पाई और केकी अकेलेपन और कुंठित जीवन से कभी बाहर ही नहीं निकल पाई।

1970 के दशक में नारी चित्रण

नासिरा शर्मा उपन्यास शाल्मली में नारी के बदलते स्वरूप

5.11 शाल्मली

नासिरा शर्मा के उपन्यासों के पात्र काल्पनिक मात्र नहीं है बल्कि वे समाज के जीते जागते पात्र हैं। इन पात्रों के द्वारा नासिरा जी समाज में व्याप्त विसंगतियों का पर्दाफाश करते हुए ऐसे प्रश्नों को सामने लाकर खड़ा कर देती हैं जिससे कि पाठक को का ध्यान उन प्रश्नों के उत्तरों को ढूंढने और समाज की विसंगतियों को खत्म करने के लिए प्रयास करें। कहीं ना कहीं शाल्मली उपन्यास भी आज के जीते जागते समाज की वह नायिका है जोकि शिक्षित है इस के बावजूद कई समस्याओं का सामना करती है। अपने ही घर में वह अकेली सी महसूस करती है जो भी पाठक इस उपन्यास को पड़ता है उसे कहीं ना कहीं इस उपन्यास में अपनी कहानी सी नजर आती है इससे तात्पर्य यह है कि नासिरा जी ने सिर्फ कल्पना मात्र ही यह पात्र नहीं बड़े हैं बल्कि इन पात्रों को समाज में देखा है।

नासिरा शर्मा के उपन्यास शाल्मली में मुख्य नायिका का नाम शाल्मली है। शाल्मली एक मध्यम परिवार की पढ़ी लिखी और अपने माता–पिता की इकलौती संतान है। उसके पिता को कभी भी यह महसूस नहीं हुआ की अगर मुझे पुत्री हुई है तो मैं उसे ना पढ़ाऊँ, बल्कि उन्होंने उसका पालन पोषण पढ़ाई लिखाई पुत्र के समान ही की। वह आधुनिक विचारों वाले पुरुष थे शाल्मली भी पढ़ लिख कर आधुनिक विचारों को मानने वाली आज की नारी है वह निरंतर प्रतियोगी परीक्षाओं को देती है पाखी वह एक अच्छी नौकरी पा सके जिसमें उसके पिता उसका पूरा पूरा साथ देते हैं।

शाल्मली की माता जी को उसके विवाह की चिंता सताने लगती है वह उसके पिता से एक अच्छा वर तलाश करने के लिए कहती हैं तभी नरेश नाम का व्यक्ति उनके पिता के संपर्क में आता है जिसे शाल्मली के पिता पसंद कर लेते हैं। शाल्मली का विवाह हो जाता है परंतु वह अपने प्रतियोगी परीक्षाओं में लगी रहती है परंतु इस उपन्यास में हमें यह देखने को मिला है की पुरुष चाहे जितना भी पढ़ा लिखा हो परंतु उसे पत्नी का नौकरी करना आज भी पसंद नहीं

है। इसी प्रकार नरेश ने भी शाल्मली को नौकरी की तैयारी ना करने के लिए कहा और घर पर रहकर के ही उसके और उसके परिवार का ध्यान रखना ही स्त्री का धर्म है यह समझाया। क्या स्त्री का अस्तित्व चारदीवारी के अंदर ही है समाज में स्त्रियों का पढ़ना लिखना बेहद जरूरी है और पढ़ लिख करके वह अपने पैरों पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं ताकि समाज की उन्नति हो सके। परंतु अभी भी कुछ पुरुष प्रधान समाजों में इस तरह की विचारधारा फैली है कि प्राचीन समय से आ रहे स्त्रियों के व्यवहार को नहीं बदलना चाहिए बल्कि उन्हें सिर्फ घर का ही ध्यान देना चाहिए कितना भी पढ़ा लिखा क्यों ना हो परंतु कहीं ना कहीं उसके मन में एक स्त्री और पुरुष की भावना रहती ही है। भले ही स्त्री बाहर नौकरी करके पुरुष का हाथ घर में बंटा सकती है परंतु पुरुष को घर का कार्य करना बिल्कुल भी पसंद नहीं आता है इसी प्रकार नरेश भी चाल मलिका घर में हाथ बताने से साफ मना कर देता है और स्त्री पुरुष की भावनाओं को जगाते हुए कहता है "अरे नहीं यह औरतों का काम है मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।"[24] "घर औरत क्या है और वही जाने समाना मर्दों का काम है क्या मैं अपने ऑफिस के कार्य में तुम्हारी कोई मदद लेता हूं क्या और गुड नाइट कह कर सोने चला जाता है।"[25]

शाल्मली गुणों से भरी हुई नारी है जिससे अपनी मां और अपनी सास में कोई अंतर नहीं दिखता है वह उसी आदर और प्रेम के साथ अपनी सास के साथ भी रहती हैं जिस प्रकार वह अपनी मां के साथ रहती थी। शाल्मली चरित्र की बहुत मजबूत महिला है जो कि अपने पति के मन को जीतने के लिए वह हर कार्य करती है वह मन में भी किसी अन्य पुरुष का नाम तक लेना पसंद नहीं करती है।

शाल्मली जो कि एक सर्वगुण संपन्न नारी है फिर भी वह कहीं ना कहीं आत्म संघर्ष में उलझी हुई नजर आती है उसका विवाह एक पढ़े–लिखे व्यक्ति से तो होता है परंतु उसकी विचारधारा उन्हीं दकियानूसी पुरुषों के समान है जो के स्त्रियों को घर की चारदीवारी के अंदर ही देखना पसंद करते हैं उसके इस व्यवहार को शाल्मली पूरी जिंदगी झेलती और सहती हुई चली आती है।

प्रारंभ में नरेश शाल्मली के गुणों को देखकर अभिभूत हो जाता है परंतु कहीं ना कहीं उसके मन में एक डर भी बैठा रहता है कि कहीं शाल्मली उसको छोड़ ना दे नरेश हमेशा से इस जद्दोजहद में जीवन व्यतीत करता है कि का शाल्मली कद उससे ऊंचा है परंतु मन यह बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। ज्यादातर भारतीय समाज में यह देखने को मिलता है कि अगर पत्नी अपने पति से अच्छे पद पर हैं तो पति के अंदर एक ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो जाता है इसी प्रकार से शाल्मली के पति नरेश के मन में भी एक ईर्ष्या से थी परंतु धीरे–धीरे जैसे जैसे उसे शाल्मली के पद

[24] नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. 2013 पृष्ठ संख्या33

[25] वहीपृष्ठ संख्या33

का और उसकी प्रतिष्ठा क्या एहसास होने लगा तो उसने अपना काम बनाने के लिए शाल्मली के काम में दखलअंदाजी शुरू कर दी। और वह शाल्मली से कई प्रकार के कार्यो को कराने लगा परंतु वह धीरे–धीरे उसकी आमदनी पर पूरी तरह से डिपेंड होने लगा जिसके कारण वह अपनी सुख–सुविधाओं की तरफ ज्यादा ध्यान देने लगा जिसके कारण साल में ली बहुत ही परेशान सी रहने लगी और नरेश की लगातार बढ़ती उसके प्रति दूरियां उसको कहीं ना कहीं कचोटने लगी। शाल्मली एक पढ़ी–लिखी और अच्छी नौकरी करने वाली महिला थी इस महानगर की भीड़भाड़ वाली दुनिया में उसने अपना एक नाम बना लिया था परंतु पति के सुख और पति के साथ के लिए वह जीवन भर संघर्ष ही करती रही क्योंकि उसने जो सपने देखे थे अपने पति के लिए, वह शायद पूरे नहीं हो सके नासिरा जी के उपन्यास शाल्मली में नासिरा जी ने बहुत ही सजीव तरीके से भारतीय समाज में नारी के लिए कौन सा स्थान तय किया गया है और उनके द्वारा बनाए गए बंधनों से अगर नारी निकलती है तो किस प्रकार की समस्याओं का और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इस उपन्यास में किया है।

"अगर घर में शांति खत्म हो चुकी हो तो पति पत्नी को जबरदस्ती एक साथ रहने के लिए कहने का कोई मतलब नहीं हैबेहतर है कि उन्हें सम्मानजनक तरीके से अलग अलग हो जाने की इजाजत दे देनी चाहिए।"[26]

5.12 शाल्मली की मां

नासिरा शर्मा जी ने शाल्मली उपन्यास में कई नारी चित्रणों को चित्रित किया है जिसमें एक चित्रण शाल्मली की मां का है। शाल्मली की मां अपनी इकलौती संतान शाल्मली के लिए प्रेम और प्यार का सागर लाना चाहती थी। नासिरा जी ने शाल्मली की मां का चित्रण एक पारंपरिक और पुराने ख्यालातों से भरी महिला का किया है वह हमेशा से शाल्मली को पढ़ने के लिए प्रेरित करती रही है शाल्मली के पिताजी आधुनिक विचारों वाले पुरुष हैं जो शाल्मली को बेटी ना मानकर बेटा मानते हैं परंतु शाल्मली मां को शाल्मली की नौकरी से ज्यादा उसके विवाह की चिंता खाए जा रही है। एक दिन रात में वह मुस्कुराते हुए बोली "जवान लड़की घर में बैठी हो तो किस मां को नींद आएगी।"[27]मां के नींद ना आने पर यह साफ पता चल रहा है कि मां के शाल्मली विवाह के लिए अधिक चिंतित थी लेकिन उन्होंने शाल्मली के ऊपर कभी भी दबाव बनाने का प्रयास नहीं किया और एक अच्छे लड़के से शाल्मली का विवाह कर दिया। परंतु शाल्मली विवाह के पश्चात वह अपनी समस्याओं को अपने अंदर ही रखे रही कई लेकिन मां जैसा किस उपन्यास में भी कहा गया है कि बेटी के चेहरे से ही उसके जीवन का पता लगा लेती है शाल्मली की मां भी कुछ इसी प्रकार से शाल्मली से पूछती हैं।

---

[26]रामचंद्र गुहा भारत गांधी के बाद पेंगुइन बुक्स गुड़गांव हरियाणा 2011 पृष्ठ संख्या 296

[27]नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली.2013 पृष्ठ संख्या19

मां के पूछने पर शाल्मली सब कुछ सच–सच बता देती है कि आजकल नरेश का व्यवहार उसके प्रति कितना बदल गया है मां यह सब सुनकर के स्तब्ध रह जाती है और उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या करें उसने जिस बेटी को बेटे की तरह प्रेम किया था, पाला था आज उसे बहुत कुछ अपने जीवन में सहना पड़ रहा है। परंतु वह जो कि पुराने रीति–रिवाजों और विचारों को मानती है वह अपनी बेटी से रो करके सिर्फ इतना ही कहती है कि ष्यही तेरा भाग्य था, शालू। इसे ही सवार, बेटी, रीति–रिवाजों से कटकर कौन जी पाता है, पगली! अपना और दूसरों का हिस्सा भी भोगना ही औरतों का भाग्य है।नासिरा जी ने औरतों के प्रति औरतों की ही सोच को दर्शाया है कि मां होने के बावजूद भी वह अपनी बेटी के दुख और पीड़ा को कम नहीं कर सकती बल्कि यह सब भाग्य और रीति–रिवाजों का ही खेल है कहकर उसे वह सब चुपचाप बर्दाश्त करने के लिए कहती है। आज भी समाज में इस तरह की कई नारियां इस तरह की सोच आज भी रखती हैं। हमें इन मानसिकताओं, को इन विचारों को बदलना चाहिए और आज के समाज में स्त्री और पुरुष साथ साथ चल करके ही समाज का उद्धार कर सकते हैं यह समझना चाहिए।

5.13 शाल्मली की सास

नासिरा जी ने दूसरा नारी चित्रण शाल्मली की सास का किया है यानी उसके पति नरेश की मां का जो कि गांव में अपना जीवन बसर करती हैं और इनका चित्रण भी नासिरा जी ने पुराने और परंपरागत विचारों से ओतप्रोत नारी के रूप में किया है परंतु शाल्मली से बेहद प्यार करती थी और हमेशा उसके गुणगान गाया करती थी। शाल्मली भी अपनी सास का अपनी मां की तरह ही ध्यान रखती थी जिससे कि उनकी सास बेहद प्रसन्न और खुश रहती थी पर उनके विचारों में कहीं ना कहीं परंपरागत विचारों की झलक नजर आती थी जो कि बहू के लिए ना होकर एक पुरुष से मिलने वाले दर्द को नारी के लिए था। नासिर अपनी मां को शाल्मली अपनी सास को गांव से शहर अपने पास बुला लेती है और वह साल में लिखो दिन भर काम करता देख कर कभी–कभी यह सोचती थी कि नरेश शाल्मली के सुख दुख का ध्यान रखता है या नहीं वह समझ नहीं पाती थी एक दिन वह शाल्मली से बोलती है कि ष्औरत का दुख सुख पूछने उनके मन के थाह लेने में पुरुष अपना अपमान जो समझता है। वह तो हमेशा इसी बात से संतुष्ट रहता है कि उसकी वजह से किसी औरत को सौभाग्यवती मिलने का अवसर मिला।[28]

शाल्मली दिनभर अपनी सास के पास बैठकर उनकी सेवा में लगी रहती थी उनके साथ ही नाश्ता करना चाय पीना उस अच्छा लगने लगा था वह शायद अकेलेपन से भाग रही थी वह अपनी सास के पास बैठकर अपने मां जैसा महसूस करती और उससे अपने दिल की बातों को कहती हैं परंतु कुछ बातें वह चाह करके भी अपनी सास को नहीं बता पा रही थी। परंतु शाल्मली की सास सब कुछ अपनी आंखों से देख रही थी कि शाल्मली पढ़ी–लिखी शहर की

[28]नासिरा शर्मा शाल्मली किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या85

लड़की होने के बाद भी पूरे घर का और नरेश का और उनका इतना अच्छे से ध्यान रखती थी परंतु नरेश का व्यवहार शाल्मली के प्रति देखकर उन्हें कभी–कभी बहुत ही दुःख होता था परंतु वह कुछ कह नहीं सकती थी। एक दिन शाल्मली बैठी तो उन्होंने शाल्मली के बारे में सोचा कि पता नहीं शाल्मली किस पत्थर की बनी है जो कि बिना बोले बहुत कुछ बोल जाती है। एक दिन शाल्मलीसे उन्होंने कहा कि तू कुछ ना कह सके वह अलग बात है पर मुझे कहने में लाज नहीं कि हमारे यहां के मर्द नहीं जानते। औरत का आदर सत्कार करना, सम्मान देना तो बहुत दूर की बात है अपने आसपास रोज बहुत कुछ देख सुन रही हूं मगर औरत....![29] शाल्मली की सास यह बातें कर ही रही थी कि अचानक से बात कट गई उनकी इन बातों से साफ पता चलता है कि औरतों को यह महसूस और एहसास अच्छे से है कि मर्द उनके उनको पीछे धकेलते हैं फिर भी वह चुपचाप उसे बर्दाश्त करती जाती है नरेश का व्यवहार अपनी मां के प्रति भी बहुत लगाव पूर्ण नहीं था। बल्कि शायद ही उन्होंने कभी अपनी मां से उनकी तबीयत और उनके हालचाल के बारे में पूछा हो समाज में कई पुरुष अभी भी ऐसे हैं शायद जो मां बाद में और उनको नारी का रूप पहले समझते हैं जिससे कि वह उनके हर सवाल का जवाब देना शायद जरूरी नहीं समझते।

5.14 शाल्मली की सहेली सरोज

एक दिन अचानक से ऑफिस में फोन की घंटी बजी, शाल्मली को पता चला कि फोन सरोज का था। वह शाल्मली से मिलने आना चाहती थी सरोज ने उसे अपने घर बुला लिया घर आकर एक दिन शाम को दोनों मिल कर के बैठी धीरे–धीरे शाल्मली ने अपनी सारी बातों को सरोज के आगे खोल के रख दिया। सरोज ने को शाल्मली समझाते हुए कहा था कि तुम्हारी दुनिया इतनी अच्छी है, इतनी बड़ी है तुम इस नरक से बाहर क्यों नहीं निकलती हो शाल्मली अपने संसार में इतना खो चुकी थी कि उसे अब बाहर निकलने की इच्छा नहीं थी। उसने कहा कि मेरा कहीं आने जाने का दिल नहीं करता है वह अंदर से टूट चुकी थी नरेश की बातों ने उसके दिल पर एक घाव बना दिया था। इसे सुनकर सरोज और बौखला जाती है और सर्वोच्च कहती है कि ''वास्तव में मर्द को औरत को ठग कर बड़ा सुख मिलता है जो प्रेम उसे इमानदारी से भी प्राप्त हो सकता है उसमें जाने क्यों शातिर तरीका अपनाकर फूला नहीं समाता। औरतों को जहां अवसर मिले गिन गिन कर बदला लेना चाहिए।''[30] सरोज आधुनिक समाज की नारी है और वह पुरुषों से और पुरुषों के साथ चलने को प्रेरणा देती है पुरुषों द्वारा मिले गए दुख, कष्ट को वह अपने विचारों के द्वारा खत्म करना चाहती है और वही समझाने के लिए को वह शाल्मली भी प्रेरित करती है।

सरोज शाल्मली को समझाने का पूरा प्रयास करती है और वह उससे बार–बार उस नर्क से निकलने के लिए कहती हैं। वह उसे यह भी बताती है कि उसे तो सिर्फ पति को ही बदलना परंतु उसे तो पूरे पुरुष समाज को ही

[29]नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली.2013 पृष्ठ संख्या 109
[30]नासिरा शर्मा. शाल्मली. किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली.2013 पृष्ठ संख्या 163

बदलना है उनकी परंपरागत सोच, दकियानूसी सोच को बदलना है। जो औरत को हमेशा पीछे ही रखना चाहते हैं उन्हें चारदीवारी में ही बंद करना चाहते हैं। आज आधुनिक महिला क्या चारदीवारी में बंद हो सकती है नहीं क्योंकि पढ़ा–लिखा समाज और पढ़ी–लिखी सोच रखने वाली स्त्री अपने लिए खुद एक रास्ता चुन सकती है बना सकती है। इसलिए नासिरा जी ने सरोज के माध्यम से हमें यह अभी बताने का प्रयास किया है कि आधुनिक नारी जो कि आत्मसम्मान चाहती है और अगर उसे ना मिले तो वह छीनना भी जानती है।

मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा आज के दौर की महान लेखिका है जिनके उपन्यासों में समाज को इमानदारी से प्रस्तुत किया गया है उनके उपन्यास महान साहित्यकारों की याद दिलाता है उनका लेखन स्त्री विषयक संवेदना के आसपास ही मंडराता है उनका साहित्य कुछ भिन्न इसलिए है क्योंकि उन्होंने अपने उपन्यासों में शहरी वातावरण को त्याग कर गांव के अचल से जोड़ा है। वह स्वयं गांव से सम्बंधित हैं, पर वह उच्च वर्ग की शिक्षित और शहरी वातावरण में पली–बढ़ी नारी है। परंतु उनके साहित्य में ग्रामीण वातावरण और उसमे व्याप्त नारी के सुख–दुख और संघर्ष को प्रस्तुत करती है। मैत्रेयी जी के उपन्यासों में उन नारियों का चित्रण है जो पढ़ी लिखी या अनपढ़ हैं, परन्तु उनमे समाज की दकियानूसी रिवाजों के खिलाफ लड़ने का जज्बा है।

5.15 सारंग

मैत्रेई पुष्पा के उपन्यास चाक की केंद्रीय नायिका सारंग है। जो कि स्त्री स्वतंत्रता की मांग करती है इस नारी ने समाज में स्त्री और पुरुषों को बराबर का स्थान दिलाने का प्रयास किया है और कई सामाजिक मर्यादाओं को भंग किया है। वह राजनीति में अपने पति के खिलाफ खड़े होने वाली स्त्री है जो कि इस उपन्यास का सबसे प्रमुख भाग है। एक स्त्री के संघर्ष और विद्रोह की कथा चाक है। पुरुष प्रधान समाज और संस्कृति हमें अपने अस्तित्व का निर्माण करने से रोकती है। इस उपन्यास की नायिका सारंग के सम्मुख अनेक कठिनाइयां आती है, जिस से गुजर कर ही वह अपना कार्य आगे बढ़ाना चाहती हैं। समाज के पुराने रीति–रिवाजों को हटाकर अपना एक नया अस्तित्व निर्माण करना चाहती है कथा गांव में होने वाले नारी शोषण को खत्म करना चाहती है। मैत्रेयी जी ने सारंग के द्वारा अपनी भावनाओं और ग्रामीण परिवेश में हो रहे नारी के सम्मुख समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

सारंग की मां सौतेली थी वह सारंग को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी उसमें पिता से कहकर सारंग को कन्या गोकुल पढ़ने भेज दिया उसे कन्या गोकुल में अच्छा लगने लगा वह सोचती कि कम से कम मां की डांट से तो दूर रहेगी। परन्तु कन्या गोकुल का माहौल एकदम अलग था वहां की बड़ी अम्मा जी बहुत ही ज्यादा सख्त थी। परंतु कुछ लड़कियां ऐसी भी थी जो उनसे छुप कर अपने शास्त्री जी के साथ सम्बन्ध रखती थी जिसमें एक शारदा भी थी

शास्त्री जी और शारदा के बीच चलने वाले अनैतिक संबंधों के बारे में सुना था। बड़ी माता जी को जब उनके संबंधों के बारे में पता चला तो उन्होंने शारदा को सजा के तौर पर काली कोठरी में डाल दिया और सारंग से उसके चरित्र के बारे में पता करने के लिए कहा सारंग शास्त्री जी को पसंद करती थी अतः वह शास्त्री जी से उसके बारे में पूछने लगी तभी शास्त्री जी ने कुछ ऐसा बोला जिसकी वजह से उनके प्रति सारंग के अंदर जो भी आकर्षण था वह सब खत्म हो गया और बस जोर से चिल्लाई कि "सारा दोष शारदा पर..... पुरुष तुम कितने अन्यायी !"[31] उसके बाद शास्त्री जी की सूरत से वह घृणा ही करने लगी और उसने लड़कियों के लिए आवाज उठाई और सबसे कहा की विद्यालय और यज्ञशाला में कोई भी काम नहीं रखेगा परंतु माताजी के डर से किसी ने भी उसकी बात नहीं मानी सारंग पहली नारी थी जिसने पहली बार कन्या गुरुकुल में आवाज उठाई थी जिसके नतीजे में बड़ी माता जी ने उसके पिता को बुलाकर के उसे उनके साथ जाने के लिए कह दिया गया।

सारंग का विवाह गजाधर सिंह के छोटे बेटे रंजीत के साथ हो जाता है रंजीत एम एस सी पढ़ा है पर अच्छी नौकरी न मिलने की वजह से वो खेती किसानी ही करता है। गांव की अधिकतर औरतें अनपढ़ ही हैं सारंग ने कन्या गुरुकुल से ग्यारहंवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी अतः उसे गांव में पढ़ी लिखी नारी के रूप में ही आँका जाता है उसे मंत्रों का भी अच्छा ज्ञान है।

मैत्रेई पुष्पा के उपन्यास चाक की मुख्य नायिका सारंग जो समाज की यथार्थता से लड़ती हुई आगे बढ़ती हैं। सारंग एक ऐसी नारी का चित्रण है समाज के बनाये गए दकियानूसी रीति–रिवाजों को मानने से इंकार करती हैं और स्वयं की सोच को प्राथमिकता देती हैं। उसकी बहन रेशम को उसके ससुराल वालों ने मार दिया है। सारंग रेशम के लिए लड़ती है रेशम के घर वालों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराती है जबकि कहीं ना कहीं सारंग का पति रंजीत हार मान जाता है क्योंकि रेशम के ससुराल वाले गांव के दबंग लोगों में से एक हैं परंतु सारंग पीछे नहीं हटना चाहती वह अपनी बहन को न्याय दिलाना चाहती है।

वह कहती है कि "औरत की बात पर औरत बयान नहीं देगी तो कौन देगा? एक औरत मर गई और तुम बहन बेटियों को पुलिस वालों की नजर से मैली हो जाने के गम में मरे जा रहे हो वह भी जानते हैं कि तुम अपनी औरतों का इस कायरता से कत्ल कर सकते हो तो तुम्हारी स्त्रियों की कीमत क्या रह गई है।"[32]

[31]मैत्रेई पुष्पा. चाक. राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली. 2016 पृष्ठ संख्या91

[32]मैत्रेई पुष्पा. चाक. राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली. 2016 पृष्ठ संख्या138

सारंग प्रारंभ से ही अपनी मर्जी को प्रधानता देने वाली नारी रही है वह गांव के मास्टर श्रीधर के प्रति आकर्षित है और उससे प्रेम करने लगती हैं सारंग रंजीत की बाबत सोचकर कांपने लगती तो श्रीधर के बारे में सोचते ही आशा आकांक्षाओं के बगीचे बोलना शुरू कर देते थी।[33] सारंग सोचती है "यह निर्भय, साहसी, और दिलेर, योद्धा है; तो क्या मैं इसी अदा की गुलाम होती जा रही हूं। सोच रही है– वह शायद तुम मर्द की जात हो श्रीधर, कुछ भी कर गुजर सकते होद्य तुम्हारी निर्भीक गैल ही मुझे संग के लिए खींच रही है क्योंकि मैं बंधन में बंधी ,रग–रग में दहशत लिए पावों की बेड़ियां झन झनाती तुम्हारी ओर बढ़ रही हूं।"[34] सारंग सोचती है कि वह जो कर रही है वह पता नहीं सही है कि नहीं, परंतु वह अपने पति से पाई हुई असंतुष्टता को शायद मास्टर के द्वारा पूरा करना चाहती है।

गांव का समाज सामंती व्यवस्था पर आधारित है जिसकी वजह से वहां पर पुरुष प्रधानता बनी हुई है। सारंग का पति रंजीत भी उसी सामंती व्यवस्था का एक प्रतिनिधि पात्र है वह स्त्रियों को घर में ही रहकर अपने कार्यों में गुणी होने को प्राथमिकता देता है। सारंग के ससुर भी तारीफों के द्वारा सारंग को उसके काम के लिए प्रेरित करते हैं परंतु सारंग अपने पति के व्यक्तित्व से पूरी तरह से संतुष्ट नहीं है क्योंकि वह अपने निर्णय भी स्वयं नहीं ले सकता उसे गलत और सही में फर्क नहीं दिखता है।

सारंग के चरित्र के द्वारा मैत्रेयी जी ने उस नारी शक्ति का चित्रण किया है जो समय और परिस्थितियों के खिलाफ जाकर अपने लिए कुछ करना चाहती हैं। गांव के किसानी बाड़ी करने वाली नारी का राजनीति में प्रवेश पुरुष प्रधान समाज के सामने उनकी बराबरी में खड़े होना अपने पति के विपरीत प्रधानी का चुनाव लड़ना और उसे जीतना बहुत ही मुश्किल कार्य है परंतु सारंग एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर नारी थी जिसने इतनी हिम्मत दिखाई। वह अपनी संतान के लिए भी उतनी ही कार्यरत थी जितनी कि अपने समाज के लिए। उसके पुत्र के दूर जाने पर उसको जितनी अधिक तड़प हुई थी उतनी ही अधिक तड़प उन नारियों के लिए हुई थी जो इस पितृसत्तात्मक समाज के द्वारा कुचल दी गई थी। सारंग और रंजीत का रिश्ता आत्मीयता और बिखराव के बीच झूल रहा था आत्मीय दिनों में वह अपने पति के साथ थी और बिखराव् के समय वह श्रीधर के साथ आम भारतीय नारी की तरह ही सोचती और समझती थी।

इस प्रकार चाक में सारंग का पात्र दुख और आंसुओं को छोड़कर संघर्ष और विद्रोह की कहानी गढ़ता है पुरुषों की इस दुनिया में नारी का हस्तक्षेप करना किसी जंग से कम नहीं है।

---

[33]मैत्रेई पुष्पा. चाक. राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली. 2016 पृष्ठ संख्या 134

[34]मैत्रेई पुष्पा. चाक. राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली. 2016 पृष्ठ संख्या140

5.16 रेशम

मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास चाक में दूसरा जो महत्वपूर्ण नारी पात्र है वह है रेशम। इस पात्र में स्त्री विमर्श की एक अलग ही छवि दिखती है जो अपने जीवन को अपने अनुसार जीने की इच्छा रखती है। वह साध जी के छोटे बेटे कर्मवीर की पत्नी है कर्मवीर रेशम से बहुत प्रेम करता है परंतु एक दिन जहरीली शराब पीने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है जिसके बाद गांव के पुराने और बड़े लोगों का के अपने–अपने विचार रेशम के लिए आगे आने लगते हैं परंतु रेशम अपनी इच्छा को प्राथमिकता देती है और वह पुराने और दकियानूसी रीति–रिवाजों को मानने से इंकार कर देती है।

वह अपनी इच्छा के अनुसार विधवा होने के बावजूद गर्भ धारण करती हैं। और उसका गांव में खुलेआम ऐलान करती है "हां मैं पेट से हूं अम्मा,, सुनकर बूढ़ी आंखें फटी रह गई, बोल बंद हो गया सांस रुक सकती होती तो उसी दम रुक जाती। कुलच्छिनी बहू ने अपने पाप की कटार हुकुम कौर के सीने चला दी। कौड़ी सी आंखें निकाल कर देखती रह गई– मेरा बेटा की मौत से दगा करने वाली हरजाई बदकार ! तेरा मुंह देखने से नरक मिलेगा ,खेती जलेगी, अकाल पड़ेगा द्य गंगा में स्नान करो तो भी यह महापाप छूटना नहीं।"[35] गांव के बड़े लोग उसको चरित्रहीन जैसे शब्दों से अपमानित करते हैं उसके ससुराल वाले उसका विवाह उसके जेठ डोरिया से करना चाहते हैं।

रेशम की सास रेशम का गर्भपात कराना चाहती थी परंतु रेशम बौखला गई और वह अपने अजन्मे बालक के प्रेम में पागल सी हो गई वह कहती कि क्या बिना पिता के बच्चे नहीं पाले जा सकते हैं। वह उस बालक के द्वारा अपनी पूरी जिंदगी बिना पति के ही काटने के लिए तैयार थी। सारंग जो कि रेशम की बहन थी उससे रेशम का दुख देखा ना जाता और वह उसे अपने घर बुलाने की जिद करने लगी सारंग को रेशम के लिए हमेशा डर लगा रहता था उसे लगता था कि उसके ससुराल वाले उसे मार ना डाले परंतु उसकी बातों को रेशम हमेशा हंसी में उड़ा देती थी। परंतु रेशम दूरदर्शी होने के कारण उसे मना कर देती हैं उसे यह पता था कि अगर वह इस घर से चली गई तो उसका हिस्सा भी उसे नहीं मिलेगा परंतु रेशम का अंत बहुत ही दर्दनाक था। इस पितृसत्तात्मक समाज ने मर्यादाओं के विरुद्ध जाने के कारण उसे मौत के घाट उतार दिया रेशम अपने जीवन के द्वारा आने वाली पीढ़ी को एक सन्देश देना चाहती थी ताकि वह इन दकियानूसी रीति रिवाजों का विरोध कर सके लेकिन वह इसमें सफल ना हो सकी।

[35]मैत्रेई पुष्पा चाक राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली 2016 पृष्ठ संख्या 18

5.17 लौंगश्री बीबी

मैत्रेई पुष्पा के उपन्यास चाक में एक और दबंग नारी का चित्रण किया है उसका नाम लौंगश्री बीबी है। वह सदा ही अपने पीहर में रही है अपने परिवार में अकेली वारिस है और कद काठी ऐसी जैसे कि कोई जल्लाद। मैत्रेई पुष्पा लौंगश्री बीबी के बारे में बताते हुए लिखती हैं कि ''उम्र से अधेड़ क्या, उम्र ढलान पर है। मझोला कद और चेहरा मोहरा ब्राह्मणत्व से भरा हुआ– चंदन की गोल बिंदी लगी रहती है माथे पर, यह बात अलग है कि बोलते समय आगे के दो लंबे–लंबे दांतों के बीच से थूक के छींटे उड़ते हैं, होठों से लार चाशनी की तरह चिपकती है।"[36] लौंगश्री बीबी और उनकी मां की कभी नहीं पटी उनकी मां रात के अंधेरे में किसी अन्य आदमी से मर्द का भेस बनाकर मिलने जाती हैं परंतु लौंगश्री बीबी की नजर में नारी का चरित्र ही सबसे महत्वपूर्ण है, जिसमें वह अपनी मां को भी नहीं बख्शती हैं। वह अपनी मां को उस आदमी से मिलने की वजह से मारती पीटती है। लौंगश्री बीवी मजबूत कद काठी की औरत हैं, श्रीधर उनमे अपनी मां को देखता है।

5.18 खेरापतिन दादी

खेरापतिन दादी गांव की एक ऐसी बूढी दादी की कहानी है जिसकी पूरी जिन्दगी पुरोहिताई करने में बीत गई। वह गांव में करुण कथाएं और गीत कहानियां सुनाती हैं वह किसी की भी अकाल मृत्यु को उसकी किस्मत पर मढ देती है परंतु उनके सजल नेत्र और रूंधे गले से जब वह गाती हैं तो आहिस्ता आहिस्ता उनका धीरज खत्म होता चला जाता है। परंतु नई पीढ़ी इन गीत कथाओं और किस्से कहानियों पर विश्वास नहीं करती जिसकी वजह से उनकी लोग उनका मजाक उड़ाते हुए कहते बूढ़े सठिया गए हैं खेरापतिन दादी का चित्रण एक महत्वपूर्ण चित्रण है इस उपन्यास का क्योंकि पूरे उपन्यास में कहानी के साथ–साथ लोकगीत कथाएं भी हैं जो कि पाठक के मन को छू लेती हैं।

5.19 हुकुम कौर

हुकुम कौर जो कि रेशम की सास है अपने बेटे की मौत का पूरा दोष अपनी बहू पर मढ़ देती है विधवा बहू रेशम के पति की मृत्यु के बाद गर्भवती होना हुकुम कौर को अपनी इज्जत पैर दाग की तरह लगा और वह कहती है की नकटी, निर्लज्ज बहू के कुकर्म को आसानी से या धौंस में आकर स्वीकार नहीं करूंगी कड़े रुख के साथ मिसमिसाई और गाली देते हुए रेशम को बहुत बुरा भला सुनाया। परंतु वह अपने घर की लाज और सम्मान के खातिर अपनी बहू का विवाह अपने दूसरे बेटे के साथ करवाना चाहती थी परंतु रेशम ने साफ मना कर दिया हुकुम कौर का चित्रण उपन्यास में मैत्रयी जी ने गांव की उस नारी के रूप में किया है जिसके लिए सिर्फ अपना परिवार और उसका सुख दुख

[36]मैत्रेई पुष्पा चाक राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली 2016 पृष्ठ संख्या 227

ही मायने रखता है परंतु नारी होकर के भी दूसरी नारी की पीड़ा को ना समझना हुकुम कौर के चित्रण में साफ नजर आता है।

5.20 कलावती चाची

उपन्यास का एक और मुख्य पात्र कलावती चाची का है जोकि कैलाशी सिंह जैसे पहलवान की खोई हुई मर्दानगी को वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कलावती चाची अधेड़ नहीं बल्कि ढलती उम्र की एक औरत है परंतु कैलाशी सिंह पहलवान को अखाड़े में जीत दिलाने के लिए उसे अपने अंदर के मर्द को पहचानना जरूरी था जिसमें वह शायद कमजोर हो चुका था। "कलावती चाची बोली लल्लू भूल जाओ नाते रिश्ते और उम्र का भेद बखत लिहाज का नहीं है।"[37] कलावती चाची के प्रयास से कैलाशी सिंह के अंदर वह मजबूती और मर्दानगी वापस लौटी और उसने अखाड़े में जीत हासिल की इस पात्र के द्वारा मैत्रेयी जी सिर्फ यह बताने का प्रयास कर रही हैं कि एक नारी ही है पुरुष को उसके मर्द होने का एहसास दिला सकती है और उसकी खोई हुई इच्छाओं को वापस ला सकती है।

जैनेंद्र

जैनेंद्र जी एक मनोविश्लेषण वादी उपन्यास कार थे जिन्होंने मानव के मस्तिष्क में चल रहे उतार–चढ़ाव को समझ कर लेखन किया। इसी प्रकार नारी जीवन पर भी उन्होंने कई मनोविश्लेषण उपन्यासों को रचा है जैनेंद्र जी के कई उपन्यास आजादी से पहले आए और कई उपन्यासों को उन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात लिखा जिसमें से उनका उपन्यास सुखदा पूरी तरह से नारी जीवन पर आधारित है।

जैनेंद्र को पढ़ने के बाद यह पता चलता है कि उनके उपन्यास कुछ जटिल हैं उनके उपन्यास साहित्य में अंतर्द्वंद बना रहता है। जैनेंद्र के उपन्यास प्रारम्भ से ही जटिलता रही है स्त्री मन को के कई कथाकार बसे हुए हैं इसलिए स्त्री अस्मिता के विमर्श में उनकी स्त्रियों के प्रति दृष्टि को समझना सरल हो जाता है। जैनेंद्र कुमार ने ऐसे ही अपने उपन्यासों में नारी को केंद्रीय स्थिति नहीं दी बल्कि उन्होंने हमेशा ही अपने उपन्यासों के द्वारा नारी के अधिकार और दायरे की बात की है नारी समस्याओं को समझने के लिए उन्होंने प्रेमचंद्र जी के उपन्यासों से प्रेरणा प्राप्त की है और नारी के अंतर्मन में उतर कर उसकी पीड़ा को और उसके आंसुओं को समझने का प्रयत्न किया है जैनेंद्र जी ने अपने उपन्यास में नारी को ताउम्र ही आधार बना के रखा है।[38]

---

[37] मैत्रेई पुष्पा चाक राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली 2016 पृष्ठ संख्या 104

[38] रोहिणी अग्रवाल. हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ. राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली. 2015 पृष्ठ संख्या 39

5.21 सुखदा

सुखदा उपन्यास की नायिका सुखदा अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करके क्रांतिकारी दल में शामिल हो जाती है परंतु समाज के लिए ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी अपराध में शामिल हो गई है और जीवन के अंतिम मोड में वह अकेली और निर्जन वियोग में असाध्य रोग को के दर्द को झेलते हुए किसी गलत कार्य का प्रायश्चित कर रही है। इस उपन्यास में उसके पति कांत और उसका व्यवहार परस्पर विपरीत युगल की कल्पना है पति का व्यक्तित्व शांत सरल निष्कपट और उदार है इसके विपरीत उसकी पत्नी सुखदा का व्यक्तित्व स्वतंत्रता विद्रोहिणी जिसके लिए अपने परिवार के दायित्वों से ज्यादा महत्वपूर्ण समाज के दायित्वों को पूर्ण करना है।

सुखदा एक ऐसी नारी की कहानी है जिसकी जिसके मन में अपने भविष्य और वर्तमान को लेकर के बहुत सी कल्पनाएं थी वह ऊंची कल्पनाओं के जरिए देश और समाज में अपना नाम बनाना चाहती थी। सुखदा अपने माता–पिता की इकलौती संतान थी जिसके कारण माता–पिता से उसे बेहद प्रेम प्राप्त हुआ था उसकी हर ख्वाहिश को उसके माता–पिता तुरंत ही पूरा कर देते थे।

इस उपन्यास में जो नारी पात्र जैनेंद्र जी ने रचा है वह एक ऐसी महत्वाकांक्षी नारी है जोकि अपने समाज में स्त्रियों की प्रतिनिधि बनकर क्रांतिकारियों के साथ मिलकर यह बताना चाहती है कि स्त्रियां इस देश में नगण्य नहीं है बल्कि वह अपने समाज के लिए उतनी ही चिंतित हैं जितना कि वह अपने परिवार के लिए है। ऊंची ऊंची उड़ान के सपने देखने वाली सुखदा का विवाह डेढ़ सौ रूपए महीना कमाने वाले व्यक्ति कांत के साथ हो जाता है तो मानो जैसे उसके सारे सपने धराशाई हो जाते हैं उन सपनों को फिर से बटोरने के लिए वह राजनीति में भाग लेने के लिए और अपने क्रांतिकारी विचारों को समाज सम्मुख रखने के लिए घर से बाहर निकल पड़ती है।

सुखदा एक ऐसी नारी है जो स्त्रियों के स्वतंत्र अस्तित्व पर विश्वास रखती है परंतु नारी को समाज में सम्माननीय दर्जा दिलाते दिलाते वह अपने पति और बच्चे को कहीं पीछे छोड़ देती है सब परिस्थितियों के कारण वह स्वयं भी बहुत दुखी रहने लगती है वह इस स्थिति का निदान करना चाहती है परंतु कहीं ना कहीं उसका के आड़े आ जाता है।

सुखदा अपने पति में भी वह सारी खूबियां देखना चाहती थी जैसा कि वह सोचती थी परंतु पति के बेहद शांत स्वभाव के कारण उसमें पौरुषता की कमी उसे नजर आने लगी थी धीरे–धीरे वह अपने पति से दूर होने लगती है और अपने क्रांतिकारी विचारधारा को लेकर के उन दलों के सदस्य बनने के साथ–साथ उपाध्यक्ष और बहुत से महत्वपूर्ण पदों पर दायित्व उठा लेती है। वह समाज के लिए एक अच्छा उदाहरण बन कर सामने आती है परंतु कहीं ना कहीं वह घर और बाहर दोनों के बीच संघर्ष करने लगती हैं पति के प्रति उसका रवैया और लाल जिसे वह कहीं ना कहीं मन में प्रेम

करने लगती है दोनों के बीच फंस जाती है। अंत में जैनेंद्र जी ने इस उपन्यास में सुखदा के आत्म संघर्ष में जीवन का चित्रण किया है उसमें वह सुखदा जो चाहती थी, वह पाने की कोशिश में अपने परिवार से दूर होती दिखाई देती है और कहीं ना कहीं इस उपन्यास के अंत में वह अपने आप को अपने पति से दूर होने के लिए अपने आप को दोषी मानती है।

सुखदा कहती है "अस्पताल में हूं, अकेली हूंद्य बस एक नौकर साथ में है, बच्चे हैं, पति हैं, पर वह सब दूर हैद्य उनकी याद करते डर होता है। किस मुंह से याद करुँ। उन्हें अपने ही हाथों मैंने हटाकर दूर कर दिया है, अपने ही हाथों मैंने अपना अभाग्य बनाया है। कभी मेरी सोने की गृहस्थी थी, अब ठौर का भी ठिकाना नहीं है। सब उजड़ चुका है और अपने ही कर्मों मैंने उजाड़ा है आज यद्यपि मैं जानती हूं कि मुझे छोड़ और कुछ भी नहीं बिगड़ा है, वह गृहस्थी लहलहाती हुई आज भी जुड़ सकती है पर हाय मैं उसी के योग्य होती तो.... ।"[39]

राजेंद्र यादव

हिंदी उपन्यास में राजेंद्र यादव जी का नाम महत्वपूर्ण रहा है उन्होंने कई उपन्यासों को रचा है जिसमें कई नारी पर आधारित हैं जिसमे राजेंद्र जी ने अनदेखे अनजाने पुल की निन्नी का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया है।

5.22 निन्नी

अनदेखे अनजाने पुल की निन्नी जो कि इस उपन्यास की मुख्य नायिका है। पूरा उपन्यास उसके अंतर्मन में चल रहे द्वंद पर आधारित है ईश्वर ने उसको मध्यवर्गीय परिवार में जन्म दिया और उसको कुरूप बनाया अपनी कुरूपता और कालेपन के कारण मिनी को समाज की दकियानूसी सोच को झेलते हुए अपने मन की लड़ाई को इस कहानी के द्वारा राजेंद्र यादव जी ने बताया है।

इस कहानी की शुरुआत में ही निन्नी के मन में कई विचार उत्पन्न हो रहे थे जो की पूरी तरह से उसके रूप और रंग पर ही आधारित है निन्नी दिल्ली अपने भाई के साथ घूमने जाती हैं भाई के दोस्त कहां के यहाँ रुकने के विचार से वह अपने मन में बस यही सोच रही है की दादा के दोस्त उससे देख कर क्या सोचेंगे कि यह लड़की कितनी कुरूप है अपने रंग कुरूपता को लेकर उसके मन में उलझन बनी हुई थी।

रंग और रूप के कारण निन्नी हीनबोधता का शिकार होती चली जा रही थी उसके जीवन में जैसे एक स्थिरता सी आ गई थी बचपन से ही उसके रंग और रूप के कारण वह घर वालों के दया पात्र बन गई थी उसे समाज नकार दिया था

[39]जैनेंद्र कुमार. सुखदा. भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली. 2014 पृष्ठ संख्या 9

लोग उसे देखकर अजीब अजीब सी सोच रखते थे उसके अंदर का आत्मविश्वास जैसे खो ही गया था उसको हमेशा ही अपने बारे में कुछ ना कुछ गलत ही सुनने को मिलता था निन्नी पढ़ी लिखी थी पर कहीं ना कहीं अपने रंग और रूप को लेकर के वह सिमटी सी रहती थी वह हर वक्त सिर्फ यही सोचती रहती थी कि कोई उसके बारे में क्या सोचेगा।

दिल्ली में वह दर्शन के यहाँ रुकी धीरे–धीरे उसे दर्शन के प्रति प्रेम की अनुभूति होने लगी वह दर्शन को मन ही मन प्रेम करने लगी क्योंकि दर्शन उसकी कुरूपता और उसके काले रंग को बिल्कुल भी महत्व नहीं देता था।

निन्नी को दर्शन का कार्य करने में अच्छा लगने लगा था वह दर्शन के कमरे को साफ करती थी उसके लिए चाय और खाना भी बनाती थी वह मन ही मन उसे अपना समझने लगी थी वह यह जानती थी कि दर्शन को रूप और रंग से कोई मतलब नहीं है उसे तन से ज्यादा मन की सुंदरता दिखती है और वह चुपचाप दर्शन और दादा की बातों को सुना करती थी वह दर्शन से प्रेम करने लगी थी पैर उससे कभी कह नहीं पाई क्यूंकि एक दिन दादा और दर्शन की बातों से उसे पता चला कि वह किसी और से प्रेम करता है।[40]

यह सुनने के बाद रात भर निन्नी सो नहीं पाई उसकी पूरी रात करवट और विचारों में ही बीत गई "उसे रह–रहकर यही धिक्कार और आश्चर्य हो रहा था कि इस तथ्य को वह कैसे भूल गए कि वह चित्रकार है ऐसा कलाकार है जो रूप को दृश्य सौंदर्य को पहले देखता है उसे माध्यम बनाने या उसके पास जाने की बात तो उसके लिए बाद में आती है शायद वह गंदे पुल से होकर किसी भी सौंदर्य लोक में जाना गंवारा ना करें गंदा पुल अर्थात कुरूप निन्नी काली और बदसूरत।"[41]

दुखी होकर निन्नी अगले दिन वापस अपने घर चली गई परंतु दर्शन को उसने अपने मन में इतना बसा लिया था कि वह उसे भूलने के लिए तैयार ही नहीं थी धीरे धीरे दर्शन के साथ उसका पत्रों का सिलसिला शुरू हुआ वह दर्शन को पत्र लिखने लगी जिसके जवाब में दर्शन भी उसे पत्र लिखता था। एक दिन जब काफी समय बाद उसको दर्शन का पत्र मिला तो उसे पता चला कि दर्शन ने विवाह कर लिया है निन्नी पूरी तरह से टूट गई थी।

अपने जीवन से हताश होकर निन्नी ने कई बार तो मर जाने की भी कोशिश की उसको अक्सर लगता था कि इस कुरूपता के कारण वह ना तो कभी किसी से प्रेम कर पाएगी और ना ही वह अपना घर बसा पाएगी। इन सब चीजों से तंग आकर वह अपने आप को कष्ट देना शुरु कर देती है धीरे–धीरे वह बीमार पड़ने लगती हैं और वह अपने कुरूप शरीर को नष्ट कर देना चाहती है।

---

[40]राजेंद्र यादव. अनदेखे अनजाने पुल. अक्षर प्रकाशन दिल्ली. 1969 पृष्ठ संख्या 165

[41]राजेंद्र यादव. अनदेखे अनजाने पुल. अक्षर प्रकाशन दिल्ली. 1969 पृष्ठ संख्या 166

इसमें निन्नी के रूप में राजेंद्र यादव जी ने ऐसी नारी का चित्रण किया है जो मन से और अपने विचारों से कितनी भी सुंदर क्यों ना हो पर समाज के लिए आज भी रंग और रूप महत्वपूर्ण है नारी अगर काली और कुरूप है तो समाज हमेशा उसे हेय दृष्टि से ही देखता है।

5.23 निन्नी की छोटी बहन संध्या

निन्नी की रिश्ते में छोटी बहन का नाम संध्या था वह बेहद सुंदर गोरी गहरी नीली आंखें और गुलाबी रंग लिए थी उसकी सुंदरता से जैसे पूरा घर जगमगा सा सा जाता था उसके नाक नक्श भी बहुत सुंदर थे वह निन्नी के साथ ही उसके कॉलेज में पढ़ती थी परंतु पढ़ाई में वह अच्छी ना थी नए नए फैशन करना और सिनेमा में रुचि रखना उसे बहुत अच्छा लगता था।

निन्नी हमेशा सोचती थी कि काश भगवान उसे संध्या से आधी ही सुंदरता उसे दे देता संध्या को जो भी देखता उसकी सुंदरता की तारीफ करता था निन्नी ने देखा की संध्या बैजल के साथ कुछ अलग ही व्यवहार कर रही है संध्या और बैजल एक दूसरे से प्रेम करते थे बैजल संध्या की सुंदरता की तारीफ किया करता था।

राजेंद्र यादव जी ने संध्या के रूप में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है जो कि बेहद सुंदर है और उसका एक प्रेमी भी है जो उससे बहुत प्रेम करता है परंतु संध्या पढ़ने में इतनी अच्छी नहीं है जितनी की निन्नी है परंतु निन्नी अपने काले रंग और कुरूपता के कारण अपने आत्मविश्वास को खोती हुई नजर आती है।

कमलेश्वर

काली आंधी उपन्यास कमलेश्वर जी का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें उन्होंने नारी के जीवन के उस पहलू का वर्णन किया है जिसमें नारी घर और बाहर दोनों में भूमिका अदा करती है। इस उपन्यास की रचना इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल में की गई थी जो कि खुद भी एक सशक्त महिला थी जिन्होंने राजनीति में बहुत ही सशक्त भूमिका अदा करी थी आज भी इंदिरा गांधी जी का नाम आत्मनिर्भर और देश के लिए कार्य करने वालों में लिया जाता है इस उपन्यास पर 1975 में हिंदी फिल्म आंधी भी बनी थी।

5.24 मालती

इस उपन्यास में कमलेश्वर जी ने केंद्रीय भूमिका पर नारी को रखा है उन्होंने उस समय की राजनीति के उस चेहरे को अपने उपन्यास में चित्रित किया जो कि वास्तविकता के बहुत ही करीब था। इंदिरा गांधी के जीवन से प्रेरित इस कहानी में मालती नाम की नारी का चित्रण है जिसने कि आत्मविश्वास के साथ अपने उद्देश्य और अपने कार्यों को महत्व दिया प्राथमिकता दी भले ही इन सब चीजों के कारण वह अपने व्यक्तिगत जीवन अपने परिवार से दूर होती चली

गई परंतु समाज में कुछ करने के लिए औरत की स्थिति को मजबूत करने के लिए उसने अपने रास्ते अलग कर लिए। एक के बाद एक वह सफलता की सीढ़ी चढ़ती चली गई छोटे चुनावों से लड़ते–लड़ते बड़े लोकसभा चुनाव तक और आखिर में उसे जीत मिली भले ही राजनीति के गंदे चेहरे ने उसकी विपरीत पार्टियों ने उसके खिलाफ और उसको दबाने के लिए कई अखबारों में अफवाहों को जरिया बनाया उसके और उसके पति को लेकर बहुत सी मनगढ़ंत बातों को रखा परंतु इससे मालती की शक्ति टूटी नहीं।

कमलेश्वर ने पूरे उपन्यास में मालती के व्यक्तित्व को ही प्रस्तुत किया है मालती जब राजनीति में प्रवेश करती है उस समय उसे हिचकिचाहट जरूर होती है परंतु उसे धीरे–धीरे सफलता प्राप्त होने लगती हैं मालती कभी भी राजनीति में असफल नहीं हुई जिस भी क्षेत्र में वह कार्य करती थी वह हमेशा ही सफल बनता था। वह समाज में अपने आपको नारी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना चाहती थी मालती औरतों को संबोधित करते हुए कहती हैं "आप बहने कहती हैं आपको वक्त नहीं मिलता मैं खुद कभी नहीं कहती कि आप अपने घर परिवार और पति की खुशियों की कीमत पर राजनीति का काम करें यह जरूरी है कि परिवार और पति की पूरी परवाह की जाए समाज की खुशी का असली आधार यही है।"[42]

राजनीतिक जीवन में मालती सफल होती चली गई परंतु परिवार पति और बेटी से वो अलग हो गई जग्गी बाबू जोकि मालती के पति थे वैसे तो कमलेश्वर जी ने जग्गी बाबू का चित्रण समझदार और सूझबूझ वाले व्यक्ति के रूप में किया है। परंतु जैसे–जैसे मालती का राजनीति में दर्जा बढ़ता ही चला गया वैसे–वैसे जग्गी बाबू पीछे छूटते चले गए मालती को देश की औरतों के लिए एक मिसाल बनाने वाले जग्गी बाबू को धीरे–धीरे राजनीति से नफरत सी होने लगी शायद उन्हें मालती का इतना व्यस्त रहना पसंद नहीं आया।

जग्गी बाबू एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे और उन्हें कतार में पीछे चलना पसंद नहीं आया। पहले वह मालती के साथ चलते थे धीरे–धीरे वह उनके पीछे चलने लगे और एक समय ऐसा आया जब वह गायब ही हो गए। मालती राजनीति में इतना व्यस्त हो गई कि जग्गी बाबू कब पीछे छूट गए उन्हें पता ही नहीं चला उन्होंने अपनी बेटी का उत्तरदायित्व उनके पिता को सौंप दिया। देखा जाए तो कमलेश्वर जी ने जिस नारी शक्ति का चित्रण इस उपन्यास में किया है उसने प्राचीन समय से रह रही चारदीवारी में औरत को घर से बाहर ले जाकर कार्य करने और राजनीति जैसे बड़े प्लेटफार्म को देना उचित समझा। जबकि इस उपन्यास के बाकी सारे चित्रण पुरुष ही हैं एकमात्र मालती जिसके चारों तरफ उसके साथ कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं के रूप में पुरुषों को प्रधानता मिली है।

[42]कमलेश्वर. काली आंधी. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 13

समाज में अगर स्त्री कुछ करना चाहे तो कई लोग उसके विपरीत खड़े हो जाते हैं ऐसा ही कुछ मालती के साथ हुआ राजनीति के गंदे खेल में मालती भी कहीं फस गई विपरीत पार्टी वालों ने मालती के खिलाफ बहुत सी कहानियां गढ़ डाली उस पर बहुत से आरोपों को मढ़ दिया जिसके बाद मालती थोड़ा सा सकपकाई परंतु डरी नहीं, उसने पहले से ही शायद समझ रखा था कि जिस प्रकार की राजनीति हमारे देश में चलती है यह सब होना तो स्वाभाविक ही है इसलिए उसने संयम से काम लिया और अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं को भी समझदारी से कार्य लेने की प्रेरणा दी।[43]

राजनीति में तो मालती ने बहुत से चुनावों को जीता था परंतु व्यक्तिगत जिंदगी में बहुत कुछ हार चुकी थी मैं अपने जीवन की सार्थकता कार्य करने में ही मानती थी परंतु इसके कारण उन्होंने अपने पति और अपनी बेटी दोनों को खो दिया था। जब मालती की रैली को लिली ने दूर से देखा तो उसने अपने पिता से पूछा कि यह कौन है? तो जग्गी बाबू ने बड़ी ही सरलता से उन्हें एक लीडर के तौर पर अपनी बेटी से पहचान कराई अगले दिन वह उनका ऑटोग्राफ लेने गई तो मालती जी उसे पहचान नहीं पाई। बाद में जब उन्हें पता चला कि वो लिली उनकी बेटी थी तो वह अपने अपने आंसुओं को रोक नहीं पाई और उन्होंने अपनी बेटी को अपने पास देख कर के उसे बहुत ही प्यार किया परंतु लिली को यह नहीं पता था कि यह मेरी मां है।

चुनाव जीतने के अगले ही दिन मालती को दिल्ली जाना पड़ा शाम को जब मालती ने जग्गी बाबू से पूछा कि क्या आप उन्हें दिल्ली स्टेशन तक छोड़ने चलेंगे तो जग्गी बाबू ने मना कर दिया उन्होंने कहा कि कल लिली को भी अपने स्कूल वापस जाना है और बड़ी ही सहजता से जग्गी बाबू मालती से बोले ''देखो मालती जिंदगी में हर चीज नहीं मिलती आदमी को चुनाव करना पड़ता है कि उसे क्या चाहिए इस चुनाव में जो चीजें पीछे छूट जाती हैं उनके लिए दुख नहीं करना चाहिए तुमने जो ठीक समझा उसे चुन लिया मैंने जो ठीक समझा चुन लिया।"[44] मालती बहुत ही सुलझी हुई नारी थी उसने कहा मुझे किसी भी चीज का पछतावा नहीं है। अगले दिन मालती और लिली दोनों स्टेशन पहुंची दोनों की ट्रेनें विपरीत दिशा में आने वाली थी मालती बस जी भर के अपनी बेटी को देखना चाहती थी उसने अपनी बेटी को देखा उसको प्यार किया और बहुत रोई फिर धीरे से वहां से चली गई।

कमलेश्वर जी ने इस उपन्यास का अंत बहुत ही सुंदर किया है उन्होंने मालती को अपना रास्ता चुनते और जग्गी बाबू को अपना रास्ता चुनते दिखाया है मालती ने अपने कर्म को ही अपना मकसद बनाया और उन औरतों के लिए मिसाल बन गई जिसका एक रूप इंदिरा गांधी में भी दिखाई देता है।

---

[43] कमलेश्वर. काली आंधी. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 76

[44] कमलेश्वर. काली आंधी. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 118

अमृत लाल

अमृत लाल जी के उपन्यासों में नारी के चित्रण में समर्पण मानवीयता और एकनिष्ठा को दर्शाया गया है। अमृतलाल नागर जी ने कई विषयों पर उपन्यासों को लिखा है इसमें स्त्रियों का विषय भी एक महत्वपूर्ण विषय रहा है जिस पर अमृतलाल नागर जी ने विशेष प्रभाव डाला है।उनके कई उपन्यासों में नारी विषय की प्रमुखता रही है जिसमें एक उपन्यास अग्निगर्भा एक ऐसा उपन्यास है जिसमें पढ़ी लिखी महत्वाकांक्षी नारी की चित्रण है। जो कि अपने लिए बहुत सपने संजोती है अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है और इस दौरान आने वाली कठिनाइयों और उनसे लड़ते हुए उस नारी को अंत में मंजिल का न मिलना पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति को दर्शाता है अमृत लाल जी के उपन्यासों के सबसे बड़ी खूबी उनके उपन्यास की शिक्षित नारी ही है जो कि समाज के प्रभाव के कारण दब तो सकती है पर मिट नहीं सकती।

5.25 सीता

सीता एक पढ़ी–लिखी और एक महत्वाकांक्षी लड़की थी जिस तरह से सभी लड़कियां पढ़ लिख कर के एक अच्छी नौकरी की चाह करती है। उसी प्रकार सीता ने भी एक अच्छी नौकरी के साथ एक अच्छे जीवन की कल्पना भी की थी परंतु गरीबी के कारण सीता के पिता उसे आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे पर वह उसे नौकरी के लिए जरूर प्रेरित करते थे क्योंकि उन्हें ऐसा लगता था जैसे कि अगर लड़की नौकरी कर रही है तो दहेज नहीं देना होगा अर्थ के अभाव के कारण घर की परिस्थितियां सीता की कल्पनाओं के एकदम विपरीत थी। सीता हमेशा से ही कक्षा में अव्वल आते रहे वह एक महत्वाकांक्षी नारी थी परंतु अपने पिता के हठ के कारण टूट चुके थे मैं अपनी सहेली से कहती है की "भाग्य ने तेरे बप्पा के समान मुझे पापा नहीं दिए उनके विचित्र प्रकार के निर्णय मान्यताओं और हठ क्रोध से सारा घर किसी न किसी प्रकार से संत्रस्त है।"[45]

उसे जब पता चला की डी डी एम कॉलेज में एक लेक्चरर की जगह खाली है तो वह उसके लिए तैयारी करने लगी उसी दौरान उसकी मुलाकात रामेश्वर नाम के व्यक्ति से होती है जोकि बेहद लालची और मतलबी था परंतु उसने अपने अच्छी बातों से सीता को बहला लिया था सीता उसकी बातों से उसकी तरफ आकर्षित होने लग गई और धीरे–धीरे दोनों में प्रेम हो गया। सीता उससे विवाह करना चाहती थी और रामेश्वर की उससे विवाह करना चाहता था परंतु रामेश्वर के पिताजी और उसके घर वाले इस विवाह के लिए बिल्कुल भी तैयार न थे क्योंकि सीता बहुत ही गरीब परिवार से थी और रामेश्वर के परिवार वाले बेहद लाल जी वह रामेश्वर का विवाह वहां करना चाहते थे जहां से उन्हें दहेज मिल सके परंतु सीता के परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी ना थी कि वह उसे दहेज दे सकते किसी तरह से दोनों

[45]अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 5

पक्षों के बीच बीस हजार को लेकर के बात तय हो गए सीता और रामेश्वर का विवाह हो गया परंतु रामेश्वर बहुत ही लालची व्यक्ति था सीता की कमाई का एक रूपया भी वह सीता को खर्च नहीं करने देता।[46]

एक दिन जब सीता का भाई बीमार पड़ा उसने उन्हीं सात सौ रुपयों में से उसे अपनी मां को दो सौ रूपए उधार दे दिए जो कि रामेश्वर ने उसके पास रखवाये थे इतनी सी बात को लेकर रामेश्वर उससे इतना ज्यादा नाराज हो गया जिसकी वजह से सीता का की उसने बहुत बेइज्जती की वह यह सोचने लगी कि वह भी तो पैसे कमाती है तो अपने रुपयों से क्या अपने परिवार वालों की मदद नहीं कर सकती परंतु रामेश्वर इतना लालची व्यक्ति था कि उसने उससे कहा कि तुम्हारी कमाई का सारा पैसा मेरे दहेज का ही है।

इस बात ने सीता को इतना दुखी कर दिया कि वह यह सोचने पर मजबूर हो गई कि दहेज के कारण कोई स्त्री किसी एक तरह का दुख पाती है तो कोई किसी दूसरे तरह का यह सारे दुख अत्याचार निरीह स्त्री जाति पर ही हो रहे हैं पुरुषों पर नहीं होती रहे हैं रामेश्वर को समझने के बाद सीता उसका घर छोड़ देती है और अपनी एक अलग दिशा में निकल जाती है।

सीता की छात्रा सरोज सीता से कहती है "क्या समाज में सदा से ही स्त्री इतनी ही पीड़िता है दीदी।"[47] यह बात सीता को अंदर तक झकझोर देती है और उसके अंदर एक अलग सी उत्तेजना आ जाती है एक दिन क्लास में मनुस्मृति को पढ़ाते समय स्त्रियों को दिए जाने वाले पर सीता बहुत ही उत्तेजक प्रहार करती है जिससे कि कक्षा की लड़कियों में एक लहर सी दौड़ जाती है और वह अन्याय के विरुद्ध लड़ने के तैयार हो जाती हैं सीता समझ जाती है कि जब तक अबला नारियों का एक संगठन नहीं बनेगा तब तक समाज में वह विस्फोट नहीं हो सकता जिसे वह बढ़ाना चाहती है।[48]

सीता अपनी प्रभावशाली लेखनी से उन घरों और पुरुषों के खिलाफ लिखना प्रारंभ कर देती है जिन्होंने नारी को दहेज प्रथा अन्य किसी भी कारण से उन पर अत्याचार किया हो इसमें वह अपने ससुराल वालों के खिलाफ भी लिखती है और बिना किसी से डरे हुए महिलाओं के खिलाफ होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध आंदोलन कर बैठती है। इसी बीच एक स्मगलर को शायद उसका इतना मुखर होना पसंद नहीं आता है और वह उसे गोली से मार देता है सीता के मर जाने के बाद यह उपन्यास यहीं खत्म हो गया परंतु नारी की लड़ाई यहां खत्म नहीं होती है।

---

[46] डॉ रामविलास शर्मा, डॉ शरदनागर, अमृतलाल नागर रचनवाली, राजपाल एंड संस दिल्ली, 1991 पृष्ठ संख्या 50

[47] अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 131

[48] अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 136

5.26 मैत्रयी

अग्नि गर्भा कहानी तीन सहेलियों की है जिसमें मुख्य भूमिका में सीता है और उसकी बहुत ही अच्छी सहेली मैत्रयी है मैत्रयी समाजशास्त्र में स्नातक और पीएचडी किए हुए एक पढ़ी–लिखी आत्मनिर्भर नारी है जिसने विवाह अपनी मर्जी से डॉक्टर गोडबोले के साथ किया। विवाह के पश्चात गोडबोले होने के बाद नगर के प्रतिष्ठित समाज में गिनी जाने लगी यहां मैत्रेयि की भूमिका एक अच्छी सहेली और एक अच्छी पत्नी की भी है सीता हमेशा से ही मैत्रयी जैसा ही भविष्य चाहती थी वह उसी के समान आत्मनिर्भर और वैसे ही मनोकामना करती थी मैत्रेयि ने भी हमेशा सीता के सुख और दुख दोनों में उसका साथ दिया जब सीता अपने पति से नाराज होकर उसका घर छोड़कर आई तो मैत्रेयि ने ही उसे सहारा दिया था इस उपन्यास में मैत्रेयि और सीता जैसी आत्मनिर्भर नारियों का जो शिक्षित होने के बावजूद भी समाज में अपनी स्थिति को बरकरार करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है चित्रण है।[49]

सुरेंद्र वर्मा

मुझे चांद चाहिए उपन्यास में वर्मा जी ने जैसा कि उपन्यास के नाम से ही प्रतीत होता है जिसकी मुख्य भूमिका में एक नारी है जिसका नाम सिलबिल, यशोदा तथा वर्षा होता है वर्मा जी ने इस उपन्यास में वर्षा के रूप में नारी के जीवन में आने वाली कठिनाइयों और उन कठिनाइयों से निकलकर अपनी जिंदगी और अपने भविष्य उन्नति की ओर ले जाना। इस उपन्यास का मुख्य विषय है पुरुषों की इस दुनिया में नारी अगर अपनी इच्छाओं के अनुसार चलने का प्रयास करती है तो उसे रोक दिया जाता है दकियानूसी विचारधाराओं के आधार पर ही उसे जीवन यापन करने की स्वतंत्रता होती है परंतु अब नारी इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने वाली थी जिसके कारण से वर्मा जी ने उस नारी के अंदर की महत्वाकांक्षाओं को अपनी मर्जी से अपनी राह को चुने और उसे बेहतर जिंदगी बनाने में उसका प्रयत्न उसकी हिम्मत और उसके सजगता का वर्णन किया है।

5.27 वर्षा वशिष्ठ

यह कहानी वर्षा वशिष्ठ नामक नारी की है जोकि शाहजहांपुर के मध्यमवर्गीय परिवार से संबंधित है 5 बच्चों के साथ शर्मा जी और उनकी पत्नी साथ रहते हैं शर्मा जी स्कूल में संस्कृत के अध्यापक हैं उनकी कमाई इतनी नहीं है कि वह अच्छे से अपना जीवन गुजर–बसर कर सके बड़ी बहन के विवाह में लिया गया लोन चुकाने के लिए भी उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। वर्षा उनकी तीसरी बेटी है यहां वर्षा के व्यक्तित्व को कुछ अलग ही दर्शाया गया है वर्षा का जन्म छोटे घर में जरूर हुआ था परंतु उसके सपने बहुत बड़े थे छोटी सी उम्र में अपने नाम को बदलने से लेकर के

[49]अमृतलाल नागर. अग्निगर्भा. राजपाल एंड संस दिल्ली. 2017 पृष्ठ संख्या 3

फिल्म जगत की एक नामी अभिनेत्री के रूप में वर्षा का सफर बहुत लंबा और बहुत ही खट्टे मीठे अनुभवों से भरा रहा जब उसने अपने नाम को बदल कर लिया तो पिताजी बहुत नाराज हो परंतु वर्षा ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह अपने नाम के साथ साथ अपने जीवन को भी एक नया रूप देगी दिव्या के सहयोग से उसने रंगमंच पर पहला कदम रखा "यह मैं क्या सुन रहा हूं? शर्मा जी दरवाजे पर खड़े थे एक हाथ में छाता दूसरे में थैलाद्य तू नौटंकी में काम कर रही है? कान खोलकर सुन ले, हर बात की हद होती है। आखिर हमारे घर की भी कोई इज्जत है"[50] उसके पिताजी अभिनय के सख्त खिलाफ थे परंतु वर्षा ने उनकी एक न सुनी रंगमंच की दुनिया उसे बहुत भा गई, उसने कई ऐतिहासिक नाटकों में अभिनय किया। अभिशप्त सौम्य मुद्रा उसका पहला नाटक था, जो रंगमंच पर प्रदर्शित हुआ सौम्य मुद्रा की मुख्य भूमिका में वर्षा को सब ने बहुत पसंद किया। धीरे–धीरे वर्षा ने रंगमंच की दुनिया में ही अपने भविष्य को देखना प्रारंभ कर दिया। जो कि पितृसत्तात्मक सोच के आगे रोड़ा बन गई पिताजी और भाई को वर्षा का रंगमंच पर अभिनय करना बिलकुल पसंद नहीं था वह तो उसे आगे पढ़ाना भी नहीं चाहते थे बल्कि छोटी सी उम्र में ही उससे दोगुनी उम्र के व्यक्ति के साथ उसका विवाह करवा कर छुटकारा पाना चाहते थे परंतु वर्षा ने कुछ और ही सोच रखा था। उसने अपने माता–पिता का विरोध किया और रंगमंच को ही अपनी दुनिया बना लिया। इस उपन्यास के तीन खंड वर्मा जी ने लिखें तीनों खंडों में वर्षा के जीवन में आए परिवर्तनों और उड़ानों के बारे में लिखा है। प्रथम खंड में वह अपने परिवार और समाज की दकियानूसी सोच के विपरीत जाकर रंगमंच पर पहला कदम रखती है, वहां पर अपने अभिनय से कई लोगों का दिल जीत कर बड़े–बड़े नाटक प्रदर्शित करती है।

घर से दूर अपनी नई दुनिया बसाने के लिए वर्षा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा दिल्ली में एडमिशन ले लेती है। वहां उसे अपनी कला के कई अच्छे बुरे अनुभवों से गुजरना पड़ा दिल्ली की चकाचौंध वर्षा को अपनी तरफ खींचती है परंतु वह एक ठहराव के साथ कार्य करती है। वह अपने कार्य के प्रति बहुत सजग थी उसे एक के बाद एक उसे कामयाबी मिलती चली गई और उसने दोबारा पीछे मुड़कर नहीं देखा। जबकि एक ऐसे परिवार में जन्म लेने के बावजूद जो बेटियों के घर से बहार निकल कर कार्य करने और अभिनय के बेहद खिलाफ था उसके बावजूद वर्षा ने अपनी शक्ति को पहचान कर अपने रास्ते को चुना उसके पीछे उसके परिवार का कोई सदस्य नहीं था वह अकेले ही अपनी मंजिल को ढूंढने के लिए निकल गई थी जिसमे उसने बहुत हद तक कामयाबी पा ली थी वह एक नामी चेहरा बन चुकी थी। हर्ष के प्रति उसका व्यवहार प्रेम भरा था वह हर्ष की तरफ आकर्षित थी दिल्ली में उसके कई ऐसे मित्र बन गए थे जिन्हें वह कभी नहीं भूल सकती थी उन्होंने हमेशा उसकी मदद करी रंगमंच पर कार्य करते हुए उसे उसकी पहली फिल्म भी मिली धीरे–धीरे फिल्मों के क्षेत्र में भी उसने अभिनय प्रारंभ कर दिया। उसकी शुरुआत आर्ट फिल्मों से हुई उसकी

[50]सुरेंद्र वर्मा. मुझे चांद चाहिए.राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2006 पृष्ठ संख्या18

कामयाबी के बाद उसे व्यवसायिक फिल्में भी मिलने लगी जिसके कारण वह उभरती हुई अभिनेत्री के रूप में अपनी छवि बना सकी इधर घरवालों का रवैया उसके प्रति बहुत बदल गया था परंतु जबतक वह अपने घरवालों के लिए कुछ करती उसकी मां ने उसका साथ छोड़ दिया था। यहां तक पहुंचने के बाद भी वह अपने घर की जिम्मेदारियों से अलग नहीं हुई उसने पूरी तरह से अपने घर की जिम्मेदारियों को उठाया बस तकलीफ थी तो इतनी जिसके साथ उसने अपने भविष्य के सपने सजाए थे। उस हर्ष को वह बचा नहीं पाई थी। जब उसे पता चला कि वह गर्भवती है तो उसने हर्ष के बच्चे को जन्म देने का फैसला किया। वह इस दकियानूसी सामाजिक विचारों के विपरीत जाकर कुँवारी माँ बनने को तैयार थी।

उपन्यास के नाम पर आधारित मुझे चांद चाहिए चांद पाना एक ऐसा उदाहरण है जो असंभव को पाने की चाह रखता है और इसी चाहा की आकांक्षा लिए मन में एक मध्यमवर्गीय साधारण सी दिखने वाली लड़की के अंदर अपने भविष्य को लेकर के एक पागलपन सवार हो गया उसी पागलपन को उसने अपनी शक्ति बनाया और चांद पाने की राह पर निकल पड़ी। कई मुश्किलों का सामना भी उसने किया, परंतु वह डरी नहीं वह हारी नहीं और सिर्फ अपने भविष्य को एक नई राह नहीं चाह देने के लिए उसने सामाजिक पारंपरिक को तोड़ दिया।

"अचानक मुझ में असंभव के लिए आकांक्षा जागी। अपना यह संसार काफी असहनीय है, इसलिए मुझे चंद्रमा, या खुशी चाहिए कुछ ऐसा जो वस्तुतः पागलपन सा जान पड़े। ''मैं असंभव का संधान कर रहा हूं... देखो, तर्क कहां ले जाता है। शक्ति अपने सर्वोच्च सीमा तक, इच्छाशक्ति अपने अनंत छोर तक! शक्ति तब तक संपूर्ण नहीं होती ,जब तक अपनी काली नियति के सामने आत्मसमर्पण ना कर दिया जाए नहीं, अब वापसी नहीं हो सकती मुझे आगे बढ़ते ही जाना है।"[51]

5.28 दिव्या कत्याल

इस उपन्यास में वर्मा जी ने कई नारी पात्रों को रचा है जिसमें वर्षा नाम की नारी को केंद्र में रखा है परंतु उसी केंद्रीय पात्र को प्रभावित करने और प्रेरित करने वाला एक और पात्र दिव्या कत्याल का है जोकि वर्षा के ही स्कूल में मिश्री लाल डिग्री कॉलेज में लखनऊ से आई थी और अंग्रेजी की अध्यापिका थी वह एक बहुत अच्छे परिवार से संबंधित थी और पीएचडी कर रही थी।

वर्षा दिव्या को देखकर हमेशा प्रेरित होती थी दिव्या जब कक्षा में पढ़ा रही थी तो अचानक से वर्षा से उसकी नजरें मिली जिसमें वर्षा रो रही थी दिव्या ने कक्षा के पश्चात उसे बुलाया और उससे उसकी तकलीफ का कारण पूछा वर्षा ने जब

[51]सुरेंद्र वर्मा. मुझे चांद चाहिए.राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2006 पृष्ठ संख्या5

उसे अपने परिवार की परिस्थितियों और उसकी इच्छाओं के विरुद्ध पिता के व्यवहार को दिव्या के सम्मुख रखा तो दिव्या को बहुत तकलीफ हुई परंतु उसने वर्षा को हमेशा हिम्मत दी उसने उसकी आर्थिक सहायता भी की जिसके लिए दिव्या ने वर्षा को कुछ ट्यूशन दिलवाए। दिव्या रंगमंच से जुड़ी थी वह वहां डायरेक्शन का कार्यभार संभालती थी इसमें वह शाहजहांपुर में पहला रंगमंच नाटक प्रस्तुत करना चाह रही थी अभिशप्त सौम्य मुद्रा इस नाटक में वर्षा को सौम्य मुद्रा के पात्र के रूप में प्रस्तुत करना चाह रही थी वर्षा बहुत घबरा गई थी क्योंकि उसने कभी भी कोई प्रदर्शन नहीं किया था परंतु दिव्या ने उसे हिम्मत दी और आगे बढ़ने की राह दिखाई।

वर्षा ने अपने जीवन में बहुत तरक्की की उसकी शुरुआत शाहजहांपुर के रंगमंच से हुई थी जिसका पूरा श्रेय दिव्या को जाता है दिव्या एक पढ़ी–लिखी संपन्न परिवार की नारी थी और दूसरों को हमेशा प्रेरित करती थी इस उपन्यास का यह बहुत ही महत्वपूर्ण पात्र है। क्योंकि इसमें उस नारी का चित्रण है जो समृद्ध होने के बावजूद भी अपने प्रेम के लिए तरसती हैं वह जिस से प्रेम करती थी वह उसे छोड़कर किसी और से विवाह कर लेता है जिसकी तड़प दिव्या के अंदर हमेशा रहती है परंतु घरवालों के दबाव के कारण वह किसी और से विवाह कर लेती हैं और कोशिश करती हैं कि वह उसे पूरी तरह से निभा पाए परंतु उसके मन में कहीं ना कहीं अपने प्रेम के लिए जगह बनी रहती है।

दिव्या ने कभी भी वर्षा का साथ नहीं छोड़ा वह दोनों शिक्षिका और छात्रा के व्यवहार से अलग मित्र बन चुकी थी उनके अंदर मित्रता इतनी थी कि वह एक दूसरे से अपने मन की सारी बातें करती थी वर्षा को अपने जीवन में जब भी कभी कोई भी तकलीफ होती थी तो दिव्या हमेशा उसका साथ देने उसके पास पहुंच जाती थी दिव्या का पात्र नारी के उस रूप का पात्र है जो सब कुछ होते हुए भी अंदर से टूटी हुई है क्योंकि वह जीवन में जिसे अपने भविष्य में अपने साथ देखना चाहती थी उसने ही उसी का साथ छोड़ दिया था।

5.29 वर्षा की मां

वर्षा की मां का पात्र एक ऐसी नारी का पात्र है जो पूरी तरह से अपने पति की इच्छाओं पर निर्भर है वह अपने पति के खिलाफ नहीं जा सकती क्योंकि उसने अपनी सोच को उसके आधारों पर ही ढाल लिया है पुत्री ने जब भी अपने मर्जी से अपने भविष्य को संवारने की बात कही पिता ने हमेशा उसका विरोध किया और मां ने हमेशा पिता का साथ दिया या फिर खामोश रहना ही सही समझा यहां पर सुरेंद्र वर्मा जी ने वर्षा की मां के पात्र में जिस नारी का चित्रण किया है वह पूरी तरह से उन सामाजिक रीति रिवाजों और विचारधाराओं से बंधी हुई है जो कि नारी को घर के अंदर रखने और बाहर निकल कर कार्य न करने से संबंधित है।

5.30 अन्य उपन्यास कारों का नारी के प्रति दृष्टिकोण

हिंदी उपन्यास साहित्य में कई ऐसे बड़े बड़े उपन्यास कारों के नाम है जिन्होंने नारी को अपने उपन्यास में मुख्य स्थान प्रदान किया हैद्य स्वतंत्रता के पश्चात उपन्यास साहित्य में एक लहर सी आ गई थी उपन्यास कारों ने नारी जीवन पर कई उपन्यास लिखे। परंतु 1950 के पश्चात पुरुष उपन्यास कारों की संख्या में महिला उपन्यासकार बहुत कम थी अलग–अलग प्रांतों से कुछ महिला उपन्यासकार नारी के प्रति अपने विचारों को अपने उपन्यासों में जगह दी है।

उषा देवी मित्रा

उषा देवी मित्रा जी ने 1936 से 1955 तक 7 उपन्यासों को लिखा है जिसमें उन्होंने अपने नारी जीवन की समस्याओं को ही सबसे अधिक महत्व दिया है उन्होंने नारी को कई रूपों में प्रस्तुत किया है, जैसे विधवा, वैश्या, परित्यक्ता आदि इनकी सहानुभूति इन सभी पात्रों के साथ है जो कि समाज की उपेक्षिता है। उषा जी ने नारी को स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास में महिमायी शक्ति के रूप में भविष्यसंवारने का प्रयास किया है और अपने उपन्यासों के माध्यम से उनके आदर्श प्रतिष्ठा की है।[52]

उषा देवी मित्रा जी का उपन्यास नष्ट नीड जो कि 1955 में प्रकाशित हुआ था उन्होंने नारी जीवन पर अपने इस उपन्यास के द्वारा प्रकाश डालने का प्रयास किया है इसमें उपन्यास की नायिका सुनंदा को भारत–पाकिस्तान के विभाजन के परिणाम स्वरूप अपने जीवन में आई पीड़ा को सहन करने का चित्रण उषा जी ने किया है प्रारंभ से ही महिला उपन्यास कारों ने नारी के जीवन को ही अपने उपन्यासों में केंद्रीय स्थान दिया है।

रजनी पणिकर

उषा देवी मित्रा की तरह ही रजनी पणिकर का नाम भी महिला उपन्यास कारों में चर्चित है 50 के दशक के नारी उपन्यास कारों ने नारी जीवन पर अपने उपन्यासों को लिखा है। रजनी पाणिकर के उपन्यास काली लड़की जो कि 1958 में प्रकाशित हुआ था उन माता–पिता के अंतर्मन में चल रहे द्वंदों की कहानी है जो कि अपने पुत्री के भविष्य को लेकर के चिंतित हैं और उसमे अगर कोई कमी होती है तो वह और भी चिंतित हो जाते है शरीर के रंग को समाज अधिक महत्व देता है परन्तु इस उपन्यास में रजनी जी ने विचारों को अधिक महत्व दिया है कि रानी के संपर्क में आ कर एक खराब इंसान भी अच्छा बनने का संकल्प कर लेता है।

[52]डॉ रामचंद्र तिवारी हिंदी का गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन 2015 पृष्ठ संख्या 212

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती हिंदी उपन्यास साहित्य में जाना माना नाम है उनके उपन्यास मित्रो मरजानी जो कि 1967 में प्रकाशित हुआ था इसमें नारी के सशक्त व्यक्तित्व का चित्रण है और उसी के द्वारा पारंपरिक नारी जीवन और स्वतंत्रता एवं उसके मूल्य अवधारणाओं पर प्रश्न उठाती हैं।

मन्नू भंडारी

सत्तर के दशक में नारी उपन्यास कारों की एक लहर सी आ गई थी महिलाओं ने उपन्यास साहित्य में अपने विचारों को प्रकट करने के लिए नए–नए लेख लिखना प्रारम्भ कर दिया था नारी उपन्यास कारों में अधिकतर नारी से संबंधित समस्याओं और जटिलताओं का ही वर्णन है सत्तर के दशक की एक महत्वपूर्ण उपन्यासकारा मन्नू भंडारी है जिनका उपन्यास आपका बंटी 1971 में प्रकाशित हुआ जिसमें पारिवारिक जीवन में आई समस्याओं का वर्णन है इस उपन्यास की नारी शकुन अपने संपूर्ण जीवन में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जीवन की समस्याओं विडंबना और दर्द से लड़ती रही है वह अपने अधिकार को पहचानती है और उसके लिए विद्रोह भी करती है परंतु किसी भी प्रकार का समझौता उसे पसंद नहीं है।

मंजुल भगत

मंजुल भगत जी ने अपने लेखन कार्य को 1970 के दशक से प्रारंभ किया उनके कई उपन्यास बहुचर्चित हुए जिसमें अनारो एक ऐसी सबल नारी की कहानी है जिसमें अपने पति के द्वारा अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है पर वह जीवन में टूटती नहीं है बल्कि परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने अधिकारों के लिए लड़ती है।

शशि प्रभा शास्त्री

अस्सी के दशक की एक उपन्यासकार शशि प्रभा शास्त्री के उपन्यास कर्क रेखा जो कि 1983 में प्रकाशित हुआ था में स्त्री पुरुषों के संबंधों की वास्तविकता को दर्शाता है जिसमें मध्यवर्गीय पढ़ी–लिखी सुशिक्षित नारी की कहानी है जिसमें पत्नी तनु के लिए पति का उदासीन व्यवहार उसके एकाकीपन का कारण बनता है और वह उसके सामान्य व्यवहार के लिए तरसती है।

मृदुला गर्ग

महत्वपूर्ण नारी उपन्यास कारों में मृदुला गर्ग का नाम सम्मानित है उन्होंने कई उपन्यासों में नारी चित्रण किया है पर उनका उपन्यास कठ गुलाब जो कि नब्बे के दशक का एक महत्वपूर्ण उपन्यास था उसमें नारी जीवन के कई पहलुओं को उजागर किया है। इस उपन्यास में मृदुला जी ने पांच नारी पात्रों की जिंदगी को रचा है जिसमें उन्हें किसी भी पुरुष साथी की तलाश ना हो करके बल्कि अपने व्यक्तित्व को सशक्त बनाना ही उद्देश्य रहा है। मृदुला जी ने इस उपन्यास में नारी के व्यक्तित्व को सशक्त बनाने में पुरुष को साधन तो बनाया है पर साध्य नहीं। इन नारियों ने अपने चेहरे से उस सामाजिक आदर्शवादी जिंदगी का मुखौटा उतार फेंका जो कि पुरुष मानसिकता ने उन्हें पहना रखा था वह अकेले ही जीवन को जागरूक बनाने और अपने जीवन का चुनाव करने के लिए सतर्क हैं।

मृदुला गर्ग का उपन्यास कठगुलाब स्त्री के दमन शोषण और संघर्ष की गाथा है चाहे वह स्त्री भारतीय हो या विदेशी। उसका कभी आर्थिक और कभी शारीरिक शोषण होता रहा तो कभी बौद्धिक और मानसिक। कठ गुलाब उपन्यास भारतीय आधुनिक स्त्री के संघर्षों को बयां करती है जोकि हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होती है।[53]

निर्मल वर्मा

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सभ्यता और जीवन के मूल्यों में आए बदलाव के कारण नारी के प्रति दृष्टिकोण में भी बदलाव आ गया कई महत्वपूर्ण उपन्यास कारों में निर्मल वर्मा का नाम भी आता है। जिनके 1970 का उपन्यास लालटेन की छत की नायिका काया भी आधुनिक विचारों वाली नारी है जो कि परिस्थितियों के कारण तटस्थता की शिकार होकर डर और एकाकीपन के बीच अपने आप को पति है इसी प्रकार निर्मल वर्मा जी का 1989 का दूसरा उपन्यास रात के रिपोर्टर में भी पारिवारिक जीवन में आई दरारों को दर्शाया गया है जिसमें नायिका उमा अपने पति ऋषि के प्यार को भी वंचित हो जाती है।

समाज धीरे–धीरे प्रगति कर रहा है पढ़ी–लिखी आधुनिक नारी का चित्रण उपन्यासों में होने लगा है जो कि अपने जीवन के लिए निर्णय लेने की क्षमता रखती है इसी प्रकार कई उपन्यासों में नारी के इस चित्रण को भी दर्शाया गया है।

[53]कृष्णा तँवर, स्त्री विमर्श वैचारिक सरोकार और मृदुला गर्ग के उपन्यास, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या 83

गोविंद मिश्र

गोविंद मिश्र हिंदी उपन्यास साहित्य का एक जाना माना नाम है इनका उपन्यास तुम्हारी रोशनी में जो कि 80 के दशक का उपन्यास है इसमें गोविंद जी ने स्त्री पुरुषों के संबंधों को दर्शाया है पढ़े–लिखे सभ्य समाज में रहते हुए भी पति अपनी पत्नी पर कई बंदिशें लगाना पसंद करता है। रमेश और सुवर्णा ऐसे ही आधुनिक शिक्षा प्राप्त दंपत्ति हैं सुवर्णा नौकरी करती है और उसके कई पुरुष मित्र से मित्रता है जिसे पढ़ा–लिखा रमेश पसंद नहीं करता और वह अपनी पत्नी पर बंदिशें लगाना प्रारंभ कर देता है जिसे सुवर्णा सहन नहीं कर पाती और वह अपनी मां के घर चली जाती है वहां पर उसे उसका मित्र अनंत दिलासा देता है उसका साथ देता है जिससे कि सुवर्णा अनंत की तरफ आकर्षित होती है कि वह उसे आत्मीयता से समझता है गोविंद जी ने भी इस उपन्यास में एक पढ़े लिखे समाज की कहानी लिखी है परंतु उसमें भी नारी को नारी को स्वतंत्रता प्रदान नहीं की है वह नौकरी तो कर सकती है परंतु किसी पुरुष के साथ मित्रता नहीं कर सकती पुरुष उसको अपने बंधन में ही बांधना पसंद करते हैं।[54]

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर जी ने जो कि एक मानवतावादी उपन्यासकार माने जाते हैं अपने उपन्यास साहित्य के जीवन में कई उपन्यासों को रचा जिसमें 1992 में रचा गया उपन्यास अर्धनारीश्वर मुख्य नारी समस्याओं और यातना से जुड़ा हुआ था। इस उपन्यास में विष्णु प्रभाकर जी ने हर वर्ग की स्त्रियों की समस्याओं को समाज के सम्मुख रखा है और उसका आत्मीयता से विचार मंथन किया है इस उपन्यास द्वारा स्त्री और पुरुष एक दूसरे के प्रबल आकर्षण से मुक्त हो करके ही अपने पहचान बना सकते हैं यह उपन्यास मुख्यता नारी जीवन में आने वाले कष्टों और समस्याओं का प्रमुख रूप से वर्णन करता है।

सामाजिक यथार्थवादी विचारधारा से प्रेरित यशपाल एक अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासकार थे। अपने समय में उन्होंने बेहतरीन उपन्यासों को रचा है जिसमें कई उपन्यास नारी प्रेरणा लिए हुए हैं उपन्यास तेरी मेरी उसकी बात जो कि 1974 में प्रकाशित हुआ था इस उपन्यास के केंद्र में नारी का सशक्त चित्रण उषा के रूप में यशपाल जी ने किया है जिसमें नारी मुक्ति के संघर्ष को लेकर अपने विचारों को बहुत अधिक ठोस रूप से प्रकट किया है।

समाज में नारी प्रगति की ओर बढ़ रही है 1950 में संविधान के गठन के दौरान नारियों को कई ऐसे अधिकार दिए गए जो कि उनकी स्वतंत्रता समानता पर आधारित है परंतु समाज में नारी को अभी भी अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए जूझना पड़ रहा है। शिक्षा एक बहुत बड़ा साधन है नारी की प्रगति का परंतु हमने कई उपन्यासों में

[54]डॉ रामचंद्रतिवारी. हिंदी का गद्य साहित्य.विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी. 2015 पृष्ठ संख्या 291– 92

शिक्षित नारियों के साथ भी होने वाले शोषण को देखा है इस पाठ में शिक्षित नारियां महानगरीय नारियां गांव के आंचल की नारियां आदि उपन्यासों में चित्रित उपन्यास कारों द्वारा कई नारी पात्रों का विवरण किया गया है जिससे हमें उपन्यासकार के नारी के प्रति मानसिक दबाव का आकलन होता है कि नारी पात्र को रचते समय उनकी मानसिक स्थिति में क्या बदलाव आ रहा था नारी को लेकर के उपन्यासकार कहीं ना कहीं वास्तविक समाज की से प्रेरित है और उन्हीं को अपनी रचनाओं में स्थान देता है।

अध्याय षष्ठ

उपसंहार

उपसंहार

सदियों से लिंग असमानता का प्रश्न समकालीन विमर्शों में सदैव सबसे ऊपर दर्शाया गया है। भारत विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न भाषाओं का देश है जिसमें हर प्रकार की भाषा के उपन्यासों में नारी के प्रश्न को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है जिसमें हिंदी भाषा में भी लिखे गए उपन्यासों में नारी की असमानता के प्रश्न को सर्वोपरि माना गया।

उपन्यास में हम मानव चरित्र का अध्ययन करते हैं। प्रारंभिक उपन्यासों में चरित्र चित्रण को कोई विशेष महत्व नहीं था। परंतु धीरे–धीरे उपन्यास मानव जीवन के अध्ययन की ओर उन्मुख हुआ और आधुनिक उपन्यास में सबसे मुख्य विषय मानव चरित्र का अध्ययन ही बन गया है। मानव के चरित्र का चित्रण करने के लिए उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं और मानव के अंतर्मन को समझ कर अपने उपन्यासों की रचना करते हैं। मानव जीवन को अपने उपन्यासों में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने के पश्चात कुछ उपन्यास कारों का ध्यान नारी जाति की समस्याओं पर पड़ा और उसकी सामाजिक स्थिति पर, जिसके कारण उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी का चित्रण प्रारंभ किया। नारी से संबंधित उपन्यास प्रारंभिक समय से ही चले आ रहे थे परंतु धीरे–धीरे नारी के चित्रण में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है।

उपन्यास साहित्य में नारी के चित्रण को नया नहीं माना जा सकता है। उपन्यास साहित्य के आरंभ काल से ही नारी उपन्यास का मुख्य विषय और केंद्र बिंदु रही हैं। जैनेंद्र से पहले की कई मुख्य उपन्यासकारों ने नारी को अपने साहित्य में मुख्य भूमिका दी है परंतु उसे उसी पुराने पारम्परिक रूप में ही जगह दी गई थी जिसमें पति पर आश्रित, पुरुष मानसिकता के आगे झुकना, पति और बच्चों तक जिंदगी सीमित रहना, घर की चारदीवारी से बाहर ना निकलना और उसी में अपने संसार को गढ़ना आदि स्त्री चित्रण किए जाते थे।

प्रारंभ से चले आ रहे उपन्यास लेखन में नारी का चित्रण तिलिस्म और एय्यारी के रूप में ही किया जाता था। जिसमें नारी को उपभोग की वस्तु मात्र दर्शाया जाता था उसको विभिन्न तरीके से तिलिस्म में फंसा हुआ दिखाकर, नायक को ऐय्यारों की मदद से उसको उस तिलिस्म से आजाद कराते हुए दर्शाया गया है। नारी का यह चित्रण मात्र मनोरंजन के लिए ही किया जाता था क्योंकि प्रारंभिक उपन्यास मुख्यता मनोरंजन की वस्तु ही समझे जाते थे। इसलिए उपन्यासों में वही रचा जाता था जो कि उस समय समाज की मांग होती थी। उसी प्रकार से उस उपन्यास के चरित्र चित्रण किए जाते थे जिसमें नारी को बेहद सुंदर, आकर्षक, तिलिस्मी रूप में ही दर्शाया जाता था ताकि अधिक से अधिक उपन्यासों को मनोरंजन के लिए पढ़ा जा सके परंतु धीरे–धीरे समय जैसे बीतने लगा उपन्यासों में नारी चित्रण को वास्तविक समाज के तौर पर लिखा जाने लगा। पहले समाज के लोगों के मनोरंजन के लिए उपन्यास लिखे जाते थे

परंतु बाद में समाज के ही चरित्रों से प्रेरणा लेकर उपन्यासकारों ने अपने नारी पात्रों को लिखना प्रारंभ किया उसकी समस्याओं को देखा समझा और लेखन में स्थान दिया।

धीरे धीरे समय के बदलाव के साथ भारतीय समाज में ऐसे उपन्यासकारों का आगमन हुआ जिन्होंने तत्कालीन समय, समाज और सामाजिक आंदोलनों से प्रेरित होकर नारी को अपने उपन्यास के मुख्य चरित्र के रूप में प्रस्तुत करना प्रारंभ किया। नारी की सामाजिक समस्याओं को सर्वप्रथम उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले मुंशी प्रेमचंद्र जी ने अपने उपन्यासों में जगह दी नारी की समस्या पर अपना दृष्टिकोण दिखाते हुए उन्होंने अपनी समस्याओं से जूझती नारी का चित्रण किया है। और उस समय के कई उपन्यासकारों ने मुंशी प्रेमचंद्र जी से प्रेरणा पाकर अपने उपन्यासों में नारी चित्रण किया है। परंतु इस समय नारी का चित्रण बहुत ही आदर्शवादी रूप में किया गया है सीमाओं के अंदर ही जीवन व्यतीत करने की सलाह दी गई है और विपरीत परिस्थितिओं में भी शांत रहकर उसे बर्दाश्त करना दर्शाया है।

परिवर्तन समय की मांग है। जैसे–जैसे समय बीतता चला गया भारत की पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता के लिए आंदोलन और तेज हो गया। उपन्यास काल के तीसरे कालखंड में जोकि 1936 से आजादी के पूर्व तक का माना जाता हैं। कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। उपन्यासकारों की सोच में भी परिवर्तन आए जिसके कारण से नारी पात्रों के चित्रण में भी परिवर्तन किया जाने लगा उनके जीवन की कई समस्याओं को महत्वपूर्ण ढंग से उपस्थित किया गया है। भारत की स्वतंत्रता आंदोलनों में विभिन्न नारियों के योगदान को भी दर्शाया गया है परंतु कहीं ना कहीं कुछ आजादी देने के बाद भी नारी को उपन्यास में चारदीवारी के भीतर ही रहकर जीवन जीने को मजबूर किया जाता है। जीवन में आए कष्टों का वह स्वयं ही सामना करती है और पुरुष से हमेशा ही वह एक कदम पीछे दर्शाई गई है। नारी उपन्यासकारों ने भी प्रारंभ से नारी को ही मुख्यता अपने उपन्यासों में जगह दी उसकी समस्याओं को रचा। परंतु प्रारंभिक समय में महिला उपन्यासकारों की कमी हमें नजर आई है। 1930 और 1940 के दशक में कई महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चित्रण देखने को मिला परंतु नारी की समस्याओं पर नारी लेखन प्रारंभिक समय में उतना नहीं देखने को मिला जितना कि पुरुष लेखन मिलता है।

आधुनिक समय में नारी शिक्षा की तरफ बढ़ रही है और शिक्षित नारी शिक्षा ग्रहण करके समाज की सोच को पूरी तरह से बदलना चाहती है, और अपनी उपस्थिति दर्शाना चाहती हैं। भारत में नारी शिक्षा का प्रथम प्रयास महात्मा ज्योतिबा राव फूले जी ने अपने ही खेत के आम्र वृक्ष की छाया में किया। यह भारतीय नारी शिक्षा की प्रथम कक्षा थी जिसमें उनकी प्रथम विद्यार्थी सावित्रीबाई फुले और सगुनाबाई क्षीरसागर ने शिक्षा ली। उनका कहना था कि पुरुष को शिक्षित बनाने से कहीं अधिक जरूरी है नारी को शिक्षित बनाया जाए। इसी बात को व्यवहार में लाने के लिए उन्होंने 1848 में पुणे स्थित भिड़े हवेली में पहली पाठशाला प्रारंभ की। शिक्षित नारी ने जागरूकता से एक नए प्रकार की मानसिकता और संवेदनशीलता को प्रस्तुत किया है जिसके कारण नारी खुद समाज में अपनी उपलब्धि दर्शाना चाहती हैं।

शिक्षित नारी अब उस वर्ग के साथ लड़ने के लिए तैयार है जो वर्ग नारी को लाचार और चार दीवारी में बंद देखना चाहता है। नारी के जीवन में आए बदलाव के कारण उसे किसी लीडर की जरुरत नहीं है बल्कि वह अकेली ही अपने और अपनी नारी समाज के लिए आंदोलन करने के लिए तैयार है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में नारी जागरण को एक प्रमुख मुद्दा बनाया गया है 1950 में गठित भारतीय संविधान में नारी को कई सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से मजबूत करने के लिए प्रावधान प्रदान किये गए थे। जिसके कारण नारी की छवि को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया गया है परिणामस्वरूप आधुनिक शिक्षित नारी समाज के कई क्षेत्रों में अपनी छवि बनाने में कामयाब रही है परंतु इन अधिकारों के बावजूद भी नारी समाज में अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए परस्पर संघर्षरत है। पुरुष वर्चस्व वादी समाज में पुरानी रीति रिवाज और परंपरागत विचारधाराएं उसकी प्रगति में बाधाएं बनी हुई हैं इन्हीं बाधाओं को तोड़ने का प्रयास नारी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया है और नारी की प्रगति में अपना योगदान दिया है।

1950 के दशक में नारी उपन्यासकारों के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं प्राप्त होती है परंतु नारी समस्या नारी उपन्यासकारों के लेखन का मुख्य विषय प्रारंभ से ही रहा है। 1950 के दशक में लीला अवस्थी ने उपन्यास दो राहें प्रकाशित किया। जिसमें उन्होंने जितने नारी पात्रों को रचा है उनके जीवन में एक न एक उद्देश्य अवश्य ही रहा है लीला अवस्थी जी ने अपने उपन्यास दो राहें का अंत बड़ा ही सुखदाई किया है कि एक नारी अगर संघर्ष से जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार है तो उसका अंत हमेशा ही अच्छा होता है उन्होंने नारी जीवन के संघर्ष गाथा तो लिखी और अंत में उसे पूर्णता भी प्राप्त हुई।

जैनेंद्र एक मनोविश्लेषण के रूप में हिंदी साहित्य में जाने जाते हैं जिसके कारण उन्होंने अपने उपन्यासों में भी नारी के जिज्ञासा रूप को ही स्थान दिया है। उनके अधिकतर नारी पात्र मध्यवर्गीय परिवार से ही संबंधित होते थे और नारी पात्रों को उन्होंने उनके सामाजिक जीवन को यथार्थ दर्शाने का सफल प्रयास किया है।

जैनेंद्र के अनुसार, नारी बनी है तो नारीत्व से बाहर अपनी सार्थकता देखने की हट ना करें। कहीं ना कहीं इन विचारों से जैनेंद्र का नारी के प्रति दृष्टिकोण उजागर होता है। जैनेंद्र जी के द्वारा अगर स्त्री का जन्म मिला है तो उसे घर के ही कार्यों और पति और बच्चों के लिए ही ईश्वर ने धरती पर भेजा है। यदि वह इसके खिलाफ जाती है तो, कहीं ना कहीं उसे उसका प्रायश्चित करना पड़ता है। जिस प्रकार सुखदा उपन्यास में सुखदा को अंत में एकांत और पीड़ा के साथ अपना जीवन बिताना पड़ा था। जैनेंद्र अपने उपन्यासों में नारी के मन को समझने का दावा करते हैं परंतु उपन्यास में इस दावे का जोखिम नहीं उठाना चाहते। वह बड़ी–बड़ी बातें कहते हैं पर उसे सैद्धांतिक रूप नहीं देना चाहते। जैनेंद्र के उपन्यासों की नारी पात्र घर के कार्य को बड़ी तन्मयता से करने के बावजूद कहीं ना कहीं अपने आप को रिक्त

समझती रही हैं और उनके उपन्यासों में मुख्यतः सुखदा में यह नजर आता है कि उन्होंने पूरी तरह से पुरुष पात्र का ही साथ दिया है उसी के कष्टों को समझा है और उसी के भावों से नारी को समझाने का प्रयास किया है।

1960 के दशक में उपन्यास अपने सामाजिक यथार्थ तक ही सीमित नहीं रह गया था बल्कि उसकी जगह, जीवन के अन्य लक्ष्यों को भी इसका विषय बनाया। जीवन की उलझी हुई स्थितियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने का प्रयास शुरू हुआ। इसमें उपन्यासकारों ने वास्तविक जीवन में होने वाली समस्याओं से रूबरू कराना प्रारंभ किया। उपन्यासकार का जीवन के प्रति दृष्टिकोण आजादी के पश्चात और अधिक गरिमा के साथ उदित हुआ उसने मूल्यवादी विचारधाराओं को लेखन में उतारा जो कि हिंदी उपन्यासों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। इस दशक में कई महत्वपूर्ण उपन्यासों को लिखा गया जिसमें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, प्रगतिशील, सांस्कृतिक, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, वर्गों में अपनी सोच को बांट कर लेखन किया है। इस दशक में कई महान उपन्यासकारों का परिचय मिलता है जिसमें के उपन्यासकार उषा प्रियंवदा का पचपन खंभे लाल दीवारें और राजेंद्र यादव जी का अनदेखे अनजाने पुल उपन्यास का महत्व बहुत अधिक है। इन उपन्यासों में उन्होंने अपने दृष्टिकोण के द्वारा नारी के सामाजिक असमानता उसकी इच्छाओं को प्रबलता से समाज के सम्मुख रखा है उषा प्रियंवदा जी का उपन्यास पचपन खंभे लाल दीवारें जैसा कि उपन्यास के नाम से ही पता चलता है कि उस नारी के जीवन की कहानी है जो चारों तरफ से बंद कमरे में कैद है। वह पढ़ी–लिखी नौकरी करने वाली एक शिक्षित नारी की कहानी है। एक ऐसी नारी जिसका परिवार आर्थिक समस्याओं को झेल रहा है अपने परिवार की आर्थिक पूर्ति के लिए वह नौकरी करती है उसके माता–पिता उसके पैसों पर इतना निर्भर हो जाते हैं कि वह भूल जाते हैं कि उन्हें सुषमा का विवाह भी करना है बल्कि सुषमा की मौसी उसके लिए रिश्ते की बात करती हैं तो उसके माता–पिता के मन में एक ही ख्याल आता है कि अगर सुषमा का विवाह हो जाएगा तो उनके घर का खर्च कैसे चलेगा यही सब सोचते हुए सुषमा का विवाह नहीं होने देते। इस उपन्यास की नारी महानगरीय जीवन के अकेलेपन के एहसास को और परिवार की जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती है, और अपने प्रेम को उसके पश्चात रखती हैं।

राजेंद्र यादव का नाम भी हिंदी उपन्यास साहित्य में एक बड़े नाम के तौर पर जाना जाता है जिसमें उनके पात्रों को अलग प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है और उनके नारी पात्रों में भी भिन्न भिन्न समस्याओं को दर्शाया जाता है जिस प्रकार उन्होंने अपने उपन्यास अनदेखे अनजाने पुल में कुरूप निन्नी का पात्र उजागर किया है।

1963 में लिखा गया राजेंद्र यादव का यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें एक ऐसी नारी का चित्रण है जो कि कुरूप है। उसको ईश्वर ने सुंदरता नहीं दी पर उसका मन बहुत सुंदर है। वह एक ऐसी नारी है जिसकी इच्छाएं उसी नारी के समान हैं, जो कि सुंदर है। परंतु निन्नी अपनी कुरूपता के कारण हीन भावना का शिकार रहती हैं। राजेंद्र यादव जी ने बड़ी मनोरम पात्र के रूप में निन्नी को रचा है जिसके जीवन में दुःख कभी खत्म होने का नाम ही नहीं लेते।

70 के इस दशक में उपन्यासकारों के लिए प्रयोग ही अत्यधिक महत्वपूर्ण था उन्होंने अपने उपन्यासों में विभिन्न प्रयोगों को किया। नई भाव भूमि से नए ढंग से उपन्यासों को जोड़ना प्रारंभ किया। इस दशक में नारी के जीवन पर लिखे गए महत्वपूर्ण उपन्यासों में ममता कालिया का उपन्यास बेघर जिसमें दो नारियों की कहानी है एक महत्वपूर्ण प्रयोग था। और कमलेश्वर जी का उपन्यास काली आंधी जिसमें नारी को भारतीय राजनीति में अपने भविष्य को संवारते हुए दिखाना भी एक प्रयोग के अंतर्गत ही आता है।

1970 के दशक का उपन्यास बेघर ममता कालिया द्वारा लिखा गया। ममता कालिया ने इस उपन्यास में पुरुष की पारंपरिक और दकियानूसी सोच को उपन्यास का प्रमुख विषय बनाया है। इस उपन्यास का नायक नारी के प्रेम को कुछ दकियानूसी विचारों के हवाले कर देता है। संजीवनी से बेहद प्रेम के बावजूद वह उसे मात्र इसलिए छोड़ देता है क्यूंकि उसे ऐसा लगता है कि उसके जीवन में वह पहला पुरुष नहीं है। संजीवनी भी परमजीत से कभी नही मिलती और न ही उसे कोई सफाई देती है। रमा से वह विवाह करता है वह उसके सारे अनुमानों में खरी उतरती है परंतु फिर भी वह उससे खुश नहीं रह पाता। ममता जी ने इस उपन्यास में केकी, रमा और संजीवनी का चित्रण बिल्कुल यथार्थ किया है। महानगरीय जीवन में समाज के द्वारा बनाई गई कुछ अवधारणाएं नारी के जीवन के लिए कितनी कष्टदायक साबित हो सकती हैं वह इस उपन्यास में लिखा गया है।

कमलेश्वर जी के उपन्यासों में आधुनिकता बोध नजर आती है। समाज में आधुनिकता पनपने के साथ–साथ साहित्य पर भी आधुनिकता का असर दिखना स्वाभाविक था। भारतीय राजनीति में कई नारियों ने अपने भविष्य को संवारा था। उसी प्रकार कमलेश्वर जी ने अपने उपन्यास काली आंधी में भी एक ऐसी ही नारी का उल्लेख किया है जो कि राजनीति की चकाचौंध में खो जाती है। वह अपने आप को राजनीति में इतना ढाल लेती है कि वह अपने पति और बेटी को कब छोड़ देती है उसे पता ही नहीं चलता। कमलेश्वर जी के द्वारा जो नारी चित्रण किया गया है उसमे यह साफ बताया गया है कि मानव के जीवन का सबसे बड़ा दुख असंतोष ही है जिसके कारण ही दांपत्य जीवन में बिखराव आ जाता है। काली आंधी भी उसी प्रकार से लिखा गया एक उपन्यास है जिसमें जग्गी बाबू और मालती के संबंधों में एक दरार आ गई थी क्योंकि मालती ने कहीं ना कहीं राजनीति में वह मुकाम हासिल कर लिया था जिसे कभी जग्गी बाबू हासिल करना चाहते थे। जग्गी बाबू पीछे चले गए और मालती आगे बढ़ती चली गई कमलेश्वर जी यहां पर जग्गी बाबू जो कि पुरुष प्रधान मानसिकता को दर्शाता है स्पष्ट कर रहे हैं मालती की सफलता से जगी बाबू ईर्ष्यालु नहीं थे परंतु मालती के बदलते रवैया के कारण वह बहुत परेशान थे जिसके कारण ही उनका दांपत्य जीवन टूट गया। काली आंधी बहुत ही खूबसूरत उपन्यास है पूरा उपन्यास नारी प्रधान है फिर भी कहीं ना कहीं इस उपन्यास में नारी की प्रधानता नहीं दिखाई गई है। मालती को बहुत ही शालीन और बहुत ही अच्छा प्रस्तुत किया है कमलेश्वर जी इस उपन्यास के द्वारा यह साबित करना चाहते हैं कि अगर एक नारी जीवन की ऊंचाइयों को छूती है तो पुरुष उसका

साथ क्यों नहीं दे पाते हैं क्योंकि उनके मन में कहीं ना कहीं वह ग्लानि उत्पन्न हो जाती है कि नारी को घर के भीतर ही अपने आप को सीमित रखना चाहिए ना कि बाहर जाकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाने चाहिए ।

80 के दशक में भारत का इतिहास सामान्य और विशिष्ट रहा भारतीय राजनीति में काफी बदलाव और उथल–पुथल तथा परस्पर विरोधी स्थितियां, परिस्थितियां बनी रही। जितनी तेजी से इस दशक में राजनीतिक घटना चक्र प्रवाहित हुआ है उतनी ही तेजी से सामाजिक स्थितियों में भी बदलाव देखने को मिला। भारत और पाक युद्ध ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला महंगाई, मुद्रास्फीति आकाश छूने लगे वस्तुओं के अभाव भूख, अकाल, बाढ़, और बेरोजगारी का संकट गहराने लगा इस समय समाज में हिंसा, लूटपाट, बलात्कार आदि जैसी कई अमानवीय घटनाएं घटित होने लगी। लोगों में निराशा आने लगी भारतीय राजनीति में विकास की योजनाएं बढ़ती हुई जनसंख्या के बावजूद भी आत्मनिर्भरता को उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त हुई। इस दशक में कई उल्लेखनीय रचनाकारों ने बेहतरीन रचनाओं को रचा। जिसमें कई महत्वपूर्ण नाम उल्लेखनीय हैं नवलेखन के दौर में पुरुष और नारी उपन्यास कारों ने अपना परिचय बखूबी दिया। इस समय तक नासिरा शर्मा अपने उपन्यासों से कई सामाजिक समस्याओं को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर चुकी थी इस दशक का उनका उपन्यास शाल्मली ने एक अलग हलचल मचा दी जिसमें एक ऐसी नारी का उदाहरण है जो के आत्म संघर्ष से भरी हुई है और सामाजिक दकियानूसी रीति–रिवाजों को झेलने के लिए मजबूर है। इन्हीं उपन्यासों के दौर में एक नाम अमृतलाल नागर की अग्नि गर्भा का भी है। जिसमें उन्होंने नारी समस्याओं के साथ–साथ बहुत बड़ी सामाजिक समस्या जिसे दहेज प्रथा कहते हैं का भी पुरजोर विरोध किया है। इसमें उन्होंने एक पढ़ी लिखी नारी की गरीबी के कारण से दहेज प्रथा के आड़े आने से उसके जीवन में आई समस्याओं को उभारा है।

नासिरा शर्मा जिन्होंने एक लेखिका के रूप में समाज में उपस्थित कई बड़ी समस्याओं को उभारा है। जिसमें नासिरा शर्मा के द्वारा लिखे गए उपन्यासों में शाल्मली जो कि उनका दूसरा उपन्यास था उसमें अलग अलग परिवेश से आई हुई लड़कियां जिन्हें एक बंद गिरे में रखा जाता है, उससे वह निकलने के लिए तत्पर और संघर्षरत हैं। उनकी इस कोशिश को नासिरा जी ने अपने पन्नों पर बहुत ही सजीव रूप से उकेरा है। शाल्मली जोकि सर्वगुण संपन्न नारी है। उसके आत्म संघर्ष को नासिरा जी ने चित्रित किया है जिसका विवाह एक पढ़े–लिखे पुरुष से होता है जोकि दिमागी रूप से उन्हीं परंपरागत और दकियानूसी रीति–रिवाजों को मानता है जिसे शाल्मली जिंदगी भर झेलना और सहने के लिए तैयार हो जाती है।

नासिरा शर्मा शाल्मली द्वारा स्त्री विमर्श की अवधारणा को व्यक्त करती हैं नासिरा शर्मा मानती है कि समस्या का समाधान केवल परंपरागत सोच रखने वाला पति ही नहीं है, बल्कि उन पूरे समाज समूह तथा उस इकाई से है जो इस प्रकार की सोच रखते हैं कि स्त्री को पुरुष के पीछे ही हमेशा रहना चाहिए। सही मायने में स्त्री की स्वतंत्रता समाज की

सोच को बदलकर स्त्री की स्थिति को ही बदला जा सकता है नासिरा जी के यह उपन्यास जीवन को अपने नजरिए से देखने तथा स्त्री विमर्श एक प्रखर प्रवक्ता के रूप में सामने आया है।

1980 –90 दशक के बीच समाज कई परिवर्तनों के साथ प्रगति की ओर बढ़ रहा था जिसे देश की आम जनता स्वीकार कर रही थी। इन्हीं सब परिवर्तनों का प्रभाव साहित्य में पड़ना स्वाभाविक ही था इसीलिए अमृतलाल नागर जी जिन्होंने कई उपन्यासों को लिखा उनके कई उपन्यासों में नारी पात्र मुख्य भूमिका में रहे। जिस प्रकार उनके साहित्य जीवन पर उनकी पत्नी का बेहद प्रभाव पड़ा जिसकी वजह से उन्होंने स्वयं स्वीकारा है कि वह एक अच्छे साहित्यकार बन पाए। उसी प्रकार उन्होंने अपने साहित्य में भी कई नारी पात्रों का वर्णन किया है। नारी समाज का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना हम समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। अमृतलाल नागर जी का उपन्यास अग्निगर्भा ऐसी ही एक नारी के जीवन में आए उतार–चढ़ाव पर आधारित है। जोकि गरीबी के कारण बुद्धिमता के बावजूद भी अपने सपनों को उड़ान देने में कई मुसीबतों का सामना करती है। उसकी दोनों सहेलियां जो कि पढ़ने में ठीक ही थी वह अपना जीवन सम्पन्नता से बिता रही थी।

समाज में अभी भी कई ऐसी समस्याएं है जो मानव जीवन के लिए चुनौती बनी हुई है। पहली समस्या गरीबी और दूसरी समस्या दहेज है। अमृतलाल नागर जी ने अपने उपन्यास में इन दोनों विषयों पर नारी पात्र को केंद्र बनाकर के लिखने का प्रयास किया है। और सुंदर सुशील और बुद्धिमान होने के बावजूद भी सीता गरीब होने के कारण अपने जीवन में नौकरी के लिए दरबदर भटकती है। प्रेम विवाह किये जाने के बावजूद दहेज की मांग को लेकर जीवन में कष्टों सामना करती है। पति की दकियानूसी विचारधारा को जब तक वह समझ पाती है तब तक उसे परेशान करने में उसका पति कोई कसर नहीं छोड़ता है बल्कि उसके कमाए हुए पैसों पर भी वह अपना हक समझता है। नारी का ह्रदय बहुत ही कोमल होता है जिसकी वजह से वह अपने जीवन में आए सभी दुखों को चुपचाप सहन करने का प्रयत्न करती है परंतु नागर जी ने अपने उपन्यास की नारी सीता को कुछ अलग दिशा दी। वह अपने पति का त्याग करके नारी समाज कल्याण के कार्यो में अपना भविष्य बनाती है और उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य उन नारियों की मदद करना बन जाता है जो कि किसी न किसी पुरुष द्वारा सताई हुई होती हैं यहाँ तक कि वह अपने पति को भी नहीं छोड़ती हैं परन्तु नागर जी ने इस कहानी के अंत में एक पुरुष द्वारा ही उसकी हत्या करवा दी है।

इस प्रकार अमृतलाल नागर जी ने अपने उपन्यास अग्निगर्भा के द्वारा नारी को प्रेरित करने वाला लेखन किया है उनके नारी पात्र अपने जीवन को अपनी इच्छाशक्ति और अपनी मेहनत से एक मुकाम हासिल करने वाले रहे हैं। उनके नारी पात्र अपने अधिकारों के लिए लड़ना जानते हैं वह किसी से डर के जीवन व्यतीत करने के खिलाफ हैं अपने इच्छा शक्ति के द्वारा जिस प्रकार अग्निगर्भा की मुख्य पात्र सीता ने अपने अधिकारों के लिए लड़ना प्रारंभ किया और कई हद तक उसमें कामयाबी भी प्राप्त करने लगी थी। परंतु इसका अंत नागर जी ने उसकी मृत्यु पर किया है। समाज में

अगर नारी अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहती है तो क्यों पुरुष समाज को अपने वर्चस्व पर खतरा महसूस होने लगता है और कहीं ना कहीं जिस प्रकार इस कहानी में दर्शाया गया है अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाली नारी को का अंत सिर्फ मृत्यु पर खत्म हो जाता है।

90 के दशक का मैत्रेई पुष्पा का उपन्यास चाक एक ऐसी कहानी है जिसमें ग्रामीण वातावरण में नारी जीवन की समस्याओं से अवगत कराता है। यह एक ऐसी कहानी है जो कि उन बहादुर नारियों के नजरिए से लिखी गई है जिन्होंने अपने जीवन में आए कष्टों का खुद मुकाबला किया है। इसके पात्र रेशम, सारंग, कलावती चाची, लौंग श्री बीवी, आदि सभी के जीवन में पुरुषों द्वारा लाई गई पीड़ाओं को स्वयं खत्म करने का फैसला किया और कई हद तक उपन्यास के अंत तक अपनी पहचान बना ली।

इस उपन्यास में एक और मुख्य बात यह है कि अनपढ़ होने के बावजूद अपनी व्यथा को बयान करने के लिए उन्होंने लोकगीतों का सहारा लिया है। मैत्रेई पुष्पा जी के उपन्यासों में लोकगीतों की महत्वता बहुत अधिक है। वह नारी को किसी न किसी तरीके से अपनी पीड़ा को बयां करने के लिए नई चीजों को प्रस्तुत करती है। जिसमें चाक एक ऐसा उपन्यास है जिसमें जगह जगह पर लोकगीतों का वर्णन किया गया है जिसमें उस नारी की समस्याओं तकलीफ हो और दर्द को झलकाया गया है। एक नारी जिसके जीवन में आए उतार–चढ़ाव आए कष्टों को जितने यथार्थ रूप से वह खुद लिख सकती है उस यथार्थ रूप से एक पुरुष कैसे लिख सकता है।

सदी के आखिरी दशक में सुरेंद्र वर्मा जी ने एक बहुत ही आकर्षित उपन्यास लिखा जिसका नाम मुझे चांद चाहिए दिया। उपन्यास के नाम से ही साफ पता चल रहा है कि इस उपन्यास के पात्रों की उड़ान बहुत ऊंची है क्योंकि उन्हें चांद पाने की इच्छा है। यह उपन्यास भी नारी प्रधान उपन्यास है जिसमें नारी के उस रूप को प्रदर्शित किया है जिसने चांद चाहने की उम्मीद से अपने घर के त्याग को और अपने परिश्रम को ही भविष्य बना लिया था। गरीब घर में जन्मी लड़की सिलबिल ने जब अपना नाम परिवर्तित करके वर्षा वशिष्ठ रखा था, तभी मां–बाप ने समझ लिया था कि यह लड़की अब अपनी ही मर्जी की मालिक है। घरवालों और बाहर वालों के बेइंतहा विरोध के बावजूद भी इसने अपने इरादों को कमजोर नहीं होने दिया और अभिनेत्री बनने की तमन्ना को लिए वह एक छोटे से शहर शाहजहांपुर से लखनऊ, लखनऊ से दिल्ली और दिल्ली से मुंबई तक का सफर तय करती है।

इस उपन्यास में नारी ने अपने हर कदम में आई कठनाइयों को पार किया और जिस उज्जवल भविष्य की कल्पना एक अच्छी अभिनेत्री के रूप में उभरने की, की थी उस मुकाम को उसने पा लिया। एक बात जो अन्य पुरुष उपन्यास कारों के उपन्यासों में भी मिलती है, किसी भी उपन्यास में जो नारी अपने परिवार के खिलाफ और अपने सपनों की उड़ान को छूती हुई बाहर निकलती है उसका अंत कभी अच्छा नहीं होता है। यह हर उपन्यासकार ने साबित किया

है अपने उपन्यास के द्वारा क्योंकि वर्षा वशिष्ठ भी अपने भविष्य को संवारने के लिए गरीब घर से उठी लड़की ने अपने भविष्य को संवारने के लिए अपने कदमों को बाहर निकाला जिस लड़के से प्रेम किया उस लड़के की अंत में मृत्यु हो गई वह बिन ब्याही गर्भवती हो गई कई लोगों ने उसको ताने मारे परंतु उसने अपने त्याग और अपने बच्चे को जन्म देने का ही फैसला किया और उस बच्चे के सहारे जीवन अकेले काटने के लिए तैयार हो गई।

पुरुष उपन्यास कारों द्वारा भी उपन्यासों में नारी को प्रमुख भूमिका दी गई है नारी को विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाते हुए कई पुरुष उपन्यास कारों ने चित्रित किया है। सदी के आखिरी पांच दशकों में नारी के कई बदलते स्वरूपों को उन्होंने रचा है उसका क्षेत्राधिकार बढ़ाया है। प्रमुखता राजनीति में नारी के प्रवेश का चित्रण एकदम नया है। अपनी पहचान बनाते हुए नारी ने कई पुरुषों को पीछे धकेला है परंतु पुरुष उपन्यास कारों द्वारा चित्रित उपन्यासों में उनकी पुरुष मानसिकता का अंश नजर आता है जिसमें नारी को एक ऊंचाई तक ले जाने के पश्चात् उसे अंत में अकेला कर देना समाज को उनके विपरीत खड़ा कर देना दर्शाया गया है।

साहित्य की प्रमुख विधा उपन्यास जो कि कई तत्वों से मिलकर बनी है। जिसका एक प्रमुख तत्व पात्र है पात्रों का चयन और गठन बेहद सोच समझकर के उपन्यासकार करता है। अपने वास्तविक जीवन और सामाजिक वातावरण में होने वाली घटनाएं उसके पात्रों को भी प्रभावित करती हैं। जिस प्रकार अपने जीवन की कई घटनाओं से प्रेरित होकर उपन्यासकार उस पात्र को अपने उपन्यास में जगह देता है उसी प्रकार समाज में भी कई ऐसे ऐसी समस्याएं अस्तित्व में है जिन से जूझने और लड़ने के लिए नारी हमेशा तैयार रहती है नारी के जीवन में अचानक से परिवर्तन नहीं आया है। बल्कि प्राचीन समय से ही नारी को एक बंधन में रखा गया है। उसके लिए कुछ नियम समाज ने निर्धारित किए हैं जिसके बाहर अगर वह कार्य करती है तो उसे गलत नजर से देखा जाता है परंतु नारी जिसने शिक्षा ग्रहण करके पश्चिम में हुए आंदोलनों और भारत में हुए आंदोलनों से प्रेरणा पाकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना प्रारंभ किया, उन्हें पहचानना प्रारंभ किया। जिसके कारण वह सामाजिक दकियानूसी सोच को बदल सके। वास्तविक जीवन में भी नारी का जीवन भी कई कष्टों से भरा हुआ है जिससे वह बाहर निकलने के लिए हमेशा तत्पर है इन्हीं पात्रों से प्रेरणा पाकर नारी और पुरुष उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में नारी को केंद्रीय स्थान प्रदान किया है पुरुष उपन्यासकार ने अपने सोच और दिमाग के द्वारा अपने पात्रों को रचा और उसका मूल्यांकन किया इसी प्रकार नारी उपन्यास कारों ने भी नारी को अपने उपन्यास मंक केंद्रीय स्थान दिया और अपनी सोच के अनुसार उन्हें अपने उपन्यासों में रचा। बहुत अधिक फर्क तो नहीं कहेंगे परंतु फर्क नजर आता है।

नारी जिसके जीवन में कभी ना कभी ऐसा समय जरूर आया जब उसने अपने आपको अपने परिवार में द्वितीय स्थान पर देखा नारी उपन्यास कारों द्वारा अपने पात्रों को रचने में उन्होंने अपने आपको रचा परंतु पुरुष उपन्यास कारों ने अपने उपन्यास में नारी पात्र को पुरुष नजरिये से रचा।

साहित्य सदियों से मानव समाज का प्रतिबिंब रहा है। यह मानवीय भावनाओं और विचारों को प्रदान करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है और गद्य साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग उपन्यास है। उपन्यास साहित्य हमारे वास्तविक जीवन के बहुत करीब है उपन्यासकार अपने उपन्यासों में उस समाज का रूप चित्रित करता है जो हमारे आसपास है। उसी समाज का एक अंग नारी है और उपन्यासों में नारी के जीवन से संबंधित हर पहलु का चित्रण हमें मिलता है उपन्यास हमें उन लोगों के जीवन और जीवन शैली को समझने का अवसर देता है जिन्हें हम जानते तो नहीं लेकिन वह हमारे साथ ही हैं।

उपन्यास में तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा नारी उपन्यास कारों और पुरुष उपन्यास कारों की उपन्यासों में नारी चित्रण में जो अंतर महत्वपूर्ण है वह है सोच का।

स्वतंत्रता के पश्चात उपन्यासों में लेखकों ने नारी का बहुमुखी चित्रण किया है परंतु उन्होंने नारी का जो चित्रण उपन्यास में किया है वह ऊपरी सतह की तरह है उपन्यासकार ने नारी के अंतर्मन की गहराइयों उसके तनाव और समस्याओं का यथार्थता के साथ चित्रण करने का प्रयास नहीं किया है। आधुनिक समाज में जबकि विकास बहुत तेजी से हो रहा है उस समय नारी के आदर्श रूप को चित्रित करना सही नहीं है। सीता और सावित्री जैसे रूप में नारी को प्रस्तुत करना आज के समाज में सही नहीं है कई पुरुष उपन्यास कारों ने नारी को अपने उपन्यासों का केंद्र तो बनाया है परंतु उसके स्वर को बुलंद करने में सफल नहीं हुए हैं क्योंकि उनकी पुरुष मानसिकता कहीं ना कहीं नारी की प्रगति में अड़चन बन गई है।

पुरुष उपन्यासकारों में कई ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने नारी समस्या को पहली बार अपने उपन्यासों में रचा उसके जीवन में आने वाली कई समस्याओं को समाज से रूबरू कराया। 1950 से 2000 तक कि पांचों दशक में पुरुष उपन्यासकारों के ऐसे उपन्यासों को लिया जिसमें नारी प्रमुख स्थान रखती थी। पुरुष उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों में नारी के कई समस्याओं को उजागर किया है परंतु कहीं ना कहीं नारी के जीवन पर पुरुष की छाप उन्हें आवश्यक लगी नारी के जीवन में पुरुष के महत्व को उन्होंने बखूबी समझाया है अकेली नारी जीवन में सिर्फ संघर्ष ही करती है जिस प्रकार जैनेंद्र ने अपने उपन्यास सुखदा में सुखदा को राजनीति में आगे बढ़ाया परंतु पति और बच्चे को कहीं ना कहीं पीछे छोड़ दिया और अंत में उसे अकेला कर दिया समाज के बनाए हुए नियमों से अलग हटकर अपनी पहचान बनाने के लिए पुरुष से एक कदम भी आगे बढ़ती है तो पुरुषों से बर्दाश्त नहीं कर पाता। पुरुष उपन्यास कारों ने नारी को यथार्थ रूप देने का प्रयास किया है परंतु कहीं ना कहीं पुरुष मानसिकता के कारण वह उसे न्याय नहीं दिलवा पाए पुरुष उपन्यास कारों ने नारी को जीवन को तो रचा उसकी समस्याओं को तो समझा पर समाधान शायद उनके पास नहीं था।

इसी प्रकार एक और पश्चिमी लेखिका सिमोन ने भी लिखा है कि "अब तक औरतों के बारे में पुरुष ने जो कुछ भी लिखा है तथा कहा है उस पर तनिक संदेह किया जाना चाहिए क्योंकि लिखने वाला न्यायधीश और अपराधी दोनों है।"[1] इन विचारों द्वारा यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वह नारी उपन्यास कारों द्वारा नारी के लिए जिन प्रश्नों को उछाला गया है वह उनकी सार्थकता कहीं हद तक पुरुषों के मुकाबले अधिक है। वही नारी उपन्यास कारों ने अपने उपन्यास के द्वारा सामंतवादी दृष्टिकोण और परंपरावादी विचारधाराओं पर एक प्रश्न चिन्ह लगाया है। नारी के प्रति इस दृष्टिकोण को उन्होंने रोकने का प्रयास किया है।

नारी उपन्यास कारों ने यह साबित किया है कि समाज में पनप रही कई समस्याओं और जटिल प्रश्नों के प्रति वे बहुत अधिक संवेदनशील हैं। समय के साथ साथ सामाजिक वातावरण में आए बदलावों को इन लेखिकाओं ने बहुत ही बारीकी से देखा और समझा है। नारी के जीवन को प्रभावित करने वाली कई ऐसी समस्याओं को उसके मन के अंदर झांककर समझने का प्रयास किया है। पाँचों दशक की नारी उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में नारी को एक पहचान देने का प्रयास किया है क्योंकि प्रारंभ से ही नारी पर लगाए गए नियम, प्रति नियम समय के साथ साथ कम हो रहे थे परंतु सिर्फ कागजों में वास्तविक जीवन में नारी अभी भी अपने अधिकारों के लिए लड़ती आ रही थी। इन सभी नारी उपन्यास कारों ने स्वयं नारी होने के नाते उस एहसास को उस कष्ट को समझने का प्रयास किया है और उन्हीं कष्टों को अपने उपन्यास में जगह देकर समाज के सम्मुख रखना उचित समझा है। कई प्रकार के नारी आंदोलन से प्रेरित होकर के नारी ने स्वयं के अधिकारों के लिए कलम उठाई और उपन्यासों के द्वारा अपनी आपबीती लिखी नारी उपन्यास कारों ने जो कुछ भी लिखा है अपने उपन्यासों में वह कहीं ना कहीं उनके जीवन को प्रभावित करता है और उसी से प्रेरित होकर उन्होंने अपने नारी पात्रों को रचा है।

नारी उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा वर्तमान जीवन की सच्चाई को उभारा है साथ ही अपने लेखों में अबला कही जाने वाली नारी को सशक्तहीन और जुझारू व्यक्तित्व के द्वारा प्रस्तुत किया है तेज रफ्तार पकड़ती हुई जिंदगी के भँवर में नारी के जीवन में घुट कर जीने का अभिशाप उपन्यासों द्वारा समाज के सम्मुख रखा गया है। आधुनिकीकरण के साथ–साथ समाज के विकास और तरक्की में नौकरी पेशे के लिए भटकती जिंदगी को उपन्यास कारों ने अपनी लेखनी में जगह दी है चुने हुए उपन्यासों में नारी के जीवन में कई प्रकार के समस्याओं और समाज के दृ ष्टिकोण को दर्शाया गया है जिससे नारी अकेले ही लड़ने के लिए तैयार है।

---

[1]HINDI 20UPANYAS 20ME 20MAHILA 20LEKHAN/06_chapter 2002 20(1).pdf
shdhganga 23/5/2

संबंधित उपन्यासों के अलावा और अन्य उपन्यास कारों जैसे मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, मधु कांकरिया, आदि नारी उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में नारी की समस्याओं और समाधान का विवरण किया है इसी प्रकार कई पुरुष उपन्यासकार जैसे यशपाल, निर्मल वर्मा, राजेंद्र कालिया आदि उपन्यासकार हैं जिन्होंने नारी जीवन मैं आए कष्टों को समाज के सम्मुख रखने का प्रयास किया है।

पुरुष उपन्यास कारों और नारी उपन्यास कारों के बीच एक महत्वपूर्ण समानता यह है कि नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों में तो मुख्य विषय नारी हमेशा रही है उसके जीवन से संबंधित कई पहलुओं कई समस्याओं को प्रारंभ से ही उन्होंने उजागर किया है। 1950 के पश्चात पुरुष उपन्यासकारों का दृष्टिकोण भी बदला सा नजर आया है जिसमें कई महत्वपूर्ण नाम है जिन्होंने नारी की समस्याओं को समाज के सम्मुख रखा है और उस से रूबरू कराया है। जैनेंद्र कुमार जो कि 1950 के दशक के बहुत बड़े उपन्यासकार हैं उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी के प्रति मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए उसे एक मानव के रूप में रचित किया है पुरुष उपन्यास कारों ने ही अपने उपन्यासों में नारी के राजनीतिक जीवन में प्रवेश का चित्रण किया है यह बिल्कुल नया चित्रण था।

पुरुष उपन्यास कारों ने भी कई ऐसे क्षेत्रों में नारी के जीवन के उतर चढाव का चित्रण किया है इसी प्रकार नारी उपन्यास कारों ने भी अपने उपन्यासों में मुख्य विषय नारी समस्या को ही बनाया है वह चाहे पढ़ी–लिखी शिक्षित महानगरीय नारी हो या फिर अशिक्षित गांव की महिला हो दोनों में ही अपने वर्चस्व अपनी स्वाधीनता अपने अधिकारों को लेकर के समाज के किसी ना किसी इकाई या रूप से लड़ने की हिम्मत दिखाई है और यह साबित करने का प्रयास किया है कि नारी कमजोर नहीं बल्कि अपने अधिकारों के लिए जागरूक है।

प्रस्तुत उपन्यासों में नारी चित्रण में भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक रूप को समझने के लिए उपन्यासों का गहन अध्ययन बेहद आवश्यक है। जिसमें उपन्यासकार जिस प्रदेश, भाषा और जिस सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में पला है, उसी सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण ने उसके उपन्यास पर प्रभाव डाला है। जिस प्रकार महानगरीय परिवेश में रहने वाले उपन्यासकार उन नारियों के कष्टों और जीवन में आए समस्याओं का वर्णन करते हैं क्योंकि उपन्यासकार अपने आसपास के जीवन से ही प्रेरित होकर उपन्यासों की रचना करता है। मैत्रेई पुष्पा जी जो कि मूलतः झांसी से संबंधित है उन्होंने मैथिली और खड़ी बोली भाषा में ही अपने उपन्यास को रचा है उन्होंने स्वयं को गांव से संबंधित बताया है उनके बचपन का जीवन गांव में बीता और वह उसी के वातावरण में पली–बढ़ी जिसके कारण उनके उपन्यास में उनकी बचपन की सामाजिक सांस्कृतिक जीवन का प्रभाव दिखाई पड़ता है उपन्यासकार मुख्यता अपने उपन्यासों में जो भी चित्रण करते हैं उसे वह वास्तविक रूप में कहीं ना कहीं उस से प्रेरित होते हैं इसलिए सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव उपन्यास कारों के जीवन के उपन्यासों में पड़ना स्वाभाविक ही होता है।

1950 में लिखे गए उपन्यासों मैं स्वाधीनता मुख्य विषय था क्योंकि 40 से 50 के दशक में भारत में कई बड़े बदलाव आए जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह, और अंत में 1947 में देश की आजादी। इन सभी महत्वपूर्ण घटनाओं ने मानव जीवन के ऊपर बहुत प्रभाव डाला है इसलिए इन्हीं घटनाओं से प्रेरित होकर अधिकतर उपन्यास राजनीति पर ही लिखे गए नारी के जीवन पर भी लिखे जाने वाले उपन्यासों में नारी को क्रन्तिकारी गुट या किसी न किसी आंदोलन से जोड़ा गया है। उसी प्रकार 1960 के उपन्यास काली आंधी में वास्तविक जीवन से प्रेरित होकर नारी चित्रण किया गया है वह भी राजनीति सत्ता में नारी के वर्चस्व को दिखाया गया है ।

उपन्यासों में उपन्यासकारों ने कई ज्वलंत मुद्दों जैसे दहेज को एक बहुत बड़ा मुद्दा बना करके प्रस्तुत किया है और ना दे पाने के कारण पत्नी के पैसे पर पति खुद का अधिकार बनाए रखता है यह पुरुषों की पारंपरिक विचारधाराओं को प्रदर्शित करती है। सुरेंद्र वर्मा जी ने एक छोटे शहर की गरीब लड़की की कहानी है जिसके पिता आर्थिक रूप से इतने भी संपन्न नहीं थे कि वह उसे आगे पढ़ा सके परंतु उसकी इच्छाएं बहुत बड़ी थी बहुत ऊंची थी जिसकी वजह से वह अपने परिवार को छोड़कर के अभिनेत्री बनने का सपना लिए लखनऊ से दिल्ली फिर बम्बई जैसे शहरों में अपने सपनो को पूरा करने में जुट जाती है परन्तु प्रारम्भ में उसे घर वालों और बहार वालों दोनों से असम्मानजनक बातों और मारपीट का सामना भी करना पड़ा है।

नारी उपन्यासकारों की बात करें तो नारी उपन्यासकारों ने भी अपने उपन्यास में हर दशक में एक नई चुनौती और समस्या से रूबरू कराया है। 1950 के दशक में अमीरी और गरीबी को ले करके लिखा गया उपन्यास दो राहें है जो लीला अवस्थी जी का उपन्यास है इसमें नारी की गरीबी उसके जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं डालती बल्कि उसकी आत्मशक्ति उसकी इच्छाओं को पूरा करती है परंतु वही अमीर और सुख सुविधा में जीने वाली नारी गलत राह पकड़ लेती हैं। 1960 से 70 के दशक की कहानी पचपन खंभे लाल दीवारें महानगरी है वातावरण में रहने वाली नारी की कहानी है जो आर्थिक रूप से अपने परिवार का खर्च चलाने के लिए दिल्ली जैसे महानगर में रहकर नौकरी करती है और अपने प्रेम को त्याग कर अपने घर की जिम्मेदारियों को महत्व देती हैं। 70 से 80 के दशक का उपन्यास बेघर ममता कालिया जी द्वारा लिखा गया है जिसमें पुरुष द्वारा अपनी प्रेमिका को इस लिए छोड़ा जाता है क्योंकि उसकी सोच दकियानूसी है और अपनी सोच के कारण वह अपनी प्रेमिका के कौमार्य का सबूत चाहता है। 1980 से 90 के दशक का उपन्यास नासिरा शर्मा का उपन्यास शाल्मली है जिसमे एक पढ़ीलिखी नारी है जिसको अपने कार्य के लिए तरक्की मिलती जाती है उसका विवाह एक पुरुष से कर दिया जाता है जो पहले तो उसे कार्य करने से मना करता है पर बाद में उसके ही पैसों के सपने देखता है। मैत्रेई पुष्पा जी ने 1990 से 2000 के दशक पर लिखा बेहद महत्वपूर्ण उपन्यास है जो कि ग्रामीण आंचल पर आधारित है अधिकतर उपन्यास और महानगरीय जीवन जीने वाली नारियों के

ऊपर लिखे गए हैं परंतु मैत्रेई पुष्पा जी ने गांव को अपने उपन्यास की पृष्ठभूमि बताया है और गांव में नारी पर हो रहे अत्याचारों को उन्होंने अपने उपन्यास में जगह दी है।

इस प्रकार 1950 से 2000 तक के उपन्यासों में अंतर बखूबी दिखता है परंतु अधिकतर महानगरीय वातावरण और शिक्षित नारियों को ही उपन्यास कारों ने उन्हीं की समस्याओं को उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में उकेरा है जो अपने जीवन में कहीं ना कहीं संघर्ष पढ़े लिखे होने के बावजूद भी संघर्ष कर रहे हैं चाहे वह समाज की सोच के साथ हो चाहे पुरुष सत्ता के साथ हो चाहे पुरानी विचारधाराओं और दकियानूसी रीति–रिवाजों के कारण हो पर नारी निरंतर संघर्षरत है।

भारतीय समाज में नारी के वर्चस्व को स्थापित करने के लिए कई नारी आंदोलन हुए जिसके पश्चात नारी अपने व्यक्तित्व के स्वतंत्र अस्तित्व का विचार करने की क्षमता बढ़ने लगी वह पुरुषों के समान अपने आप को देखती है हर क्षेत्र में अपनी समानता का दावा करती है परिवार व समाज में होने वाले उसके प्रति हो रहे अन्याय का विरोध करती है आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके वह अर्थोपार्जन करना चाहती हैं जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके।

हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी के विभिन्न चित्रणों में राजनीतिक योगदान का चित्रण बिल्कुल नया है जिसे उपन्यास कारों ने बेहद प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कई उपन्यास कारों ने नारी के आत्म बलिदान का परिचय भी दिया है कई रूपों में जैसे पुत्री, पत्नी, माता, प्रेमिका के यथार्थ रूपों का बदलता हुआ स्वरूप चित्रित किया है इस प्रकार प्रारंभिक उपन्यास में नारी की परंपरागत भूमिका को बदलते हुए आधुनिक नारी के रूप में उभरी है जो कि एक आत्मनिर्भर नारी है और अपने अधिकारों को जानने और उसके प्रति लड़ने का दावा प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत उपन्यासकारों की समकालीन उषा देवी मित्रा, रजनी पाणिकर जैसी कई प्रभावशाली उपन्यासकार हुई जिन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा पितृसत्तात्मक समाज पर तीक्ष्ण कटाक्ष किया है उषा देवी मित्रा के कई उपन्यास सामाजिक स्थिति को सामने लाने में महत्वपूर्ण हैं।

इसी प्रकार हर दशक में कई ऐसे उपन्यासकार हुए जिन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा नारी समस्याओं को समाज के सम्मुख रखा है। जैसे कृष्णा सोबती इनका उपन्यास मित्रो मरजानी मन्नू भंडारी जोकि लेखन के क्षेत्र में एक अलग ही मुकाम बना चुकी थी उनके उपन्यास आपका बंटी, मंजुल भगत 70 के दशक की महत्वपूर्ण लेखिका उनके उपन्यास अनारो, शशी प्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग आदि यह सभी अपने अपने उपन्यासों से हर दशक में अपनी पहचान और अपने लेखन के द्वारा पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफऔर नारी सशक्तिकरण को बढ़ाने में मुकाम हासिल कर चुकी हैं।

इसी प्रकार से पुरुष उपन्यासकारों में निर्मल वर्मा, गोविंद मिश्र, विष्णु प्रभाकर जैसे कई बड़े लेखकों ने उपन्यासों में नारी को मुख्य विषय बनाया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ज्यादातर पढ़ी–लिखी शिक्षित नारी जो आधुनिक विचारों से भरी है उसी के कष्टों को उजागर किया गया है कि शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी वह किसी ना किसी समस्या और दकियानूसी रीति–रिवाजों के नीचे दबी हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, रोहिणी हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2015.
- अग्रवाल, सिंधु हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1968.
- अरोड़ा, बाला किरण साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर 1990.
- आचार्य, द्विवेदी प्रसाद हजारी साहित्य सहचर नैवेद्य निकेतन रविंद्रपुरी वाराणसी 1965.
- अग्रवाल, बिंदु हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली 1968.
- कुमार, राधा स्त्री संघर्ष का इतिहास वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2002.
- कुमार, राकेश नारीवादी विमर्श आधार प्रकाशन पंचकूला हरियाणा 2001.
- खुराना एल के डॉ बंसल आर के इतिहास लेखन धारणाएं तथा पद्धतियां लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा 2017
- गिरधारी, राधा राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर.
- गुर्टू, शचीरानी विश्व की महान महिलाएं युग प्रकाशन दिल्ली 1951
- गुहा, रामचंद्र भारत गांधी के बाद पेंगुइन बुक्स गुड़गांव हरियाणा 2011
- चव्हाण, अर्जुन राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1995
- चौहान, संजय उत्तर आधुनिकता और हिंदी उपन्यास आशा बुक्स दिल्ली 2011.
- चंद्र, विपिन आधुनिक भारत का इतिहास ओरियंट ब्लैकस्वान 2016
- चांद, एस. एम. भारत का सांस्कृतिक इतिहास स्टूडेंट्स बुक कंपनी जयपुर 1986
- ज्योति, अमर महिला उपन्यास कारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि अन्नपूर्ण प्रकाशन कानपुर 1999.
- जून, कृष्णा शिवानी के उपन्यासों में नारी विमर्श संजय प्रकाशन नई दिल्ली 2011.
- जैन, कमला जीजी विशारद नारी जीवन श्री जवाहर साहित्य समिति भीनासर 1953.
- जैन, महेंद्र कुमार हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण जैन ब्रदर्स नई दिल्ली 1974.
- जैमन, सुषमा प्रेमचंद्र के उपन्यासों में शोषित नारी साहित्यकार प्रकाशन जयपुर 2009.
- झारी, कृष्ण देव हिंदी साहित्य और साहित्यकार राष्ट्रीय हिंदी साहित्य परिषद नई दिल्ली 2009.
- टंडन, प्रताप नारायण हिंदी उपन्यास कला हिंदी समिति सूचना विभाग लखनऊ उत्तर प्रदेश 1965.
- डोडिया, बी डी हिंदी के प्रमुख साहित्यकार रावत प्रकाशन नई दिल्ली 2016.
- तिवारी, रामचंद्र हिंदी का गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2014.

- द्विवेदी, हजारी प्रसाद साहित्य सहचर नैवेद्य निकेतन वाराणसी 1965.
- द्विवेदी, प्रसाद हजारी, हिंदी साहित्य उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003
- धर्मपाल, नारी एक विवेचन भावना प्रकाशन दिल्ली 1996.
- नागेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास पेपरबैक्स नोएडा 2004.
- नेहरू जवाहरलाल, भारत की खोज राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद 1996
- पालीवाल, कृष्ण दत्त भारतीय साहित्य के निर्माता साहित्य अकादेमी नई दिल्ली 2009.
- पालीवाल, कृष्ण दत्त निर्मल वर्मा और उत्तर औपनिवेशिक विमर्श भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली 2012.
- पुष्पा मैत्रेयी गुड़िया भीतर गुड़िया राजकमल पेपर बैक्स नई दिल्ली 2016
- प्रेमचंद्र, मुंशी कुछ विचार सरस्वती प्रेस बनारस 1939.
- पांडे, उषा मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी भावना हिंदी साहित्य संसार दिल्ली 6 1956.
- बंदिवडेकर, चंद्रकांत उपन्यास स्थिति और गति पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली 1977
- बेचौन, सिंह शिवराज उपन्यास साहित्य में दलित समस्या एवं समाधान अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली 2014.
- भारती, धर्मवीर मानव मूल्य और साहित्य भारतीय ज्ञानपीठ काशी 1960.
- मदान, इंद्रनाथ आधुनिकता और हिंदी साहित्य राजकमल प्रकाशन दिल्ली 6 1971
- महोदय, बैजनाथ स्त्री और पुरुष महात्मा टॉलस्टॉय लिखित (द रिलेशन ऑफ द सक्सेस) का हिंदी अनुवाद सस्ता साहित्य प्रकाशक मंडल अजमेर 1927.
- मालती, केएम स्त्री विमर्श रूभारतीय परिपेक्ष वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2012
- माधव, नीरजा हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास सामयिक बुक्स नई दिल्ली 2014
- मार्क्स, कार्ल भारतीय इतिहास पर टिप्पणियां इंडिया पब्लिशर्स लखनऊ 1973
- मिश्रा, शरण भगवती हिंदी के चर्चित उपन्यासकार राजपाल एंड संस नई दिल्ली 2010.
- यादव, राजेंद्र अट्ठारह उपन्यास राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2013.
- यादव, उषा हिंदी की महिला उपन्यास कारों में मानवीय संवेदना राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1999.
- रांग्रा, रणवीर भारत के प्रमुख साहित्यकारों से अंतरंग बातचीत आर्य प्रकाशन मंडल दिल्ली 2008.
- राय, गोपाल हिंदी उपन्यास का साहित्य का इतिहास राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2002.

- राय, गोपाल हिंदी उपन्यास कोष खंड 2 ग्रंथ निकेतन पटना 1969.
- रामेश्वर, नारायण रमेश साहित्य में नारी विविध संदर्भ नचिकेत प्रकाशन दिल्ली 1996.
- लक्ष्मी, विजय ई. उपन्यासों के सरोकार राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली 2012.
- वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास लोकभारती प्रकाशन 2015.
- वर्मा निर्मल वह दिन वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2017
- वर्मा भगवतीचरण रेखा राजकमल पेपर बैक्स नई दिल्ली 2015
- वर्मा, निर्मल आदि, अंत और आरंभ राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2001.
- वर्मा, महादेवी श्रृंखला की कड़ियां लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2008.
- वर्मा, कल्पना स्त्री विमर्श विविध पहलू लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2009.
- वर्मा, शीला महिला उपन्यास कारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ विद्या विहार कानपुर 1987
- शर्मा , रामविलास भारतीय साहित्य की भूमिका राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1996.
- शर्मा नासिरा औरत के लिए औरत सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली 2014
- शर्मा रमा मिश्रा एम के महिला विश्वकोश अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2016
- शर्मा, मक्खन लाल ऐतिहासिकता और हिंदी उपन्यास प्रेम शील प्रकाशन दिल्ली 1979
- शर्मा, रामविलास अमृतलाल नागर रचनावली राजपाल एंड संस दिल्ली 1991.
- शर्मा, सुमन यशपाल के उपन्यासों में नारी चेतना पैराडाइज पब्लिशर्स जयपुर 2011.
- शर्मा, मालती वेदिका संहिताओं में नारी वाराणसी 1990.
- शाह, प्रियंका दलित आत्मकथा अस्मिता के आयाम आनंद प्रकाशन कोलकाता 2017.
- शुक्ल, रामचंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास नागरी प्रचारिणी सभा काशी 2006.
- सिंह बी एन सिंह जनमेजय नारीवाद रावत पब्लिकेशन जयपुर 2012
- सिंह, बहादुर विजय उपन्यासरू समय और संवेदना वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2007.
- सिंघल, सिंह शशी भूषण भारतीय स्वतंत्रता एवं हिंदी उपन्यास आर्य प्रकाशन मंडल दिल्ली 2000.
- सिंह, साहब लाल हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना नमन प्रकाशन नई दिल्ली 1998.
- सुधाकर, गोपी सावित्रीबाई फुले पायनियर ऑफ वुमन एंपावरमेंट अवनी पब्लिकेशन न्यू दिल्ली 2018
- सूरी, योगेश यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर 1994

- त्रिपाठी, व्यास मणि महादेवी वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व साक्षी प्रकाशन दिल्ली 2008.
- श्रीवास्तव, मीनाक्षी साहित्य में नारी चित्रण चिंतन नवजीवन प्रकाशन राजस्थान 2008.

उपन्यास

नागर अमृतलाल

- अग्निगर्भा , राजपाल एंड संस दिल्ली 2017.
- अमृत और विष, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 1976.
- एकदा नैमिषारण्ये, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 1972
- करवट, राजपाल एंड संस दिल्ली 1985.
- खंजन नयन, राजपाल एंड संस दिल्ली 1981.
- खरे तिनके, राजपाल एंड संस दिल्ली 1982.
- नाच्यौ बहुत गोपाल ,राजपाल एंड संस दिल्ली 1978.
- बूंद और समुद्र , किताब महल इलाहाबाद 1978
- महाकाल , राजपाल एंड संस दिल्ली 1970.
- मानस का हंस, राजपाल एंड संस दिल्ली 1980.
- शतरंज के मोहरे, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली 1974.
- सात घूंघट वाला मुखड़ा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 1976.
- सुहाग के नूपुर ,राजपाल एंड संस दिल्ली 1963.
- सेठ बांकेमल , किताब महल इलाहाबाद1971.

कमलेश्वर के उपन्यास

- आगामी अतीत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2007.
- एक सड़क सत्तावन गलियां, राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली 2011.

- काली आंधी, राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली 2008.
- कितने पाकिस्तान, राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली 2011.
- डाक बंगला, राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली 2005.
- तीसरा आदमी, राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली 1998.
- पति पत्नी और वह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2010.
- लौटे हुए मुसाफिर, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010.
- वही बात, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2006.
- समुद्र में खोया हुआ आदमी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2012.

जैनेंद्र के उपन्यास

- कल्याणी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली1939.
- त्यागपत्र, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई1937.
- परख, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड मुंबई 1956.
- मुक्तिबोध, पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली 1965.
- विवर्त, पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली 1982.
- सुनीता, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली1935.
- सुखदा, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली 2014.

यादव राजेंद्र के उपन्यास

- अनदेखे अनजाने पुल, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1994
- एक इंच मुस्कान, राजपाल एंड संस नई दिल्ली 2011.
- उखड़े हुए लोग, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2007.
- मंत्र विद्ध, अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली 1967
- राजेंद्र यादव के दो लघु उपन्यास कुलटा अनदेखे अनजाने पुल अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली 1969.
- शह और मात, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2005.
- सारा आकाश, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2008.

वर्मा सुरेंद्र

- मुझे चांद चाहिए, भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली1963.

- **अवस्थी लीला**
- दोराहे, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी 1958

प्रियंवदा उषा जी के जाने–माने उपन्यास

- अंतर वंशी, उत्तम प्रकाशन आनंद विहार दिल्ली 2003.
- पचपन खंभे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1962.
- रुकोगी नहीं राधिका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1968

- शेष यात्रा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1984.

शर्मा नासिरा जी उनके महत्वपूर्ण उपन्यास

- जिंदा मुहावरे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2016.
- ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 1989.
- शाल्मली, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2013.
- सात नदिया एक समंदर, सामयिक प्रकाशन दिल्ली 1984

पुष्पा मैत्रेई जी के उपन्यास

- अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2013.
- आंगन पाखी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2003.
- इदन्नम, किताबघर प्रकाशन 2010.
- कहीं ईसुरी फाग, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2008.
- गुनाह बेगुनाह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2011.
- चाक, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1997
- बेतवा बहती रही, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2006.
- विजन, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2016.
- त्रिया हठ, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2006.

कालिया ममता

- अंधेरे का ताला, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली2016
- एक पत्नी के नोट, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2007.
- दौड़, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2000
- नरक दर नरक, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2008.
- प्रेम कहानी, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली2007.
- बेघर, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1985.
- लड़कियां, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2007.

शोध ग्रन्थ

- किरण पोपकर, मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य, गोवा विश्वविद्यालय तालेगाँव गोवा.
- टेस जोस, उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में स्त्री स्वत्व की तलाश, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय कोट्टयम केरल 2013.
- मोहम्मद अजहरवाला, आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण 1960 – 1995, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा 1998.
- मीनेश शर्मा, हिंदी आत्मकथा लेखन और साहित्यकारों की आत्मकथाएं समकालीन परिदृश्य 1969 से 1999 तक, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली 2003.
- मिनी वर्गीस, स्वतंत्रोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी के बदलते स्वरूपरू महिला लेखन के विशेष संदर्भ में, श्री संकराचार्य यूनिवर्सिटी आफ संस्कृत कलादि 2006
- प्रदीप कुमार शर्मा, स्वतंत्रोत्तर हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद 1976

- नमिता जायसवाल, समकालीन महिला उपन्यास लेखन में स्त्री अस्मिता, कोलकाता विश्वविद्यालय कोलकाता. 2009

- निशा सी.मोहम्मद, मैत्रेई पुष्पा और पी. वत्सला के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, श्री संकराचार्य यूनिवर्सिटी आफ संस्कृत केरला 2012.

- रजनी वी ए, ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी अस्मिता की तलाश, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय कोट्टयम केरल 2014

- शीला यल्लप्पा भंडारी, हिंदी साहित्य में दलित नारी चेतना एक अध्ययन, हिंदी विभाग कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ 2006.

- साक्षी अग्रवाल, मंजुल भगत के कथा साहित्य में चरित्र सृष्टि, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ 2010

- सुनीता, मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की संघर्ष यात्रा, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिंबरेवाला विश्वविद्यालय झुंझुनू राजस्थान.

शोध पत्र

GENDER AND WOMEN IN PREMCHAND'S SHORT STORIES

Authors: Pallavi Tiwari

Source: Proceedings of the Indian History Congress] 2009&2010] Vol- 70 ¼2009&2010½] pp-

673–679

Published by: Indian History Congress

Stable URL: https://www-jstor-org/stable/44147715

Emerging Trends in the Novels and Contemporary Society

Authors: Sulochana Rangeya Raghava Source: Indian Literature] Vol- 24] No- 2 ¼March&April 1981½] pp- 78&89

Published by: Sahitya Akademi

Stable URL: https://www-jstor-org/stable/24158487

FEMINISM AND MODERN INDIAN LITERATURE

Authors: R-K- GUPTA

Source: Indian Literature, Vol- 36, No- 5 (157), ACCENT OF WOMEN'S WRITING (September&October, 1993), pp- 179&189

Published by: Sahitya Akademi

Stable URL: http://www-jstor-org/stable/23339720

Accessed: 23 – 05 & 2018 07:51 UTC

Metaphors of Womanhood in Indian Literature

Authors: Mridula Garg

Source: Alternatives: Global, Local, Political, Vol- 16, No- 4 (Fall 1991), pp- 407–424

Published by: Sage Publications, Inc-

Stable URL: http://www-jstor-org/stable/40644725

Accessed: 23&05&2018 08:04 UTC

Portrayal of Women in Premchand's Stories: A Critique

Authors: Charu Gupta

Source: Social Scientist, May & Jun-, 1991, Vol- 19, No- 5/6 (May & Jun-, 1991), pp- 88–113

Published by: Social Scientist

Stable URL: https://www-jstor-org/stable/3517875

PORTRAYAL OF WOMEN IN HINDI LITERATURE IN THE EARLY TWENTIETH CENTURY

NATIONALIST IDEOLOGY ¼WITH SPECIAL REFERENCE TO VOICES OF DEFIANCE IN

PREMCHAND'S WRITINGS½: SUMMARY

Authors: CHARU GUPTA

Source: Proceedings of the Indian History Congress, 1991, Vol- 52 (1991), pp- 825–826

Published by: Indian History Congress

Stable URL: https://www-jstor-org/stable/44142718

Review Reviewed Work: A History of Hindi Literature by F- E- Keay

Review by: R- P- Dewhurst

Source: The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland] No- 2 (Apr-, 1922), pp- 293–297

Published by: Cambridge University Press

Stable URL: https://www-jstor-org/stable/25209898

Accessed: 07&08&2018 07:09 UTC

SOCIOLOGY'S PORTRAYAL OF WOMEN: Socio–Political Implications

Authors: NANCY R- HOOYMAN and SUSAN JOHNSON

Source: Soundings: An Interdisciplinary Journal, Vol- 60, No- 4, The Human Sciences In Human Perspective (Winter 1977), pp- 449&465

Published by: Penn State University Press

Stable URL: http://www-jstor-org/stable/41178042

Accessed: 07&03&2017 07:18 UTC

SOME MORE ENGLISH WORK

- Beauvoir, De Simone The Second Sex Vintage books New York 2010
- Forster, E. M. Aspect of the Novel Rosetta Books New York 2002
- Gupta, Charu The Gender of Caste University of Washington press 2016
- Gaeffke, Peter Hindi Literature in the Twentieth Century Otto Harrassowitz Wiesbaden 1978
- Mill, Stuart John The Subjection of Women Longmans Green Reader and Dyer London 1878

Research Paper
Impact Factor: 4.164
Refereed Journal

IJMDRR
E- ISSN –2395-1885
ISSN -2395-1877

PORTRAYAL OF WOMEN IN WOMEN'S WRITING

Pretty Pushkar
Research Scholar,Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow.

Abstract
This paper presents the women writer portrayed Indian women's pain in their novels. The women in Hindi literature are portrayal, who willingly accepts her socially assigned roles. The literatures are the reflection of the human society over centuries. It has been most powerful medium to describe human emotions and thoughts. Since Ages we've got acknowledged a large gap between the socially expected role of man and lady. They each have some social and ethical responsibilities connected to them by birth. Man is believed to the superior species, dominating different creations of God. This distinction is extremely abundant visible in literature since centuries. At the end of the 20th century, the female novelist on the woman dissolved in life, the untimely, which has contributed unimaginably to the women's existence by spinning despair and darkness. That is admirable in the field of literature. I have chosen to look at the fiction of famous some Hindi female writers. Women writing creative pursuits have a long binding relation with their inner revolt against the patriarchal system.

The style of writing novels a vital role in appealing and influencing the audience and transfer in some modification within the thinking of the targeted society.

Key Words: Literature, Society, Freedom, Woman, Portrayal, Hindi.

Introduction

The women in Hindi literature are portrayal as an idealized being who willingly accepts her socially assigned roles and when her mind strayed away from these confines she was overcomes with a terrible sense of shame and guilt. The image of women in literatures emerges partly from the existing reality of the society and partly from the author's sensitivity to its burning issues. Roles other than those assigned by the society as a self dependent, bold and strong , individual, as an achiever, as a leader are, by the large rarely found in literature and these too represent the exceptional variety of the women's individual ability. In the male dominated society of India, where a platonic relationship between a man and a women is uncommon, a women's individual self receives little recognition and respect. The individuality of typical Indian women was overwhelming swamped by the male dominated attitude along with the back drop of an exclusively male oriented culture. Some writers have focused their attention not only on the outer situation and conflict but also on inner disorder of modern women.
Women are the essential and important part of society. In the ancient Indian tradition, the woman has been accepted as a man's half-mare. Woman is not a rival but a supplement of man. So the life of a man without women is incomplete but the situation of women went worse with time.

Social Status of Women in Ancient Time

Prehistoric discovery reveals that this world has been the male dominant since the beginning. In the Vedic age, the position of woman was respectable and its place was considered very high. Although there was a patriarchal society, there was a very unending approach towards women in that era. The woman had a great importance in all areas of life. Women also had the facility of study. She got equal rights in her husband's religious and social work. Aryan believed that the woman is entitled to full respect and affection.

After the Vedic period, there were several important changes in the situation of women. Life was considered a pleasure in the Vedic period. Later, while the sage gave more importance to scald the expectation of happiness in life. Buddhism opened the door to spirituality equally for women and men. In that era, women became completely self-sufficient.

Social Status of Women in Medieval Period

Medieval origin was the period of art and majesty. Tired of battlegrounds in the battlefield, glorification of luxury in his court and only in the charm of the woman, the happiness of the mind is to find peace. By the end of the Mughal period, the tragedy of the woman reached in the peak.

Social Status of Women in Modern Period

In modern times, reformist approach towards women was adopted some social reformers protested against the misconceptions that made the woman's life miserable. Organizations like Brahma Samaj, Arya Samaj, made successful attempts to strengthen the status of women by opposing sati system, child marriage, and devadasi system. Two foreign women, Margaret, Annie Besant, take the first step towards the up liftman of Indian woman.
Indira Gandhi, Sirimao Bhandarnaeke, Almeda Merkas, and Begam Nusrat Bhutto distinguished on important posts.

A Women repressed by ages and they denied the code of conduct by men. Indian woman with modern consciousness has an independent place in society. Today, the woman is conscious, like stunning face in a variety of fields of life, with a rich, independent and attractive personality such as Political, Social, Economic, Religious, Scientist, and Literature. Modern era has given a revolutionary twist to the feminist notions[2]. Awareness of the environment and questionnaire mentality is an essential part of modernity, which has contributed to the development of education and scientific vision.

Female Hindi Writers

Novel writing started by women in the last decade of the 19th century. Since then, in the post-independence period, the creation process of female novel cars continued for a steady pace until the seventh decade. But then numerous female writers entered the field of novel writing.

Portrayal of Women In The Fiction of Shashi Prabha Shastri

Shashi Prabha Shastri is a realistic struggling writer. She has illustrated the diverse form of the pain of middle-class upper middle class women in the urban surroundings. Her main novels are Naave, Seedhiyan, Kyonki, Parchhaiyon ke Peechhe, Kark Rekha, Umra ek Galiyare etc. Shashi Prabha Shastri has evaluated the social status of the woman primarily in her literature. Presents the realistic form of Indian society. She has mostly focused his literature on middle and lower classes because the women of middle and lower class understand the literature more easily by solving their problems. She described the two forms of women in their literature first to achieve their name and position in the outer world of the woman to build her personality, even if she did not believe in other domestic traditions.

Depiction of Women In The Novel of Mridula Garg

Mridula Garg has been the most popular and best writer of the eighth decade. She has psycho-analytic form in her writings. Some of her major novels are Vanshaj, Uske Hisse ki Dhoop, Chitkobra, Aanitya, Mai aur Mai, Kaathgulab. Mridula ji depicted subtle view of frustrating relationship of husband wife in married life. New generations have got a new perspective from her novels.

Portrayal of Women in the Writings of Usha Priyamvada

Usha Piyanvada holds an important position in the emerging writings of the sixties. Her creations have a presentation of soulful moments. Usha Piyanvada is a personalist novelist. She portrayed the age anomalies of female life in her works.Usha Priyamvada's novels are Pachpan Khambe Lal Deewarien, Rukogi nahi Radhika, Shesh Yatra aur Antervanshi. The main theme of these novels is women psychology. In these novels, the image of a modern woman is clearly seen. Especially it is related to the educated upper and middle class. Reflect on making your personality self-respecting and self-supporting. Character Sushma of Pachpan Khambe Lal Deewarien's was highly educated economically independent woman but she never thought about her marriage because of wealth. Being cut off from his environment, she finds herself alone. In order to fill her desolation, she is in search of love relations with whom she has become deprived. Sushma sacrificed the growing neil in the family's responsibilities in a way. Character Radhika from "Rukogi nahi Radhika" is a modern lady. She cannot bear the domination of man. She does not want to bow in front of anyone. She wants her own independent existence and she continues to struggle constantly to establish herself. Shesh Yatra's Anu in the early part of the novel, there has emerged as a traditional Indian woman, and in the latter half emerged as modern. Effectively portrayed the conflict between women and the activities of her life.

Strong Depiction of Women in the Fiction of Mamta Kalia

Mamta Kalia's name is one of the great writers. "Uska Youvana" story collection is awarded by the Uttar Pradesh Hindi Institute, Yash Pal award of 1985.
Her main novels are Beghar, Narak Der Narak, Prem Kahani, Ek Patni ke Notes, Ladkiyaan, and Aisa Tha Bajrangi.

Her "Beghar" novel defines the consequences of medieval monotony and negative ideas prevailing in society. In this novel, she has succeeded to show the Frustrations of life conflict and inconsistencies. "Narak Der Narak" novel describes many levels of hell infested in middle-life. There has been a strong and poignant depiction of problems rise of unemployment and the unhurried, inferior, disaster, tragedy. Illustration of the status of a woman born in the novel Prem Kahani. Novel "Ek Patni Ke Notes" depicted in the reality of the woman who always under the husband. The author Mamta Kalia depiction around the Indian woman. At the centre of her compositions, the problems of middle class educated women are seen. She denies the traditional life view towards the woman. Mamta Kalia is famous as a bitter expression writer. She believes that the style of rituals has changed in era change, but the woman is still struggling and oppressed.

Even today, the woman is not such a free person that counteracts her husband's harassment. In her works, pictures of social economic discrepancies appear outside of married life. In this way we see that Mamta ji has raised many women problems in her literary works.

Effectively Depiction of Women by Nasira Sharma

Nasira Sharma was born in Allahabad in 1948. She received postgraduate education in Persian language and literature. Nasira is considered to be an expert in Islamic art, culture and politics. Apart from creative writing, they have special interest in journalism too. Her main novels are Saat Nadiyan Ek Samunder, Shalmali, Theekre Ki Mangani, Jinda Muhavare.

Their stories depict economic socialism. The "Jinda Muhavare" depiction of various events falling in human life Commented on activities that change over time. It is depicted through Shalmali, the heroine of the Shalmali novel, which has the natural and simplicity of the constrained woman, decreases gradually to live at the level. The modern Indian working woman, who has won from these double standards, suffers from life's problems. In the novel "Theekre Ki Mangani" Nasira Sharma has succeeded in bringing the woman's hard work in front of the society in a very neat way. With the development of life some situations arise that forced to break the customs and Mahrukh go against family futures and expectations. She has broken her engagement, and refuses to marry and becomes a independent school teacher.

Represent the Women Depiction in the Novel of Mannu Bhandari

Mannu Bhandari, the most famous writer of the sixties. She has written in several streams of literature. Her creation world is living her experience. She has portrayed the subtle feelings of woman mind in novel, story, drama and literature. Basically Mannu Bhandari ji depicts that how in modern society a family get disturbed by small things who earlier spend their days very happily, this type of depiction we come to know in Bhandari ji's literature. Mannu Bhandari's first novel is "Aapka Bunty". This is a psychoanalytic novel. Under this novel, there is a discription of decreasing effects of divorces between husband and wife on the child's mental status. "Ek Inch Muskaan" novel is written in collaboration with husband Dr. Rajendra Yadav. "Trishanku" related to the new story movement is the famous story of Mannu Bhandari. The story of the consolation of husband wife and his teenager, Tanu, who emphasizes the rich and sophisticated ethics in the Trishanku story. Many plays have also been written in this area. Her three-point play "Bina Deewaron Wala Ghar" is published in 1965. In this play, when a third person comes in between husband wife, how is the question of suspicion and how it ruins the entire house? This play has been written to express the stressful condition of men and women and their social personality relationships. Mannu Bhandari's sentiment is very contemporary.

Depiction of Women in Shivani's Novel

Shivani narrates the purpose of literature. Shivani putted the women in the centre in her all the novels. Shivani has seen the woman in two ways like traditional woman and modern woman with the vast experience of her life.

Ancient Traditional Woman- Shivani's traditional Indian woman caught many miseries and tortures of married life but she could not even think of being separated from her husband it understands its destiny.

Today's Modern Woman- Consciousness has also been awakened in the medieval Indian women, due to the introduction of modern education and western rights of women as well as following the Western way of life. In every field of work she has proven it with its capable functionality and shown women are not less than men in any degree. But the modern woman has emerged in another form where the rivalry of the woman makes the goal of life to the rivalry. Shivani's main novels are as under:

Mayapuri: In the novel presented, Shivani has portrayed the worthlessness of human emotions in front of the importance of increasing wealth in modern society. Shobha the heroine of the novel, even after completion of her life, she did not able to took the position the daughter-in-low of satish. So, her place took by minister's daughter Savita.

Patal Bhairavi: The novel's main objective is to mark the arrangements and problems of the lives of the victim.

Choudah phere: The story of a woman standing at the crossroads of Indian and Western civilizations, which live the life of extreme independence during the rule of her father. Later on when her father tries to bind her in the rules of his orthodox mountain society, then she becomes rebellious.

Krishnakali: The novel presented the story of such a woman. Those who have never learned to lose nor learn to tilt, even if it has not broken. Shivani has other touching novels Surangama, Manik, Vivart, Kishunali, Mera Bhai, Paatheya etc.

Women Depiction by Krishna Agnihotri

Krishna Agnihotri- Krishna Agnihotri is one of the social novelists. She entered the into the world of literature writing around 1960's. She is the established author of Hindi literature. Her famous writings are Baat ek Aurat Ki, Bouni Parchhaiyan, Taprewale, Kumarikaien, Te ski Kahaniyan, Abhishek aur Nilopher. Krishnaji is an intuitive story writer of fundamental diversity and subtle narratives and because of its simple language, style and contemporary vision. Hindi fiction holds its own place in the literary world. | Today's human being is living in such a society family where it is breaking from both sides in and out. The statements of Krishna's statement are diverse, in which repetition is not found, which expose the discrepancies of the social, political, cultural, areas. She has done a mute mockery of the woman suffering from feudal and familial tendencies, her novels depicting the modern society's paradoxes, corruption and unethical actions.

Socially Involve Depiction by Manjul Bhagat

Direction of Manjul Bhagat writings are social novels. Her main novels are Toota Hua Indradhanush, Anaro, Bavan Patte Aur Ek Joker, Begane Ghar Me, Khatul, Tirchhi Bauchhar, Ganji. Manjul Bhagat is honored with many awards. She has got Uttar Pradesh Hindi Institute and Yash Pal Pratishthan Awards for the "Anaro" novel. The "Khatul" novel has received the award by the Hindi Academy Delhi. Manjul Bhagat is a versatile talented writer. Her creations have a deep sense of humor and wide sympathy. Their women character does not escape from the circumstances but struggle with them. His novel "Anaro" is a strong characteristic masterpiece. In which the picture of the hilly slums of Delhi has been pictured. It is a novel depicting the low level of a city life. "Toota Hua Indradhanush" is 47 pages miniature novel. Which is a novel depicting the life and surroundings of upper class. Manjul Bhagat has made the subject of his writing mainly for the following middle-class economic problems. She is facing every problem of woman's life and expresses it in a poignant manner.

Portrayal of Women by Malti Parulker

Malti parulker- Illustrating the various stages of female life in literature by Malti parulker. She has written two-three novels in Hindi literature's novel, yet her novels are well-known in the eyes of critics and readers. In your compositions family, society, politics is all mentioned. Being a woman, what Mrs. Parulkar has tried to understand the interrelation of woman is she's special in her own right. The author himself has spiritual affection. The author raised her voice about the issues of the minute problems of ideal women through her writings. There are many problems of frustrated society that openly attacked them. Women's screams against men's importance, which has been going on for ages, have been told very important things. In simple flowing language, the author has made a successful attempt to create uniformity in rural and urban characters through poignant events.

Women in the Writings of Kusum Ansal

Kusum Ansal is a novelist who has portrayed mostly middle class women in her novels. Fierce problems of female exploitation are prominent in these novels. The homogeneity of married life is seen in the form of depth, social irony etc., in her writings. Kusum ji's main novels are Uski Panchvati, Apni Apni Yatra, Ustak, Udas Ankhein, Neev Ka Patthar. Kusum ji has touched many points of life in terms of theme diversity. Author Have given new credibility to the experience of love. Her novel called "Uski Panchavati is a love story that is a two day love story. Heroine of novel "Ustak" Mukta is a lower middle class woman. She sees many incidents in her small life which shatter her from inside. Kusum ji has depicted the socio-economic disparities of the lower class.

Depiction of Women by Prabha Saxena

Prabha Saxena- Prabha Saxena ji has made her the subject of most women problems only for her novels in her "Tukdon me Bata Indradhanush" is a novel depicting dialectical upheaval by today's educated woman.

Conclusion

This paper has attempted to demonstrate the role of ideology and social forces in restricting women within the area of reproduction as reflected in Indian fiction in Hindi. An analyst of a selected number of novels over the past five decades shows women treated by writers as a compensatory mechanism used to manipulate and control woman. In patriarchal family structures, women have participated in a system, in the politics of motherhood, unaware of their own power to intervene. In the Indian context, the possibilities of extending female nurturance and sustenance, from the family to the outer world may allow women to claim this role as positive. With the changing times, the format of the Hindi novel also changed. In the sixties, there was a flood of female writers in the field of Hindi novels. Many women writers started writing novels about different topics and problems. The compositions of these prominent writers give the dissolution of the woman's inner world to the hollowness and self-struggle. Most writers is associated with middle class culture due to its classical pain and lower class struggle. Women are also influenced by social change.

It also mentions that with changing society, the woman's thinking, reaction and experience also change. In fact, our society provides equal opportunities for education; it creates aspirations in women and forces others to live in the border. Make it equilibrium both at home and outside. All aspects of gender relations have been expressed in novels of writers. Women's writing reflect issues related to women's lives, their trials and tribulations, and their journey, as it were, by implication is uses a gaze that is either a neutral one viewing life from the line of gender divide or it speaks from one side of that line with a deeper perception of 'self' and comparing with the 'other'. Most of these writers, however, have focused largely urban experience of women, living out the much more critical challenges faced by rural women at the interface of class and gender. One major factor that seemed important and has been considered is their popularity amongst masses. That is to say the women writers with whose works more and more women identified themselves for one reason or the other.

The second factor is the nature of problems that the women writers have raised in their works. It seemed more logical to choose writers who have raised issues of more realistic nature with wide social relevance such as enhanced and alternative expression of female sexuality, psychological barriers, social alienation, extra marital affairs, divorce, and sexual discrimination at work place and so on. Also because most of these issues have attracted the attention and resources of the academic researchers and women organizations, and thus can very well be regarded as issue facing a large cross-section of Indian women today.

Notes and References

1. Dr Devesh Thakur Prasad ke naari Charitra Navyuga Prakashan Delhi P-32.
2. Padmini Sen gupta Women works of India Asia Publishing House p. 7.
3. Singhal Shashi Bhushan Shivani Ke Sakshatkaar 23 september 1989.
4. Ila Chandra Joshi Pret aur Chhaya Bharti Bhandar Allahabad p. 406.
5. Agnihotri Krishna Kumaarikayein Indra Prasth Prakashan Delhi 1978.
6. Agnihotri Krishna Neelofer national Publishing House New Delhi 1988.
7. Agnihotri Krishna Baat Ek Aurat Ki Indra Prastha Prakashan Krishna Nagar Delhi 1998.
8. Ansal Kusum Us tak Parag Prakashan Delhi 1979.
9. Ansal Kusum Apni Apni Yatra Saraswati Vihar Delhi 1981.
10. Ansal Kusum Uski Panchwati Hindi Book Centre Asaf Ali Road Delhi 1990.
11. Bhagat Manjul Anaro Rajkamal Paper Baks, Delhi 1996.
12. Bhagat Manjul Tirchhi Bauchhar Rajkamal Paper Baks, Delhi.
13. Bhandari Mannu Aapka Bunty Radhakrishnan Publication New Delhi 1989.
14. Garg Mridula Chitta Kobra Radhakrishnan Publication New Delhi 1989.
15. Garg Mridula Anitya National Publication House New Delhi 1984.
16. Garg Mridula Mai aur Mai National Publication House New Delhi 1984.
17. Garg Mridula Uske Hisse Ki Dhoop Rajkamal Paper Baks Delhi 1984.
18. Garg Mridula Kaath Gulaab Bhartiya Gyan Peeth Prakashan New Delhi 1984.
19. Kalia Mamta Beghar Rajkamal Paper Baks, Delhi second addition 1989.
20. Kalia Mamta Narak Der Narak Lokbharti Prakashan Allahabad 1975.
21. Kalia Mamta Ek Patni Ke Notes Kitab Ghar Publication New Delhi 1997.
22. Priyamvada Usha Pachpan Khambe Lal Deewarien Rajkamal Prakasha New Delhi 1984.
23. Priyamvada Usha Rukogi Nahi Radhika Rajkamal Prakasha New Delhi.
24. Priyamvada Usha Sheshyatra Rajkamal Prakasha New Delhi.
25. Sharma Nasira Shalmali Kitab Ghar Publication New Delhi third edition 1994.
26. Sharma Nasira Theekre Ki Mangni Kitab Ghar Publication New Delhi second edition 1996.
27. Shastri Shashi Prabha Shidhiyan National Publishing House New Delhi 1974.
28. Shastri Shashi Prabha Parchhaiyon ke Peechhe National Publishing House New Delhi 1977.
29. Shastri Shashi Prabha Kyonki National Publishing House New Delhi 1980.
30. Shastri Shashi Prabha Naaven rajkamal Paper Baks New Delhi 1990.
31. Saxena Prabha Tukdon Me Banta Indra Dhanush Rajpal and sons Delhi 1980.
32. Agyeya Nadi Ke Dweep Saraswati Press Delh.i
33. Dr Chhavi Samkaleen Mahila Upanyaskaron Ki Astitvva Vaadi Chetna SS Publication Delhi.
34. 1985-1999.
35. Joon Krishna Shivani Ke Upanyason me naari vimarsh.

शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
78 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चित्रण

प्रेटी पुष्कर
अनुसंधान विद्वान, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश
ई–मेल prettypushkar10@gmail.com

सारांश

उपन्यास आधुनिक जीवन का गत्यात्मक महाकाव्य है जिसमें जीवन की जटिलताओं समस्याओं संवेदनाओं और अंतर्विरोधों का रेखांकन सामाजिक गतिविधियों संरचनाओं और अवध ाारणाओं के अनुरूप होता जा रहा है। अतः इस साहित्यिक विधा में सामाजिक जीवन के एक समानांतरता दिखाई पड़ती है। यह मानवीयता को स्वीकार कर मनुश्य जीवन की ऊपरी और अतल गहराइयों का स्पर्ष कर किंतु उससे विभन्न रूप धारण कर महत्वपूर्ण बन जाता है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने उपन्यास को परिभाषित करते हुए कहा था मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। महिला लेखन समय की जरूरत है जो महिलाओं द्वारा महिलाओं को दृष्टि में रखकर समाज में उनके लिए परिभाषित मूल्यांकन एवं प्रतिमानों को परखता है और गलत प्रतिमानो को खारिज कर नए मूल्यों की सृष्टि की ओर उन्मुख होता है। कभी–कभी लेकिन लेखिकाओं को सामाजिक चुनौतियेां का सामना करना पड़ता है। कभी वह व्यंग का पात्र बन जाते हैं कभी उनके साहित्य का मूल्यांकन सही मायनों में नहीं हो पाता। आधुनिक काल में लेखिकाओं के ऊपर नारीवाद और नारीवादी विचारधाराओं का बहुत ही ज्यादा प्रभाव पड़ा है। पितृसत्तात्मक समाज के अंतर्गत स्त्रियेां के व्यक्त्वि का विकास होता है बल्कि उनका व्यक्त्वि विकृत होता चला जाता है । पढ़ी–लिखी आधुनिक सोच वाली महिलाएं अपने व्यक्त्वि के लिए आशामय हैं और वह अपने व्यक्तित्व की स्थापना की कोशिश भी करती हैं यह महिलाएं साहित्य में अपने एक अलग दृष्टिकोण की स्थापना करती हैं और साहित्य में स्त्री को एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

मुख्य शब्द– *उपन्यास महिलाओं लेखिकाओं मानसिक।*

प्रस्तावना :

भारत 1947 में ब्रिटिश शासन से आजाद हो गया था एवं इसके उपरांत एक स्वतंत्र संविधान तैयार किया, जिसे 26 जनवरी, 1950 को पूरे भारत वर्ष में लागू किया गया। भारतीय संविधान अपने आप में एक अनोखा संविधान है तथा इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता पुरूष और महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करना

है। इसके अतिरिक्त महिलाओं के उद्धार के लिए कदम भी उठाए गए हैं। प्रत्येक भारतीय नागरिक को भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। पर अभी भी महिलाओं की अभिवृद्धि आवश्यक है।

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्य में कई विधायें शामिल हैं जिसमें उपन्यास एक ऐसी विधा है जिसने मानव जीवन और मानव समाज के वास्तविक रूप को प्रस्तुत किया है और महिलाओं की स्थिति को सुचारू पूर्वक दर्शाया गया है। जिसमें महिला लेखिकाओं योगदान सर्वोपरि है स्वतंत्रता के बाद महिला लेखन नारी जीवन के विधिक पक्षों को अपनी आधुनिकता से प्रस्तुत करने का प्रयास करने लगी।

लेखिका ने नारी संबंधी अपने सुलझे हुए दृष्टिकोण से उपस्थित कर नारी चिंतन को नई दिशा निर्देश देने में सक्षम बन पाए हैं। उनकी रचनाएं साहित्य को एक नई भाषा, नया पाठ एवं नई दृष्टि देती है। महिला उपन्यासकारों की रचनाओं से स्त्री के विभिन्न पक्षों त्रास, पीड़ा, अकेलेपन, और अन्य समस्याएं पाठकों के सामने प्रस्तुत होने लगी भारतीय समाज में नारी के प्रति दोहरे मापदंड जो प्राचीन काल में भी विद्यमान था, वह आज भी बरकरार है हर जमाने में नारी के उजले रूप और मानसिकता को परंपरा से चले आ रहे सत्ता केन्द्रित पुरूष प्रधान समाज में स्त्री समाज द्वारा बनाये गए नियम का उल्लंघन करने में असमर्थ बनी रही है।

वर्तमान समय में घर और बाहर के जीवन में संतुलन स्थापित करने में महिलाओं का संपूर्ण जीवन बीत जाता है परंपरागत मान्यताओं, अवधारणों और कायदे कानूनों के अन्तर्गत दम घुटती नारी की मुक्ति के तीव्र आग्रह के बारे में लेखिका ने अपने सशक्त भाषा प्रयोग से किया है। अपनी महिला पात्रों के जरिए भी स्त्री की स्वतंत्रता और अधिकार की भावना को प्रस्तुत कर देती हैं। स्त्री वर्ग चेतना उनकी अभिव्यक्ति नारी दृष्टि के अनुसार करती हैं और परंपरागत सत्तात्मक सामाजिक संरचना के अंतर्गत विद्यमान नारी संबंधी नारी स्वतंत्रता के भाव बोध को सार्थक और नई भाशा में प्रस्तुत करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चित्रण :

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 को अलीगढ़ जिले में हुआ ब्राहमण कुल में जन्मी पली मैत्रयी भिन्न–भिन्न वर्ग समुदायों के पारिवारिक आश्रय में बड़ी हुई इनका आरंभिक जीवन झांसी में व्यतीत हुआ। निडर व्यक्तित्व की धनी मैत्रेयी पुष्पा अपनी बात को स्पष्टता पूर्वक कहती थी । अपनी स्पष्टवादी प्रवृत्ति के कारण ही उन समस्त लेखकों को स्पष्ट रूप से यह बताती हैं कि कल्पना का आश्रय लेकर रचना लिखने वाले क्या जाने की यथार्थ की तहों में छुपा यथार्थ क्या है। मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व पारदर्शी होने के नाते उनमें अद्भुत साहस आत्मबल और दृढता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह गुण उनकी नायिकाओं में भी भरपूर दिखाई पड़ता है।

मैत्रेयी पुष्पा यह नाम सुनते ही एक सशक्त नारी का चित्र हमारे सामने आता है । चाक की नायिका सारंग की तरह एक सशक्त नारी मैत्रेयी जी ने जो कुछ अपने जीवन में देखा और अनुभव किया उसको ही वे अपने उपन्यासों को कहानी का रूप से देती हैं। इसी कारण उनके उपन्यास पाठकों को प्रभावित करते हैं।

मैत्रेयी पुष्पाजी ने 1990 से अपना लेखन प्रारंभ किया। उन्होंने अपने जीवन के खट्टे मीठे अनुभवों को उम्र के इस पड़ाव में आकर लेखन की कला से बताया है । वह बहुत ही सीधा और सरल जीवन व्यतीत करती थी और उन्हें इसी प्रवृत्ति के लोग बेहद पसंद थे उनको गांव का वातावरण अपनी ओर आकर्षित करता थी। उनके साहित्य में एक तरह से स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक के परिवेश का समाविष्ट है। पुरूष प्रधान समाज में वह स्त्री के अच्छे और बुरे अनुभवों को अपने लेखन की कला से प्रस्तुत करती हूं। उनके लेखन में एक अलग ही बात है जो असल जिंदगी के अनुभवों को दर्शाती हैं उनके पात्र को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है जैसा कि हम उन पात्रों में उतर चुके हैं मैत्रेयी जी के लेखन में इतनी गहराई होती है की वह अपने उपन्यासों को समाज का आईना बना देती हैं। आज के समय में मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसी लेखिका प्रमाणित हुई है जिन्होंने अपने लेखन में इमानदारी और सत्यता का परिचय दिया है। उनकी रचनाएं इदन्नम, झूला नट, अल्मा कबूतरी, स्त्री विषयक संवेदनाओं के विविध आयामों से भरपूर हैं। उन्होंने अपनी कथा के स्त्री पात्रों को ग्रामीण वातावरण में ढूंढा, उनके सुख दुख और उनके जीवन के संघर्ष को सुना समझा और अपने शब्दों के जरिए से अपने लेखन में उतारा।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी

नारी पर अत्याचार

प्राचीन समय से ही स्त्री एक भोग्य वस्तु रही है। पुरूष प्रधान समाज में भी वह अपने सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के साथ जीना चाहती हैं परंतु कुछ पूंजीवादी और सामंतवादी लोग उसके दैहिक सौंदर्य को देख कर उसका शोषण करते हैं सामंतवादी और जमीदार लोग मेहनत मजदूरी करने वाली स्त्रियों को शोषण का शिकार बनाते हैं। मैत्रेयी जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री के शारीरिक मानसिक आर्थिक और नैतिक अत्याचार का वर्णन किया है। उपन्यास इदन्नम में उसकी महिला पात्र अलिया इस शोषण का साक्षात उदाहरण है। पंद्रह वर्षीया आलिया अपने केशर मालिकों के पास गिरबी है। मात्र 15 वर्ष की आयु में एक किशोरी के शारीरिक शोषण की यह बहुत ही मर्मस्पर्शी कहानी है। आर्थिक रूप से पीड़ित स्त्री अपने परिवार की उत्तरदायित्व को निभाने के लिए हर प्रकार से खुद को समर्पित कर देती है और यह पुरूष प्रधान समाज उन स्त्रियों का फायदा उठाने में तनिक भी संकोच नहीं करते ।

इस उपन्यास में अभिलाख सिंह जगेशवर की बेटी सुगना से जबरदस्ती करने की कोशिश करता हूँ। अभिलाख का लीला के साथ और गणेशी का तुलसिन के साथ अनैतिक संबंध का चित्रण भी इस उपन्यास में किया गया है।

मैत्रेयी जी के दूसरे उपन्यास कस्तूरी कुंडल बसेरा में कस्तूरी अपनी बेटी मैत्रेयी को शहर के कॉलेज में पढ़ने भेजती हैं और वहां के प्रिंसिपल जो कि मैत्रेयी से बहुत बड़े हैं उसका शारीरिक शोषण करते हैं लड़की के साथ हुए, अत्याचार के बावजूद समाज में उस लड़की पर ही दोष लगाया जिस लड़की का शोषण हुआ।

विवाह के बाद नारी

आज के आधुनिक समय में अभी भी कई परिवार ऐसे हैं जो विवाह में कन्या की सहमति

को प्रथमिकता नहीं देते। उनके अनुसार माता पिता द्वारा पसंद किए गए पुरूष से ही उस कन्या को विवाह करना ही पड़ता है चाहे वह उसके लिए सही हो अथवा ना हो। माता पिता के लिए कन्या का विवाह करना ही प्राथमिकता है।

मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास बेतवा बहती रही में नारी पात्र उर्बशी राजगीर के माहन सिंह की बेटी है । एक दुर्घटना में उसके पति की मृत्यु हो जाती है और उसका भविष्य अंधकार में चला जाता है वह अपने पुत्र का लालन–पालन दाऊ के स्नेह संरक्षण में करती है पर उसके भाई अजीत की कुटिलता उसे चैन नहीं लेने देती है उर्बशी का भाई उसका बिवाह 3 बच्चों के पिता बरजोर सिंह के साथ करवा देता है । विवाह के बाद उर्बशी के जीवन में कुछ भी नहीं रह जाता है।

एक अन्य उपन्यास कस्तूरी कुंडल बसेरा की कस्तूरी की अवस्था इसी स्थिति से मिलती–जुलती है। उसका भाई अपने कर्ज को चुकाने के लिए खेत गिरवी रखकर जमीदार से पैसा वसूल करता है और उस पैसे को दिलवाने के लिए बहन से कहा जाता है। मां और भाई उसका विवाह उसकी मर्जी के बगैर बूढ़े और बीमार जमीदार के साथ कराने का निर्णय ले लेते हैं। बेटी को विवश होकर विवाह के लिए तैयार होना पड़ता है उसकी मां केवल अपने पुत्र के बारे में ही सोचती है पुत्री के बारे में वह कुछ भी नहीं सोचती।

विवाह एक पवित्र बंधन भारतीय समाज में माना गया है लेकिन कुछ लोग अपने स्वार्थ और दुष्ट मनोंवृत्ति के कारण इस पवित्र बंधन को समस्याओं में बांध देते हैं और इसका शिकार स्त्रियां होती हैं।

समाज में तलाकशुदा नारी की स्थिति

पति और पत्नी एक गाड़ी के दो पहिए के समान होते हैं दोनों एक परिवार की आधारशिला होते हैं। प्राचीन समय से ही पत्नी पति को परमेश्वर मानती रही है परंतु धीरे–धीरे पति पत्नी के संबंधों में विश्वास, प्रेम और समर्पण की भावना कम होती जा रही है। स्त्री को परिवार में हमेशा से दूसरा स्थान ही प्राप्त है। पहले स्थान पर प्राचीन समय से ही पुरूष का वास रहा है।

बेतवा बहती रही उपन्यास में गजरा का पति उसे इसलिए त्याग देता है क्योंकि वह कद में बहुत छोटी और सांवले रंग की होती है परंतु गजरा पति की उपेक्षा को सहन करती हुई ससुराल में एक कोने में सिमटी बैठ कर के ही अपने आप को धन्य समझती है क्योंकि उसे अपने माता–पिता की कही हुई बात कि बेटी के लिए ससुराल ही सब कुछ होता है । याद थी परंतु उसके पति ने एक बार भी यह नहीं सोचा कि वह उसकी मानसिक और नैतिक स्थिति को ठेस पहुंचा रहा है।

कुसमा भाभी एक ऐसा नारी पात्र हैं जो कि यशपाल की तलाकशुदा पत्नी है वह निःसंतान है जिसके कारण यशपाल उन्हें त्याग देता है और एक धनी घर की लड़की से विवाह कर लेता है।

उपन्यास चाक की पात्र अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है और वह अपने आगे के जीवन

को मायके में जाकर के बिताने लगती है परंतु एक दिन उसे उसके पति की मृत्यु की खबर मिलती है वह खुद को रोक नहीं पाती और वह उसके अंतिम दर्शन के लिए आती है।

आज के आधुनिक युग में पति–पत्नी के संबंधों में लगातार आने वाली मूल्यहीनता पति के स्वार्थ, लाभ और इच्छाओं की वजह से पत्नी बराबर शोषण का शिकार होती है। पत्नी के रूप में नारियों का चित्रण मैत्रेयी जी के उपन्यासों में मर्मस्पर्शी तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

मैत्रेयी जी के उपन्यासों में दलित नारी का चित्रण

भारतीय समाज में दलित नारी को दोहरा शोषण सहना पड़ता है। समाज में पहला शोषण नारी के रूप में जो कि पुरूष प्रधान समाज में होता है और दूसरा शोषण दलित नारी के रूप में जोकि उसी की जाति के पुरूष के द्वारा होता है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उपन्यासों में दलित नारी का चित्रण किया है और उसके दोहरे अभिशाप की सच्चाई को व्यक्ति किया है।

दलित स्त्री मजदूरी और खेतों में काम करती है। अपने परिवार की जरूरतों के लिए मेहनत करती हैं। उसके साथ–साथ अपने घर का भी ध्यान रखती हैं। इदन्नम उपन्यास में दलित स्त्री का चित्रण और राउत आदिवासियों की दुर्दशा को दर्शाया गया है जिसमें इदन्नम की मंदा जब अवधा से पूछती है कि शहर में इतने कष्ट झेलने की बजाय तुम अपने गांव क्यों नहीं लौट जाती। बड़े ही मार्मिक वाणी में अवधा बताती है कि किस तरह ठेकेदार कम पैसों में ज्यादा मजदूरी कराता है।

इस प्रकार कई तरीकों से दलित स्त्री का शोषण होता रहा है। मैत्रेयी जी के उपन्यासों में दलित चित्रण इतना सजग रूप से किया गया है कि वास्तविकता का एहसास होता है। दलित नारी के जीवन में आने वाली कठिनाइयों का मर्मस्पर्शी वर्णन है।

मूल्यांकन

हिंदी साहित्य का मुख्य भाग उपन्यास है। उपन्यासों में उपन्यासकार जिंदगी से रूबरू कराने का प्रयास करता है वह अपने उपन्यासों में सच्चाई ईमानदारी और विभिन्न रंगों के पात्र को बनाता है इसी प्रकार मैत्रेई पुष्पा जी ने भी अपने पात्रों में खासकर महिला पात्रों में अपने अनुभव के द्वारा मध्यम वर्ग की महिलाओं पीड़ित महिलाओं और उनकी समस्याओं उनकी गहराई उनकी संवेदना समझ के साथ रचना की है।

मैत्रेयी जी की जो बात बहुत आकर्षित है वह उनके गांव का सहज स्वाभाविक कथानक जिसे दृष्टि और सवार की जरूरत थी और उसी पर उन्होंने जोर दिया इनकी नारी अपने भाग्य को कोसने और रोने वाली ना होकर बल्कि जिंदगी की विषमताओं और संघर्षो से बनी है। उनके उपन्यासों में इदन्नम, अल्मा कबूतरी, चाक, आंगनपाखी, विजन, झूलनट आदि सर्वोत्कृष्टि उपन्यास हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी ने भारतीय उपन्यास साहित्य में अपने उपन्यास लेखन के द्वारा सजीवता के साथ उपन्यासों में महत्वपूर्ण येागदान दिया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 पुष्पा मैत्रेयी (1994) *बेतवा बहती रही,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।

2 पुष्पा मैत्रेयी (1994) *इदन्नम*, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
3 पुष्पा मैत्रेयी (1997) *चाक*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4 पुष्पा मैत्रेयी (1999) *झूला नट*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।